حاتم طائی

वान पाके बिनती करी कि पृथ्वी नाथ हम को अपनी विद्या से ऐसा प्रगट होता है कि यह शाहज़ादा सातों देश का बादशाह होगा और सदा हरि हेत सब काम करेगा और उस का नाम सूर्य के समान प्रलय पर्यंत जगत में प्रकाशित रहेगा यह सुन बादशाह को अति आनन्द और परम हर्ष हुआ और परमेश्वर को धन्य बाद कर उन लोगों को धन से परिपूरण कर दिया और उस बालक का नाम हातिम रख अपने मंत्रियों से कहा कि तुम शीघ्र यह बात बिदित कर दो कि मेरे राज्य में आज जिस के घर बालक उपजा हो वह आज के दिन से बाद-शाही नौकर है और उन के माता पिता राज मन्दिर में पहुंचा जावें उन का पालन भी यहीं होगा उस के देश में उस दिन छः हज़ार लड़के उत्पन्न हुए थे यह आज्ञा सुनते ही सब के माता पिता अपना २ बालक राज मंदिर में पहुंचा गये उसी समय छः हज़ार दाइआ नौकर रक्खी गईं और एक एक लड़का सौंपा गया और चार दाइआ हातिम के लिये नियत हुईं वह किस किस भांति से यप कियां दे २ चुमका-रती थीं कि वह किसी प्रकार दूध पिये पर वह आंखें न खोलता और न किसी की स्तन मुख में लेता जब यह समाचार बादशाह को पहुंचा वह इस बात के सुन्ते ही अति चिंता कर अपने मंत्रिओं से कहने ल-गा कि तुम सयानों को शीघ्र बुलवावो सयानों ने आके बिनती की कि हे प्रभू यह जगत का हातिम होगा अकेला दूध न पियेगा पहले सब बालकों को पिलवा के पीछे आप पियेगा और जब तक जीता रहेगा अ-केला भोजन और जल पान करेगा निदान जब वे सब लड़के दूध पी चुके त-ब हातिम ने भी दूध पिया और जब से जन्म हुआ न कभी रोता और न कभी अकेला भोजन करता और न अचेत हो के सोता जब दूध छुडाया गया तब उन्ही छः हज़ार लड़कों के साथ खाता पीता सच तो यह है कि जिस दुखी दरिद्री भूखे प्यासे नंगे को देखता रुपया पैसा अन्न जल क-पड़ा दे दिये दिलाये न रहता दिवस देने दिलाने में व्यतीत करता पर-मेश्वर की कृपा से जब १४ वर्ष का हुआ जो धन रत्न पिता ने एकत्र

ने तो वह अपना सिर झुका हातिम के चरणों पर पड़ा और अपनी आंखों को उस के तलवों से मलने लगा हातिम ने कहा कि हे सिंह हातिम की उदारता से दूर है जो तू भूखा जाय जो मुझ को तू नहीं खाता तो मेरे घोड़े को खाके अपने बन को चला जा वह न बोला और झुका के चला गया निदान अपने नगर में अपने सहचारियों सहित रहता और सब सन्सारिओं के काम ईश्वर हेत करता॥ पहिली कहानी में बरजख सौदागर की बेटी हुसन बानू की खुरासान से निकाले जाने की और किसी बन में असंख्य धनरत्न उस के हाथ आने और मुनीर स्वामी शाहजादे का उस पर आशक्त होना और हातिम का सहाय करने का बर्णन॥

पहिली कहानी

सुना है कि खुरासान देश का एक बादशाह था कई लक्ष सेना सदा उस के पास रहा करती थी और न्याय में भी ऐसा था कि बाघ बकरी को एक घाट पानी पिलाता और अपने बेटे का भी पक्ष न करता उस के नगर में बरजख नाम एक सौदागर अति धनवान प्रतिष्ठित रहता था अपने गुमाश्तों को देश २ में व्योपार की बस्तु देके भेजता और आप अपने घर में सुख पूर्वक बास करता और बादशाह से भी व्योहार बना लिया था और बादशाह की भी उसपर अत्यंत कृपा दृष्टि रहती थी बहुत दिन पश्चात उस का मरण समय आ पहुंचा और आयुर्दा उस की परिपूर्ण हुई और उस के केवल हुस्नबानू नामी एक लड़की थी दूसरा कोई बेटा न था उस की सब संपदा उसी लड़की को मिली उस समय वह बारह बर्ष की थी निदान उस के पिता ने सब संपदा उसी को दे और उसे बादशाह को सौंप परलोक की यात्रा की बादशाह ने भी उसे अपनी बेटी के समान रक्खा और उस के धन्य राज का कुछ लालच न किया और वह संपदा सब की सब उसी को दी कुछ दिन में जब वह लड़की सबस मझने लगी तब अपनी सुबुद्धि और भलाई से दाई को बुला के क-

चलता है उसने कहा कि अम्मा वारी ये बादशाह के पीर हैं मही-
ने में दो चार बार बादशाह इन के घर जाते हैं और यह भी क-
भी २ उन के पास आते हैं इस के समान इस समय मैं संसार मैं को-
ई महात्मा नहीं क्यों कि यह बड़ा धर्मिष्ट और कृपा वान है हुस्न
वान् ने इस बात को सुन के कहा कि जो तुम आज्ञा दो तो मैं इस
महात्मा को एक दिन न्योता करों और घड़ी दो घड़ी के लिये अपने
घर बुलाऊं और अपनी आंखें उस के पैरों पर मलों दाई ने कहा कि
मेरी प्राण प्यारी यह काम तू बे धड़क कर यह दृष्टांत प्रसिद्ध है॥
कि आंखें सुख कलेजे ठंडक निदान उसने किसी को हाथ महा-
त्मा को कहला भेजा कि जो किसी दिन आप महात्माओं के समान
मेरे अंधेरे घर को अपने चरण से प्रकाशित करो तो इस दासी के
लोक परलोक दोनों बन जावें और अपने अभि लाष के पात्र को का-
मना के रत्नों से परि पूर्ण करूं वह गया और उस का संदेश सुना के
कहा कि महात्माओं को उचित है कि छोटों पर कृपा और दया करें
इस बात को उसने अंगी कार किया और कहा कि मैं अवश्य आऊं-
गा क्योंकि यह कहा है जो कोई ऐसी बात को न माने वह तपस्वी
नर्क में गिरे परन्तु आज तो मुझ को कुछ काम है कल्ह प्रातः काल
आऊंगा यह समाचार हुस्न वान् ने सुना कि कल दो चार घड़ी दि-
न चढ़े वे महात्मा अपने चालीसों शिष्यों सहित मेरे घर पधारेंगे
इस समाचार के सुन्ते ही उसने भांति २ के खाने पकवाये और कई
थाल मेवे मिठाई के और कई पाटम्बरों और कंचन वस्त्रों और रु-
पयों मोहरों और रत्नों के सजवा रक्खे इस आशा पर कि जगत के म-
हात्मा कल्ह मेरे घर आवेंगे तब ये सब वस्तु मैं उन के आगे धर अ-
ति दीनता हो पैरों पर गिरूंगी कि इतने में प्रातः काल हुआ और
वे महात्मा उन्हीं चालीसों शिष्यों के साथ अपनी पुरानी रीति
से सोने चाँदी की ईंटों पर पाँव रखते हुए हुस्न वान् के घर आ पहुंचे
और वान् ने द्वार से बैठने की जगह तक जरी का बिछौना पहिले हो से

जग उठे सो उन डकैतों के हाथ से घायल हुए और कुछ मारे गये हुस्नबानू अपनी कोठी की खिड़की से झांक २ देखती और उन को पहिचान पहिचान हाथ मल मल कहती कि हाय हाय यह तो वही निगोड़ा फकीर और उसके साथी हैं - इस का इलाज कोई क्या करेगा रात तो सोच में कटी भोर होते ही उन मुरदों और घायलों को चार पाई में डाल बादशाह की डेवढ़ी पर लेगई और खड़ी हो पुकार के दुहाई देने लगी कि मैं लुटगई बादशाह ने कहा कि कौन है यह किस के सताने से ऐसी रो रही है द्वार पालों ने विन्ती की कि बरज़ख सौदागर की बेटी दो चार पाईयों पर मुरदे और घायल लाई है और रो रो के कहती है कि जो बादशाह सलामत कृपा करि के मुझ को अपने सामने बुलवावे तो अपना दुःख निवेदन करूं इस बात के सुन्ते ही बादशाह ने उसे बुलवालिया और समाचार पूछा उसने प्रणाम कर कहा कि आपकी आयुर्द बढ़े और न्याव का सूर्य्य प्रलय परियन्त प्रकाशित रहे कल के दिन इस लौंडी ने उस फ़क़ीर का न्योता किया था सो उसने यह उत्पात किया कि पहर रात गये अपने चालीसो साथियों समेत आके मुझ दीन दुःखी बिन मा बाप की का घर लूटा दशबीस मनुष्य को घायल किया और दो चारों को मार डाला और वस्तु लूट लेगया परमेश्वर उसका मुंह काला करे कि उसने मुझे सताया - इस बात के सुन्ते ही बादशाह आग होगया और कहने लगा कि हे मूर्ख कुबुद्धी तू कुछ भी समझती है कि ऐसे महात्मा को ऐसा कलंक लगाती है वोह संसार॥ की सब वस्तु को तुच्छ समझता है तब हुस्नबानू ने फिर कहा कि प्रभु ऐसे महा दुष्ट को महात्मा न कहिये यह दुष्टता में पेशाच से भी अधिक है आप क्या आज्ञा करते हैं इस बात के सुनते ही बादशाह को और भी क्रोध हुवा और ताव खा के कहने लगा अरे कोई है इस दुर्बुद्धि लड़की को मेरे ही सामने पत्थरों से मार

संतोष कर ईश्वर कृपा करेगा तो फिर सब कुछ हो जायगा ऐसे
ही रोती पीटती अपनी दाई समेत दूसरे बन में जा पहुंची और धूप
के मारे एक बृक्ष के नीचे जा बैठी दो चार दिन की भूखी प्यासी तो
थी ही सो नींद आगई उसी वृक्ष के नीचे धरती पै सोरही तो
स्वपने में क्या देखती है कि एक बृद्ध पुरुष साधू प्रकृति उजले
कपड़े पहने हाथ में छड़ी लिये गले में माला डाले खड़ाऊं पहने
सरहाने खड़े कहता है कि तू दुख और चिंता मत कर ईश्वर
बड़ा दयाल और सामर्थ है उस्से कुछ आश्चर्य्य नहीं के तुझे
फिर वैसा ही कर दे इस वृक्ष के नीचे सात बादशाहत की संप
दा गड़ी है सो परमेश्वर ने तेरे लिये यहां छिपा रक्खी है अब तू
उठ और इस द्रव्य को ले और अपना मन परमेश्वर के स्मरण में
लगा उसने कहा कि मैं स्त्री और अकेली हूं कैसे इस धरती को
खोदूं और इस असंख्य द्रव्य को अपने बश करूं उस ने कहा कि
तू एक लकड़ी से थोड़ा खोद फिर परमेश्वर को देख कि वह कि
स कठिन काम को कैसा सुगम करता है - इस बात के सुनते ही
हुस्न बानू चौंक उठी और अपनी दाई से ये बातें स्वप्न की सब
कही निदान उसने और उस की दाई ने जो उस वृक्ष की जड़
अपने बल से हिलाई और कुछ लकड़ी से खोदी तो सात कु-
एं असरफियों के भरे और भांति २ के संदूक रत्नों से परिपूर्ण
उस मोती सहित जो मुर्गाबी के अंडे के समान था दिख लाई
दिये · हुस्न बानू इस ईश्वर की दी हुई संपदा को देख अति
प्रसन्न हुई और ईश्वर का धन्य बाद और प्रणाम कर दाई
से कहने लगी अम्मा जान तुम इसी घड़ी इसे छोड़ शहर की
ओर जाओ और हमारे कुनबे के लोगों को और थोड़ी बहुत
खाने पीने की बस्तु ले आओ उसने कहा कि तुझे अकेली
छोड़ कैसे जाऊं और क्यों कर लाऊं जो तेरे पास कोई और हो
ता तो मैं जाती यह डर है कि कहीं कुछ और उत्पात न होजाय

समाचार पहुंचा कि एक सौदागर बच्चा बहुत सुघड़ आप के चरण समीप आने के अभिलाष से द्वार पर आया है बादशाह ने आज्ञा दी कि उस को प्रतिष्ठा पूर्व्वक लाओ, लोग बाग उस को हाथों हाथ प्रतिष्ठा पूर्वक बादशाह के सामने ले आये वह उचित रीति और नीति सहित यथा योग्य स्थान पर खड़े हो प्रणाम कर निवेदन के थाल तख़्त के नीचे रख कृपा की आशा की बादशाह उस को देख प्रसन्न हुए अनुग्रह कर जो पूछने लगे कि तुम किस शहर के रहने वाले हो और किस काम के लिये यहां आये हो और तुम्हारा नाम क्या है वह हाथ जोड़ के बिन्ती करने लगा कि मैं सौदागर का बेटा हूं भाग्य वश मेरा पिता किसी शहर समीप जहाज पर मारा गया मुझ को आप के चरण समीप रहने का बड़ा अभिलाष है॥ आज मेरा अहो भाग्य था जो आप के चरण समीप आप हुंचा यह आशा है कि आप ही के समीप अपना जीवन व्यतीत करूं क्यों कि इस द्वार पर रहने से लोक दोनों की भलाई है, और यह बिन्ती है कि जो आज्ञा होते उस जंगल में कुछ दिन रहूं और एक शहर बसा के उस का नाम शाहाबाद रक्खूं, इस बात को सुन बादशाह अति प्रसन्न हो और बहुत अच्छा खिलत दे कहने लगा कि तेरे माता पिता नहीं हैं उन की जगह तुम मुझे समझो मेरे पुत्र समान हो जो चाहो सो करो जहां चाहो वहां रहो संदेह मन में न करो जो चाहो सो ले जाओ हुस्न बानू प्रणाम कर कहने लगी कि प्रभु जो यह दास शाहजादों में गिना जाय तो मेरे नाम की कोई उतम संज्ञा ठहराई जाय जिस में अधिक प्रतिष्ठा बढ़े वोह राम नाम मेरे योग्य नहीं बादशाह ने इस बात को सुन प्रसन्न हो कर उस का नाम माहरू शाह रक्खा गया फिर कहा कि बेटा वह जंगल यहां से बहुत दूर है जो मेरा कहा मानो तो शहर के समीप अपने नाम से शहर बसा के उस्में आनंद से रहो उसने फिर बिन्ती की कि वह जंगल बहुत मनोहर है दूसरे धानी के समीप शहर

इतने में बादशाह उठे और फ़कीर से बिदा होने लगे माहरू शाह-
हाथ जोड़ विन्ती की कि जो इन महात्मा के चरण मेरे घर में पड़ें १
तो बडी ही कृपा हो और यह बात महात्माओं के स्वभाव कुछ दूर
नहीं उसी महा दुष्ट प्रगट में परम साधू ने कहा कि मैं आऊंगा तब
माहरू शाहने विन्ती की मेरा घर शहर से बहुत दूर है इन को
वहां जाने से बड़ा परिश्रम होगा · उत्तम यह है यहां बरजख
सौदागर की हवेली बहुत अच्छी हैं · और इन दिनों खाली
पड़ी है जो दो चार दिन के लिये मुझ को मिले हो मैं ऐसा म-
हात्मा की यथार्थ सेवा वहां करूं और अखंडित्त धन पाऊं
बादशाह ने कहा कि बेटा तूने उस के समाचार कहां पाये
उसने कहा कि इस शहर के लोग बहुधा उस की सराहना कर
ते हैं · और उस का नाम भी अच्छे प्रकार लेते हैं · बादशाह ने
कहा कि बेटा वोह हवली मैंने तुझ को दी इस बात के सुन्ते ही
उसने प्रणाम किया · और अपने लोगों को साथ ले उस हवेली
में गया फिर उस हवेली को बिगड़ी देख के दीवारों से लिपट कें
बहुत रोया और लोगों से कहा कि इस हवेली की मरम्मत करके
शीघ्र सुधारो यह कह के अपने शहर को चला गया एक महीना
वींते न्योते की सब बस्तु बनवाके उसने भेजी और कई चांदी सोने
के थाल जड़ाऊ बासनो से भरे और बहुत से कपड़े कलाबतू
नी सल में सितारे के और एक माणिक का मोर और बहुत से रत्न
अपने साथ लाया फिर अपने नोकरों को उसे हवेली में छोड़ आ
प बादशाह के पास गया और हाथ जोड़ के बिन्ती करने लगा १
कि पृथ्वी नाथ मेरा मनोर्थ है कि कुछ दिन बरजख सौदागर की १
हवेली मे रहूं और आपके दर्शन प्रणाम के लिये नित्य आया करूं
परन्तु कल्ह उन महात्मा को न्योता करलूं बादशाह ने कहा कि
जो तुम्हारे जी में आवे सो करो हमारी बादशाहत भी अपनी
समझो यह बात सुन उसने उठ के प्रणाम किया और बोला कि

को कहने लगा कि यह धन और यह खाना तुम्हारा तब सुफल होगा कि हम तुम आजही की रात वोह सब वस्तु चुरा के अपने घर ले आवें इस बात चीत में रात हो गई तब उसने चोरों के कपड़े पहने और उन्ही चालीसों को ले के आधीरात को उस की हवेली की ओर चला· माहरू शाह ने अपने लोगों से पहिले ही कह रक्खा था कि तुम कुछ असबाब कहीं से न समेटना जहां का तहां के पड़ा रहने देना· और चैतन्य बैठे रहना· और एक रुक्का शहर के कोतवाल को लिख भेजा कि आज की रात हमारे घर पर डाका पड़ने वाला है तुम थोड़े से लोग लेके शीघ्र आओ और एक कोंने में छिपे घात में बैठे रहो जब इस हवेली से पुकार हो उसी घड़ी तुम आवना और चोरों को बांध लेना कोतवाल इस बात के सुनते ही सौ दो सौ लोग साथ ले उस की हवेली के दाहिनी के ठहर रहा कि इतने में वोह मरण हार एक चोरों की धार लिये उस की हवेली में आ घुसे और सब बस्तु लूटने लगे एक एक ने एक एक वस्तु की गठरी बांध सिर पर रक्खी और वोह फकीर भी जड़ाऊ मोर हाथ में लेके हवेली से बाहर निकला पियादे जो उसी ताक में लग रहे थे अपनी अपनी जगह से कूदे और झट पट उन सबों की मुशकें बांध लीं और गठरिआं उन के गले में डाल दीं और इतनी पुकार हुई कि कोतवाल आप चला आया और कहा कि अब आप भी उन से चौकस रहें· प्रातःकाल बादशाह के सामने ले चलेंगे वहां से जो हुक्म होगा सो करेंगे· हुस्नवान उन बैरिओं को वधा देख के बहुत प्रसन्न हो और अपने नौकरों को इनाम दे ठंडे जी से पांव फैला के सो रही इतने में प्रातःकाल हुआ और बादशाह महल से निकल बादशाही तख्त पर बिराजमान हुये· और वज़ीर अमीर मुजरा करके अपनी अपनी जगह पर खड़े हुये बादशाह ने पूछा कि रात को शहर में क्या हल्ला हो रहा था· इतने में कोतवाल

तो निकले और लौंडी का झूठ सच सब खुल जायगा बादशाह ने बड़े चाव से अंगुली मुंह में ले काटने लगा और हुक्म दिया की उस का घर खोदा जाय और हुस्न बानू को बहुत सराहा और जब उस का घर खोदा गया तब बरजख सौदागर का सब माल निकला हुस्न बानू ने वोह सब बादशाह के नजर किया ॥ और बिनती की कि पृथ्वी नाथ लौंडी को इस बात की अभिलाष है कि जो आप के चरण मेरे घर में बिराजमान हों तो जो बहुत सी संपदा परमेश्वर ने मुझे दी है उस को दिखाऊं और अपना हाल कहूं बादशाह ने उस का कहना अंगीकार किया वोह बिदा हो अपने शहर में आई और अती अपना मन लगा और सब शहर को रचि के महल को भी बादशाही के योग्य संवारा दो तीन दिन बीते बादशाह उस शहर की ओर चले जब समीप पहुंचे तब वोह अपनी सिपाह सहित आगे लेने के लिये बड़े चमत्कार से शहर के बाहर आई और चरण चूम बड़े चमत्कार से महल में ले गई और अति उत्तम राज्यासन पर बैठा दिया और दूसरा जड़ाऊ मोर और धन रत्न के कई थाल आगे रक्खे बादशाह उस को देख अति प्रसन्न हुए फिर उस ने सातों कुए धन रत्नो के परिपूर्ण दिखाये और हाथ जोड़ के बिन्ती की कि बादशाही सेवकों को हुक्म हो कि इस संपदा को छकड़ों में लदवा के बादशाही खज़ाने में पहुचावें बादशाह ने वजीर से कहा कि तुम इस माल को अभी सरकारी खज़ाने में भिजवा दो वह लिखने वालों सहित कुए पर गये देखते क्या हैं कि धन रत्नो से भरे हैं जों चाहा कि उस को निकालें वहीं वोह द्रव्य सांप बिच्छू हो गई वे उससे डर के बादशाह के पास गये और वो समाचार कहे बादशाह सुन के अचंभे में हो गये और हुस्न बानू के चहरे का रंग फीका हो गया तब बादशाह ने कहा कि बेटी तू कुछ चिन्ता मत कर यह संपदा परमेश्वर ने तेरे ही भाग्य में लिखी है जो तू चाहे सो कर

करती थी· वैसे ही वे लोग उस को भी उस के पास ले गये तब उसने परदा डाल के उस को अपने पास बुलाया और पूछा उसने कहा कि मुझे यह अभिलाषा है कि आप के चरण समीप अपना जीवन व्यतीत करूं उसने कहा कि तू क्या काम जानता है· और तुझ में क्या गुण है· उसने कहा कि मैं मुसौवर हूं जिस की तसवीर खींचा चाहूं कपड़े की ओट में खींच लूं इस बात को सुन उसने उसे नौकर रक्खा कुछ दिन बीते जी में यह आया की अपनी तसवीर खिन्चवाइये और देखिये कि वोह सच्चा है वा झूठा एक एक दिन उसे बुलवा के कहा कि मेरी तसवीर बिन देखे खींच उसने कहा कि आप कोठे पै चढ़ें और एक लगन पानी से भर वाके दीवार के नीचे रख दीजे मैं पानी में कुछ थोड़ी सी छाया देख लूं तो तुम्हारी तसवीर हू बहू खींचू उसने हुक्म दिया कि एक थाली पानी से भर के दीवार के तले रख दो नौकरों ने वैसा ही किया कि थाली रख दी· तब ऊपर गई और उस की परछांहीं पानी में पड़ी मुसौवर ने पानी में उसे देख लिया और अपने घर आके दो तसवीर खींची जो तसवीर हू बहू थी सो तो उसने अपने पास रक्खी और ऐसी वैसी जो थी वो हुस्न बानू को दी उसने उस को भी प्रसन्न होकर लेली· और इनाम देके बिदा किया वोह मुसौवर थोड़े दिनों में मुनीर शामी के पास आ पहुंचा और वोह तसवीर उस को दी तसवीर के देखते ही उस को मूर्छा आ गई जब चेत हुआ तब ठंढी सांस लेने लगा सहसा यह बात जी में ठहराई कि यहां से निकल चलना भला है यद्यपि मा बाप की इच्छा नहीं निदान आधी रात को भिखारी का भेष बना घर से अकेला निकल शाहाबाद की ओर चला बहुत दिनों में दुःख सहता आफ़तें उठाता उस शहर में जा पहुंचा पर कुछ खाया न हीं था कि दो दिनों के आदर करने वाले नौकरों ने यह समाचार हुस्न बानू को पहुंचा

और यही गलिओ का मरना भला यह सुनके कहा कि जो हम ऐसे बकने वाले को अपने शहर में रहने नहीं देते जो आप से जाता है तो जा नहीं तो दुरदशा से निकलेगा. शाहज़ादा इन बातों से निरास हुआ. और एक बर्ष की अवधि कर चलने का मनोरथ किया. तब एक सौदागर बच्चे ने जाना की यह अपने प्राण यहां खो चुका है. थोड़े बहुत रुपये राह खर्च को दिये और नाम पूछा उसने कहा मुनीर शामी एक बावली रोता पीटता जंगल की ओर चला किसी जंगल में जाके हंस देता और किसी पहाड़ में सिर टकरा के रो देता पर पैर बढ़ाता ही जाता था उस निर्दई कठोर चित्त वाला ऐसे ही कितने शाहज़ादे वज़ीरज़ादे आये और सातों बातों से फस २ के कितने ही चले गये और बहुतेरे मर मिटे पर उस की एक बात भी कोई पूरी न कर सका पर मुनीर शामी उस की चीर गले में डाले हुए जंगल २ बगला सा फिरता था पर कहीं अपने मनोर्थ का खोज नहीं पाता फिरते फिरते एक दिन यमन के समीप एक जंगल में आ निकला और किसी वृक्ष के नीचे बैठ के मेघ के समान आंखों से आंसू की धारा बहाने लगा हातिम भी उस दिन वहीं आखेट को गया था. इतने में एक दुखभरा शब्द उसके कान में पड़ा उसने अपने लोगों से कहा कि इसे पुकार के सुनो जा देखो कि कौन। दुखिया है जो ऐसा फूट फूट के रोता है- कई मनुष्य गये और आके कहा कि एक मनुष्य लकड़ और पतला रूप वान भिखारी सा उस वृक्ष के नीचे बैठा रोता है न आंख खोलता है न बोलता है- हातिम इस बात के सुनते ही अकेला उस के पास २ आके चुपका खड़ा हो रहा और इस का दूर से तमाशा देखने लगा वह बे सुध रो रो के कहता और कराहता और कलेजे के टुकड़े २ करता था. हातिम उस की यह दशा देखते ही आं-

प्यारी तुझ से नहीं मिलेगी तब तक तेरा साथ नहीं छोड़ता नि
दान ऐसा धीर्य दे और ढाडस बंधाय मंदर में ले गया वहां नह
ला धुला कपड़े बदल चाये खाना खिला नाच दिखा दो चार
दिन इस भांति वह लाया फिर एक दिन उसे उदास देख के
कहा कि मैं तुझे टालता नहीं अब तेरे काम को ढूढता हूं और
र परिश्रम की फेंट बांधता हूं. शाहजादा बोला कि मेरे का-
म की आदि अंत नहीं मैं नहीं चाहता कि तू अपना सुख चै
न छोड़े और दुख में पड़े हातिम बोला यद्यपि तू नहीं चा
हता तो न चाह परन्तु मैं अपनी बात को अपने बपा भर नि
वाहूंगा जो जीता बचा तो तुझे तेरी प्यारी से मिला दूंगा नि-
दान अपने काम काजियों को इकट्ठा कर के कहा कि जैसे
बिदेशियों को जगह और भूखों को खाना नंगों को बस्त्र कं-
गालों को रुपया मेरे साम्हने मिलता है वैसा ही मेरे आने
तक मिले जाय यह कोई न कहे कि हातिम इस शहर
में नहीं अब कौन किसी को दे इस काम को सिथलता न
करना अच्छे प्रकार किये जाना इस भांति उन को समझ
बुझा दिया और आप मुनीर स्वामी के साथ शाहाबाद
का रास्ता लिया कितने दिनों में वहां जा पहुंचा हुस्नबानू
के लोग जो बिदेशियों के आदर सन्मान के लिये नियत थे
आगे बढ के उन को बिदेशिओं के स्थान में ले गये और भांति
२ के खाने और रुपये अशरफी बहुत सी आगे धरी और हाथ जो-
ड़ बिनती कर कहने लगे कि आप बिन संकोच खाना खाइये
और अरु ए स्वेत द्रव्य जितना चाहिये निःसंदेह लीजे उसने
कहा कि मैं रोटी कपड़े धन रत्न सम्पति का दुखी होके नहीं आया
ईश्वर ने मुझे भी सब कुछ दिया है. और देशों का राजा किया
है मेरा तो बहुत बड़ा अभिलाष है. लोगों ने इस बात को सुन
के हुस्नबानू से जा कहा कि एक मनुष्य हातिम नामी तुम्हारी

पहिली कहानी हातिम के जाने और प[illegible] बात पूरी करने की ॥ ५ ॥ ॥

निदान हातिम जब थोड़ी दूर गया तब अपने जी में कहने लगा कि अब मैं क्या करूं और किस्से कहूं वे देखे सुने किधर जाऊं और यह परिश्रम अपने ऊपर लिया है· वही परमेश्वर सब पूरा [illegible] लेगा· मुझ से तो कुछ नहीं हो सक्ता है· यह कह परमेश्वर का आसरा भरोसा कर आगे बढ़ा· इतने में क्या देखता है कि एक

कहां है भेड़िया बोला कि यहां से थोड़ी दूर चल के दो रस्ते मिलेंगे तू बायें हाथ का रस्ता छोड़ दाहिने रस्ते को लेना निश्चय है कि वहीं पहुंचेगा और अपना मनोरथ पूरा करेगा हिरनी उस को असीस देती चली और भेड़िया भी उससे बिदा हुआ वे दोनों उसकी धीरता और उदारता पर धन्य २ कहते थे हातिम दो ही चार पग चला था कि पीर के मारे उस के पैर लरखराये और एक वृक्ष के नीचे गिर के तड़फने लगा कि वहां एक गीदड़ की भाठी थी और वोह अपनी गीदड़ी समेत अहार के लिये गया था दो चार घड़ी पीछे जो वह चुग के आया और हातिम को अपनी जगह पर तड़फता देखा तब गीदड़ी ने उस्से कहा कि यह मनुष्य कहां है अब इस जघह को छोड़ दिया चाहिये क्योंकि मनुष्य और पशू का निबाह कैसे हो सक्ता है गीदड़ ने कहा कि यह स्वरूपवान पुरुष हातिम है और दस्तह बेदा के समाचार लेने जाता है अब चूतर की पीर के मारे इस वृक्ष के नीचे गिर पड़ा है वोह बोली तूने क्यों कर जाना उसने कहा कि मैंने अपने बूढ़ों के मुंह से सुना है कि उस तिथि वार को हातिम यहां आवेगा और इस वृक्ष के नीचे क्लेश सहेगा सो वह तिथि वार आज है उसने कहा कि इस वृत्तान्त सच कह उसने कहा कि यह यमन का बादशाहजादा बड़ा दाता है आज एक बच्चे वाली हिरनी बन में चरती फिरती थी एक भेड़िया उस पर लपका उस भेड़िये से वोह हिरनी छुड़ादी और क्लेश सहा उसने कहा कि मनुष्यों में कहीं ऐसे दयावान लोग होते हैं और कब किसी पशु पर दया करते हैं उस ने कहा कि यह क्या कहती है मनुष्य सब जीवों से उत्तम है सब सृष्टि में उत्तम कहलाता है हातिम तो बड़ा उदार और बड़ा शुशील और ऐसा दाता है कि अपना मांस देके दूसरे के प्राण बचायेगा और गीदड़ी ने उस की भलाई जो इतनी सुनी तो कहा कि ऐसे क्लेश में कैसे इतनी दूर जायगा १ गीदड़ बोला कि जो परीरू के सिर का भेजा इस के घाव पर लगे तो बात कहते ही में आराम होय जाय पर यह बहुत कठिन है इसलिये कि माजिंदरां के बन में वोह एक जीव है कि उसकी देह मोर के समान है और मनुष्य कासा सिर जो कोई उसके पास जाता है और शरबत पिलाता है वोह मस्त होके नाचने लगता है और तमाशे दिखाता है कोई मनुष्य स्त्री के समान उस्से संग करते हैं यह सुनके गीदड़ बोली कि ऐसा कौन है जो उस का काट लावे और हातिम को अच्छा करे

कर और हम को बिन दामों मोल ले हातिम ने कहा कि तुम मुझ को उसकी जगह बताओ अपने बस भर तुम्हारा काम करूंगा· वोह जंगल वहां से छः कोस पर था· वोह हातिम आगे गया और जगह को भी सूनी पाके बैठा कि· इतने में एक जोड़ा आया तो क्या देखता है कि· एक मनुष्य ह- मारी जगह बैठा है यह देख वोह दोनो आगे बढे और कहने लगे कि अरे यह जगह तेरी नहीं है· थाना पति होके आ बैठा जो जो तू अपना भला चाहता है तो उलटे पावों फिर जा नहीं तो अभी तिक्का बोटी करलेते हैं· हातिम ने क हा कि हे मूर्खों मैं जीवों का दुख दाई नहीं· और न मह शि कारिया हूं· जो तुम जानों कि यह हमरा शिकार करेगा· तुं मुझ से इतना क्यों डरते हो· अगर यह मकान तुम्हारा है· तो तुम्हें ही· मुबारक रहे· शोक से आगरा करो· कफ़ तारों ने कहा कि आदमी को मुरव्वत से क्या काम· तू हम से छल न कर चलाजा नहीं तो दुख पावेगा· और मारा जा यगा· हातिम ने कहा कि अरे पशु परमेश्वर के लिये जै- से अपने प्राण जानते हो· वैसे ही दूसरे के भी जानो यह क्या अन्याय है· कि गीदड़ के बच्चे मार के अपना पालन करो वोह बोला क्या तू गीदड़ का हिमायती हो के हम से लड़ने को आया है·हातिम ने कहा परमेश्वर की सौगंद है· मैं उन का हिमायती बन के नहीं आया हूं· केवल बिन ती करता हूं· कि तुम उस के बच्चे खाना छोड़ दो और परमें श्वर से डरो· वोह बोला कि अरे मनुष्य तू उन का सोच क्या करता है कोई क्षण में तेरी भी वही दशा होती है· इस बात को सुनते ही हातिम ने कहा कि बच्चों के बदले मुझे खा पर उन बच्चों को खाना छोड़ दे वोह बोला उन को तो खाता ही हूं ॥

दश्त हवेदा को अकेला जाय तू उस का साथ न दे इस
तके सन्ते ही वह दौड़ा और पुकार के कहने लगा कि हातमभी
तेरे साथ दश्त हवेदा को चलूं था उसने कहा है परन्तु मैं ते
तेरे एक उपकार से सिर नहीं उठा सक्ता दूसरा बोझ क्यों
कर लूं और अपने लिये तुझे तेरे घर से बाहिर ले
जाऊं परमेश्वर के लिये इन बातों को छोड़ यह
मुझ से कभी नहीं हो सकेगा जो तू साथ दे नहीं
पर मरता है· तो यही बड़ा उपकार है कि मुझ सी
धा रस्ता बतादे उसने कहा कि रास्ता शीघ्र पहुंचने
का है· उस में बड़ा क्लेश है· दूसरा रास्ता बहुत दिनों
में पहुन्चने का है· परन्तु इस में इतना खटका नहीं
है· मैं इस लिये तेरे साथ चला चाहता हूं कि उन को
बतादूं आगे तेरी इच्छा· उसने कहा कि परमेश्वर·
शीघ्र पहुंचने के रस्ते के क्लेश मुझ को सुख दायक
करेगा तब गीदड़ ने कहा कि जो रस्ता तेरे आगे आता
है· वही शीघ्र पहुंचने का है· जो जीता बचेगा तो
दश्त हवेदा में जा पहुंचेगा· हातम उस को विदा·
करके चला· बहुत दिनों में एक चौराहा दिखाई
दिया· यह वहां खड़ा हो सोच ने लगा कि अब मैं कि
धर जाऊं इस बन में रीछ राज करता है· सब रीछ ही रीछ
हैं· इतने में सौ दो सौ रीछ चलते फिरते वहां आये· हा
तम को देखते ही अति प्रसन्न हुये· और पकड़ के अप
ने राजा के पास लेगये वोह देख के बहुत प्रसन्न हो
कहने लगा कि तुम हमारे पास बैठो और अपना·

मैं किस आपदा मे पड़ा अब मैं क्या करूं एक काम के
अपने शहर से निकला हूं जो यहां व्याह के रैन चैन
गा तो वहां मुनीर शामी मेरी बाट देख २ मर जाय
परमेश्वर को क्या उत्तर दूंगा रीछों के राजा ने
फिर सोच में देख के कहा कि जो तू इस बात
मानेगा तो कभी न छूटेगा ऐसे ही बंधे बंधे म
जायगा वोह यह बात भी सुन के न बोला न सिर उठा
के देखा तब रीछ राजा ने क्रोध कर अपनी जाति वालों
से कहा कि इस को उस गड्ढे मे डाल दो और एक पत्थर
की सिला उस के मुंह पर रख दो और चौकस रहो इस बात
के सुन्ते ही कितने ही दौड़े और हातम को उस अंधेरे ग-
ड्ढे में भूखा प्यासा दुखी था सात दिन्में रीछ राजा के पास
बुलवा के बैठला और समझा के कहा कि हातम मेरी
बेटी को अंगीकार कर वोह फिर भी सिर झुकाय रहा
कि और उस बात को मन्में न लाया तब उस ने वो एक
थाल मे के का उस के आगे धरा वह भूखा तो था ही सह
सा खाने लगा तब उस का पेट भरा तब उसने कहा कि
उसी परम सुन्दरी के साथ व्याह कर और जोबन का
आनन्द ले हातम ने कहा कि मुझ से कभी न होगा म-
नुष्य का पशु से क्या मेल उस ने फिर रीछों से कहा कि
उसी गड्ढे में डाल दो उन्हों ने वैसा ही किया ॥
यह कैई दिन उस गड्ढे में बे अन्न जल रहा एक दिन रात
को वो अध मरा सुपनु में क्या देखता है कि एक बुड्ढा आर

हातम ने उस व्याह के पलंग पर सुख चैन से आनन्द किया ऐसे ही उस परम सुन्दरी चन्द्र मुखी के साथ रहा करता और भांति २ के मेवे खाता निदान यहां तक मेवे खाये कि जी घबरा गया तब उकता के एक दिन अपने ससुर के पास गया और कहने लगा कि महाराज मैं मेवे से जी घबरा जाता है जो कुछ अन्न मिले तो जी भरे और मन लगे उसने उसी समय अपने रीछों को बुला के कहा कि तुम सब भांति का अन्न और घी और चीनी आदि और बासन गांवों और शहरों से ले आवो इस बात के सुन्ते ही दौड़े और शहरों से धान और मनुष्यों के भोजन योग्य सब वस्तु ले आये भांति भांति के खाने पकवाये और अपनी स्त्री के पास बैठ के खाये जब इसी प्रकार खाते और आनंद करते तीन महीने बीते तब उस ने एक दिन अत्यंत प्यार समय अपनी स्त्री से कहा कि जानी मैं अपने घर से एक काम के लिये निकला था तेरे बाप ने मेरा व्याह तेरे साथ कर दिया जो तू प्रसन्नता पूर्वक कुछ दिन के लिये बाप से मुझ को बिदा दिलवा दे तो मेरे ऊपर बड़ी दया करे जो मैं उस काम से छुट्टी पाऊं गा और जाता रहूंगा तो फिर तुझ से आ मिलूंगा वो इस बात के सुन्ते ही अपने बाप के पास गई और कहने लगी कि बाबा जान वोह ऐसी बात कहते हैं उसने कहा कि जो तू इस बात में प्रसन्न है तो तू उसी की

दूसे सुख का मोती ले निकला ऐसेही अपने मन की धीर्य देता था अगले महात्मा ओं की आपदा को ध्या न में लाता था. कि परमेश्वर बड़ा कृपालु है मेरा भी दुख दूर करेगा इसी विचार में तीन दिन तक उस के पेट में फिरा और इधर उधर रस्ता तौ क-हीं पाया नहीं पर उस अजगर का विष उस को न व्यापा उस का यह कारण था कि चलने के समय उस की स्त्री ने पगड़ी में जो मोहरा बांध दिया था उस का यह गुण था कि जिस के पास रहे तब. वह आग में जले न पानी में डूबे न विष विसको व्यापे इसी से वह जीता रहा. और उस का विष उ-से न व्यापा तीन दिन पीछे वोह अजगर घबरा-या और अपने मन में कहने लगा कि यह मैंने क्या खाया जो पचता नहीं और पेट में दौड़ा फिरता है. निदान वोह अपने पेट के दुःख जैसे घबराता. था. और हातम उस के पेट में चैन न लेता और दौड़ता फिरता और उस की अतड़िओं को अपने पैरों से लपेट के दौड़ता निदान उस ने जाना कि यह खाना सब दिन का खाया पीया निकालेगा इस बात को जी में समझ के उगल दिया तब हा-तिम बाहिर निकल पड़े और कपड़े सुखाने लगा जब वै सूख गये तब वहां से चला थोड़ी दूर गया था कि एक तालाव देख पड़ा यह सहसा दौड़ के उस के किनारे जा बैठा और अपने कपड़े धोने

और सुखा के आगे चला बड़त दिनों में एक ऐसे पहा
ड़ पर पहुंचा कि जिस पर हज़ारों वृक्ष हरे हरे भांति
भांति के मे - वों से लदे कोसों तक लहलहाते थे. औ
र सैकड़ों सुथरे मकान चमक रहे थे. और जगह जग-
ह नहरें बहती और फूली ड़ई फुलवारी शोभा दे रहीथी
. जो जगह थी सो सुहावनी थी यह . थका मांदा तो थाही
सो रहा इतने में जिस का मकान था वह आ पहुंचा देखा
तो एक परम सुन्दर तरुण मनुष्य अचेत सोता है. वोह
पास आ बैठा हातिम कुछ देर में जागा तो आंखे मल के क्या
देखता है कि एक मनुष्य बैठा है उस को देखते ही घब
राया . और उठके सलाम किया उस ने पूछा कि तू कोन
है. और कहां जायगा और इस जंगल में किस काम
के लिये आया है . हातिम ने कहा कि मैं दश्तह बैदा को
जाऊंगा भला ड़आ . कि जो आप के भी दरशन ड़ए आ
गे जो परमेश्वर की इच्छा उसने कहा कि तू उस महा
कठिन मनोर्थ को अपने मन से दूर कर मुझ को यह सोच
होता है कि तेरे मित्रों में ऐसा शुभचिंतक होई न था
जो तुझ को रोकता उसने कहा कि मैं कुछ अपने प्र-
योजन के लिये नहीं जाता हूं. मैंने परमेश्वर के हेत
साहस किया है . और ढूंढने के मार्ग में परिश्रम का
पांव रक्खा है आगे जो परमेश्वर करै मुनीर शामी खवा
रज़्म का शाहज़ादा बरज़ख सौदागर की बेटी ड़स्न बा-
नू पर आशिक ड़आ है. और वोह सात बातें कहती

सुकमारी चन्द्र मुखी आवैगी · जिस के देखने से तेरा मन तेरे हाथ न रहैगा और विवस हो जायगा · परन्तु मैं स्वर के लिये कही धीर्य न छोडना और चंचलता न करना वोह जब तेरा हाथ पकड़ैगा उसी समय तू दश्तह बेदाद्ह को जा पहुंचैगा · जो सात दिन तक उस्से कुछ काम को कहैगा तो अपने जीते जी लज्जित रहैगा · वे इसी बातों में थे कि एक तरुण मनुष्य दो कटोरे खीर और पानी के अपने हाथों पर धेरे आकाश से उतरा और उन के आगे रख दिया जब दोनों ने पेट भर खाया और परमेस्वर का धन्य वाद करके रात काटी हातिम प्रभात
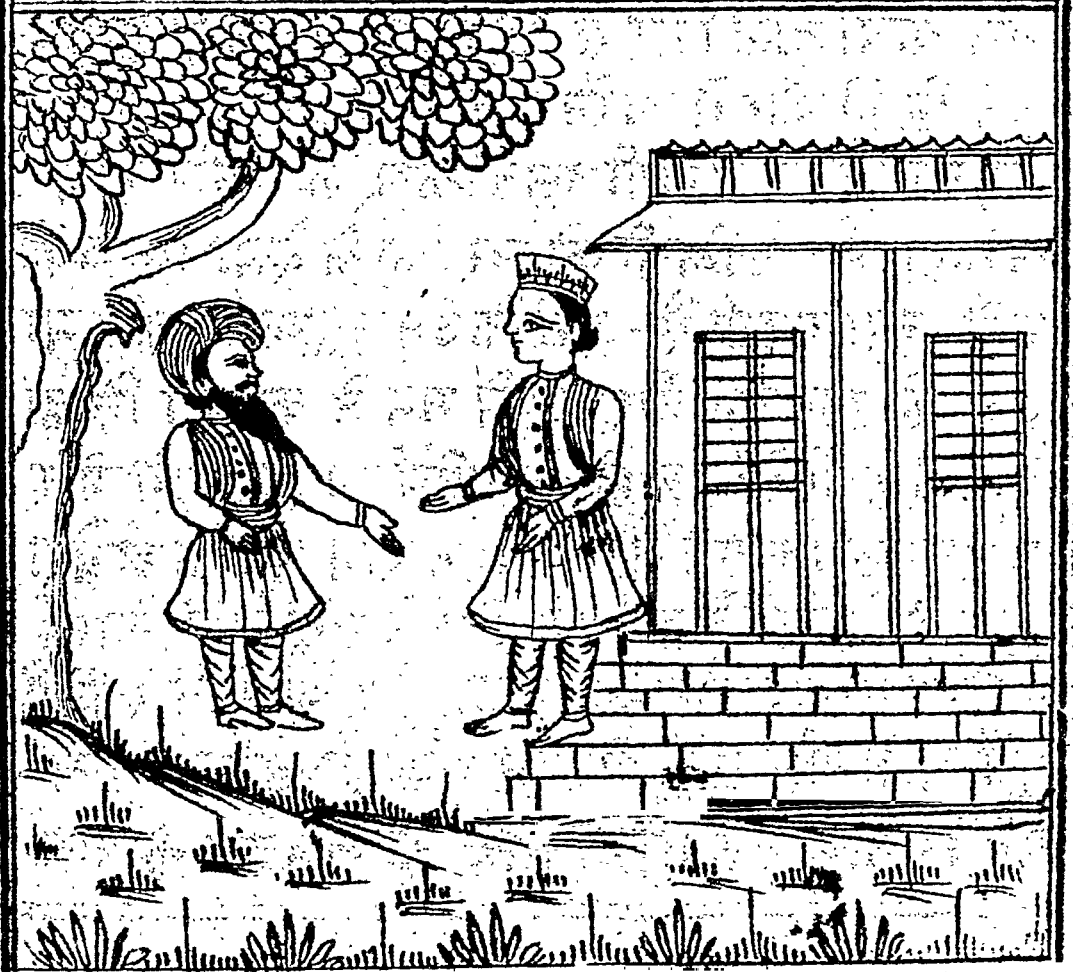
पहुंचा तो वै सब की सब दीवार की तसवीरें होगईं
और हज़ारों अपसरा उस महल की दीवार से ॥
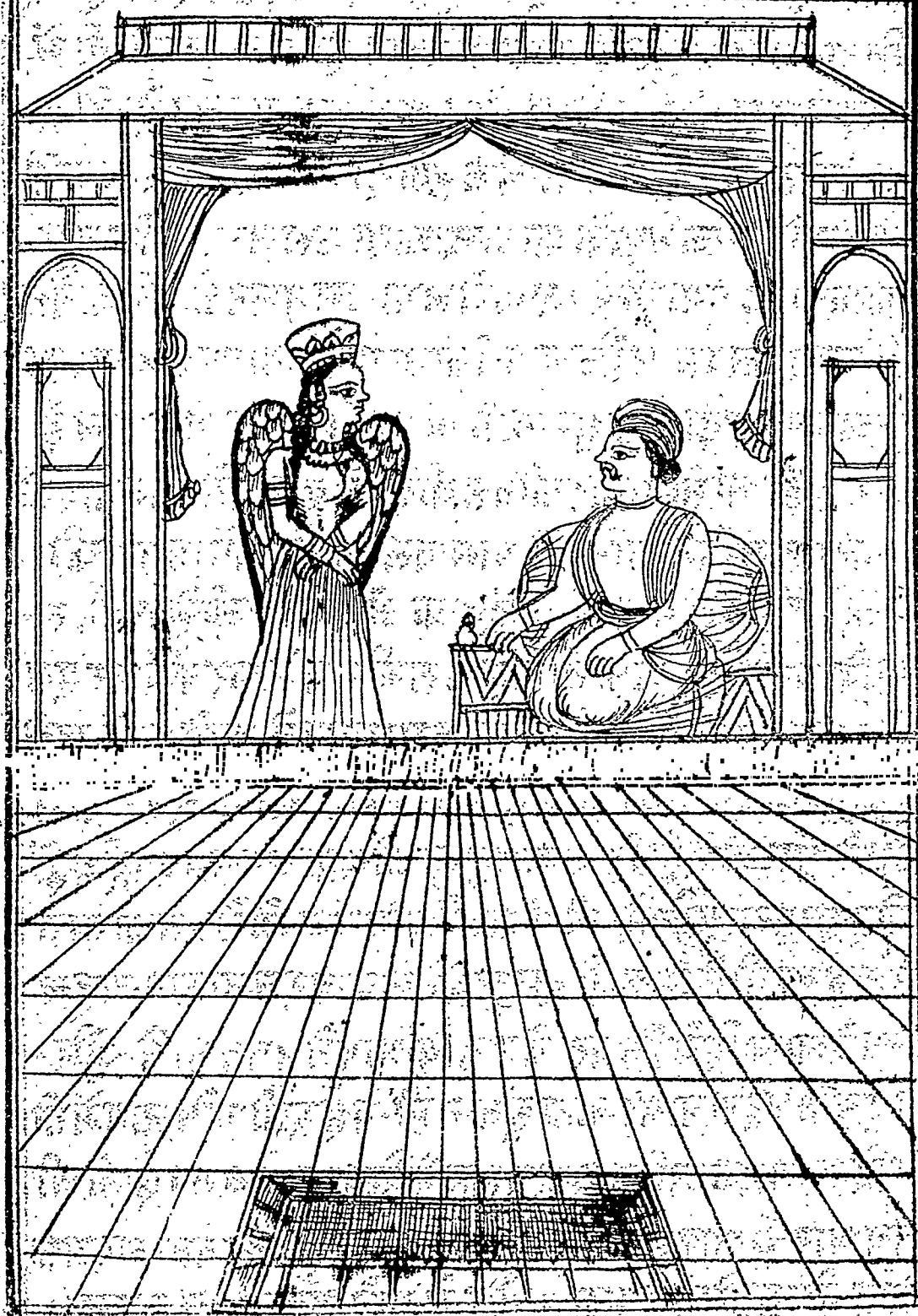
चला आता था · और जो वे दीवार की तसवीरें थी सो संदेह हो
के नाचती थी · और वोह सुन्दरी तख़्त के आगे खड़ी देखती
थी और मुसकराती थी · और भांति २ के मेवे हातिम के आ
गे धरे थे वोह कितनाही खाता पर पेट भरता नहीं बड़े अचं
भे में होके कहता कि परमेश्वर मैं इतना खाता हूं पर तृप्त न
हीं होता यह क्या कारण है · निदान ऐसे ही तीन दिन बीत गये चौ
थे दिन उस के जी में आया कि जो मैं जन्म भर यहां रहूंगा तो इस
में वैसे तृप्त न होगा और न यहां से निकलूंगा · और मुनीर शामी
को जो भरोसा देके आया हूं जो उस को कुछ हो जायगा तो परमेश्व
र को क्या उतर दूंगा · यह जी में सोच ज्यों सुकुमारी का हाथ पकड़ा
त्योंही और एक चंद्र मुखी तख़्त के नीचे से निकली उस ने हा
तिम के एक ऐसी लात मारी कि कहीं का कहीं जा पड़ा और वह
सिर उठा के जो देखा तो न वह सुकुमारी है · न वोह तख़्त और न
वोह बाग़ दिखाई दिया · एक बहुत बड़ा सुन्नसान जंगल देखा
जिस का आर न छोर तब उसने जाना कि दश्तह वेदाह यही है
और वोह मनुष्य यही होगा जो कहता है · कि एक वेर देखा
दूसरी वेर देखने की अभिलाष है · अब उसे ढूंढिये इसी विचार
में इधर उधर फिरता था · इतने में किसी ओर से यह शब्द उस
के कान में आया कि ब्वेर देखा दूसरी वेर देखने का अभिलाष
है · ऐसे ही दिन भर में तीन २ वेर सात दिन तक यह शब्द वार २
उस के कान में आया · किया जब आठवें दिन सांझ समय २
वह शब्द उसके कान में आया · तब उसी ओर दौड़ गया तो क्या
देखता है · कि उजली दाढ़ी का एक मनुष्य धरती पर बैठा है ·

उसे अपने मन से भुलाऊं पर वोह नहीं भूलती यह कह के उसने चिल्ली मारी और हाय हाय कर ठंडी सांस ले बगूले के समान धूर सिर पर डाल उस जंगल में दौड़ने लगा और यही कहता था के एक बेर देखा है दूसरी बेर देखने का अभिलाष है तब हातिम ने जाना कि यह आशक है और कहा कि जो तुम उस तमाले को देखो तो प्रसन्न हो उसने कहा कि यह बात कठिन है यद्यपि मैं रात भर धरती में माथा रख यही मांगा करता हूं कि हे बिछड़ों के मिलाने वाले मुझ को मेरी प्यारी से मिला दे पर कुछ नहीं होता हातिम ने कहा कि तू मेरे साथ चल मैं तुझे दिखा दूंगा इस बात को सुनके वोह हातिम के साथ हो लिया कुछ दिन पीछे चले २ उस वृक्ष के नीचे आये जो के उस तलाव के पास था वहां पर पहुंचे हातिम ने उस बूढ़े मनुष्य से कहा कि जो तू उस कान्ता को सदा देखा चाहता है तो कभी उस का हाथ न पकड़ना और न उस का घूंघट उलटना तो वह सदा तेरे आगे हाथ बांधे खड़ी रहेगी और जो उस का हाथ पकड़ेगा तो फिर आपको उसी जंगल में देखेगा और फिर उस मकान में कभी न जा सकेगा मैं जो मकान में आया तो एक ख्यालवान मनुष्य की शिक्षा थी नहीं तो यहां आने की मेरी क्या मजाल थी अब तू आगे जा वही तालाब है इस बात के सुन्ते ही वह विरह का मारा उस तालाब पर पहुंचा इतने में एक स्त्री नंगी उस पानी में से निकली और उस का हाथ पकड़ पानी में ले गई और हातिम शाहाबाद की ओर चला बहुत दिनों में आप दाकलेश सहता उस फ़कीर के पास आया और उससे मिल के वहां से भी चला फिर थोड़े दिनों में उस मछली के घर पहुंचा और महीना भर वहां रहा फिर वहां से बिदा हो रीछों के जंग

के पास जाना जिसने अपने द्वारे पर लिख रक्खा था कि भलाई कर और समुद्र में डाल और उस के समाचार लाने का वर्णन

हुस्न बानू ने कहा कि दूसरी बात यह है कि एक मनुष्य
ने अपने द्वारे पर लिख के लगा दिया है कि भलाई कर और
समुद्र में डाल इस्का क्या भेद है और उसने ऐसी क्या भ-
लाई की है उस के समाचार ला इस बात के सुनते ही हाति-
म उठकर खड़ा हो पूछने लगा कि वोह कौन है कि उस की
जगह उत्तर की ओर है यह बात सुन ईश्वर के भरोसे पर
चल दिया बहुत दिन बीते एक भयानक बन में जा पहुं-
चा और सांझ समय एक वृक्ष के नीचे चुप चाप बैठ रहा
इतने में दुख भरा रोने का ऐसा शब्द किसी ओर से उस को सु-
न पड़ा कि जिस्के सुनते ही उस की आंखों में आंसू भर आये
॥ और कलेजा जलने लगा सहसा जी में कहा कि यह बात शू-
रों को अनुचित है ॥ कि एक मनुष्य आपदा में पड़ा रोवे औ-
र तू उस की सहाय न करै ॥ और उस का वृतांत न पूछे यह
बात मन में ठहराय उसी ओर चला थोड़ी दूर चला होगा कि
वहां जा पहुंचा जहां से रोने का शब्द आता था क्या देखा
कि एक परम सुंदर तरुण मनुष्य अपने कोमल कपोलों पर २
आंखों की सीपों से आंसू के मोती बहा रहा है और व्याकुल २
हो कराह २ यह कहता है ॥ कि मेरे मित्रो मैं कहां जावों और
किस्से कहूं मेरे दुःख का वृत्तांत तुम्ही विचार देखो कि जो
मुझ पर बीते हु उस में लिख नहीं सकता और कह भी नहीं स
कता के मेरी जबान लाल है ॥ हातिम ने कहा कि तुझ पर ऐसा

कहां तक कहे। दूसरी बात यह है कि शुक्रवार की रात को जंगल से एक शब्द आता है कि मैंने वह काम नहीं किया जो आज की रात मेरे काम आता तीसरी बात यह है कि जो मोहरा सांप के पेट में है उस को मुझे लादे इस बात के सुनते ही रही सेरी बुद्धि जाती रही मैंने जो पैर खेंचा मेरा धन रत्न और सब संपदा लूटली और मुझ को अपना शहर से बाहर निकाल दिया मैं विवश हो इस जंगल में आ पड़ा एक तो संपदा गई दूसरी बदनाम हुआ तीसरे प्रीति का तीर कलेजे पर हुआ साथियों ने साथ छोड़ा मैं भिखारी होगया हातिम ने कहा कि तू धीर्य धर मुझे उस शहर में ले चल तेरी वस्तू भी तुझे दिलवा दूंगा और तेरी प्यारी से भी मिला ओंगा उस ने कहा कि प्यारे जो वह हाथ लगे तो मैं धन रत्न की चिन्ता नहीं करता क्योंकि कहते हैं प्यारे का देखना ही असंख्य धन है हातिम उस प्रीति के बावले को साथ ले शहर में आया और सराय में उतरा और सौदागर को बैठा आप उस के द्वारे पर गया और कहा कि मैं व्याह करने आया हूं द्वारपालों ने कहा कि एक मनुष्य तुझे व्याहने आया है उस ने सुनते ही परदा डाल हातिम को घर में बुला के जो बचन उससे लिया था सो इससे भी लिया तब हातिम ने कहा कि तू हारस सौदागर की बेटी है जो इस बात पर हाथ मारे और बचन दे कि जिस दिन परमेश्वर की कृपा से यह काम पूरा करूं उस दिन जि-से चाहो उसे दे दो तो तेरी बातों के लिये परिश्रम करूं उस दिन जिसे चाहो तुझे दे दूं तो तेरी बातों के लिये परिश्रम करूं उसने कहा बहुत अच्छा तब हातिम ने कहा कि अपने बाप को बुलवा उस-ने हारस को बुलवा लिया हातिम ने ये बातें उससे कहीं उसने भी

तुम इसे खड़ा लोगे तो समाचार राजा को पहुंचे गा तो तुम सबों को मार डाले गा यों उचित है कि इस को यहां न छोड़ें राजा के पास ले चलें उन्हों ने कहा कि हमारा वैरी ऐसा कौन है जो राजा से कहेगा उसने कहा कि यह क्या कहते हो आपुस ही में बहुत वैरी हैं यह मेरी बात स्मरण रहे उचित यही है कि तुम सब इस्से हाथ उठाओ इस बात को सुन के वे डरे और उस को छोड़ अपने घर चले गये हातिम ने उस जगह से पांव बढ़ा के एक ओर का मार्ग लिया इतने में उसे एक गांव देख पड़ा उसने जाना कि इस में मनुष्य बसते होंगे यह समझ आगे गया तो बहुत से देवों ने आके चारों ओर से घेर लिया और उस के खाने का विचार किया उन में भी एक ने कहा कि इस को तुम न खाओ और जीता राजा के पास पहुंचाओ क्योंकि उस की बेटी बहुत बेचैन है कदाचित इस की ओषधी से अच्छी हो जाय उन्हों ने कहा कि तू क्या कहता है हम तो सैकड़ों मनुष्यों को ले ले गये और लज्जित हुवे हमें क्या आवश्यकता है जो लै जावें राजा के राज्य में तो आही पहुंचा है अब कहां जासकेगा कोई न कोई राजा तक पहुंचा देगा॥ हातिम वहां से भी आगे बढ़ा उस को एक गांव फिर देख पड़ा वहां के देव उस को अपने सरदार के पास ले गये उस सरदार की स्त्री की आंखें दुखतीं थीं और आठों पहर पानी बहा करता उस सोच से सरदार सिर झुकाये बैठा था उसने हातिम को देखते ही सिर उठा के उन से कहा कि तुम अपने बाप को क्यों लाये चलो मेरे सामने से दूर हो और इसे छोड़ दो यह जहां चाहे वहां चला जाय हातिम ने उसे बड़े सोच में देख के पूछा कि तुम को किस बात-

यहां होते हैं हातिम ने कहा कि आज मैं भी यहां बना रहूं-गा वह बोला बहुत अच्छा इतने में भांति २ के व्यंजन उस के साम्हने रक्खे गये उसने चाहा था कि उस पर हाथ डाल के कुछ भोजन करैं हातिम ने कहा कि महाराज थोड़ी देर ठहर जाइये वह रुक गया तब हातिम ने एक वासन पर से ढकना उठाय और सब को दिखा के बंद कर दिया एक क्षण में कहा कि उसे खोल के देखो जो खोल के देखा तो वह वासन कीड़ों से भरा था राजा यह चरित्र देख अचंभे मे हो कहने लगा कि यह क्या कारण है हातिम ने कहा कि यह देवों की दृष्टि का कारण है आप अकेले स्थान में भोजन किया करें जिस में यह न देखें उसने वैसा ही किया उस दिन में पेट में पीर न हुई तीन दिन में सब भांति से अच्छे होगये तब हातिम से कहने लगा कि मुझ से क्या चाहता है मांग उसने कहा कि मनुष्य हूं मेरे भाई तेरे यहां कैद है उन को छोड़ दे तो बड़ी कृपा करै इस बात के सुनते ही राजा ने उस को बुलवा के उत्तम वातें दे प्रसन्न कर कुछ राह खर्च दे विदा किया फिर हातिम से कहने लगा कि मेरा एक और है जो तू माने हातिम ने कहा कि आज्ञा कीजिये मैं तन मन से करूंगा राजा ने कहा कि मेरी बेटी बहुत दिनों से वेरान है उस को देख के कुछ उपाय करो तो मैं बहुत ही गुण मानोंगा इस बात के सुनते ही हातिम उठ खड़ा हुआ राजा अपने साथ महल में आया हातिम ने उस लड़की को देखा कि बहुत दुबली होरही है और रंग भी पीला पड़ गया है फिर हातिम ने कहा कि थोड़ा शरबत बना लाओ जब शरबत आया तो उस लोहे

कोसुना के कहा कि एक बात मैंने पूरी की दूसरी कहो उसने क
हा कि शुक्र की रात को एक शब्द सुनाई देता है कि वह काम
मैंने नहीं किया जो आज की रात मेरे काम आता यह सुन हाति
म वहां से विदा हो जंगल को चला कुछ दिन में वोह शब्द उस
के कान में आया यह उस के खोज में रात दिन फिरने लगा कि ए-
क गांव दृष्टी पड़ा वहां के लोग रोते पीटते थे यह आगे बढ़ के
उन मनुष्यों से पूछने लगा कि तुम सब के सब क्यों रोते पीटते
हो किसी ने कहा सातवीं तारीख़ वृहस्पत के दिन एक बड़ा रा
क्षस आता है और एक मनुष्य को खाजाता है जो उस समय
वोह किसी को न पावे तो सब शहर उजाड़ दे अब के रईस के
लड़के की बारी है इस लिये सब रोते हैं यह बात सुन हातिम
उस रईस के पास गया और उसे धीर्य दे कहा कि तू चिंता न क
रो तुम्हारे बेटे के बदले मैं जाऊंगा वोह हातिम इस साहस को
सराह के बोला कि अब उस के आने में चार दिन रहे हैं हातिम ने
कहा कि उस का आकार कैसा है जो किसी ने देखा हो तो मुझे
बतला वे रईस ने उस का आकार धरती पर खींच के दिखा-
दिया हातिम ने कहा कि इस का नाम हलूका है न किसी से मा
रा जायगा न किसी की चोट खायगा जो मेरा कहना मानो तो
मैं तुम्हारे सिर से यह उत्पात टालूं जैसे बने वैसे उस को मारों
यह सुन वह प्रसन्न हो कहने लगा क्या आज्ञा करते हो हातिम
ने कहा कि तुम्हारे शहर में कोई शीशागर भी है उसने कहा कि
जितने चाहिये उतने हैं, फिर हातिम और रईस शीशागरों
की दूकान पर गये और कहने लगे कि आज के दिन समेत
चार दिन में एक आइना दो सौ गज लम्बा और सौ गज़ चौड़ा

तब मुहों से निकलती है उस गांव के रहने वाले जो कोस दो२
कोस दूर खड़े तमाशा देखते थे डर के भाग गये हातिम ने जब
देखा कि वह आपहुंचा तब चादर को आईने के ऊपर से उठा
लिया हलूका ने जो अपना शरीर देखा तो सांस खींच के ऐसी
चीख मारी कि उस गांव और जंगल की धरती हिल गई और
सब को मूर्छा आई निदान उस की सांस यहांतक खिंची कि
पेट फट फटा गया तब वैसाही एक भयानक शब्द जंगल में फिर
हुआ तो रहे सहे भी अचेत होगये जब वोह लोग सावचेत
हुए तो क्या देखते हैं कि हलूका मरा पड़ा है और उस के पेट
की गंदलाई से सारा जंगल भर गया नीले पानी की नदी बह
ती है तब रईस और उस का बेटा प्रजा समेत हातिम के पैरों में
गिरे और लगे पूछने कि तुम उस से कैसे बचे और वह कैसे मारा
गया तब हातिम ने कहा कि उसका नाम हलूका था वोह किसी
से भी न मारा जाता परन्तु यही उपाय था कि आप ही को देखे
किसी और को न देखे तब क्रोध से इतनी सांस खींची कि पेट
फूल के फट गया इस बात के सुनते ही उन्होंने अपने२ योग्य भांति
का धन रत्न लाके उस के आगे रक्खा और हाथ जोड़ बिनती
करके कहा कि इस को अंगीकार करो तो हमारा संतोष होवे हा
तिम ने कहा कि मैंने इस रत्न के लालच से यह काम नहीं किया
मैं तो परमेश्वर के हेत ऐसे काम करता हूं और बहुत दिनों से
ऐसेही कामों को करता हूं फिर उन्होंने पूछा कि आप का नाम
और आना यहां पर कैसे हुआ हातिम ने कहा कि गाज मुकप
है मैंने यों सुना है कि इस जंगल से एक शब्द ऐसा पाता है कि
मैंने वोह काम न किया कि आज की रात मैं काम आता इस बात

आया है उनमें से एक उठा और हातिम को ला एक मसनद पर बैठाल
के थाल उस के आगे रख दिया हातिम ने उस की ओर देखा जो मैल
कुचैला उन से दूर बैठा था कराह रहा था और एक थाल उस के भी
आगे धरा था उस में एक कटोरा थूहड़ के दूध का कंकरियों से भरा
हुआ और एक कटोरा में पीब रुधिर भरा हुआ था यह देख हा
तिम सिर झुका के खाना खाने लगा और उस की ओर देखने लगा ह
तने में सब खा चुके तब हातिम ने उन से कहा कि मैं आप से कुछ
बिनती किया चाहता हूं जो आज्ञा हो तो कहूं उन्हों ने कहा कि कहे
तब हातिम बोला कि यह क्या कारण है कि तुम मसनदों और गद्दि
यों पर बैठे ऐसे स्वादिष्ट खाने खाओ और यह दुखियारा कंकरि
ली पर बैठे थूहर का दूध पिये उन्हों ने कहा कि हम इस भेद को
नहीं जानते तू उसी से पूछ हातिम वहां से उठ के उस के पास गया
और कहने लगा कि तू ने ऐसा क्या पाप किया जो इस दुःख में पड़ा
परमेश्वर के लिये कुछ तो कह वह इस बात के सुनते ही आंखों
में आंसू भर के कहने लगा कि मैं उन्हीं लोगों का सिरदार हूं मे
रा नाम यूसफ़ सौदागर है और सौदागरी के लिये शहर ख़वारज़्म
को जाता था कृपण भी ऐसा था कि कभी परमेश्वर के हेत कौड़ी पैसा
दाना पानी कपड़ा लत्ता न आप दिया न किसी को देने दिया जो कोई
नौकर चाकर मेरी चोरी से किसी को दे देता और मैं जान जाता तो
उसे रोकता कि अपना धन क्यों खोता है बहुधा गुलामों को पुन्य
करने पर मारता वे कहते कि हम परमेश्वर के हेत देते हैं कि यह
परलोक में हमारे काम आवेगा मैं उन पर हंसता जब वे सिखाते
तब मैं न सुनता और कुछ भी न मानता एक दिन चोर आ पड़े हम सबों के
लूट मारा और यहीं गाड़ दिया उन्हों ने अपने दातव्य से ऐसी पदवी पा

मुंह निकाल उस मनुष्य की कमर पकड़ कुएमें खींच लिया यह देख हा
तिम हाथ मल मल के कहने लगा कि हे दुष्ट तू ने यह क्या किया जो तू
स परदेसी को ले गया वहां उस के बाल बच्चे यह आशा करते होंगे
कि बाबा जान हमें कुछ खर्च भेजेंगे वा आपही लिये आते होंगे तूने
यहां उस के प्राण ही लिये फिर अपने जी में समझ कर कहने लगा कि हा
तिम बड़ा सोच है कि तू यह दशा अपनी अपनी आंखों से देखे और
उस की सहायता न करे तो परमेश्वर को क्या मुंह दिखावेगा और संसा
र में तेरा नाम क्या रहेगा यह कहि के कुए में कूद पड़ा और थोड़ी दूर चल
गया जब पैर धरती में लगे तब आंखें खोल के देखा तो न वह कुआ है और न
वह पानी एक जगह बहुत चौड़ी सुथरा वृक्षों से हरी भरी लहलहाती प
ड़ी और उन वृक्षों में एक सुथरा महल चमकता दिखाई दिया यह उस की
ओर चला और जी में कहता था कि उस मनुष्य को वोह कहां ले गया और
यह सब कहां से उपजा इसी सोच में उस महल के पास पहुंचा तो क्या देख
ता है कि अच्छा महल और सवारी हुई बैठक जगह २ बनी हैं एक मका
न में बिल्लौर का तख्त बिछा है उस के नीचे वहां एक लम्बा मनुष्य रस
समान सोता है उस को देख वहां गया और कहा कि थोड़ा आगे जाके दे
खिये कि मकान में ए कौन है जब पास पहुंचा तब उस के सरहाने ख
ड़ा हो जी में कहने लगा कि जब यह उठेगा तब इस से वृतान्त पूछूंगा
इतने में वही सांप मुसाफिर को किसी जगह बाग में छोड़ हातिम की ओ
र लपका हातिम ने मुसाफिर के कारण क्रोध भरा तो था ही उसे दोनों हा
थों से पकड़ ऐसा दबाया कि वह चिल्लाने लगा उस के चिल्लाने से दे
व चौंक पड़ा और पुकारा कि तू क्या करता है यह मेरा पेट है छोड़ दे
हातिम ने कहा कि जब तक मुसाफिर को न छोड़ेगा तब तक मैं इसे न
छोड़ूं यह बात सुन देव ने सांप से कहा कि सचेत हो मैं इसे न छोड़ूंगा

भीतर जाने लगा तो दरवानों ने रोका कि कहां जाता है पहले बादशाह से बातें करले फिर जहां चाहे तहां जाना हातिम ने कहा कि भाई तुम्हारे शहर का यह क्या चलन है जो मुसाफिरों को तो सबको दुःख आराम देता है तुम लोग कैसे हो जो क्लेश देते हो दरवानों ने कहा कि शहर का रास्ता चलने से रह गया है इसलिये कि यहां के बादशाह के एक लड़की है कि उसके सामने विदेसी को लेजाते हैं वह उससे तीन बातें पूछती है वोह उत्तर नहीं देतो प्रातःकाल उसे सूली देती है इसलिये इस शहर का नाम बेदाद नगर रक्खा है क्योंकि यहां कोई विदेशी जीता नहीं बचता निदान हातिम विवस हो उनके साथ बादशाह के पास गया और जी में यही कहता था कि वोह क्या पूछती जब यह बादशाह के सामने गया तब बादशाह ने पूछा कि तू कौन है और कहां से आया है और तेरा नाम क्या है हातिम ने कहा कि मनुष्य हूं चीन को जाता हूं मेरे नाम से तुम को क्या काम है और कहा कि ए बादशाह तेरे सिवा कोई भी मुसाफ़िरों को दुःख नहीं देता अपने यथा शक्ति सब का आस स्वास करते हैं इसलिये कि वोह भले कहलावें और जगत में उन का नाम भलाई में सूर्य्य के समान प्रकाशित रहे यह सुन बादशाह ने रोके कहा कि क्या करूं मेरे ऊपर एक गाजगिरी है पहले इस शहर का नाम अदलाबाद था अब दुर्भाग्य लड़की के अन्याय से बेदाद नगर प्रसिद्ध है यहां विदेशी मारे जाते हैं उनका पाप मेरे सिर पर है फिर हातिम ने कहा कि तू उसे मार क्यों नहीं डालता वोह बोला कि आज तक किसी ने लड़की मारी है जो मैं भी मार डालूं यह सुन हातिम आंखों में आंसू भर के कहने लगा कि तू विवस है तेरा कुछ वस नहीं परमेश्वर इस लड़की को तेरे सिर

काम तुझी से पूरा पड़ेगा क्योंकि तू भोजन का भार समझता है इतने में रा
त होगई सब दाई मामा छूछू लौंडी गुलाम नौकर चाकर महल से बा
हर गये दरवाज़े को अच्छी भांति बन्द करदिया यहपहर रात गये
वोह लड़की बावली की भांति कूदने लगी और बुरी २ बातें कहने ल
गी फिर हातिम की ओर देख के बोली कि तुझ को अपने प्राणों का ड
र नहीं है जो बिन जान पहिचान यहां तक चला आया भला अब जो
आया है तो हमारी बातों का उत्तर दे हातिम ने कहा कि वे कौनसी
बातें हैं उसने कहा कि पहली बात मेरी यह है कि वोह कौन बूंद है
जो प्राणधारी होके उपजता है हातिम ने सोच के उत्तर दिया कि वोह
भेद के समुद्र की बूंद है अर्थात् गर्भ है जो प्राणधारी होता है फिर हातिम
ने कहा कि दूसरी बात कह उसने कहा कि वोह कौनसा फल है जो
सब फलों से मीठा होता है हातिम ने कहा कि वोह बेटा है कि सब फ
लों से बहुत अधिक मधुर है फिर हातिम ने तीसरी बात पूछी वोह
बोली कि वोह कौनसी बस्तू है जो सब को दिखाई देती है हातिम ने
इस बात के सुन्ते ही कहा कि बीबी वोः मौत है जो किसी को नहीं छो
ड़ती इस बात को सुन लड़की ने आंखें नीची करलीं और कांपने ल
गी और कुरसी परसे गिर अचेत होगई इतने में एक काला सांप बड़ा भ
यानक वहां दृष्टि पड़ा और फन फला के हातिम की ओर लपका
वह जी में कहने लगा कि जो मैं इस को मारता हूं तो दुःख दाई ठ
हरता हूं जो नहीं मारता तो यह मुझे नहीं छोड़ता यह सोच के वो
ह मोहरा जो रीछ की बेटी ने दिया था पगड़ी से खोल अपने मुंह में रख
लिया और उस सांप को हाथ से पकड़ एक हांडी के अन्दर बंद कर छु
री निकाल अंगनाई में मनुष्य के डील भर गाड़ हा खोद गाड़ दिया और

लता था परमेश्वर की कृपा से यह ब्याधि तुम्हारे सिर से टली बादशाह बहुत प्रसन्न हो कहने लगा कि यह लड़की मैं ने तुम्हीं को और यही मेरा बचन था तुम्हें भी चाहिये कि अंगीकार करो हातिम ने कहा कि यह इस शर्त से है कि मैं जहां चाहूं वहां ले जाऊं कोई मुझे न रोके उसने कहा कि बहुत अच्छा जहां ते राजी चाहे वहां ले जा हातिम ने भी इस बात को माना फिर उसी घड़ी उस के बाप ने अपनी कुलरीति से लड़की को ब्याह के हातिम के साथ कर उस का हाथ हातिम के हाथ में पकड़ा दिया हातिम ने तीन महीने उसके साथ भोग बिलास में ब्यतीत कर दिये जब वह गर्भवती हुई तब हातिम वहां से रुखसत हुआ और कहा कि मेरी बात सुन कि मैं यमन का रहने वाला हूं और यह गर्भ तेरे घराने का है जो बेटा हो और यमन जाने का अभिलाष करे तो तू इस पते से उस को यमन में भेजना और बेटी हो तो किसी सुशील गुणी विद्यावान के साथ ब्याह कर देना और जो मैं जीता रहूंगा तो एक दफे तेरे पास अवश्य आऊंगा अच्छे प्रकार सुधि लूंगा ऐसी दो चार बातें उससे कह विदा हो थोड़े दिनों में चीन पहुंचा और वहां के रहने वालों पूछने लगा कि इस शहर में सौदागरों का मुहल्ला कहां है पूछते २ वहां जा पहुंचा और कहने लगा कि इस मुहल्ले में यूसफ़ सौदागर की हवेली कौनसी और उस के लड़के वालों में से कोई है लोग सुनते ही दौड़े और उसके लड़के वालों से कहा कि एक विदेशी कहीं से आया है सो तुम को बुलाता है इस बात को सुन वे दौड़ हातिम के पास आये हातिम ने कहा कि तुम्हारे बाप ने मुझ को भेजा है और एक संदेशा कहा कि यह सुनते ही सब लोग हंस पड़े और कहने लगे कि जा ना तू बावला है जो ऐसा बकता है उस को मरे बहुत वर्ष बीते इस बात के ऊपर मरते हैं कि उसने तेरे हाथ संदेशा क्योंकर भेजा हातिम ने कहा कि मित्रो मैं जानता हूं कि यूसफ़ सौदागर को हु

भाग कर के एक उस के लड़कों को दिया और तीन हिस्से हातिम को
देके कहा कि तू बड़ा सच्चा और धर्मवान है इस द्रव्य को अपने ही
हाथ से धर्म मार्ग में उठा हातिम ने थोड़े ही दिनों में उस द्रव्य को
उठा डाला भूखों को खाना नंगों को कपड़ा दरिद्रियों को द्रव्य
दिया कि सब के सब परिपूर्ण सुखी होगये फिर बादशाह से
बिदा हो शहर आदिलाबाद में आया अपनी स्त्री से मिला जो बे
टा हुआ था उस को देख प्रसन्न हो उस का नाम सालिम रक्खा
कई दिन में बिदा हो फिर जंगल को चला कई दिन में शहीदों के क
बरस्तान में पहुंचा तीन दिन में वहां रहा शुक्रवार की रात को वे
सब शहीद अपनी २ कबरों से और सुथरा बिछौना बिछा के
बैठे उसी समय वैसे ही खाने उन के आगे फिर उस के पीछे यूस
फ़ के आगे भी वैसा ही खाना रक्खा गया फिर हातिम उससे मि
ला और पूछा वह कहने लगा कि तुझे धन्य है इस उपकार का
फल परमेश्वर तुझ को देवे सच तो यह है कि एक सूरवीर सत्य
वादी तू ही देख पड़ा तेरी ही सहाय से मुझे यह पदवी मिली जो उ
स दुःख से छूटा और इन के सामने चिल्लाने से बचा खाना पीना
तो उन्हीं सब का सा मुझे पहुंचता है परमसनदे और कपड़े उनके
अच्छे हैं क्योंकि उन्हों ने जीते जी अपने हाथ से पुन्य किया और
मैं ने मरने के पीछे बहुत दुःख सहि के तब भी परमेश्वर की कृपा
अब प्रसन्न हूं ईश्वर तुम को इस उपकार उत्तम फल देगा प्रा
तःकाल हातिम वहां से बिदा हो एक जंगल में जा पहुंचा वहां
एक बुढ़ी स्त्री भिखारियों की भांति बैठी भीख मांगती थी हाति
म ने अपने हाथ से हीरे की अंगूठी उतार उसे दे दी और अपने
प्रयोजन के आगे चला इतने बुढ़िया ने पुकार के कहा कि ऐ बे

परमेश्वर परम कृपालु दीन दयाल है उसने तुझे यहां पहुंचाया है
तो यह युक्ती सून्य नहीं है तू नहीं जानता कि यहां बहुत साधन ग
डा है परमेश्वर ने यह संपदा तेरे ही लिये छिपा रक्खी है अब उठ
और ले हातिम ने कहा कि मैं अकेले क्योंकर लूं और कहां लेजा
ऊं वह बोला कि कल्ह दो मनुष्य यहां आवेंगे और तुझे इस अंधेरे
कुएमें से निकालेंगे चाहिये कि तू और वे मिलकर यह धन
निकालना हातिम ने प्रसन्न हो परमेश्वर का धन्यबाद किया इतने
में प्रातःकाल हुआ थोड़ी देर में दो मनुष्य उस कुए पर आये औ
र पुकार कर कहने लगे कि हातिम जो जीता है तो बोल उसने कहा
कि अब तो जीता हूं तब उन्हों ने हाथ बढ़ाकर कुएमें डाले और क
हा कि तू हमारे हाथ पकड़ के चढ़ आ हातिम उनके हातिम उनके
हाथ पकड़के बाहर निकला और उसने उनसे मिलकर कहा कि य
हां बहुत सा धन गडा है जो तुम निकालो तो हाथ आवे उन्होंने क
हा कि तू यहां ठहर हम अभी आते हैं यह कहके एक कुए में उतरा
दूसरा ऊपर खड़ा रहा वह बाहर फेंकता और यह ढेर लगाता जा
ता था एक क्षणमें सब का सब निकाल हातिम को देके किसी ओर
चले गये हातिम उस द्रव्य के ढेर को देख जी में कहने लगा कि इ
स समय जो वे चार मेरे पास होते तो यह सब द्रव्य उन को देदेता
कि फिर उन को कुछ चाह न रहती और सब मनुष्यों को न सता
ते निदान उसने उसमें से एक अच्छा सा कपड़े का जोड़ा निकालके
पहिना और थोड़ा सा धन रत्न जेबमें डालके उन को ढूंढने चला औ
र कहता था कि हे परमेश्वर उस बुढ़िया को मुझसे मिलादे थोड़ी दू
र चला था कि वह बुढ़िया रास्ते में भिखारी का भेष बनाये बैठी
भीख मांग रही थी और कहती जाती थी कि जानेवाले बाबा कुछ

ई और चोरी छोड़ दी हातिम ने सब का सब वह धन उनको दे दिया और धर्म का मार्ग सिखा के जंगल का रास्ता लिया इतने में एक कुत्ता जीभ निकाले सामने दिखाई दिया उसने समझा कि इस जंगल में कोई सौदागरों का काफ़िला उतरा है सो यह कुत्ता उसके साथ का है जब कुत्ता हातिम के पास आया तब उसने गोद में उठा लिया और उस के लिये इधर उधर पानी देखने लगा और जी में कहने लगा कि इस जंगल में जो कहीं तालाव मिले तो इस प्यासे को पानी पिलाऊं इतने में एक गांव दिखाई दिया हातिम उसकी ओर चला और वहां के लोग गेहूं की रोटी और मठा मुसाफ़िरों को देते थे उस ने वह छाछ और रोटियां लेके कुत्ते के आगे रक्खीं कुत्ते ने पेट भर के खाया और हातिम उसकी ओर देख के कहता था क्या अच्छी बनावट का सुन्दर कुत्ता है और वोह उस के सामने बैठा परमेश्वर का धन्यवाद कर रहा था इतने में हातिम प्यार से उस के सिर पर हाथ फेरने लगा और मन में परमेश्वर का स्मरण कर के कहने लगा कि यह तेरी ही सामर्थ्य है कि तूने चौरासी लाख प्रकार के जीव उत्पन्न किये और एक के आकार को दूसरे के प्रकार से मिलने न दिया इतने में एक कड़ी वस्तु सींग की सी उस के हाथ में लगी जब बिचार के देखा तो लोहे की कील दृष्टि पड़ी हातिम ने तुरंत वोह कील उस के सिर से निकाली तो वह कुत्ता एक परम सुन्दर मनुष्य होगया तब हातिम अचम्भे में होउस से पूछने लगा कि यह क्या भेद है और तू कौन है कि पहले तू कुत्ता था अब कील के निकालते ही मनुष्य होगया उसने देखा कि इस मनुष्य ने मेरा बड़ा उपकार किया इस से अपना वृत्तान्त छिपाना न चाहिये यह सोच के हातिम के पैरों पर गिर पड़ा और क

माचार लाने को भेजा है कि मैंने वोह काम न किया जो आज की रात मेरे काम आता उसने कहा कि यह बात सच है और मैं भी उसी शहर का रहने वाला हूं फिर हातिम ने कहा कि तू इस कील को अपने पास रहने दे जो तेरा जी बदला लेने को चाहै तो घात पाके अपनी जोरू के सिर में गाड़ दे जो वह कुतिया हो जायगी इसी ढब बात करते हुए वे दोनों वहां से चले और तीन दिन में वहां आ पहुंचे वोह सौदागर बच्चा हातिम को अपने साथ ले घर आया और उस को डेवड़ी में बैठा के आप भीतर गया लौंडियां बांदियां पैरों पर गिर पड़ीं और वी-बी उस हबसी के पास लिपटी हुई सोती थी यह दशा देख तलवार निकाल उस गुलाम का गला काट डाला फिर वोह कील वीवी के सिर में ठोक दी उसी घड़ी कुतिया ही होगई तब उसे रस्सी से बांध के बाहर निकाल लाया और हातिम का हाथ पकड़ भीतर ले गया और एक बहुत अच्छी मसनद पर बैठाल के उस कुतिया को दिखादि या और कहा कि यह बड़ी ब्यभिचारिणी स्त्री है जिसने मुझे मनुष्य से कुत्ता बनाया था और यह हबशी वोही विश्वासघाती मेरा गुलाम है जिसने इसे जोरू बनाया था हातिम यह देख अचम्भे में हुआ और कहने लगा कि तूने उसको क्यों मार डाला उसने कहा कि यही इसका दंड था जो उस के आगे आया इस डर से अब कोई ऐसा अब कोई ऐसा काम न करेगा और इस समाचार को सुन के किया चाहता होगा सो भी रुक जायगा यह साहस मैंने सब के डराने के लिये किया है यह कहिके उस हबशी को अंगनाई में गाड़ दिया और लौंडियों को इनाम दे के प्रसन्न किया और सारी रात हातिम के आदर सनमान खाने खिलाने पिलाने के हर्ष आनन्द में रहा प्रातःकाल हुआ तब हातिम उस से बिदा हो कारवांसराय में

शाहके महल तक पहुंचा उसने आगे बढ़ कर लिया और बहु
त अच्छी मसनद पर बिठाया वह हर्ष से आनन्द सभा जमाई औ
र पूछा कि अब आपके आनेका क्या कारण है हातिमने कहा
के माहरूशाह परीके हाथमें जो मोहरा है उसके लेनेको आया
हूं उसने कहा वह मोहरा उससे कोई नहीं ले सक्ता देवोंकी
मजाल नहीं कि वहां जावें और जीते जी फिरें तुमतो किसगि
नती में हो हातिमने कहा कुछ चिंता नहीं जिस परमेश्वरने
यहांतक पहुचाया है वही वहांतक पहुंचावेगा परन्तु मैं तुम
से एक देव ऐसा चाहता हूं कि जो मार्ग जानता हो इसलि
ये कि कहीं राह न भूल जाऊं फ़रोकाश ने कहा कि इस बात
का पीछा छोड़ो यह अच्छा नहीं जो तुम करते हो वह बोला
कि मुझसे यह कब हो सक्ता है क्यों कि अपने वचनका तो
ड़ना मेरा काम नहीं यह बात सुन फरोकाश चुप हो रहा और
कुछ न बोला हातिम तीन दिनतक वहीं रहा चौथे दिन कह
ने लगा कि अब मैं नहीं रह सक्ता कहीं वह अधमरा आशक
मेरी राह देखकर मर जायगा और उसका पाप मेरे सिर पर
रहे जो मैं यहां आनन्द करों तो परमेश्वर को क्या मुंह दिखाऊंगा
और क्या उत्तर दूंगा फरोकाश ने कई देव हातिम के साथकर
दिये कि तुम इसको माहरू परी बादशाहके राजतक पहुंचा
दो और उसके आनेतक वहीं बैठे रहो हातिम उन्हें साथ ले वहां
से चला और एक महीनेमें माहरू परी पादशाहके राज्यके पा
स पहुंचा तब देवोंने कहा कि इस पहाड़से उसका राज्य है आ
गे हम जा नहीं सक्ते जो उसके राज्यमें जाता है वह उसको जीता न
हीं छोड़ता निदान वे वहीं रहे और हातिम उनके पाससे बिदा हो उस

वीचेतीनदिनतकदबारक्खा चौथेदिननिकालकेऔरटांगपि
ड़केऐसाबलसेफेंका किवहांसेअठारहकोसपरसमुद्रमेंजापड़ा
औरउसेएक घड़ियालनिगलगया इसचोटसेवहऐसाअचेतथा
कियहनसमझा किमैंकहांथा औरकहांआयाजबचेतहुआतबअ
पनेको घड़ियालकेपेटमें देखके घबराया औरदौड़ उसकेकलेजे
कोपांवसेकुचलनेलगाहातिमकेनपचनेसे घड़ियालव्याकुलहो
केसूखेस्थानमेंजाहातिमकोउगलदिया फिरहातिमसूखापा
साकिसीओरचलागया जबचलनसकातबरेतमेंगिरपड़ा औरचारों
ओरतकनेलगाइतनेमेंएकपरीजादोंकाझुंडअठखेलिजांकरता
हुआआपहुंचा वहउसेदेखकहनेलगा कियहमनुष्यकौनहै और
यहक्योंकरआयायहनिश्चयकरनाचाहियेएकनेहातिमसेकहा
कियहांतुझेकौनलाया शीघ्रबताहातिमनेकहाकिमुझेपरमेश्वर
लायाउसनेमुझेऔरतुझेपैदाकियाहैऔरदूसरादिनहैकिघड़ियाल
केपेटसेमुझेजीताबाहरनिकाला जोतुम्हेंपरमेश्वरनेश्रद्धादी
हैतोकुछखानेपीनेकीसुधलो उन्होंनेकहाकिहमतुझेदानापानी
क्योंकरदेंहमारेबादशाहकीआज्ञाहैकिजिसमनुष्यकोजहांपावे
वहींठिकानेलगावे जोतुझकोनमारेंऔरखानेकोदेंतोबादशाह
क्रोधमेंपड़े इतनेमेंउन्होंमेंसेएकनेकहाकिमित्रोपरमेश्वरसेडरो
कहांबादशाहकहांयहभिखारीकुछआपसेयहनहींआया ना
जानेघड़ियालइसेकहांसेलायाहैकुछदिनइसकोजीतायाजो
उसकेपेटसेनिकला औरमनुष्यहमसेउत्तमकहलातेहैं इससे
उचितहैकिइसकोअपनेघरलेजावें औरपालनकरें उन्होंनेक
हाकिहमइसेरक्खेंऔरखानादेंपरऐसानहो किपरियोंकेबाद
शाहसुनेतोहमकोमारडालेंतोवृथाप्राणजातेरहेंहातिमनेकहा

लिये अपने हृदय से हो तो मुझे बाधले चलो परमेश्वर जो चाहेगा सो करेगा उन्हों ने कहा कि हम में यह नहीं होसक्ता क्योंकि जिसका पालन किया है उसके मारने के लिये क्यों कर देंह तिसने कहा कि मेरे मरने का सोच तुम न करो क्योंकि मुझे माहरूपरी बादशाह के पास जाना है चाहे मारे चाहे छोड़े यह सुन बोअपचवे होरहे और आपस में विचार के कहने लगे कि इसको पकड़ रखिये और बादशाह बादशाह को यह वृत्तान्त लिखभेजिये और वहां से आज्ञा हो सो कीजिये इस बात पर सब का विचार हुआ तब यह लिख भेजा कि हे पृथ्वीनाथ एक मनुष्य कुलजमनदी के किनारे पर पकड़ा है सो ऐसे पुरुष के समान अपने घर में रक्खा है जो आज्ञा हो सो भेजवादें निदान वह वहां से चला के चला और साथही दिन में राज द्वार पर जा पहुंचा द्वारपालों ने बादशाह से विनती की कि प्रभू कुलजमनदी के तीर का एक चौकीदार आया है और वहां के हाकिम का लिख पत्र भी लाया आज्ञा हुई कि उसको सामने लाओ उसने सामने आके प्रणाम कर वह लिखा निवेदन पत्र दिया बादशाह को पढ़के सुनाया यह सुनके कहा कि उसे शीघ्र बड़ी रक्षा से लाओ कई दिन में वह देव उत्तर लेके वहीं आ पहुंचा और कहने लगा कि बादशाह की आज्ञा है कि उसको शीघ्र राजद्वार पर पहुंचाओ वह सुनतेही हाकिम ने आपने साथ लेके चले और यह चर्चा सब और फैली कि एक मनुष्य पकड़ा गया है और माहरूपरी बादशाह के जाता है यह सुन मीनापरी जादकी बेटी ने अपनी हमजोलियों से सलाह की कि बादशाह के देश में परम सुन्दर रूपवान मनुष्य पकड़ा आता है उसको देखना चाहिये कि उसका कैसा रूप है उन सबों ने कहा

इतने में सूर्य्य अस्त हुये और रात होगई परीयां उस लश्कर की ओर
चली क्या देखती कि वह अचेत सोता है तब हातिम के सिर पर अचेत
टोना डाल उठाके हुस्ना परी के बाग में लेगई और हुस्ना से कहा
कि हम उस मनुष्य को आपके बाग में छोड़ आई हैं वह सुनते ही बाग
की ओर चली जाके क्या देखती है कि एक मनुष्य परम सुन्दर पड़ा
है देखते ही आशिक होगई उस अचेत को चेत में किया हातिम ने
जो आंखें खोल के देखा तो एक परम सुंदर कान्ता सरहाने खड़ी
सहसा हक्का बक्का होके कहने लगा कि तू कौन है और मुझे यहां कौन
लाया उसने कटाक्ष कर मुंह फेर कर हंस के कहा कि यद्यपि यह
चकोर था परन्तु अब तेरा हुआ मेरा नहीं है हातिम अपने जी में
चिंता कर कहने लगा कि ये परियां स्त्रियां हैं वह लश्कर पुरुषों का
था और मैं उनकी क़ैद में था इस बाग में कैसे आया निदान घबरा
कर कहा कि तुम सच कहो और मैं यहां कैसे आया हुस्ना परी ने
कहा कि यह बाग मीना परीजाद ने बनाया है और मैं हुस्ना परी उ
सकी बेटी हूं तेरे आने की चर्चा जो सारे शहर में फैली और मुझे तेरे दे
खने का बड़ा अभिलाष हुआ इसलिये ये परियां वहां से तुझे उड़ा
के यहां लाई हातिम ने मुसकुरा कर कहा कि मेरे लाने का क्या कार
ण है तथा मेरे मन के काम में विघ्न किया उसने कहा कि वह कौन
सा काम है मुझे जताओ जिसलिये तू ना[illegible] हो इसने कहा
मोहरा परीजाद का मोहरा लेने आया हूं वह हंस के कहने लगी
कि वह मोहरा उसके हाथ से लेना बड़ा कठिन काम है क्योंकि
जहां देवता न जा सके वहां मनुष्य कैसे जावे पर भाग्यवस हाथ
लगै तो लगै और मैं भी अपने वस भर परिश्रम करूंगी हातिम यह
बात सुन प्रसन्न हुआ मदान्ध दोनो भोगविलास करने लगे॥

वडी रक्षासे लाये रातके अचेत होकर सोगये इसबीचकोई उसेउ
ठाले गया वह आपसे न होगया क्योंकि उसको आपके दरशनकीव
डी अभिलाष था हमलोगोंको उसका बड़ा अचंभा है परन्तु जव
प्रातःकाल हमलोगोंको वह दृष्टि न पड़ा तव आपके क्रोध के
डरसे भाग जहां तहां छिप रहे पर रातको देखा करते थे यह
यहसुन वादशाहने उसे कैद किया और पांच छः हज़ार प
रीजादोंको वुलाके कहा कि तुम उसको जहां पाओ वहांसे ले
आओ वे इस वातके सुनतेही चारों ओर उसको देखने गये
एक परीजाद मीनापरीके वागमें जा पड़ा वह वहां एक
कोनेमें छिपरहे इतनेमें हुस्नापरी हातिमके साथ गलवांहीं
था डाले अठखेलियां करती हुई देख पड़ी जासूस कोनेमें
से निकला और उसे पहिचानके कहा कि अरे दुष्ट इसको
वादशाहने वुलाया था और हम वड़ी रक्षासे लिये जाते
थे हमको अचेत पाके इसको उड़ा लाई जो अव भी अपनी
जान चाहती है तो इसे हमको दे दे कि हम इसको वादशा
हके पास लेजायं हुस्नापरी इस वातके सुनतेही आग
होगई और कहने लगी कि अरे जवानी मरे तू वे पहचान
ना सनुष्य मेरे वागमें क्यों आया और क्यों जीव चलाता है क्या
कोई नहीं है जो इस भये इस गमारको मारे यह सुनतेही
सव परियां उसपर दौड़ीं वह डरके मारे अपने शहरकी ओ
र भागा और मुंह काला कर राजद्वार पर जा पुकारा वाद
शाहने अपने लोगों से कहा कि देखो इस परीजादको
किसने सताया है और उसे पास लाओ जो वह तख्तके पा
स पहुंचा तव हाथ जोड़ विनती करने लगा कि मैं मीनाप

ने गया फौज का सरदार आके विनती करने लगा कि पृथ्वी
नाथ मीना परीज़ाद ने आने में कुछ तकरार न की अपने कुन
बे समेत हाथ बांधे चला आया बादशाह ने कहा कि मीना प
रीज़ाद को कहो हमारे सामने लाओ उसने आते ही बिनती
की कि मैं इस वृत्तान्त को कुछ भी नहीं जानता था और सब
प्रकार से आपका आज्ञानुवर्त्ती हूं बादशाह ने दया करके
उसको अपराध क्षमा किया जब उन्होंने हातिम को सामने
लाके खड़ा किया तब बादशाह ने उसे परम सुन्दर रूपवान दे
ख पड़ा प्यार से बुलाके अपने पास बैठा लाकुछ बातें करके
पूछा कि तुम मनुष्य हो मेरे शहर में कैसे आया और ऐसा क्या
काम है जिसके लिये ऐसा दुख सहा हातिम ने कहा मैं आ
पके दर्शन के लिये आया हूं फ़रोकाश बादशाह ने आपके
गुणों का वर्णन यहां तक किया कि मैं कह नहीं सकता इ
ससे मेरे मन में आपके दर्शन का अभिलाष अत्यन्त बढ़ा
सब प्रकार से मैंने अपने को यहां तक पहुंचाया फिर बाद
शाह ने पूछा कि मेरी राज्य में तुझको कौन लाया हातिम ने
कहा कि फ़रोकाश बादशाह के देव मुझे लाये हैं फिर बादशा
ह ने पूछा कि इन दिनों मनुष्यों में कोई बड़ा प्रवीन चतुर वैद्य
है हातिम ने कहा कि वैद्य से आपका क्या काम है क्या आप
के राज्य में वैद्य नहीं मिलता बादशाह बोले कि हमारी जा
ती के वैद्य से कुछ आराम नहीं होता मैंने बहुत औषध कर
देखी बहुत दिनों से मेरे बेटे की आंखें दुखती हैं और वह अ
वह सुन्दर लालों में पूर्ण चन्द्रमा के समान है और कोई दूसरा ला
डका मेरे नहीं बड़ा दुख है कि वह भी अंधा हो गया और किसी

हातिम हुस्ना परीसे बोला कि तू चाहे कि मुझे जीते जी
अपने पास रक्खे सो यह नहीं हो सकेगा जो तू यह वचन
दे कि जब तक मेरा जी चाहे तब तक रहूं और जब चाहों तब-
चला जाऊं तो कुछ चिन्ता नहीं हुस्ना परीने कहा कि मुझ
को भी तुझसे और कुछ काम नहीं इतनाही चाहती हूं कि
कुछ दिन तेरे साथ आनन्द करूं और तेरे रंग की फुलवारी
से अपने अभिलाष के फूल चुनूं फिर जिधर तेरा जी चाहे
उधर जाना तुझे कोई न रोकेगा हातिमने कहा इस प्रका
र मैंने मनसे अंगीकार किया अब शीघ्र जाइये यह सुन
हुस्ना परी कई परियों को साथ ले वहां से चली चालीस दि
नमें उस अंधकार में जा पहुंची तो क्या देखती है कि एक
बहुत बड़ा वृक्ष है जिसकी फुनगी आकाश तक पहुंची है
और उससे पानी की बूंदें टपकती हैं हुस्ना परीने एक शी
शा रख दिया थोड़ी देर में वह शीशा पानीसे भर गया तब
वह उसका मुंह बांध वहां से ले चली इतने में खलकाश-
देवकी चौकीदार जो हज़ार देव से उस वृक्ष की रखवाली
करता था वह आ पहुंचा हुस्ना परी ऐसी चौकस थी कि व-
हां से भागी और उसके हाथ न लगी चालीस दिन में आप
हुंची प्रणाम कर विनती की कि प्रभु आपके प्रताप से यह
लौंडी उस वृक्ष का पानी ले आई और उसके चौकीदारों के हा
थ न लगी यह कहके शीशा आगे रख दिया कि यह पानी की
बूंदें हैं और मार्ग के क्लेश भी वर्णन किये बादशाहने बड़ी
दया के साथ हुस्ना परी को गले लगाया और पानी का शीशा
हातिम को दिया उसने उसी ख़रा मोहरे को रगड़ के बादशाह

तब आप जो चाहे सो करें निदान हातिम ने उसको अपनी बांह पर बहुत दृढ़ करके बांधा तब जहां २ पृथ्वी से धन गड़ा था देख पड़ने लगा तब उसने अपने जी में कहा कि सौदागर की बेटी ने इसी लिये यह मोहरा मंगाया है निदान हातिम शाह से विदा हुआ तब बादशाह ने अपने रोंध्यों कहकर उदे से कहा कि जिस समय हारस की बेटी का व्याह हो चुके तब को इ घात लगा के यह मोहरा उसके हाथ से ले आओ हातिम वहां से हुस्ना परी के घर आया थोड़े दिन भोग विलास कर उससे विदा हुआ तब वे परीजाद धन रत्न ले के उसके साथ हुये और फरोकास के सिवाने तक पहुंचा के चले गये वह देव जो हातिम के साथ आये थे इससे देव प्रसन्न हो देके और उस धन स म्पति समेत एक तखत पर बैठाल कर कुछ दिन में फरोकास के पास ले आये वह उसको मिला और आदर सन्मान कर बहुत सराहा हातिम एक रात वहां रह कर प्रातःकाल विदा हो गाढ़े की राह से सूरत में आ पहुंचा देवों को बह धन रत्न देके विदा किया फिर आप हारस की बेटी के पास आया और वह मोहरा उसे दिया वह उसको देखते ही बहुत प्रसन्न हुई और कहने लगी कि अब मैं तेरी हूं जो चाहे सो कर हातिम ने कहा कि यह मेरा अभिप्राय नहीं कि तेरे मिलाप की शराब मैं पियूं परन्तु जो बहुत दिनों से इस शराब का प्यासा है उसको पिलाऊंगा तू भी मान ले उसने कहा के मैं तेरे बस हूं जो चाहो सो करो तो ही हातिम ने उसके बाप को बुलवा के उस सौदागर बच्चे का हाथ उसके हाथ में देके कहा कि इसे अपना दास समझो उसने उसी समय व्याह की तैयारी कर अपनी बेटी को

मनुष्य आगे आ मेरा हाथ पकड़ कहने लगा कि हम इसे न के
मैं न जाने देंगे इसकी जगह यह नहीं है यह स्वर्ग में जायगा
फिर मुझको वह स्वर्ग की ओर ले गये इतने में एक महात्मा उ
ठ खड़ा हुआ और कहने लगा कि इसको क्यों लाये अभी इ
सकी आरबल दो सौ वर्ष और रहेगी इसी के नाम का एक औ
र मनुष्य है उसे लाओ वो ही मुझे दोनों यहां पहुंचा गये और क
हने लगे कि हम दोनों वही हैं जो दो रोटियां तू परमेश्वर के
लिये नदी में फेंकता था इतने में चेता और उठ खड़ा हुआ और
परमेश्वर की स्तुति करने लगा कि हे विसम्बर तू बड़ा कृपा
ल है और मैं पापी जीव हूं मेरा अपराध क्षमा कीजिये और
मैंने पाप करने की प्रतिज्ञा की है और मुझे भोजन आकाश से
तू ही पहुंचावेगा जब प्रातःकाल हुआ तब वैसे ही दो रोटियां
डालने गया कि नदी से दो सौ मोहरें निकल आईं मैंने उन्हें
ले लिया और शहर में ढंढोरा पिटवाया कि जो किसी की
मोहरें नदी में गिरी हों सो मुझसे ले पर कोई न बोला फिर दू
सरे दिन उसी प्रकार नदी पर गया वैसे ही मोहरें निकल आईं
उनको भी लाकर रख छोड़ा ऐसे ही दिन बीता और रात हुई
तो स्वप्न में क्या देखता हूं कि कोई मुझसे कहता है कि दो रोटियों
ने सहाय की है परम कृपाल परमेश्वर की आज्ञा तुझे हुई कि
दो सौ मोहरें तुझे नित्य मिला करें उसमें से तू कुछ परमेश्वर
के हेत उठा और जो रहे उसमें अपने दिन काट इतने में मेरी आं
ख खुल गई परमेश्वर को धन्यवाद कर दंडवत करी फिर मैंने
यह मकान बनवाया और द्वार पर उस मकान के यह लिख
दिया और अब भी वैसे ही दो सौ मोहरें पहुंचती हैं मैं बटोहियों को

चाहे वहां जाओ कोंकि मुझे भी एक काम है बहुत नहीं ठहर सक्ता उसने कहा कि हे दीनों के सहाय करने वाले मेरा घर यहां से समीप है जो दया करके चले तो मेरे ऊपर बड़ी कृपा हो हातिम उसके साथ चला इतने में एक बड़ा भारी लश्कर सामने से दिखाई दिया हातिम ने पूछा कि यह किस का लश्कर है वह बोला कि मुझी फ़क़ीर का फिर हातिम को लिये हुए अपने घर आया और एक जड़ाऊ तख़्त पर बैठाला और बड़े आदर सन्मान से खाना खिलाया बहुत से रत्न उसके आगे रक्खा और रात भर नाच रंग की सभा रही हातिम ने कहा कि धन रत्न मुझे नहीं चाहिये फिर शाहज़ादे ने प्रातः काल उस गुलाम को मार डाला और हातिम से विदा होके शाहाबाद की ओर चला अढ़ाई वर्ष पन्द्रह दिन में शाहाबाद में पहुंचा और कारबा सराय में उतरा मुनीर सामी से मिला यह समाचार किसी ने हुस्नबानू को पहुंचाया उसने वहीं उसको बुलवाया और एक बहुत उन्दा मकान में परदा डाल आप बैठी और बाहर उसी बिठाके समाचार पूछा कि बहुत दिनों में तुम आये कहा क्या समाचार लाये हो हातिम ने जो देखा था और परीक्षा के उस से जो कुछ नाथा सो सब के प्रकार बर्णन किया और कहा कि इस बृद्ध मनुष्य ने इसलिये अपने द्वार पर लिखके लगा दिया है हुस्नबानू यह सुन बहुत प्रसन्न हुई और हातिम के साहस की सराहना कर बोली कि तुम्हारे ऐसे थे जो यह समाचार लाये नहीं तो इस काम करने को किस का सामर्थ्य था फिर कई थाल मेवे के हातिम के उतरने की जगह भिजवा दिये इस ने आधे के मुनीर सामी के साथ खाना खा परमेश्वर का धन्यवाद करके कहा कि मुनीर सामी तू मत घबरा अब थोड़े दिनों

पुकारा तब भी कुछ न बोला तीसरी बार हातिम ने यो कहा कि मैंने जाना कि वह गूंगा है क्योंकि मैंने तीन बार पुकारा तूने उत्तर न दिया यह सुनते ही उसने आंखें खोल कहा कि तू कौन और कहां से आया है मुझसे तेरा क्या काम है हातिम ने कहा कि मैं भी मनुष्य हूं फिरते २ यहां भी आनिकला तू अपना हाल वर्णन कर कि क्यों ऐसा हक्का बक्का होता है और यहां किसलिये खड़ा है यह बोला के अरे बटोही तुम ऐसे बहुत मनुष्य इस मार्ग से आये और वृत्तांत जाना पर किसी ने मेरे दुख की औषधि न की इससे हाल कहना व्यर्थ है तू अपनी राह ले क्यों दुख देता है और मुझे आपदा में डालता है हातिम ने कहा कि जब तूने अपना हाल बहुत मनुष्यों से कहा है तो मेरे आगे भी परमेश्वर के लिये कह कि मेरे मन का अभिलाष पूरा हो उसने कहा कि ज़रा भर तू ठहर जा दम ले ले चेत में आओ अपना वृत्तान्त कह सुनाऊंगा ॥
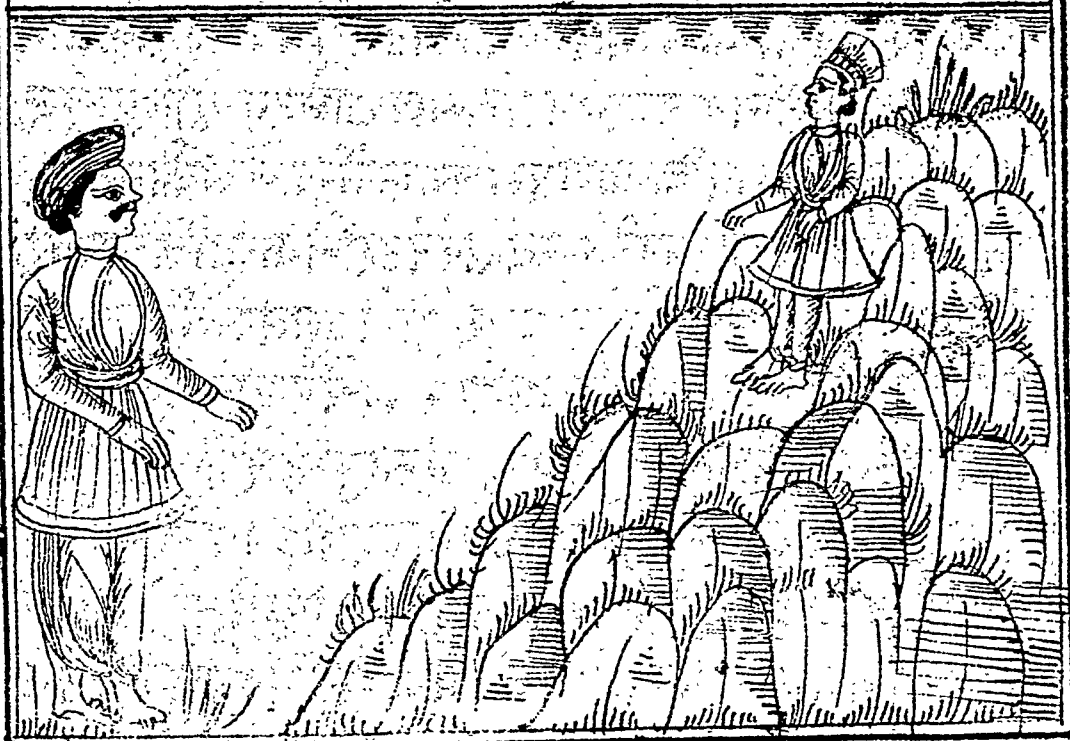
आई और मैं उसके बचन परके हीं भी नहीं जा सक्ता क्योंकि ऐसा होय कि वह आ जाय और मुझे यहां न पावै तो न जानिये कि मेरे लिये क्या कर बैठे और इतना पराक्रम नहीं कि कहीं जाके उस-का पता लगाऊं मेरा आहार वृक्षों के पत्ते और झरने का पानी है क्या करूं धरती कठोर आकाश दूर न रहने को जगह न चलने को पैर यह चौपाई मेरी दशा के अनुकूल है (तेरा बिरह कौन को भाता - धरनि कठोर दूर आकाशा ॥) यह वृत्तान्त सुन हातिम बहुत कुढ़ा और आंखों में आंसू भर लाया और कहने लगा कि उसने अपना नाम और मकान बतलाया हो तो मुझसे क-हो वह बोला इतना तो जानता हूं कि उसके कुटुम्बी लङ्का परबत पर रहते हैं पर यह नहीं जानता के वह कहां गई और अब कहां है हातिम ने पूछा कि जब वह तुमसे बिदा हुई तब किस ओर को गई उसने कहा कि मेरे सामने दश बीस पग गई थी फिर न जानिये किस ओर लोप हो गई हातिम ने कहा कि जो तुमको उसकी चाह है तो हमारे साथ लङ्का परबत को चलो परमेश्वर की कृपा से उसका पता लगालेंगे वह बोला कि जो वह यहां आवे और मुझे यहां न पावे तो फिर मुझे कहने को जगह न रहेगी न हाथ आवेगी जो मिलाप होना है तो यहीं रह गा नहीं तो उसकी आशा में इसी जगह मर जाऊंगा यह दुख भरी बात सुन हातिम आंखों में आंसू भर कहा कि प्यारे जो उसका नाम जानता हो तो बतलादे उसने कहा कि अलगलप री कहते हैं हातिम ने कहा कि धीरज रख तो मैं लङ्का परबत पर जाता हूं तेरी प्यारी का पता लगाता हूं और तेरे पास लाता हूं तो मैं तुझे वहां ले जाऊंगा उसके मकान का पता लगाइने

सात वर्षवीच किवह एक वृक्षके नीचे उसके स्मरणमें व्याकुल ता से तरफ़रहाहे ग्रोर उसके प्राण होठों परमागये हैं मैंइ सोच येजाता हूं कि उसको समझाऊं किवात कहने ग्रोर नीनवाह ना ग्रच्छा काम नहीं है यह सुनके मूसका दी ग्रोर कहने लगी कि ग्रलगान परी पर्वत की वादशाहज़ादी है उसको नसीरा सीग्रटकती जो मनुष्य मिलने का करार करती हमने जान लिया कि तू बावला है कि उस पर्वत ग्रोर ग्रलगान परीके देख नेका मनोर्थ किया ग्रोर तू वहां जायगा तो जीता कवर्षेगा हातिमने कहा कि हो सो हो मैं वहां गये विन नहीं रहता उ न्होंने कहा कि जो तू हमारी संगत इख्त्यारकरे ग्रोर ग्राज यहां रहना ग्रपना धन्य भाग समझे तो हम कल्ह लक़ा पर्व तका मार्ग दिखादेवंगी हातिमने कहा कि बहुत ग्रच्छा कि सी प्रकार यह काम हो निदान हातिम वहां रहा ग्रोर वह रात भोगविलास में व्यतीत की प्रातःकाल होते ही लक़ापर्वत का रस्ता लिया ग्रोर वह हातिमके साथ हुई सात दिन तक रात दिन चली गई ग्राठवें दिन एक जगह पहुंच के कहने लगी कि ग्र वहम इसके ग्रागे नहीं जा सकती क्योंकि इसके ग्रागे हमारा ठिकाना नहीं तू सीधा चला जा थोड़ेही दिनों में लक़ापर्व ततक पहुंच जायगा हातिम उनसे बिदा हो ग्रागे चला महीने भरमें एक दुराहे पर जा पहुंचा रात भर वहीं रहा दो चार घड़ी रात बीते बस्तीकी ग्रोरसे रोनेका शब्द सुनके कानमें पड़ा वह चौंक के उठ बैठा उस शब्द पर मन लगा जीमें कहने लगा कि हातिम तू परमेश्वरके मार्ग में सन्नद्ध हुग्रा है जो उस रोनेके रहने को सुनकर बैठ रहेगा तो परमेश्वरको क्या उत्तर देगा

बुलवा एक चमत्कारके मकानमे लेगई और अपने पास बैठा
आदर सन्मानकी बातें करने लगी इतनेमें उसका बापभी
बागमें आया पहिले तो मेरे घोड़े को देख लोगोंसे पूछा कि
यह घोड़ा किसका है डरके मारे कोई न बोला आगे बढ़ फि
र उस रूपसभा दीपकके पास मुझे पतंग सा देख लाजके
आपसे जलगया पास आके चाहता था कि उसका गलाप
कड़के धरती पर दे पटके बहलई कोडरी और चिल्लाई
कि मैं निरापराध हूं परमेश्वरके लिये पहिले अपराधको प्र
तीती करलो फिर चाहे सो करना यह सुन वह ठहरगया इतनेमें
दाई ने आके कहा कि शहज़ादी तरुणा हुई और इस शहरके लो
गोंमें कोई आपके दामाद होनेके योग्य नहीं है यह बटा ही बड़ा
प्रवीण और किसी बड़े उत्तम मनुष्य का बेटा जान पड़ता है क्यों
कि उसने मारे डरके शहज़ादी से अप्रीतक बात भी नहीं की भला
यही है कि शहज़ादी को उससे ब्याह दो जो उन दोनों को निरा
पराध मारोगे तो जगतमें अपयश और उनके मार डालनेका
पाप आपके सिर सदा बना रहेगा परमेश्वरको क्या उत्तर दोगे
तब उसने अपनी बेटी से पूछा कि तेरी क्या इच्छा है उसने कहा
कि आज तक मैंने किसी अनजान्ते पुरुष का मुंह नहीं देखा प
हिले २ यही देख पड़ा है इसलिये मैंने इसकी बात अंगीका
र किया उसने कहा कि बहुत अच्छा यह तुझको फलै परय
ह तेरी तीन बातें पूरी करे यह सुन मैं बोला कि कुछ आप आज्ञा
करेंगे सो सिर धरूंगा पहिले एक जोड़ा परीरू का लाओ फिर
लाल सांपकी मणि तीसरे खौलते घी के कड़ाहमें गिरके जीता
निकल आन बमें अपनी बेटी तुझे दूंगा उसको ये बातें सुन मैं घब-

सिर हाथीका साहै उसमें जोआंखें हैं जोउसकी बीचकीआंख किसी चोटसे फूटजाय तो निश्चयहै कियहांसे भागजाय औ रकभी इस ओर मुंहन करे इतने में वह मुंह फैलाये शहरकी ओर पहुंचा लोगोंने देखतेही किलेके आसपास आगभड़का दी उसकी ज्वाला ऐसी बढ़ी कि किला उसमें छिपगया वह इधर उधर फिरने लगा कि एक ओरसे उस हाथीके सिरसे ऐसा शब्द निकला कि वहांके सारे जीव थर थरा गये और ध रती थलक गई फिर वह मरनहार हातिमके पास जा पहुंचा फिर उसने एक तीर ऐसा मारा ताकके कि बीचकी आंखमें जालगा वह अधमरा धरती पर तड़पने लगा और ऐसा चि ल्लाया कि सारा जंगल थर थरा उठा फिरसहसा उठके ऐसा भागा कि फिर पीछे को न देखा हातिम उसगड्ढे से निक ला जो रात रहगई थी सो वहीं काटी प्रातःकाल उसबस्ती के रहने वाले उससे पूछने लगे कि उसे देखतू कैसे जीतारहा हा तिमने कहाकि मेरे ऊपर परमेश्वरकी कृपाथी उसने बचालिया उ स जीवका नाम मशमन था परमेश्वर की कृपासे उसे मारा औ र तुम्हारे सिरसे भार दूर किया उन्होंने कहा कि हमको कैसे बिस्वास आवे हातिमने कहाकि आजकी रात तुम सब किले की छत पर बैठके जागो जो वह आवे तो मुझको झूठा जानियो नहीं तो सच्चा उन्होंने हातिम ने कहाकि वैसा ही किया व ह जीव प्रातःकाल तक नहीं आया तब वह सब के सब हाति मके पैरो पर पड़े लाखों रुपये और सैकड़ों रत्न भरे थाल ला खोंके आगे धरे उसने कहाकि मैं एक लाइस धनरत्नको लेके क्या करूंगा तुमको चाहिये कि इसे ग़रीबों को—

साथ क्यों नहीं करता उसने कहा कि मैं भी इसकी वहन पर आ
शिक हूं जो थे अपनी वहन को व्याहना मेरे साथ अंगीकार करे तो
मैं भी मानों न्यौले ने कहा कि मेरे वाप जीते हैं वह नहीं मानता
मैं विवस हूं हातिम ने कहा कि अपने वाप के पास मुझे ले चल के
मैं उसे प्रसन्न करलूंगा निदान वे दोनों और हातिम चल खड़े
दूर जाके न्यौले ने कहा कि मैं अपने घर जाता हूं वहां के लोग
तुझे पकड़के मेरे वाप के पास ले जावेंगे वहां जैसी वने वैसी
करना हातिम ने उसके कहने से वैसा ही किया तब जिन्न उ
से पकड़के वादशाह के पास ले गये वादशाह का नाम ह्राज
था उसने कहा कि मनुष्य होके तू हमारे शहर में क्यों आया है
वतला दे हातिम बोला तेरे भले के लिये आया हूं उसने कहा
कि मनुष्य होके क्यों कर जिन्न का भला करेगा हातिम बोला
कि मैंने जाना कि तू अपने वेटे के जीने से त्रस्त हो चुका है जो रो
सा भूल रहा है इस वात के सुनते ही उसने कहा कि यह क्या क
हता है मैंने अपने जीतव में यही एक लड़का पाया है मैं तो उसे
प्राणों से भी अधिक प्यारा जानता हूं हातिम ने कहा कि जो तू
उसका जीना चाहता है तो मेरा कहना मान नहीं तो वो आज
वा कल्ह में मारा जाता है उसने कहा कि अरे सच्चे मित्र परमेश्वर
तुझ पर कृपा करे तूने मेरा बड़ा उपकार किया और कहता है पर
इस भेद को तू प्रकट कर वह बोला कि तेरे वेटे ने किसी के वाप
को मार डाला है वह उसको मार डालना चाहता है आज मैंने ते
रे वेटे के साथ जंगल में लड़ते देखा है और तेरे वेटे के प्राण जा
ने वाले थे मैंने बड़ा वल करके तेरे वेटे को उसके हाथ से छुड़ा
या पर एक न एक दिन मारा जायगा क्योंकि यह उसकी वहन

हातिम आंखें खोलके जो देखा तो एक घड़ियाल परबतसा दे
ख यह घबराया और वह दीनतासे बिनती करने लगा कि यह
देख घबराया इस प्रबलतासे केकड़े ने छीन छीन लिया है इ
सलिये तुमसे यह बिनती करता हूं कि मुझे मेरा घर दिलादो हा
तिम ने कहा कि जान पडता है कि वह तुझसे बड़ा बली है और गै
र्वेल घड़ियाल बोला कि मैं दुखी क्या कहूं तुम देखोगे तो जानोगे
सच तो यह है कि जो वह चाहें तो अपनी डंक की कतरनी से मुझे
पकड़ दो कर डाले इस समय चरने गया है होता तो देखते यह
यह बातें कर रहा था कि वह कीड़ा मुंह फैलाये आ पहुंचा
घड़ियाल हातिम के जा छिपा पीछे और केकड़ा हातिम को
किला सा दिखाई दिया कि उसका एक ओर का डंक पच्छि
म को और एक ओर का पूर्व को पहुंचा था इतने में केकड़े की
दृष्टि जो घडियाल पर जा पड़ी तो ऐसी चिंघार मारी कि घड़ि
याल बेतहासा कांपने लगा और हातिम भी आगा पीछा क
रने लगा कि परमेश्वर इस उत्पात से कैसे बचोगा मन में यह
कह और जिन्नों के बादशाह की कौड़ी ले उठ खड़ा हुआ केकड़ा
उसे देख जहां था वहां रह गया इतने में हातिम ने पुकार के क
हा कि अरे किसी को दुख देना भला न हो जो किसी को सताता
है वह बोला अपने को लिये कांटे बोता है तू इस घड़ियाल को दु
ख देता है क्या तुझे रहने को और जगह नहीं मिलती यह सुनके
केकड़ा बोला कि हम दोनों के रहने वाले हैं आपस में समझ लें
गे मनुष्य को क्या काम जो हमारे बीच में बोले हातिम ने क-
हा कि यह तू सच कहता है पर परमेश्वर ने चौरासी लाख प्र
कार के जीव उत्पन्न करे किसी को जल में रक्खा है किसी को थल

के लिये क्लेश सहता यहां आया हूं और हमने अपने बाप दादे से उसका नाम सुना है वह तो कावादशाह जादा है हातिम उसका नाम है और परमेश्वर का निज जन है ऐसा न हो कि हमारा मिलाप न होय यह बात ठहराके वे सब आये और हातिम के पैरों पर गिरपड़े वह उन्हें देख अचंभे में होगये क्योंकि उनका सद्दमनुष्य का सा औ रसा रवदन मोरका साथा जो अपसरा भी उन्हें देखे तो मोहित हो जाय और वह पक्षी ऐसी सुथर बोली से कहने लगे कि तुझे और तेरे साहस को धन्य है और सूरता को जो तूने पराये लिये अपने तई क्लेश और परिश्रम में डाला ऐसा जान पड़ता है कि कोई मसरवर जादूगर की बेटी पर आशिक हुआ है जो मसरवर ने हमारा एक जोड़ा मांगा है इसी लिये तू यहां आया है हातिम बोले यह तुमने सच कहा जो तुम अपना एक जोड़ा मुझे दो तो मानो उस अधमरे को जिलाओ और मुझे बिन दामों मोल लेलो मैं जब तक जीता रहूंगा तब तक तुम से उरिण न हूंगा और वो निरास अपनी आशा पूरी करके तुम्हारा भला मनावेगा इस बात को सुन उन्होंने आपस में सम्मत किया कि कोई ऐसा है कि अपने बच्चों का एक जोड़ा परमेश्वर हेत इसको देधर्म का कार्य है इस बात के सुनते ही उन पक्षियों में से एक उठा और एक जोड़े अपने बच्चों का दे हातिम से कहा कि तू इसे ले जा चाहे सो कर और जहां चाहे वहां ले जा हातिम ने उसे ले उनसे विदा हो मसरवर जादूगर के शहर की ओर चला बहुत दिनों में चलता दुख सहता उस मनुष्य तक आ पहुंचा जो सिर झुकाये बैठा कराह रहा था उस्से मिलकर कहा कि प्रसन्न हो तेरा मनोरथ पूरा हुआ वह जोड़े को देखते ही हातिम के पैरों पर गिर पड़ा हातिम ने उसे गले लगाया और वहां का वृत्तान्त औ रमार्ग का दुख सब उससे कह सुनाया और कहा कि मसरवर जादूगर-

डरा के अपने और जीमें कहने लगा कि परमेश्वर जाने कि मैंने ऐसा विच्छू अपने जीते जी नहीं देखा और वह जाके किसी कोने में छिप रहा और बराबर कहता है कि देखा चाहिये कि रात को यह क्या करता है उस जंगल के इधर उधर कई गाव बसते थे वहां के लोगों ने जो बटोही को देखा तो खाने पीने में आदरकिया हातिम ने खाना खा पानी पी एक वृक्ष के नीचे बैठके परमेश्वर का स्मरण करने लगा और जंगल में बहुत से घोड़े गाय इकट्ठे हुये हैं और उनके पास तीन चोर चाकर सो रहे थे थोड़ी रात गये वह पत्थर के नीचे से निकला और गाव की ओर गया और उछलके एक गाय के सिर पर डंक मारा कि वह मर गई ऐसे ही सब को मार डाला फिर घोड़ों के गल्ले में आया उन सबों को और रक्षकों समेत मार डाला फिर उसी पत्थर के नीचे छिप रहा प्रातःकाल होते ही उस गाव के रहने वाले जो उस जंगल में आये तो क्या देखते हैं कि वे दोनों गल्ले रक्षकों समेत मरे पड़े हैं और सब के पेट से नीला पानी बहा जाता है तब ग्वालों ने हातिम से पूछा कि अरे बटोही तू कैसे जी रहा तब वह बोला कि मित्रो मैंने ऐसा चरित्र देखा कि कभी नहीं देखा था कि एक रात को रंग का विच्छू कुलंग चिड़िया के समान आया और उसी ने यह कौतुक किया है इतने में वह विच्छू फिर उस पत्थर के नीचे से निकला और उनके सरदार के सिर पर डंक मारा वह तड़पने लगा और विच्छू जंगल को चला गया वे लोग रोने लगे और हातिम उस विच्छू के पीछे हो लिया थोड़ी दूर चला था कि एक राहगीर नजर पड़ा कि विच्छू लोटपोट के काला साँप बन गया हातिम और भी अचम्भे में हुआ और अपने जी में कहने लगा कि परमेश्वर यही विच्छू था साँप कैसे हुआ और किसी बिल

और उसे उठा ले गये और मैं अकेली रह गई मैं अपने मायके सासरे का रास्ता नहीं जानती अब मैं व्याकुल हूं कि क्या करूं और कहां जाऊं और यह भी नहीं जानती कि आगे कैसी आपदा पड़ेगी और मेरा रंडापा कैसे कटेगा उसने कहा कि जो कोई तुझे अपने पास रक्खे तो तू उसके पास रहेगी वा नहीं उसने कहा कि हां रहूंगी इस वनमें मेरा कौन है जो इस दुख में साथी होगा इस बात को सुन उसने कहा कि मुझे अंगीकार कर वह बोली तीन बात पर दृढ़ हो तो एक यह कि घर में तेरी दूसरी स्त्री न हो और दूसरी यह कि मुझसे सेवा न टहल हो सके तीसरी यह कि जब तक मैं जीती रहूं मुझे दुःख न देना न कुढ़ाना उसने कहा कि मेरा जी है जब तक जीता रहूंगा तुझे छोड़ दूसरी स्त्री न करूंगा जो अपसरा भी होगी तो उसका भी मुंह न देखूंगा और परमेश्वर की कृपा से घर में बहुतसी लौंडी बांदी गुलाम चेले आदिक हैं तुझे किसी बात का दुख न होगा तू अपना मनचाहा काम उनसे लिया करना और आजतक ऐसा नहीं सुना कि किसीने अपनी स्त्री को दुख दिया हो कि मैं ही तुझे सताऊंगा उसने कहा कि इन बातों पर मैंने तन मन से अंगीकार किया उसने उसका हाथ पकड़ लिया और आगे चला वह तिस भी उसके पीछे हो ली थी थोड़ी दूर जाके उस स्त्री ने कहा कि मैं तीन दिन की भूखी प्यासी हूं मारे निर्बलता के दहला न सकती हूं जो खाने की वस्तु न मिल सकती पानी पर मय लाना चाहिये उसने यह बात सुन स्त्री को एक वृक्ष के नीचे बैठा के अपने छोटे भाई से कहा कि भाई चौकस रहना मैं कहीं से पानी लाऊं यह कह छागल कंधे पर रख पानी लेने गया तब -

यह कहता था कि तू मुझे क्यों नहीं अंगीकार करती क्या मैं तेरे यो
ग्य नहीं हूं तू दश पन्द्रह वर्ष की और मैं सोलह सत्रह वर्ष का न
वीन तरुण हूं मेरे भाई तेरे योग्य नहीं मैं तुझ पर आशिक होगया
हूं घात पाके बड़े भाई को ठिकाने लगादूंगा इस बात के सुनते
ही वह मारे क्रोध के थर थराने लगा और कहा कि अरे अधर्मी आ
ज तक किसीने अपनी मां बहन से भी ऐसा काम कियाहै जो तू
किया चाहता था उसने बहुत सौगन्धखाई पर उसने भाई के
कहने का विस्वास न किया और गाली गलौज पर आगया औ
र एक तलवार उस के ऐसी मारी कि छाती तक पहुंची और
छोटे भई ने भी ऐसी मारी कि कलेजे पार होगई दोनों घाय
ल होके मर गये वह स्त्री भैंस होके आगे बढ़ी हातिम भी उसके
पीछे होलिया एक गांव के पास पहुंची उस गांव के लोग देखते
ही अपने घर ले जाने के लालच से उसके पकड़ने के लिये सहसा
दौड़े जब पास आये उसने कितनों लातों से और कितनों को सींगों
से मार डाला फिर वन में जाके एक बड्ढ बूढ़ा मनुष्य बन गया
हातिमने अपने मनमें कहा कि अब इस से यह वृत्तान्त पूं
छा चाहिये कि यह क्या चरित्र था यही विचार के शीघ्र दौड़ा
और पुकार के कहने लगा कि अरे बूढ़े बाबा टुक ठहर जा पा
वा खड़ा होके कहने लगा कि हातिम तू प्रसन्न तो है हातम
बोला कि तुमने मेरा नाम कैसे जाना उसने कहा कि तेरे नाम
पर क्या मैं तेरे बाप का नाम जानता हूं तुझे इस बात से क्या जो
तुझे पूछना हो सो पूछले इस समय मुझे अब काश नहीं एक अव
श्य काम है हातिमने जिस २ भांति उसको देखा था उसका हाल पूं
छा इस बात को सुन वह हंसके कहने लगा कि तुझे इसके सुनने से क्या

नहीं जाता मुंहसे बोल नहीं निकलती खड़ा होके कहने लगा कि मेरे भाग्य में इसी जगह मरना लिखा है क्योंकि न आगे बढ़ सकता हूं न पीछे फिरा जाता है सब भांति परमेश्वर के मार्ग में मरना भला है यह समझ के आगे बढ़ा और दो तीन कोस गया होगा के पैरों में छाले पड़ गये तब विवश होके गिरते ही सब देह में घाव होगये और जो डूब गया इतने में एक वृद्ध मनुष्य उसे उठाके कहने लगा कि हातिम यह समय घबराने का समय नहीं है मन को धीर्य दे जो मोहरा तुझे रीछ के बच्चे ने दिया है कमर से निकाल मुंह में रखले हातिम ने मोहरा मुंह में रखलिया उसी घड़ी धरती की गर्मी और प्यास जाती रही हातिम उसके पैरों पर गिर के कहने लगा कि यह गर्मी किस कारण से है उसने कहा कि लाल सांप के विष से और इस धरती से उसके मुंह की आग जो निकलती है इस से इस धरती का रंग लाल है पहिले यह नहीं यह बात सुन हातिम वहां से आगे बढ़ा और मोहरे के कारण किसी भांति की गरमी उसे न व्यापी आधी दूर पहुंचा था कि लाल सांप ने हातिम की सुगन्ध पाके ऐसी फुंकार मारी की मुंह की ज्वाला आकाश तक पहुंची और उसका फन और उसकी देह ताड़ के समान और आग की ज्वाला उसकी नाक के नथनों से विष का पवन सी निकलती और कोसों तक गोल खाली जला देती हातिम जो उस आग में पड़ा तो अति घबराके कहने लगा कि अब इस आग से हड्डी पसली तक भी जल जायगी पर उस मोहरे से थोड़ा २ ठंडा पानी उसके गले में जाता था उस से जीता रहा निदान सांप हातिम को देख फन फनाके लपका और आग के ज्वाले मुंह से छोड़ने लगा

करली जब निश्चय हुआ तब वोह ऊपर से प्रसन्न और मनमें
लज्जित होके कहा कि अब एक बात रहीहै उसेभीपूरी कर
उसने कहा कि बहुत अच्छा तब मस खर जादूगरने अपने ले
गों को बुलाके कहा कि एक लोहे का कड़ाहा घीसभरके और
चूल्हे पर धर सात दिन तक उसके नीचे रात दिन आंच क
रो उन्होंने उसके कहने से वैसाही किया जब वह कड़ाहा खूब
ला कि जो पत्थर भी उसमें गिरे तो जलके भस्म होजाय तब उस
ने उस सिपाही से कहा कि अब तू इसमें कूद जो जीता निकले
गा तो अपनी प्यारीको पावेगा वह डरके हातिम से कहने लगा
कि इस आग से मैं जीता न बचूंगा हातिम ने उसे धीर्य देके क
हा कि तू सोच मत कर परमेश्वर का भजन कर वही यह भी पार कर
गा हातिम यह कहके वह मोहरा जो उसे रीछ की बेटी ने दिया था
अपनी पगड़ी खोल उसके हातमें देके कहा कि इसको अपने मुंह
में रखके खटके इस जलते कढ़ाहे में कूद और गोता मार निकल
आ परमेश्वरकी कृपासे तेरा एक बाल भी न जलेगा वहभी साथ
ही उस मोहरे को मुंहमें डाल मसखर जादूगरसे कहने लगा
कि अब क्या कहता है उसने कहा कि इस कढ़ाहे में कूद वह कढ़ा
ह के पास गया देखतेही कांपने लगा तब हातिमने ललकार
के कहा कि यह प्रीति की आग है परमेश्वर का इस्मरण कर वह
हातिमकी ललकार सुनतेही आंख मूंद कड़ाहे में कूद पड़ा औ
र एक ऐसा गोता मारा कि उस खौलते घीको ठंढा पानी सा पा
या तब इधर उधर कड़ाहे में फिरने लगा और बदन पर घी मलने
और हंसके कहने लगा कि अब क्या कहता है बाहर आऊं या न
हीं और कहे तो दो चार घड़ी इसमें रहूं मसखर जादूगर ने

बिचारा कि इस गढ़े की राह किसी ओर से नहीं देख पड़
ती इसमें क्यों कर आना चाहिये फिर यह उपाय सूझा कि इस प
त्थर से फिसलते चलिये परमेश्वर चाहे सो करे निदान ऐसा
ही किया ओर से साफ तव लोटता२ चला गया जब उसके पैर
धरती पर लगे तब आंखें खोली तो क्या देखता है कि एक बहुत
लम्बी चौड़ी परम रमणीक जगह है देखते ही उसका मन खि
ल गया थोड़ी दूर चलके मन में विचारने लगा कि वे परीजादी कि
धर गये और इस जंगल के किसी ओर बस्ती है या नहीं पर सोच
करता हो एक कदम आगे बढ़ा था कि एक बहुत बड़ा रमणी
क मकान देख पड़ा मन में बिचारा कि यहां लोग रहते होंगे च
लना चाहिये इतने में कई परीजादों ने उसे देखा एक मनुष्य पृ
थीवि धड़क चला आता है वह सहसा अपनी जगह से दौड़ा औ
र हाकिम के पास आके कहने लगा कि अरे मनुष्य यह जगह
तेरे योग्य नहीं है तू कैसे आया और तुझे कौन लाया वह बोला स
ब का कारण और मार्ग सुझाने वाला परमेश्वर है वोही मुझे यहां
लाया है फिर उन्होंने कहा कि गड्हे की राह तूने कैसे देखी उस
ने कहा कि मैं तुम्हें देखके दौड़ा तुम आगे जाकर एक क्षण में लो
प हो गये मैं मन में बिचारने लगा कि परमेश्वर वे सब यहां से
कहां गये फिर निश्चय तुम आये इसी ओर मैं भी चला गया इतने
में एक अंधेरा गड्हा दिखाई दिया और उसे देख बहुत घबराया
और मन में कहने लगा कि उसमें कैसे जाऊं फिर सहसा मन में
आया कि उस पत्थर पर लेटके फिसल पड़ और किसी भांति भीतर प
हुंच ही किया और तुम्हारे खोज में यहां तक आ पहुंचा पर अब तुम प
रमेश्वर के लिये बताओ कि इस परबत का क्या नाम है और

मन लगाया है वे हथेली पर प्राणलिये फिरते हैं सदा उसकी
इच्छा पर संतोष किये रहते हैं कि उसीने सारा जगत बनाया है
उसीकी आराधना उचित है इस बात के सुनते ही उनके हृदय
में दया उपजी और कहने लगे हे मधुरलापी मनुष्य जो अलग
न परी के देखने से अभिलाष है तो हमारे साथ आ हम तुझे कि
सी कोने में छिपा देंगे और वहां से अलगन परी को दिखा देवेंगे
पर सूर्य्य और रत्न के किरण के कृपा संयोग से हातम को एक
कोने में लेगये और भांति २ के खाने और मेवे खिलाये और उस्से
बोलते हंसते रहे तीन दिन बीते हातिम से पूछा कि सच कहो
कि तुम्हारे आने का क्या कारण है उसने कहा कि मुझे अलगन
परीसे कुछ कहना है कि वह एक मनुष्य से सात दिन की अ
वधि बदके आई है और सात वर्ष बीत गये कि वह उसकी बाट
देखते २ मरण हार हो गया है और आंखें पथरा गईं और प्रा
ण कंठ गत हैं सांस भी नहीं ले सक्ता तो भी दो तीन घड़ी पीछे
दुःख भरे जीसे कराह उठता है और यह पढ़ता है शीघ्र आवो
विरह सहो नहीं जाय मैंने उसकी यह दशा देख पूछा कि तेरा
क्या वृत्तान्त है उसने अपना दुख और से छोर तक वर्णन किया
वह सुन मेरा कलेजा जल गया और मेरी आखों से आंसू टपक
ने लगे इसलिये मैं आया हूं कि उसे उसके वचन का इस मरण क
राजभूल न गई हो जो वह इसी आसा में मर जायगा तो बड़ा अ
धर्म अनर्थ है उन्होंने कहा कि हमारी इतनी सामर्थ नहीं जो ते
रा हाल जाकर कहें परन्तु तुझे बांधके उसके सामने ले जायें
फिर जो तेरे मुख से निकले वह कह सुनले जो यह बात हमने
बंता की रीति से कहते हैं क्योंकि जो हम तुझे आदर सन्मान से ले जाय

रपरीजादोंसेकहाकितुमबादशाहजादीकेपासलेचलोक्योंकि
वहमेरेआनेकीबाटदेखतीहोगीमैंकबतकबैठारहूंउन्होंनेबा
शाहजादीकोप्रसन्नदेखाहातिमकाहाथपकड़दरवाजेपर
लेआयेफिरउनमेंसेएकनेबादशाहजादीसेबिनतीकीकिए
कमनुष्यआपदाकामाराबागकेपासआनिकलाथासोहमने
उसकोबांधकेबागकेदरवाजेपरलायेहैंआगेजोहुकमआ
पकाहोसोकरेंबादशाहजादीनेकहाकिसामनेलाओजब
हातिमसामनेआयातबउसेदेखवहमनुष्यकोभूलगईकि
जिससेसातदिनकीअवधिकरकेआईथीऔरहातिमकाहाथ
पकड़अपनेपासकुरसीपरबैठालियाऔरकहाकिआपकाआ
नाकिधर सेहुआऔरकिसलियेआयेसोआपकाक्यानामहै
हातिमनेकहाकिमैंयमनकारहनेवालालेकोवंदाहूंपरीने
जोउसकानामसुनातबतोसेउठकहनेलगीकिमैंनेभीतेराना
मसुनाहैकियमनकाबादशाहजादाहैबड़ीदयाकीजोआप
यहांआयेअपनेआनेकाकारणकहोकिइतनाक्लेशक्योंस
हामैंतोआपकीलौंडीकेसमानहूंऔरतुमेअपनासिरमौर
जानतीहूंहातिमनेकहाकियहआपकीदयाहैमैंशाहबादसे
आयाऔरअहमरजंगलकीतरफजाताथाबीचमेंदेखताकि
एकमनुष्यवृक्षकेनीचेरोरहाहैऔरआंखेंबन्दकियेयहपढ़
ताहैकिजल्दआओविरहासह्योनहींजातमैंनेपूछाकितू
नेअपनीदुर्दशाक्योंकीमुंहसेअपनावृत्तान्तकहाउसनेअ
पनाहालऔरतुम्हारीप्रीतिऔरकृपाकावर्णनकियाऔर
कहाकिबादशाहजादीसातदिनकीअवधिकरकेगईहैसो
सातबरषबीतेअबतकनहींआईमैंउनकोआनेकी

नदद़ीपर उसका संगान करूंगी हातिमने कहाकि मैंभी तेरे दरवाजे पर बैठके इतने उपवास करूंगाकि मरजाऊंगा औार मेरा जो मरने का पाप तुझे होगा यह कहके उठा औार उसके दरवाज़े पर एक वृक्षके नीचे जा बैठा और खाना पीना छोड़ दिया ऐसेही सात दिन बीतेकि नव रातको उसने स्वप्न देखाकि एक मनुष्य कहता है कि हातिम यह अलगन परी है इसने ऐसेही अपने विरहमें बहुतेरोंको मारडाला है तू पहिले इस्से कहके उस विरही मनुष्य को बुलवा औार मोहरा जो तुझे रीछकी बेटी ने दियाहै उसको दे कि वह अपने मुंहमें रख गार गराकर पियालेमें डालके सो युक्ति से अलगन परीको पिलादो फिर परमेश्वरकी शक्तिका चरित्र देख कि अलगन परी उस पर मोहत होजाय यह बात सुन चौंक पड़ा और चिंताकरने लगा इतनेमें प्रातःकाल हुआ अलगन परी उसके पास आ कहने लगी कि हातिम तैने खाना पीना छोड़दिया है जो तू मरजायगा तो मैं तेरे मरनेके पापमें पकड़ी जाऊंगी और परमेश्वरको क्या मुंह दिखलाऊंगी हातिमने कहा कि तू उस अपने आशक को बुलवाके अपना मुंह दिखा औौ उसका तू देख कि उसका मनोर्थ यही है अलगन परीने कहा कि मैंने यह बात मानी इस बातके सुनते ही हातिमने कहा मैं जाके उसे ले आऊं तब अलगन परी ने कहा कि तुम क्यों क्लेश करते हो मैं परीजादोंको भेजके उसे बुलवाये लेती हूं फिर परीजादोंसे कहा कि तुम उस पहाड़ पर जाओ वहां एक मनुष्य वृक्षके नीचे पत्थरकी सिलपर आंखें बन्दकिये खड़ाहै और ठंडी सास लेताहै उस्से कहाकि हातिम तेरी प्यारीके पास पहुंचा और तेरा सब हाल कहाहै इसलिये अलगन परीने तुझे बुलायाहै वह परीजादे एक पलमें वहां पर पहुंच-

जो इस ग्रंथ से विरह मारे पर दया करो तो आपकी बड़ी कृपा है उ
सने मुसकाके यह पढ़ा और पवन सब लाई तो ही कहने लगी
कि मैं नहीं जानती कि यह आग किसकी लगाई है अब उसके
विरह की पीर सही नहीं जाती और उसके बिन मिले क्षणमात्र
भी नहीं रहा जाता तेरा कहा माना और उसे अंगीकार किया प
र माता पिता की इच्छा बिन यह काम नहीं कर सकती यह कह
के लङ्का पर्वत की ओर गई और महल में जा माता को प्रणाम
कर कहा जब से सिरकुवा चुप की होरही मां ने कहा कि तुझ को ऐसी
क्या आई प्रतीति चालीस दिन नहीं बीते तब उसकी सहेलि
योंने बिनती की कि एक मनुष्य बादशाहज़ादी मन भाया है और उ
सने भी इनकी चाह में वर्षों से अपना सुख चैन गवाया है अब
यहां आ पहुंचा है इसलिये चाहती हैं कि उसके साथ ब्याह हो
पर आपकी आज्ञा बिन यह काम नहीं कर सकती यह सुनके वह अप
ने पति के पास गई और कहने लगी कि यह तुम्हारी बेटी चाहती है कि
एक मनुष्य के साथ अपना ब्याह करे उसने कहा कि जो उसकी इ
च्छा है सो उसे फले मैं प्रसन्न हूं निदान अल्गान परी ने हातिम और
उस मनुष्य को बाग से बुला भेजा उसकी मां उसे देख प्रसन्न
हुई और अपने पति से उनकी बड़ी सराहना की उसने उसी समय ब
याह की तैयारी कर बड़ी धूम धाम और अपनी कुल रीति से अपनी
बेटी उसे ब्याह दी दोनों दुलहा दुलहिन ने आनन्द पूर्वक मिल के भो
ग विलास का आनन्द मनोरथ पूरा किया और हातिम का मन उकता
ने लगा सात दिन बीते हातिम ने उनसे विदा मांगी अल्गान परी
ने पूछा कि अब तुम्हारा मनोरथ कहां जाने का है उसने कहा कि अल्
मर पर्वत को क्योंकि वहां मुझे कुछ अवश्य काम है परी ने -

उसमें असंख्य धन रत्न निकले मैंने चौथाई देने में छल बल कर
के अपनी चाल से फिर गया थोड़ा सा उठाके उसके आगे रख दिया
उसने कहा मैं वही अपना चौथाई लूंगा इस बात पर मैंने क्रोध
कर धक्के से मार बाहर निकाल दिया वह रोता पीटता च-
ला गया कई दिन पीछे फिर आके मुझसे विनती करके एक
दिन कहने लगा कि जो कुछ धरती में गड़ा है सो मुझे सब दीख
पड़ता है मैंने उससे पूछा यह विद्या है सो भी किसी भांति सीख
सक्ता हूं उसने कहा कि बहुत सहल है वह एक अंजन का पोंका
है जो उसे बनाके आंखों में कोई लगावे तो जितना धन धरती
में गड़ा हो देखने लगा मैंने कहा जो तू मेरी आंखों में ऐसा अंज
न लगा दे तो जो द्रव्य मुझे देख पड़े उसमें आधा तेरा उसने क-
हा बहुत अच्छा तू मेरे साथ जंगल में चल मैं उसके साथ ।
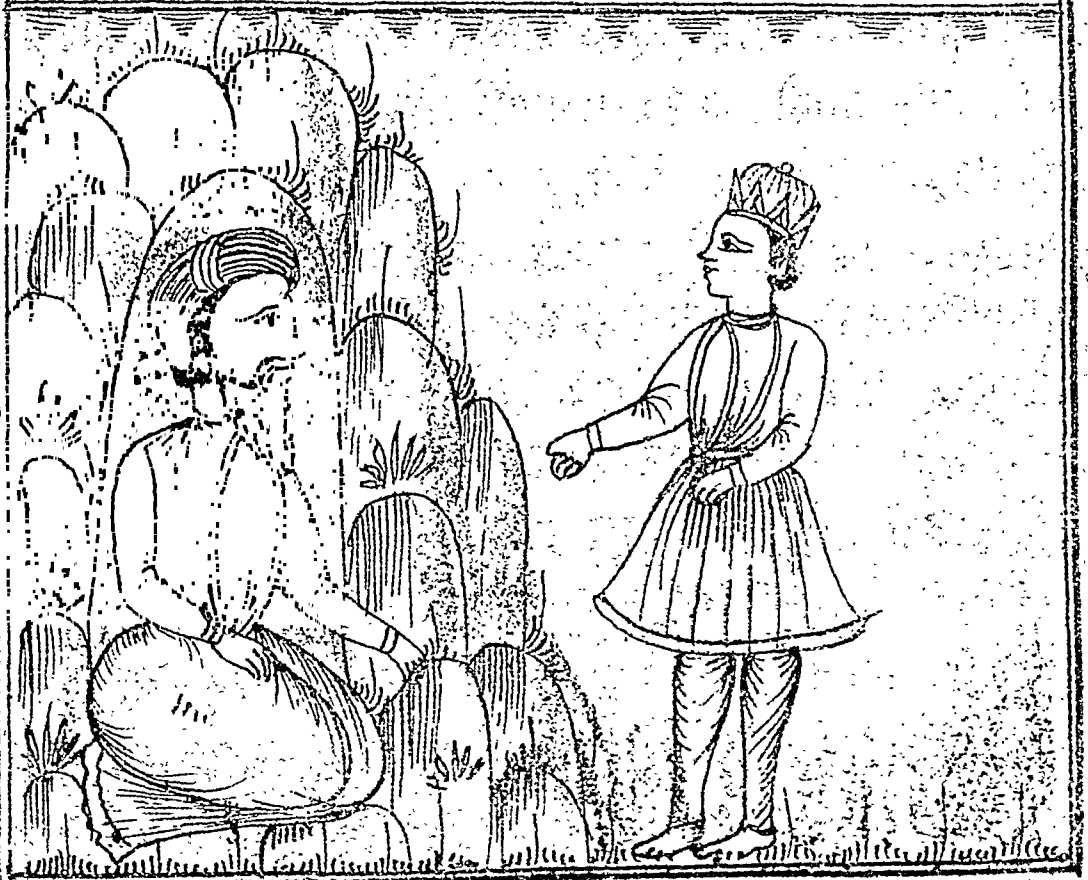
तो दौड़े और हातिम के पास आये और जो उन पर बीती थी सो सब बर्णन किया पूछा कि अब आपका मनोर्थ किधर जाने का है उसने कहा कि जहां नूर रेज़ घास है वहां जाया चाहता हूं वह बोले कि हम तुम्हें उस जंगल के पास पहुंचा देवेंगे और दूसरे पता भी बता देवेंगे पर वहां न जावेंगे जो तुम जीते फिरोगे तो तुम्हारे शहर में तुम्हें पहुंचा देंगे नहीं तो जो तुम पर बीतेगी सो बादशाहज़ादी से जा सुनावेंगे हातिम ने पूछा कि इस का क्या कारण उन्हों ने कहा कि जिस समय वह घास धरती से निकलती है उस समय बन के फूल दीपक के समान प्रकाशित हो जाते हैं और सांप बिच्छू आदिक मनुष्य दुखदाई और प्राण घातक वह पशु पक्षी उसके आस पास घिर आते हैं इसलिये वहां कोई नहीं जा सक्ता हातिम ने कहा कि देखिये क्या भाग्य में है तब एक परीज़ाद ने हातिम को कन्धे पर बिठालिया और सब साथ होलिये सातवें दिन उस बन के पास जा पहुंचे तो एक बड़ी लम्बी चौड़ी जगह दृष्टि पड़ी हातिम ने कहा कि वह घास कहां है उन्हों ने कहा कि उसके उगने का समय आ पहुंचा है दो चार ही दिन में निकलेगी हातिम और वह परीज़ाद कई दिन उस जंगल में रहे भांति भांति के मेवा खाया किया कि एक वह घास धरती से निकली जितने फूल थे दीपक समान प्रकाशित होगये और सारा बन सुगन्ध से महक गया सब भांति के जीव उसके आस पास इकट्ठे हो घेर के खड़े हुये हातिम ने परीज़ादों से कहा कि तुम यहीं रहो मैं ईश्वर के भरोसे पर जाता हूं आगे जो उसकी इच्छा यह कह वह जिन्नों के बादशाह का दिया हुआ मोहरा मुंह में रख उस घास के पास जा दो तीन उसकी पत्ती और कई पत्तियां

नूने उनके आगे भांति २ के खाने और मेवे चुनवा दिये वह प्रसन्न
तापूर्वक भोजन कर रात को वहीं रहे प्रातःकाल हातिम ने पूछा
कि हुस्नबानू अब कौन सी तेरी बात है उसने कहा कि एक मनुष्य क
हता है कि सच बोलने वाले को सदा सुख है वह क्या सच बोला औ
र क्या समाचार लाओ हातिम ने कहा कि तुम जानती हो कि वह कि
स ओर है वह बोली कि मैंने अपनी दाई से सुना है कि कर अशह
र किस ओर है हातिम ने कहा कि परमेश्वर इस दुर्ग को सुगम क
रेगा

चौथी कहानी में इस बात के समाचार लाने का वर्णन है कि एक मनुष्य कहता है कि सच बोलने वाले को सदा सुख है

हातिम हुस्नबानू से बिदा होकर शहर से बाहर निकला कई
दिन चल के एक पर्वत के पास जा पहुंचा वहां क्या देखता है
कि एक बड़ा नद लोहू से भरा हुआ बड़े वेग से बहता है हातिम
उसे देख चिन्ता कर अपने मन में कहने लगा कि मैंने कभी ला
ल पानी का नद नहीं देखा इसे जाना चाहिये कि यह कहां से
आता है और इसके बहने का कारण क्या है यही विचार कर उसी ओ
र चला इतने में एक बहुत बड़ा वृक्ष सामने से देख पड़ा जब उस
के पास पहुंचा तो देखा तो उसकी डालियों में सैकड़ों सिर मनु
ष्य के लटकते हैं उसके नीचे एक तालाब बहुत सुथरा मुंहामुंह
भरा है और उसी का पानी जंगल की ओर चला जाता है हातिम उस
वृक्ष के नीचे बैठ गया तब जितने सिर उस वृक्ष से लटकते थे वह
कहकहे के हंसने लगे यह देख हातिम को आश्चर्य हुआ कि कटे सिर हं
सते हैं और उनसे रुधिर की बूंद टपक २ उसी तालाब में गिरती थीं और

बोला कि जब तक तू अपना और अपनी सरदार का नाम न बतावे
गी तब तक मैं नही खाने का यह सुन उस खवास ने आके कहा
कि वह बटोही खाना नहीं खाता और कहता है कि जब तक तू
अपना और अपनी सरदार का नाम और इस सभा का वृत्तान्त
जो इस तालाव की निकली है न बतावेगी तब तक मै खाना न खा
ऊंगा यह सुन मलिका बोली कि तू फिर जाके कह कि पहिले तू
खाना खाले पीछे बताऊंगी जब वह खा चुके तब कहियो कि आज
नहीं कल वह हातिम के पास आई और जैसा मलिका ने सिखाया
था वैसाही कहि सुनाया हातिम ने चाहा कि उसका हाथ पक
डले वह भाग कर तालाव मे कूद पड़ी और मलिका के पास जा
खड़ी हुई सारी रात नाच रंग होता रहा सवेरा हुआ तव सव ता
लाव मे कूद पड़ी थोड़ी देर मे सव सिर पानी भी मे आ गये औ
र आपसे आप उछल २ वृक्ष की डालीओं में जा लटके और
वह सिर वैसाही ऊंचा जा लटका फिर सव सिर हंस पड़े हात
म भी उस कोने से सरदार के सिर पर टिकटिकी लगाये था औ
र मन मे कहता कि जो इस भेद को पाऊं तो जैसे बने वैसे इस
सरदार के साथ अपना व्याह करलूं हे परमेश्वर यह क्या भेद
है कि रात को जीती है और दिन को उनके सिर वृक्ष मे जा लटके
है यह काम जादू का जान पड़ता है इसी सोच मे दिन वीता रात
हुई फिर वैसे ही सिर तालाव से गिरे और विछाना विछा और स
भावनी और परियां और मलिका तख्त और कुर्सियों मे जा वैठीं
नाच होने लगा हातिम मन मे सोचता कि आज का वादा किया
है देखिये पूरा करती है या नही जब आधी रात हुई फिर वैसे ही
दस्तर खान विछे और भांति २ के खाने चुने गये मलिका ने ए.के

सलटकने लगा और देह सिर के तालाब में डूब गया आकाश औ
र धरती से पुकार हुई कि जब सूर्य अस्त होगये और रात हुई वे सि
र हातिम के सिर समेत ताला ब मे गिर देह धड़ इकट्ठे हो काम
काज करने लगे और मलिका भी तख्त पर आबैठी हातिम हा
थ बांधे तख्त के कोने में खड़ा हुआ पर बेसुध था यह न जानता
था कि मैं कहां था और कहां आया कहां जाऊंगा इतने में मलिका
ने कहा कि अरे जवान सच कह तू कौन है और तेरा क्या नाम है
और कहां से आया है हातिम ने कहा कि मैं भी एक तेरा सेवक हूं
इस ही तालाब से निकला हूं उसने हातिम की बातों से जाना कि य
ह सुरु पर आशक हुआ है यह सुन कुछ न बोली और नाच देखने
लगी आधी रात बीते दस्तर खान बिछा और भांति २ के स्वादिष्ट
खाने मीठे सलोने और रंग रंग के मेवे चुन दिये मलिका ने हाति
म को पास बैठा के सुथरे २ खाने उसके आगे धर बड़ी दया और
प्यार से कहा कि अरे जवान कुछ खाना खा और पानी पी हातिम
खाना खाने लगा पर ये न जाना था कि मैं कौन हूं और किस लिये
आया और कहां जाऊंगा खाना खाने के पीछे फिर नाच होने ही
ने लगा सारी रात ऐसे ही बीती सबेरा होते ही सब सिर हातिम के
सिर समेत वैसे ही फिर बृक्ष की डालियों से जा लटके और ध
ड़ तालाब में डूब गये ऐसे ही कई दिन बीते तब एक दिन ख्वा
जा खिज़र फ़िर आके अपने आसे से हातिम का सिर उतार और
धर तालो से निकाल इस्म आज़म यहां तक पढ़ा कि उस देह में आ
त्मा आगये और जानदार हो गया आंख खोल के देखा कि वेई
आसा लिये सिर हाने खड़े हैं उठकर पैरों पे गिर कहा मुझे इस
दशा में क्या देखते हो और सहाय नहीं करते उन्होंने कहा कि तू

उतार उसमें स्नान कर पवित्र कपड़े पहन इस्म आज़म पढ़ने ल
गा उसके प्रभाव से फाड़ने और काटने वाले जादूगर के पशु पक्षी
सब भाग गये और यह समाचार शाम अहमर को पहुंचा कि अब
पशु पक्षी भागे चले आते हैं उसने जोतिष की पोथी देख के जाना
कि एक दिन हातिम ताई इस परबत पर आके हमारा सब जादू नष्ट
करेगा यह वही है जो वहां तालाब पर इस्म आज़म पढ़ता था और
कोई जादू उस इस्म के पढ़नेवाले पर नहीं चलता क्या उपाय की
जिये कि वह इस्म आज़म भूल जाय यह बिचार एक मंत्र पढ़ चारों
ओर फेंका उसके फेंकतेही परियों का एक झुंड दिखाई दिया उसमें
से एक परी मलिका जरीपोश के आकार सुराही पियाला हाथ में लिये
दिखाई दिये शाम अहमर ने उससे कहा कि तुम जाके हातिम को
शराब का प्याला पिला भ्रष्ट करो वह सब परियों समेत उस तालाब
पर आ पहुंचीं हातिम देख अचम्भे हुआ कि ये सब उस भूम में ल
चलती थीं सकीं कैसे आईं फिर मन में सोचा कि यह उस को
बाप की शैतान है या नकली है इतने में मलिका जरीपोश की
सूरत हो हातिम के पास आके कहने लगी कि अरे हातिम तूने बड़ा
क्लेश सहा आज मेरे बाप ने मुझे बाग़ की सैर के लिये बुलाया है मैं
तुझे देख बहुत प्रसन्न हुई यह कह पास बैठ प्याला शराब से भर
हातिम के हाथ में दिया हातिम ने प्याला ले मन में कहा कि प्यारी
का समागम धन्य है इसे हाथ से देना न चाहिये निदान मुंह से ल
गा लिया वह सुन्दरी उसी समय काला देव हो हातिम को बांध शा
म अहमर के पास ले गई उसने सिर नीचा कर मन में कहा देखो
दान को अरथाना बड़ी मूर्खता है पर ये बैरी है कुछ न जाने देना चा
हिये नौकरों से कहा कि इसे अंधेरे कूप में डाल दो नौकरों ने हातिम

तूने कैसे जाना कि मेरे पास है वो: बोली कि मेरे बापने ज्योतिषके बलसे बताया है हातिमने कहा कि वो मोहरा मित्रसे अधिक प्यारा नहीं है चाहता था कि निकालके दे कि बृद्ध मनुष्यने हातिमको आसे डांटा कि अरे मूर्ख यह क्या करता है मोहरा देगा तो बहुत पछितायगा और मरा भी जायगा यह बात सुन हातिमने कहा कि बाबा तू कौन है जो भले काममें रोकता है मोहरा मेरे किस काम आवैगा जो अपनी अपनी प्यारी को न दूं क्योंकि यह बात प्रसिद्ध है कि वही फल जो महेश चढ़े उसने कहा कि मैं वही हूं जिसने तुम्हें इस मिला या था हातिम उठकर उनके पैरों पर गिरा और कहने लगा जिसको मैं चाहता था आप की कृपासे मैंने उसे पाया उन्होंने कहा कि अरे मूर्ख यह क्या कहता है मैं अपने मनमें मत समझ कि यह मलिका है भूले मत यह जादू की तसबीर है पहले इसी को शाम अहमर ने तेरे पास मलिका का आकार बनाके भेजा था और उसके हाथसे शराब का प्याला पिलवाके तुझे अग्निकुन्डमें डबोया इसी मोहरे के प्रभावसे तू जीता बचा ये परियां जो तेरे पास आई हैं सब जादू की हैं इस आज़म पढ़ जो मलिका है तो बही रहेगी जो जादू की है तो जल जायगी हातिमने उनके पैर चूम तालाबमें मुंह हाथ धो कुल्ली कर ज्योंही इस आज़म पढ़ने लगा त्योंही परियों का रंग बदरंग हुआ और थरथराने लगी और मलिका की आकृत कांपने लगी फिर सब के सिरसे अग्नि की ज्वाला उपजी कि वे दीपक समान जलने लगी क्षण में सब की सब जलके भस्म होगई हातिम पछिताने लगा कि यह तसबीर ही मुझ को बहुत थी मलिका की जगह इसी को देखके अपने व्याकुल जी को संतोष करता था अब केसे धीरज धरूंगा और जी को था मूंगा रोने बिन कुछ और

किया हातिम आपको बंधा देख ज़ोरो कर परमेश्वर से बिनती क
रने लगा कि हे परमेश्वर इस समें तो बिन और कोई सहायक नहीं
और शामअह्मर ने अपने जादूगरों से कहा कि तुम सब इस के
चारों ओर बैठो और चौकी दो उन्हों ने उस के कहने से वैसा ही
किया निदान सात दिन रात ऐसे ही बीती हातिम भूख प्यास से ब
हुत व्याकुल था इतने में शामअह्मर आया और कहने लगा
कि अरे हातिम क्या दशा है वोह कुछ न बोला तब शामअह्मर
ने कहा कि जो वोह मुहरा मुझे दे तो अभी छोड़ दूं हातिम बोला
कि जो तू अपनी बेटी मुझे व्याह दे तो अभी देता हूं यह सुन उसने ब
हुत क्रोध कर अपने सेवकों से कहा कि तुम इस के ऊपर पत्थरों मेंह
बरसावो जिस में इस का सिर टूट जाय और टुकड़े २ हो जाय
सब जादूगर पत्थर हाथ में लेकर हातिम के पास आये और
कहने लगे कि अपने प्राण पर दया कर और मुहरा दे डाल नहीं
तो तेरा सिर पत्थरों से तोड़ डालेंगे कि भेजा निकल पड़ेगा हाति
म न बोला फिर जब उन्हों ने बार बार कहा तब बोला कि परमेश्वर
की कृपा से तुम्हारे सरदार को मार के उसकी बेटी को अपनी से
वा में लूंगा यह बात सुन वो: जादूगर क्रोध कर पत्थरों मेंह बर-
साने लगे यहां तक मेंह बरसाया कि हातिम उन पत्थरों में छि
प गया और वहां एक पहाड़ सा होगया तब उन जादूगरों ने शाम
अह्मर से आ कहा कि हातिम मरगया उसने कहा कि तुम झू
ठ कहते हो हातिम अभी तक जीता है उन्हों ने कहा कि जो लो
की भी देह हो तो धूर होजाता यह तो मनुष्य था के से बचा शाम अ
ह्मर ने कहा कि जो तुम्हें बिस्वास नहीं तो पत्थरों को सरका
देखलो कि इसे कुछ भी बाधा हुई हो जादूगरों ने जो पत्थर सरकाये था

साथ भलाई करूंगा जिस समय शाम अहमर को मारूंगा यहां का राज तुझे दूंगा उसने कहा कि हातिम इस मोहरे से अधिक मुझे जगत की कोई वस्तू नहीं चाहिये जो देना हो तो यही दे हातिम ने कहा कि यह मोहरा एक मित्र की निशानी है तुझे कैसे दूं तू जो यह मुहरा मांगता है सो किस काम के और किस लिये उसने कहा कि मैं अपने लिये चाहता हूं हातिम ने कहा कि अरे मूरख जो तू परमेश्वर के हेत मांगता तो मैं अभी दे देता उसने कहा कि हमारा स्वामी शाम अहमर का गुरु कमलाक है तेरे परमेश्वर के लिये क्यों मांगू हातिम बोला कि अरे दुष्ट तू जो ऐसे कुवचन कहता है मेरे सामने से दूर हो मैंने जाना कि परमेश्वर को नहीं मानता अब मुझे निश्चय हुआ कि तू महा दुष्ट है क्या करूं कि विवश हूं क्योंकि तूने मेरा बड़ा उपकार किया और भलाई का बदला बुराई नहीं दे सक्ता नहीं तो तू अपने कहने का दंड पाता वोह बोला कि मुझे तुझसे मुहरा लेना कुछ कठिन है जो आपसे देता है तो तेरे प्राण बचते हैं नहीं तो इस तालाब में इतने गोते दूंगा कि तेरे प्राण निकल जायेंगे हातिम बोला कि अरे दुष्ट बहुत बक चले मेरे सामने से दूर हो मोहरा मेरा है बलात्कार से कैसे ले सकेगा पर जो तूने मेरे साथ भलाई की है इसलिये इस देश का राज तुझे दूंगा सो भी तब मिलेगा कि भले काम करने की प्रतिज्ञा कर और परमेश्वर को एक जाने और जादू करना छोड़ दे इस बात को सुन वोह मंत्र और इस्म आज़म पढ़ने लगा उसने अपने वश भर मंत्र पढ़कर बहुत फूंका पर कुछ न हुआ इस्म आज़म के प्रभाव से वोह आपही कांपकर भागा और अपने साथियों के पास आके प्राण भय से चुपके से सो रहा कि कोई न जाने और

इसम आज़म पढ़ता हुआ शाम अहमर की ओर चला और हातिम भी उसके पीछे हो लिया जब शाम अहमर ने जाना कि हातिम और सरतक इधर चले आते हैं अपना सब लश्कर साथ ले शहर से बाहर निकला और मंत्र पढ़ा कि घटा उठी और बिजली चमकने लगी बादल गरजने लगा यह देख सरतक कांपने लगा और कहा कि हातिम यह जो देख पड़ता है सो जादू है संभल जा उसने इसम आज़म पढ़ के आकाश की ओर फूंक दिया वोह सब उड़ा लश्कर पर पड़ा यह चरित्र देख शाम अहमर अचंभे में होकहने लगा कि हातिम भी बड़ा जादूगर है कि जिसके जादू ने मेरे जादू को नष्ट करदिया क्या कीजिये इतने में एक और मंत्र याद कर के पढ़ा कि एक पहाड़ धरती से निकल हातिम के सिर तक पहुंचा सरतक पुकारा कि हातिम संभल जा यह दूसरा जादू है फिर हातिम ने इसम आज़म पढ़कर फूंका तो वोह पहाड़ कंकरियां होके उन्हीं के सिर पर आया उसमें चार हज़ार जादूगर मरे और एक बड़ा पत्थर शाम अहमर के सिर पर आया वोह अपने जादू के बल से टल गया और पत्थर किसी जंगल में जा पड़ा तब हातिम इसम आज़म पढ़ता हुआ आगे बढ़ा शाम अहमर ने देखा कि हातिम निर्भय चला जाता है और मुझ तक आ पहुंचेगा फिर एक मंत्र पढ़ के ऐसा फूंका कि चार अजगर उपजे पर उसी के लश्कर पर जा गिरे सब लश्कर निगल गये केवल तीन मनुष्य बचे फिर शाम अहमर ने मंत्र पढ़कर फूंका तो अजगरों ने निगले हुओं को उगल दिया और आप फिर गये यह देखि तीन हजार जादूगर प्राण भय से भागे शाम अहमर ने अपना सा पुकार २ कहता कि मत भागो और धीरज धरो पर किसी ने न सुना जब श्याम अहमर ने देखा कि कोई नहीं फि

सी होके पूछने लगे कि अरे सरतक शाम अहमर कहां उसने क हा कि वोह तुम सब को जादू से वृक्ष बनाकर कमलाक के पा स गया हातिम ने इस्म आज़म पढ़ कर फिर तुम्हें मनुष्य बना या है तुम अपनी दशा कहो कि कैसे थे उन्हों ने कहा कि हम धरती में गड़े थे चलने फिरने पराक्रम न था और गांठ२ दुखे थी अब ईश्वर की कृपा से अच्छे हुए यह अद्भुत मनुष्य परमे- का जन आश्चर्यवान और बली है जो शाम अहमर के जादू पर प्रबल हुआ आपस में सम्मत करके सब मिल हातिम के पास- आके पैरों पर गिर के कहने लगे कि आगे हम शाम अहमर के सेवकों में थे और अब तेरे दासों में हुए तूने हमारा बड़ा उपका र किया परमेश्वर तुझ पर प्रसन्न रहे हातिम ने यह बातें सुन इस्म आज़म पढ़ उनपर फिर फूंका उन में जो कुछ जादू का असर रहगया सो भी जाता रहा जैसे थे वैसेही होके हातिम से बोले कि हे प्रभु अब कहां जाने का मनोर्थ है हातिम ने कहा है मित्रो मुझे श्याम अहमर से कुछ काम है जब तक वोह मेरे पास न आवेगा तब तक मैं कुछ काम न करूंगा उसकी बेटी के साथ व्याह किया चाहता हूं जो उस ने प्रसन्नता से व्याह दी तो खैर नहीं तो जीता न छो ड़ूंगा वे बोले कि उसकी बेटी आपने कहां देखी जो ऐसे मोह गये हा तिम ने सब हाल आदि से अन्त तक वर्णन करके कहा कि मुझे केवल उसके मिलने का अभिलाष है मैं परिश्रम करता और और दुख सहता यहां तक आपहुंचा हूं और शाम अहमर ने जो दुःख मुझे दिये हैं उनको नहीं कह सक्ता परन्तु ईश्वर को धन्य है कि जिसने मुझ निर्बल को ऐसे बली पै प्रबल किया यद्यपि वह हां भागके अपने गुरु के पास गया है पर उससे क्या हो सके है

लाव पर जादू पड़ गया है सहसा सबों ने पानी पिया पानी पीते ही उन की नाकों से लोधर के फुहारे छुटने लगे हातिम अचंभे में रह गया पर उन से अलग न होता या किये मेरे साथ आये है उन्हें अके ला कैसे छोड़ूं इस पानी के पीने से इन की यह दशा हुई निदान सारी रात इसी चिन्ता में बीती हातिम प्यासा रहा पर पानी की एक बूंद भी न पी जब प्रातःकाल हुआ वे सब मशकों से फूल गये हातिम उन की दशा देखता था मल २ रोता था पर यह न समझा कि श्याम अहमर ने इस पानी पर भी जादू किया निदान उन के जीने से निरा श हो बठा उस के मन में आया कि कदाचित् इस्म आज़म के प्रभाव से यह अच्छे हो जावें उन के प्राण बचें यह बिचार उस इस्म को पढ़ के फूंका तो उन की सूजन पहलीबेर में उतर गई दूसरी बेर फिर प ढ़ के फूंका तो उन के नाकों से नीला पानी बहने लगा तीसरी बेर में जैसे थे वैसे ही हो गये हातिम को आसीस दे के सराहने लगे तब हातिम ने पूछा कि मित्रो यह क्या कारण है वोह बोले कि हमें ऐसा जान पड़ता है कि श्याम अहमर इस तालाब पर भी जादू कर गया है हातिम ने उस पर भी इस्म आज़म पढ़ के फूंका तो पहिले वह पानी उबला फिर लाल होके हरा हो नीला हो गया एक क्ष ण में निरमल हो अपनी निज रंगत पर आ गया हातिम ने जा ना कि अब इस तालाब से जादू जाता रहा तब थोड़ा पानी आपने पिया तब उन से कहा कि अब तुम भी पिओ और नहाओ जिस में जादू की गरमी इस्म आज़म के प्रभाव से तुम्हारे शरीरों से निक ल जाय उन्हों ने उस का कहना किया और अह्ना कर कहा कि प्रभु हम आप के साथ होके शाम अहमर और कमलाक से लड़ें गे यह प्रतिज्ञा कर आगे बढ़े और श्याम अहमर जो वहां से भा

केइस्मआज़म पढ़ने लगा उसके प्रभाव से ऐसी पवन चली कि
उन पत्थरों को उड़ा ले गई परबत देख पड़ने लगा तब हातिम
आगे बढ़ा कमलाक ने फिर एक ऐसा जादूभरा मंत्र पढ़ा कि
वह परबत हातिम के साथियों की दृष्टि से लोप हो गया तब
उन्हों ने प्रार्थना की कि प्रभु इस परबत को कमलाक जादू से
छिपाया है यह सुन हातिम वहीं बैठ के इस्मआज़म पढ़ फूंक
ने लगा ईश्वर की कृपा से दो तीन दिन में परबत फिर देख पड़ा
हातिम उठ खड़ा हुआ और साथियों समेत उस पर चढ़ गया
जादूगरों ने देखते ही पुकार मचाई कि यह मनुष्य भला चं
गा यहां आ पहुंचा तब कमलाक श्याम अहमर समेत उस आका
श पर चढ़ गया जो उस परबत से तीन हज़ार कोस ऊंचा था और अ
पने लशकर को भी चढ़ा लिया हातिम ने जब देखा की कोई साम
ना करने वाला न रहा तब निर्भय हो शहर में गया तो क्या देखा कि
एक बहुत बड़ा शहर है और उसके मकान अति मनोहर बाज़ार
स्वच्छ खुला हुआ उसमें भांति भांति की वस्तु रक्खी हैं रत्न जग
मगा रहे हैं और मेवों मिठाईयों से भरे थाल अच्छी सुन्नक से ज
गह २ रक्खे थे पर मनुष्य का नाम न था हातिम ने यह चरित्र
देख अपने लोगों से कहा कि यहां के रहने वाले कहां गये व
ह बोले कि कमलाक सबों को आप के डर से दूसरे आकाश पर
ले गया जिसको उसने बनाया है हातिम इस बात को सुन के हँ
सा और कहा कि अब तुम क्या भूखे मरते हो परमेश्वर ने ये उ
त्तम पदार्थ भोजन को दिये हैं इन्हें आनन्द से खाओ और ईश्वर का
धन्यबाद करो वे भूखे तो थे ही सहसा खाने लगे जब खा चुके
तो सूज के मशक हो गये और सबों की नाक से रुधिर टपकने

सके निदान हातिम उन्हें वहां छोड़ आप श्याम अहमर की बेटी के पास चला दिन में वहां जा पहुंचा तो क्या देखता है कि न वोह ता॰ लाब है न वह पानी है पर वह वृक्ष वैसा ही हरा भरा खड़ा है और उस तालाव की जगह बहुत अच्छा एक शीश महल जग मगा रहा है हातिम उसके दरवाज़े पर से देखा कि वहां सब सुकुमारी अपनी जगह खड़ी हैं यह उन्हें देख प्रसन्न हुआ और वोह उसके पास आके पूछने लगीं कि तुम कौन हो और कहां से आये हो उसने कहा मैं वही हूं जो तुम्हारे साथ वृक्ष पर लटका था मलका से मेरा सलाम कहो उन में से एक दौड़ी गई और शाहज़ादी से बिनती करने लगी कि हातिम नाम एक मनुष्य जो जादू में फस रहा था होके आया है उसने सुन्ते ही सिर नीचे कर लिया एक घड़ी में सिर उठा के कहा कि अब तक कहां था ऐसा समझ में आता है कि अहमर परवत पर गया होगा शीघ्र जा॰ और पूछो वह आके हातिम से पूछने लगी कि अहमर परवत का॰ कुछ समाचार जानता है तो कह हातिम ने कहा कि मलका का बाप महा दुष्ट था सो मारा गया और अपने कुकर्मों से नरक में पहुंचा॰ इतना तुझसे कहा और सब मलका से कहूंगा उसने जा के वैसे॰ ही कह दीया बादशाहज़ादी ने सुन्ते ही आंसू भर लिये वह धीर्य दे के कहने लगी कि ऐसे बुरे बाप के लिये दुख करना और रोने का क्या करना है उसने अपने कुकर्मों का फल पाया और हम तुम उसकी क़ैद से छूटीं अब यह उचित है कि उसको बुलाके उससे मिलो इस बात के सुन्ते ही वह अपना सिंहार करके नठन आन बान से जड़ाऊ तख़्त पर आ बैठी और उदासीन की भांति बोली अच्छा बुला आ एक सहेली दौड़ी और हातिम को बुला लाई उस्को

खा कि ऐसे आनन्द के मिलाप समय अलग हो गया यह कैसे
पूछों यह सोच के चुप रह गई होतिम ने जब उस चन्द्र मुखी
को अश्चर्य के समुद्र में डूबा देखा तब कहा कि मेरी प्राण प्यारी
मन रञ्जनी इतना क्यों घबराई परमेश्वर न करै कि मेरे जीते जी
तुझे कोई दुःख हो जो मेरे अलग हो जाने से चिन्ता हुई तो ठीक
है क्यों कि तुझे चन्द्र में आगुण है तू उनसे भी सुन्दर है मैंने परमे
श्वर के मार्ग में सिर दिया है मुनीर शामी के लिये घर से निक
ला हूं वह हुस्न बानू पर आशक हुआ है और हुस्न बानू सात बात
कहती है जो कोई उसकी सातों बातें पूरी करेगा वह उसके सा
थ अपना व्याह करैगी मुनीर शामी उसकी एक बात का भी उ
त्तर न दे सका तब उसने अपने शहर से निकलवा दिया वो रोता
पीटता कराह यमन में आनिकला एक दिन मैं भी शिकार
खेलता हुआ उधर गया अनायास वह मिल गया मैंने उसके स
माचार पूंछे उसने भिखारीयों के समान अपना वृतांत वर्ण
न किया उसका दुख सुन मेरा जी भर आया और आंसू टपक
पड़े निदान मुझसे उसका दुखी रहना सहा न गया इस लिये उसके
साथ शाह बाद में आया और हुस्न बानू की बातों को पूरा करना
अपने सिर लिया और उसे कारवां सराय बिठा के मैंने जंगल की
राह ली ईश्वर की कृपा से तीन बातें तो पूरी कर चुका हूं यह चौथी
बात को पूरी करने करने निकला फिर तुझे देख मेरा मन मेरे बस न
रहा और तेरी प्रीति के बाणों ने कलेजे में छेद २ कर दिये कि संसार
के सब कामों से रहित हुआ बार बहुत सी धूल छान के भाग्य ब
शतू प्राप्त हुई यह अभिलाष है कि तेरे रूप की फुलवारी से आन
द के फूल चुनूं और अपनी मन की कली को फूला हुआ पर क्या क

लिखी है हातिम उसे देख प्रसन्न हो दरवाजे पर आ ताली बजाई तो कई द्वारपाल दरवाजा खोल के बाहर आये हातिम को देख कहने लगे कि तुम कौन हो और किस काम के लिये यहां आये हो हातिम ने कहा कि मैं एक काम के लिये शाहबाद से आया हूं द्वारपालों ने यह सुन दौड़ कर अपने मालिक से कहा वह बोला कि मुसाफ़िर को बुला लो वह मालिक देखने में तरुण और वास्तव में बूढ़ा था जब हातिम भीतर गया तो क्या देखता है कि एक परम सुन्दर मनुष्य बहुत अच्छी मसनद पर तकिया लगाये बैठा है हातिम ने झुक के सलाम किया वह वहां से उठके मिला और बड़े आदर सत्कार से अपने पास बिठा लिया और भांति २ के खाने मंगाके उसके आगे रक्खे जब खाना खा चुके तब हातिम से उस ने पूछा कि तुम कौन हो और कहां से आये हो और किस काम के
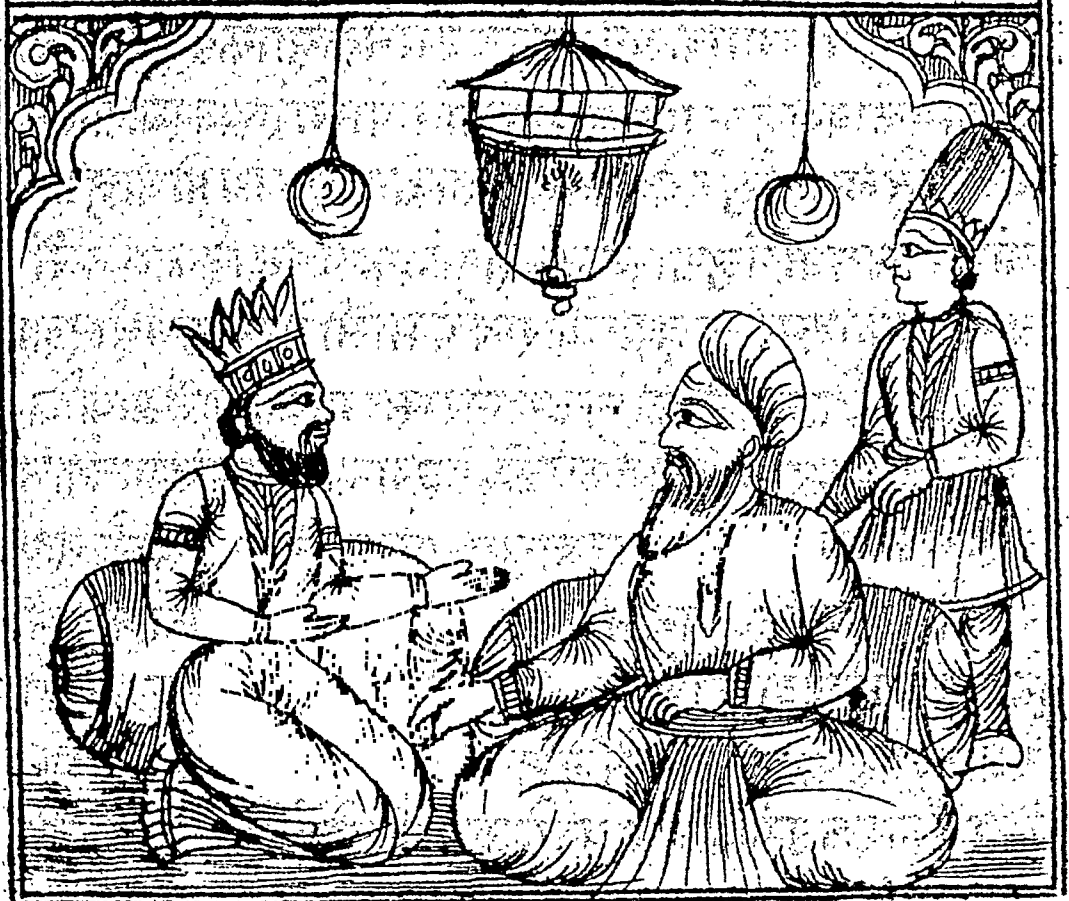
दूर जाके देखा कि एक वृक्ष के नीचे बहुत से चोर कहीं से माल चुराके लाये हैं और बांट रहे हैं उन्होंने मुझे देख बुलाके पूछा कि तू कौन है और कहां से आया है मैं झूठ नहीं बोलता था उनसे च सब सच कहदिके वह दीप मणि दिखादी उसके देखतेही चोरों को यह लालच हुआ कि उससे मुझसे छीन लेवें इतने में एक मनुष्य आकाश से उतरके ऐसे भयानक बोल से ललकारा कि सब जंगल कांप उठा और चोर अपने प्राण भय से भाग गये मैं अकेला वहां खड़ा रह गया वह मेरे पास आके कहने लगा कि तू कौन है मैंने पहिले भी सच कहा था उससे भी सच कहदि या यह सुन वह हंसके कहने लगा कि तू सच बोला इसलिये यह सब धन इस दीपक मणि समेत तुझे दिया परन्तु चोरी जुआ छोड़ ने की प्रतिज्ञा कर मैंने उसकी यह बात मानली और चोरी करने जु आ खेलने की प्रतिज्ञा की तब उसने कहा कि जो तू जुआ न खे लेगा और चोरी न करेगा तो तू नौ सौ वर्ष जियेगा यह कहके वह चला गया मैं उस माल की गिठरी बांध अपने घर लाया और यह मकान बनाया मुहल्ले के लोग मेरे वैरी हुए और कोतवाल से कहा कि कल्ह इसके पास एक कौड़ी न थी आज इतना रुपिया कहां से लाया जो इतना बड़ा महल बनवाया इस बात के सुनतेही कोतवाल ने मुझे बुलाके पूछा मैंने उसके सामने भी जो कुछ सच था वही कहा वह मुझे बादशाह के पास लेगाया वहां भी प्राण का भय न करके सच ही बोला यह सुनके बादशा हने मेरे ऊपर बड़ी दया की कि यह मनुष्य अद्भुत सत्यवादी है कि इतना धन रत्न किसी से न छिपा सच सच कह दिया इसके सच बोलने पर मैंने यह सब धन रत्न उसी को दिया और

ल में एक अमरावीके सुहावना बाग देख उसमें गया और आ
नन्दसे सैर करता २ एक बंगाले के पास जा पहुंचा वहां एक
कुंड तालाव के समान निर्मल जल भरा देख उसके किनारे
बैठ हाथसे पानी उछालने लगा इतने में एक जंजीर उसके
हाथमें आगई उसे जो पकड़ के खींचा तो एक सन्दूक ताला
लगी हुई ताली समेत निकली बादशाह ने जो संदूक खोला
तो एक परम सुन्दर सुकुमारी कांता को उसमें बैठे पाया उसे देख
बादशाह डरगया उसने कहा क्यों डरते हो मैं भी मनुष्य हूं य
ह कहके संदूक से निकल सुराही प्याला गज़क लाये बादशाह के
सामने रख भोगविलास की अपेक्षा की बादशाह ने जी में कहा
कि सुन्दर स्त्री और सब आनन्द की वस्तु प्रस्तुत है इसे न छोड़ना चा
हिये यह विचार कर मद्य पान और भोग विलास कर उठ खड़े हु
ए और उंगली से एक अंगूठी उतार उसे दी मेरी निशानी अपने
पास रख जो कभी फिर मिले तो भूल न जाय वह खिलखिलाके
हंस पड़ी और अंगूठियों की एक थैली निकाल बादशाह को दि
खलाके कहने लगी कि परमेश्वर सब गुप्त प्रकट का साक्षी है
सच तो यह है कि मेरे पति ने रक्षा के लिये मुझे जंगल में इस बा
ग के भीतर संदूक में बंद कर इस कुंड में लटका दिया है और
आप सौदागरों के साथ सौदागरी करता फिरता है और मेरे खा
ने पाने को सब वस्तु आप है किस वस्तु की यहां कमी नहीं है जो
कभी कोई मुसाफिर भूला भटका क्या बादशाह क्या सौदा
गर तेरीही समान आजाता है इस बाग में तो ऐसे मुझे सन्दू
क से निकाल भोग कर अंगूठी दे चला जाता है सो यह बहुत
अंगूठियां मेरे पास हैं पर मैं नहीं जानती कि कौन किस की है

खाऊंगा यह कहके वहां से उठ सरायमें आया और मुनीरशामी सेमिलके एक साथ खाना खाया और सबबातोंको कही यह सु न मुनीरशामीने हातिमको धन्य २ कहि दोनोंको सुखपूर्वक सो ये प्रातःकाल हातिम न्हाय धोय कपड़े बदल हुस्नबानू की ड्योढ़ी पर आया चोबदारोंने जा कहा कि हातिम आया है उसने उसे परदेके भीतर बुलाके एक कुरसी पर बिठाके कहा कि सुनने में आता है कि एक पहाड़ में शब्द आता है इससे उसका कोह निदा नाम है अब उसके समाचार ला कि वहां पुकारने वालाकौ न है और पर्वतके उधर क्या है यह हातिम वहांसे बिदा हो सरा यमें आके मुनीरशामीसे कहा कि कोह निंदाके समाचार लेने जाता हूं जो जीता बचा तो उसका निश्चयकर फिर तुझसे आ मिलूंगा नहीं तो परमेश्वर की इच्छा परन्तु किसी बात की चिंता न करना॥

पांचवीं कहानी में कोहनिन्दाके समाचार लानेका वर्णन है

हातिम दो चार बातें सिखाय मुनीरशामीसे कहके जंगल की ओर चला जिस बस्तीमें जा निकला है वहांके लोगोंसे पूं छता कि तुममेंसे कोई कोहनिन्दाका रास्ता जानता होतो मुझे बतादे यह बात सुन लोग अचंभे में हो हो कहते कि भाई हमने तो नेबड़े हुए उसका नाम भी नहीं सुना रास्ता जानना तो एक ओर हातिम अपने साहससे बे देखे सुने मार्गमें चला जाता था चलते २ एक महीना बीता एक किसी शहरकी ओर जा निकला तो क्या देखता है कि उस शहरके स्त्री पुरुष जंगलमें एकत्र हैं वह उनकी ओर चला उ न्होंने जो देखा कि एक मनुष्य चला आता है सबके सब इसकी ओर दे

सुन अचंभे में हुआ और उन्हों ने इह खाने में अच्छा बिछौना बि
छा उस पर मुरदे को लिटा दिया और और भांति २ खाने रक्खे सु
गंधकी बत्तियां जला के सात बार मुरदे के पैर चूम बाहिर निकल
ले आये और खाने के पास जा बैठे और हातिम से कहा कि भाई
मुसाफिर पहिले खाने में तू हाथ डाल और पेट भर खा कि मुर
दे को पहुंचे और तेरी कृपा से हम भी अन्न खा लें यह बात सुन हा
तिम खाना खाने लगा फिर सबने खाया जो बचा सो घर भिजवा
या वे सब न्हा धो के कपड़े बदल अपने घर चले और हातिम से
कहा कि जो तुम्हारी जी चाहै तो हमारे यहां कुछ दिन महिमान
रहो हातिम बोला बहुत भला तुम्हारी प्रसन्नता के लिये दो चार
दिन रह सक्ता हूं निदान उसे शहर में ले गये और एक सुथरा सा
मकान उसके रहने को दिया और खाने पीने को सुन्दर २ वस्तु लौं
डियों समेत भिजवा दिया हातिम ने अपने मन में कहा कि यहां की
रीति बहुत अच्छी है जो मैं इन कामों से अवकाश पाऊं और परमे
श्वर मेरा मनोर्थ पूरा करै तो मैं भी अपने शहर में जाके ऐसे ही
मुसाफिरों को आदर करूंगा यह अभिलाष करती थीं कि इस
मनुष्य का मन हम में से जिस को चाहै उसके साथ आनन्द पू
र्वक भोग बिलास करै पर हातिम ने किसी की ओर आंख भर
के न देखा भोग करने की तो कौन चर्चा थी जब सात दिन बीत ग
ये तब उन स्त्रीयों ने अपने सरदारों से हातिम की भलाई वर्णन
की शहर के रईस ने हातिम को अपने सामने बुलवाया और ब
ड़े आदर सन्मान से मसनद पर बिठाया कहा जो तुम इस शहर
का रहना पसंद करो तो बड़ी कृपा है और मैं अपनी बेटी तुम्हा
री सेवा में दूं हातिम बोला कि मुझे एक काम बड़ी अवश्य

खर्चे के योग्य आप लिया रहा सो पुण्य कर उसी ओर का र
स्ता लिया बहुत दिनों में एक शहर के पास जा पहुंचा उसके
आस पास कोई ख़बर न देखी तो जाना कि वह शहर यही है ज
ब शहर में गया तो वहां के रहने वालों ने पूछा कि तू कहां से आ
या है और कहां जायगा हातिम ने कहा कि शाहबाद से आया
हूं कोह निदा को जाऊंगा उन्हों ने कहा कि कोह निदा का र
स्ता यहां से बहुत दूर है तू नहीं जा सक्ता हातिम ने कहा कि जो मुझे
यहां लाया है वही सर्व समर्थ वहां भी पहुंचा देगा उन्हों ने कहा
कि आज की रात तू यहीं रह जा हमारी दाल रोटी अंगीकार क
र हातिम यह सुन वहां उतर रहा यहां एक मनुष्य कितने दिनों
से रोगी था उसके कुटुम्बियों ने उसे मार उसका मांस आपस में बां
ट लिया और जिसने हातिम को अपने यहां उतारा था अपना हि
स्सा पका के एक कटोरा पानी दो चार रोटियों समेत सांझ सम
य के हातिम के पास ला के कहने लगा कि अरे बटोही इसको खा
कि ऐसा खाना कभी न खाया होगा हातिम ने कहा कि जितने प
शु पक्षी भक्ष्य हैं सब मैंने खाये हैं यह किसका मांस है जो मैंने
कभी नहीं खाया उसने कहा कि तुमने पशु पक्षीयों का मांस
खाया होगा यह मनुष्य का है सो कभी न खाया होगा हातिम
बोला कि तुम मनुष्य भक्षी हो तुमसे डरा चाहिये तुमने किसी
मुसाफिर को मारा है उसके मांस खाया चाहते हो मैंने जाना
कि तुम्हारी यही रीति है कि जो कोई भूला भटका यहां आनि
कलता है तुम उसे मार के आपस में उसका मांस बांट खाते हो व
ह बोला कि अरे मुसाफिर परमेश्वर से डर हम मुसाफिर को
नहीं मार खाते हातिम ने कहा कि बड़े अचम्भे की बात है कि तू

भोजन है यहां रसोई नहीं होती जो हम तुझे कुछ देवें आज ह
मारी ज़ात का एक मनुष्य मर गया है उसकी स्त्री उसके साथ
जला चाहती है हातिम ने कहा इस मुरदे को धरती में क्यों नहीं
गाड़ते और इस इस्त्री को जीते जी क्यों जलाते हैं उन्हों ने कहा
कि हमने जाना कि तू इस देश का निवासी नहीं है यह हि
न्दुस्तान देश है यहां की यही चाल है कि स्त्री अपने पति के
साथ प्रसन्नता से जलती है हातिम ने कहा कि मुरदे के सा
थ जीते जी को जलाने की रीति बहुत बुरी है यह कह वहां से चल
किसी और गांव में पहुंचा वहां एक मनुष्य से पानी मांगा वह
एक कटोरा दूध और एक कटोरा मठा लाया और कहा कि
जो तेरा जी छाछ को चाहै तो छाछ और दूध पर मन चलै तो दूध
पीले हातिम ने पहले मठा पीलिया फिर दूध का कटोरा मांगा
उसने दूध में थोड़ी चीनी डाल के वह कटोरा भी दे दिया और
कहा कि अरे बटोही इस समय मेरे घर में बहुत अच्छे वासमती
चावल पके पकाये त्यार हैं जो तू कहे तो ले आऊं उन के साथ खा
वड़ा स्वाद मिलेगा हातिम ने कहा बहुत अच्छा भलाई को क्या
पूछना और अपने मन में उसकी उदारता को सराहता था वह ए
क थाली में मीठा भात ले आया हातिम ने उसे स्वाद से खाया हात
म उस रात को उसी गांव में रहा सुबह होतही उसकी स्त्री ने जाके कहा
कि रसोई त्यार है भोजन करो और दो चार दिन यहीं रहो जिसमें
मार्ग का खेद दूर हो यह सुन हातिम ने उन दोनों से कहा कि तुम्हा
री इस उदारता और बटोही के पालन पर धन्य धन्य है वह सुनके
बड़ी दीनता से बोले कि हमने तुम्हारी ऐसी सेवा क्या की यह भो
जन हमने लड़के बालों के लिये बनाया था कहो हमने साधारण

कि वह कौनसा दिन था कि हम मुरदे के साथ भोग बिलास के चे
न सुख किये थे अब जो वह मर गया तो हम उसके बिना जीती
रहें इस बात में प्रीति और शील और धर्म और न्याय का विरो
ध होता है उससे अधिक जब तक जीती रहेंगी बिरह की अग्नि में
जलना पड़ेगा इससे यही भला है कि ऐक ही बार उसके साथ ज
ल मुऐं और सदैव के बिरह की अग्नि से छूटें आगे परमेश्वर जा
ने और इस बात में भी जी डरता है कि कामदेव हमारे मन को
न भरमावे कि जिससे हम अपने स्वामी को भूलकर किसी और
ओर दृष्टि से देखें और अपना धर्म खो दें ऐसे जीने पर धिक्का
र है निदान उन्होंने हातिम का भी कहना न माना और बावली
सी इधर उधर देखती भालती चिता तक जा पहुंची फिर उ
स मुरदे को चिता में रख दिया और वह हसती हुई उसकी परिक्र
मा दे किसी ने उसका सिर जांघ पर धर लिया किसी ने पैर गोद में
ले लिये फिर लोगों ने मदमाचिता में आग लगा दी हातिम ने जा
ना कि आग की आंच से यह डर के भाग जायगी पर यह उसकी
समझ झूठी थी वे हमती हसती उसके साथ जल के भस्म हो गईं
हातिम यह बात देख घबराया और पछताने लगा जब लो
ग अपने घरों को चले तब हातिम भी उन के साथ चला आया
जिसके घर में रहता था उसने कहा कि तुमने देखा कि स्त्रीयां
अपने अभिलाष से जलती हैं कि कोई उन्हें बलात्कार से
जलाता है और प्रीति की रीति यही है तब हातिम बोला कि
तुम सच कहते हो प्रेम का निबाहना यही है कि उसके पीछे बिर
ह की अग्नि में न जले क्यों कि वह आग इस आग में बड़ी क
ठिन है निदान कई दिन पीछे हातिम ने कहा कि प्यारे मुझको ह

गया हातिम ने उनसे कहा कि हमारी यह चाल है कि जो पुरुष मर जाय तो स्त्री को जो स्त्री मर जाय तो पुरुष को उसके साथ गाड़ देते हैं इस बात को दोनों ने अंगीकार किया तब हमने उन्हें ब्याह दिया यह कौनसा न्याय है कि बहुत दिनों तक उसके साथ सुख चैन किया और उसके यौवन की फुलबारी आनंद के फूल लूटे अब जो वोह मर गई है तो यह अपनी प्रसन्नता से उसके साथ क्यों नहीं गड़ता और अपनी प्रतिज्ञा को क्यों नहीं पालना करता इसमें हमारा क्या अपराध है कुछ हम बलात्कार से नहीं गाड़ते जो उसकी प्रतिज्ञा बिन हम उसको गाड़ देते अन्याय है तू ही पूछ देख की यह अपनी बात से क्यों फिरा जाता है और अपना कहा क्यों नहीं निबाहता यह सुन हातिम उस पुरुष के पास गया और कहने लगा कि तू किसलिये अपनी बात नहीं निबाहता कब तक जियेगा अंत को एक दिन मरना है सो भला है कि जो तूने कहा है उसका निबाह कर वोह बोला कि अरे बिदेशी तू भी इन्हीं में मिलगया जो यह बात कहता है तू अपने शहर की रीति क्यों नहीं वर्णन करता हातिम ने कहा कि मैं क्या कहूं तू आपही प्रतिज्ञा कर चुका है अब फिरने से तुझे लाज नहीं आती उसने कहा कि यह कभी न होगा जो मैं इनका कहना मानूं और जीते इस मुरदे साथ गड़ूं हातिम ने जाना कि सब के सब इसे बे गाड़े न रहेंगे और यह भी अपनी प्रसन्नता से न गड़ेगा इस बात को सब उसे अपनी बोली से कहा कि तू चिंता मत कर मैं किसी न किसी भांति तुझे कबर से निकाल लूंगा पर अब इन के सामने तू गड़जा उसने कहा जो मैं गढ़ जाऊंगा तो तेरे निकालने के समय तक कैसे जीता रहूंगा फिर हातिम ने उसे धीरज दे उन लोगों से कहा कि ये

पर उसके घर वाले जगा करें और घर न आवें और स्त्रीयों का मुंह न देखें इससे हातिम ने तीन रात घात न पाई फिर फिर आया चौथी रात को लोग अपने अपने घर आये हातिम उठके उस गोर पर गया और वह मनुष्य गोर में हातिम को इस प्रकार बुरा भला कह के सो रहा कि वह बिदेसी बड़ा झूठा और छलिया जो मुझे छल से गोर में गड़वा गया मैंने आप बुरा किया जो ऐसे का कहा माना और उसकी बात को सच जाना इसमें किसी का दोष नहीं अपना किया अपने आगे आया निदान हातिम ने अपना मुंह नाबदान पर रख पुकारा कि मैं तेरे निकालने को आया हूं उसने उत्तर न दिया हातिम ने जाना कि वह मर गया पर फिर पुकारा तब भी न बोला तब तो हातिम को निश्चय हो गया कि वह जीता नहीं है बहुत पछता के रोया फिर तीसरी बार पुकार के कहा कि जो जीता हो तो बोल नहीं तो प्रलय पर्य्यंत इसी गोर में पड़ा रहेगा मैं अपना कहना पूरा कर चुका यह सुन वह चौंक पड़ा और सुना कि कोई पुकार रहा है उठ खड़ा हुआ और नाबदान के पास आके कहने लगा कि तू कौन है जो पुकारता है हातिम ने जो उसकी बोली सुनी तो परमेश्वर का धन्यवाद के प्रणाम कर बोला मैं वही हूं जिसने तुझे यहां से निकालने को कहा था यह कह के छुरी निकाल नाबदान खोद उसे निकाल खाना खिला के कहा कि अब जिधर तेरे मन में आवे उधर चला जा उसने कहा कि मेरे पास राह खर्च नहीं हातिम ने उसे कुछ राह खर्च दे के बिदा किया और आप उस नाबदान को बैसा ही बना के अपनी जगह पर आके सो रहा जिस में कोई न जाने इतने में प्रातःकाल हुआ तब उठ के उन लोगों से

हातिम कूद के एक तालाव में जा पड़ा और वह जीव मर गया जब ज्वाला की आग बुझ गई तब हातिम पानी उछाल बाहर निकल उसी हंस के पास आके उस जीव के चार दांत जो छुरी समान तीक्षा थे उखाड़ लिये और पूंछ दोनों कान समेत काट लीने फिर तरकश में रख आगे चला कई दिन पीछे दूर से एक क़िला दिखाई दिया तब उसी ओर चला जब पास पहुंचा तो उसे सुनसान पाया और उस के कंगूरे आकाश से लगे देखे जब उस के ऊपर गया तो देखा कि बड़े २ मकान शीशे महल से चमक रहे हैं और चौपड़ का बाज़ार बहुत सुथरा अति स्वच्छ बना है जिस दूकान में जो वस्तु चाहिये धरी है पर मनुष्य का नाम नहीं यह दशा देख हातिम अचंभे में हो मन में कहने लगा कि कोई व्याधी वा दैत्य इस शहर में आया है जिस के डर से यहां के लोग अपनी दुकानें छोड़ २ भाग गये यह बात मन में कहता हुआ आगे बढ़ा और बादशाही क़िले तक जा पहुंचा उस में बादशाह अपने लड़के बालों संपदा समेत रहता था और दो चार नौकर भी बाहिर के दरवाज़े पर दरीचों में बैठे थे हातिम को देख एक बोला कि एक मुसाफ़िर बहुत बरसों में इस शहर में आया दूसरे ने कहा कि इसे पुकारो जो इधर आवे यह बात सुन एक ने पुकारा हातिम एक दरीचे के नीचे खड़ा हो रहा बादशाह ने खिड़की से सिर निकाल के कहा कि अरे मुसाफ़िर तू कहां से आया है और कहां जायगा हातिम बोला कि मैं यमन का रहने वाला शाहबाद से आया हूं और कोहनिदा के जाने का मनोर्थ है यह सुनके बादशाह ने कहा कि तू राह भूल गया जो कोई और के रस्ते से आया यहां तुझे तेरी मौत लाई है इसी समय तू अपने मारा

हातिम और बादशाह ने एक साथ खाना खाया और पानी पि
या फिर बादशाह ने कहा कि मुझे कैसे विश्वास आवे कि वह
व्याधि मारी गई तब हातिम ने उसके दांत और दुम और का
न तरकस से निकाल दिखा दिये बादशाह देखके हातिम के पै
रों पर गिर पड़ा और धन्य धन्य कहा फिर और सब लोगों को लि
ख भेजा कि वह व्याधी नष्ट होगई तुम बेधड़क आके अपने देश
में बसो और आनंद से रहो फिर कुछ दिन बीते हातिम ने बिदा
मांगी और कहा कि ऐक मनुष्य ऐसा मेरे साथ करदो कि मुझे
कोहनिदा का रस्ता बतलादे बादशाह बोले कि यह शहर अ
व पर ऐश्वर कृपा से बसजायगा इसे अपना ही समझ के जो
यहां का रहना अंगीकार करो तो मैं अपनी बेटी तुम्हारी से
वा के लिये देता हूं हातिम ने कहा कि जब तक मैं दुखी लोगों
के कामों से छुटकारा नहीं पाता संसार का सुख महा पातक स
मझता हूं बादशाह ने यह बातें सुन उसके साहस और वीरता पर
धन्य २ किया और ऐक मनुष्य साथ दे बिदा किया वह मनुष्य
थोड़ी दूर जाके कहने लगा कि हातिम कोहनिदा का यह र
स्ता है सीधा अब इस सड़क में बेधड़क चला जा हातिम उसे
बिदा कर उधर चला कुछ दिन में ऐक बस्ते हुऐ शहर में जाप
हुंचा वहां के लोग उसे हाकिम के पास लेगये उसने उठके
उसको अविस्वास कर पूछा कि अरे बटोही तू यहां कहां से आया
है यहां सिकंदर बादशाह आया था अब तुझे देखा है इसका
क्या कारण तू सच कह हातिम ने कहा कि मुझे बरजख सौदा
गर की बेटी हुस्नबानू ने कोहनिदा का ठीक ठीक समाचार ले
ने को भेजा है यहां तक पहुंचते पहुंचते बड़े बड़े से क्लेश पाये

मैंने अपने मनमें कहा कि मैंने जाना कि किसीनें बुलायाहै जो ऐ
सा उड़ा जाताहै इस बात को सोच उसनें पकड़ लिया और क
हा कि अरे भाई यह उचित नहीं जो तू नहीं बतलाता है ई
श्वर के लिये कहिदे कि तुझे किसनें बुलायाहै जो हम सब
को छोड़े चला जाताहै हातिमनें अपनासा सिर पटका प
र उसनें कुछ न कहा और हाथ झपट के भागा और पहाड़ के
नीचे जा पहुंचा हातिम भी उसके पीछे २ लपका चला गयास
हसा वोह पहाड़ हातिम की दृष्टि से लोप हो गया उसने अप
नासा दृष्टि गड़ा के देखा तो रंगीन पत्थरही देख पड़े और क
छ न सूझा तब अचंभे में हो सब लोगों के साथ शहरमें फि
र आया और सब लोग अपने अपने घर को गये पर कोई उस
के लिये नहीं रोया और बहुतसा खाना और आनंद मनाया फिर
अपना काम करने लगे तब हातिम नें लोगों से पूछा कि तुम
में से किसी ने भी जाना कि उसपर क्या बीता वोह बोले कि तू
भी तो वहीं था जो तूनें देखा वही हमने देखा फिर हमसे क्यों
पूछता है यह सुन हातिम चुप हो रहा और उस मनुष्य के लि
ये आंखों में आंसू भर के पछतानें लगा उन्होंने कहा हमारे दे
श की रीति ये नहीं है कि कोई किसी के लिये रोवे और दुख क
रे जो तू इस शहर में दो चार रोज़ रहा चाहता है तो हमारी चाल
पर चल नहीं तो इस बस्ती से निकाल दिया जायगा इस बात
के सुनते ही हातिम आंसू पी गया और मनमें उसका सोच
करने लगा उन्होंने उसे उदास देख के कहा कि अब तू क्यों
चिन्ता करता है कोई निदा का यही ब्रतान्त है जो तूने देखा है
हातिम बोला कि मैंनें क्या देखा और कुछ न जाना इसी चिन्तामें

की ओर चला हातिम भी उठ के उसके पीछे चला गया एक क्षण में दोनों पहाड़ पै जाय पहुंचे हातिम ने उछल के पीछे से पकड़ लिया उसने अपना सा चाहा कि उसे अलगा करूं पर न कर सका इसी भांति दोनों गिरते पड़ते पहाड़ के ऊपर जा पहुंचे ज्यों ही किले के पास पहुंचे एक खिड़की दिखाई दीनी दोनों लिपटे लिपटाये उसके भीतर चले गये और लोगों की दृष्टि से लोप हुए सब लोग हातिम का सोच करते हुए शहर में आये और हाकिम को समाचार पहुंचाये कि मुसाफिर भी हातिम के साथ पहाड़ पर चला गया इस बात के सुनते ही हाकिम क्रोध कर कहने लगा कि अरे मूर्खो आज तक कोई बिन बुलाये उस पहाड़ पर नहीं गया तुमने उसे क्यों छोड़ा लिये जाने दिया उसका पाप तुम्हारे सिर पर है उन्होंने बिन्ती कि कि प्रभु हमने उसे बहुतेरा समझाया कि तू वहां न जा उसने हमारा कहना न माना और कहा कि वो ह मेरा यार जानी है मैं उसे कभी न छोडूंगा जो आपदा उसपर पड़ेगी उसे मैं भी अपने सिर लूंगा यह बातें कर राजा प्रजा सबके सब हातिम के लिये कुढने लगे और वहां का वृतान्त यह हुआ कि जब वह दोनों खिड़की से आगे बढ़े तो चुप चाप थे निदान एक लंबी चौड़ी जगह में जा पहुंचे वहां हरी हरी घास ऐसी जम रही थी कि दृष्टि काम न करती थी मानों पन्नों का बिछौना चारों ओर बिछा है पर थोड़ी सी धरती सूनी पड़ी है वह मनुष्य उस पर पांव रखने लगा पैर रखते ही चित्त गिर पड़ा हातिम ने चाहा कि हाथ पकड़ के उठावे इसमें उसका मुंह पीला पड़ गया और आंखें पथरा गईं हाथ पैर कड़े हो गये उसको यह देख हातिम ने मन में कहा कि ये ह मर गया आंखों में आंसू भर आये और रो-

हातिम उसी समय उसको खाके पानी पिया परमेश्वर को प्रणाम किया इतने में आंधी की एक ऐसी झकोर आई कि तीन दिन में नाव किनारे लगी हातिम परमेश्वर की अस्तुत करता हुआ नाव पर से उतर मन में कहने लगा कि शहर की राह कहां है कि वहां जाके उस मनुष्य की दशा वरणन करूं सात दिन रात चलते बीत गये पर राह का खोज और अन्न जल न मिला कोई वृक्ष भी न देखा कि उसके पत्ते से जाता घबराया हुआ चला जाता था कि एक पहाड़ बहुत ऊंचा देखा तब उसी ओर चला तीन दिन में उस के नीचे रुधिर बहता पाया सोचने लगा कि कोई पक्षी नहीं है जिससे इसका हाल पूछूं निदान पहाड़ पर चढ़ने लगा बारह दिन में उसके ऊपर जा पहुंचा तो एक बड़ा मैदान दिखाई दिया कि वहां कि मिट्टी और पशु पक्षी चोटी से लाल लाल हो रहे हैं हातिम भूखा प्यासा भूले कोस तक चला गया वहां क्या देखता है कि रुधिर की बहुत बड़ी नदी लहरें ले रही है उस में जितने जीव हैं मानों लोहू से बने हैं घबराया कि इस में कैसे पार उतरूंगा यही विचार किनारे चल निकला कि कहीं तो उतरने की ठौर मिलेगी जब भूख प्यास लगती तब शिकार करके खाता और मोहरा मुंह में रख लेता एक महीना ऐसे ही बीत गया तब एक ऐसी जगह पहुंचा कि जहां धरती और वृक्ष नहीं पशु पक्षी भी नहीं केवल रुधिर की नदी है तब मन में कहने लगा कि मैंने महीना भर एक इतना दुःख सहा कि पैर चलने से रह गये पर घाट न देखा पड़ा मन में सोचा कि जो दस बरस तक ऐसे ही फिरूंगा तो भी रुधिर की नदी के सिवा कुछ और न देखूंगा क्यों कि-

आलगी कि हातिम उतर पड़ा नाव फिर उलटी फिर गई य
ह किनारे किनारे चलने लगा और मनमें यह कहता था कि
यह भेद कुछ ना खुला कि यह नाव कौन लाया और कबाब
रोटी कौन धर गया सात दिन तक इसी सोच बिचार में उठ
ते बैठते चला गया इतने में दूर से ऐक उजली वस्तु नदी कि लह
रों समान नज़र पड़ी तो आगे बढ के देखा कि ऐक स्वच्छ ज
ल की नदी लहरे लेरही है और ऐसी चमकती थी कि मानों
किसी ने चांदी गला के बहा दी है हातिम मारे प्यास के किनारे
पर आ बैठा और उसी मे बांया हात डाला जब निकाला पानी
तो न पाया पर हाथ चांदी का हो गया उसे अपना सा दाहिनी
हाथ से पोंछा पर वो बैसा ही रहा और बोझ चढ गया हाति
मनें मनसे कहा कि यह अद्भुत नदी है जो इसमें स्नान करो
तो सब चांदी का हो जाऊं पर मारे बोझ के चलना कठिन हो
गा निदान सिर नीचा कर बैठ गया घबराहट में कभी दाहिनी
दाहिनी कभी बाई और देखता कभी सिर नीचा कर लेता इतने
में एक नाव उसी किनारे से आ पहुंची इसे देख हुआ पर मेश्व
र का नाम ले चढ बैठा उस में हलुबे का थाल स्वच्छ पीव नगर
मा गरम देखा उसने अपनी और खींचा सुख से खा के और
पांव फैला के आनंद में सो रहा कैई दिन में नाव किनारे प
र पहुंची हातिम उतर के आगे बढ़ा पर अपना हाथ देखा॰
करता चार दिन में ऐक पहाड़ देख पड़ा उसने जाना कि थो
डी दूर है पर बह ऐक महीने की राह पर था हातिम शिकार
करता और मेवे खाता चला जाता था जब तीन दिन की राह प
र गया तब उजले पीले लाल हरे कंकर बहुत सुन्दर देख पड़ने

जो इधर चले आते हैं और तो उन्होंने बीच ही में पकड़ लिया जो दूसरा मारूंगा तो काम न करेगा इतने में वह समीप आ के कहने लगा कि हातिम तुझे लाज नहीं आती कि रत्नों का लालच करता है हातिम बोला कि मैंने लालच करके किसके रत्न ले लिये उन्होंने कहा कि तू उस जंगल में से रत्न लाया है और तेरे पास अभी तक है यह सुन हातिम बोला कि अरे मित्रो यह परमेश्वर का देश बड़ा लंबा चौड़ा है जो मैं ने वहां से उठा लिया तो किसी का क्या कुछ तुम्हारा तो न थोड़े वह बोले कि परमेश्वर ने यह और सृष्टि के लिये रक्खा है हातिम ने कहा कि वह कौनसी सृष्टि है जो मनुष्यों से उत्तम है सबसे से तो उत्तम मनुष्य ही है वह बोले कि यह सच है पर यह रत्न परमेश्वर ने परियों के लिये बनाये हैं कि
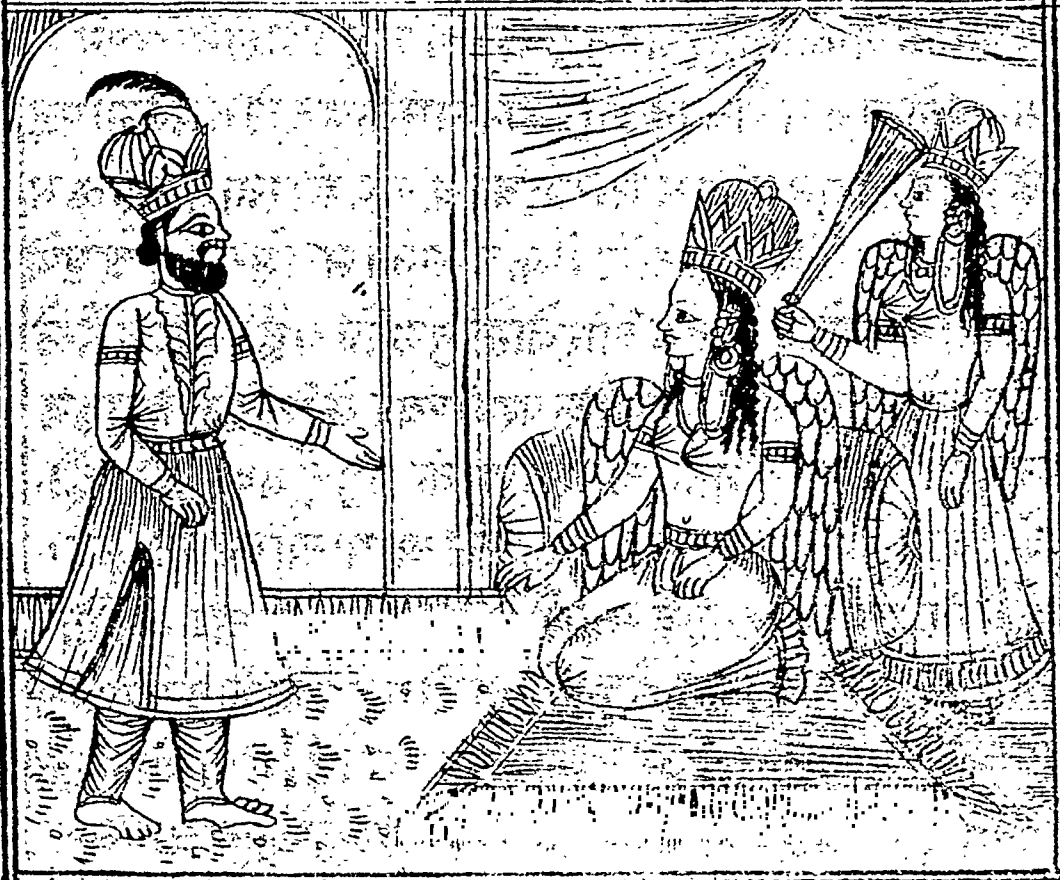
रना इसी में तेरा भला है जो किसी वस्तु पर मन दौड़ावेगा तो अप-
ना किया पावेगा यह कहके वोह पानी में उतर पड़े और उस
की दृष्टि से छिप गये हातिम सारी रात उसी जगह बैठा रहा औ
र ईश्वर का नाम रटा किया प्रातःकाल वहां से उठ के आगे ब
ढ़ा थोड़ी दूर गया था कि एक नदी दिखाई दी कि उस का पानी
सोने के से रंग का था उससे भली भांति उतर गया कुछ दिन में ए
क नदी देख पड़ी हातिम उसे देख बहुत प्रसन्न हुआ इस लिये
कि प्यासा बहुत था जब उसके पास पहुंचा तब उस के किनारे
हज़ारों मोती कंकर से पड़े देखे जो एक २ अंडे के समान थे उनके
चमक से आंखें रूप की जाती थीं और दामों का तो क्या ठिकाना
था हातिम लालच में आके चाहता था कि दस बास उठा लूं इत
ने में उन देवों की सीक्षा का स्मरण याद आया डर के रह गया उ
सके किनारे बैठा तो देखा कि उसका पानी दूध और शहत सा है
प्यासा तो था ही जी भर के पीया उससे भी सुख से उतर आगे बढ़ा
तो देखा दूर से एक ऐसा प्रकाश देखा मानो सोने का तख्त पवन
में चमक रहा है उसकी ओर चला एक महीने में उसके पास जा
पहुंचा देखा कि एक सोने का पहाड़ आकाश से लगा चमक
रहा है यह उस पर चढ़ गया वहां एक २ सोने का वृक्ष फूला फ
ला देखके अचम्भे में हो गया तीन दिन उस पर चला फिर एक
बड़ा मैदान देखा कि जिस की सब धरती सुनहरी थी उसमें
आगे बढ़ा एक सोने का महल बहुत रमणीक और सुन्दर देखा
जब पास पहुंचा तो दरवाज़ा खुला पाया भीतर गया तो वहां ए
क बाग परम मनोहर फूलों से हरा भरा देखा तो उसमें सोने के
हज़ारों वृक्ष चमक रहे थे उनके जड़ाऊ पत्ते दमक रहे थे हातिम दे

है उसकी एक बेटी श्रासा नामीहै मैभी उसलड़की की एक सहे
ली हूं श्राजसातवां दिन मेरी बारीका है इससे उसकी सेवाके लिये
श्राई हूं श्रौर यह मकान कोह काफ़ से ग बष रखता है श्रौर पृथ्वी
की सीमामें है जो दूरसे दिखाई देता है उसी का किला है हा
तिमको चार दिन तक वहां रक्खा भांत २ के खाने श्रौर मेवे
खिलाये श्रौर बड़ा श्रादर सनमान किया पांचवे दिन कहा कि
श्रापके रहने योग्य यह जगह नहीं है इसी में भला है श्रब श्राप
यहांसे जावें हातिम उससे बिदा हो पहाड़ की श्रोर चला दसवें
से दिन बीते पहाड़ से उतर एक जंगल में जा पहुंचा वहां सोने
की नदी दिखाई दी कि उसका पानी गला हुश्रा सोने से लहरें
ले रहा है श्रौर उस की लहरें श्राकाश से टक्करें लेती हैं यहसो
चके समुद्र में डूबा हुश्रा उसके तीर बैठारहा कि इससे कैसे पार हूंगा

म नहीं पर इतना हो सक्ता है आग धीमी होजाय उसने कहा कि जो तुम से हो सके सो करो यह उपकार वृथा है नहीं तब उन्होंने एक मोहरा हातिम को दे के कहा कि आगे अग्नि की नदी है जो इसे मुंह में रखलेगा तो तुझ पर आग काम न करैगी ठंडा चला जायगा पर सुरत रहै कि नदी पार होतेही यह मोहरा फेंक देना यह कह लोप होगये वोह रात हातिम को बड़ी कटी प्रातः काल वह मोहरा मुंह में रख आगे चला तीन दिन बीते सामने अग्नि की ज्वाला दीख पड़ने लगी कि हातिम डरा कि फिर ईश्वर का नाम ले आगे को बढ़ा तो किनारे पर पहुंचा तो देखा कि आग की लहरें आकाश तक जाती हैं हातिम घबराके कभी आकाश कभी धरती को देखता इतने में एक नाव किनारे आलग मनमें ईश्वर की इस्तुति कीर कहने लगा कि देख भाऊ आप को अग्नि में डालना परंतु क्या करूं राह भी यही कि परमेश्वर सुगम करैगा जो उसकी इच्छा यही है तो संतोष करना चाहिये ईश्वर का भरोसा कीर नाव पर चढ़ा और मोहरा मुंह में रखलिया इतने में एक रकावी कबाबरोटी से भरी हुई देखी सहसा उसे खींच लिया और पेट भर खाया नाव चली गई हातिम जो आंखें खोलता तो डर के मारे प्राण निकलने लगते वहीं आंखें बंद कर लेता जब नाव मंझधार में पहुंची और चक्की सी फिरने लगी तब हातिम ने जाना की अब नाव डूबती है तब आंखों से पट्टी बांध सिर झुका लिया और ईश्वर का भजन करने लगा यह समझा कि अब जीता नहीं बचूंगा देखिये परमेश्वर की कृपा से नाव किनारे जालगी हातिम नाव से उतर आंखें खोल कर देखा तो न वो नदी है न आग है एक सुहावना सा जंगल देख पड़ा

हुस्नबानू को उस के आने के समाचार पहुंचाये उस ने परदा
कर के हातिम को भीतर बुला लिया और सोने की कुरसी पर बि
ठा के कहा कि धन्य है मुझे भला हुआ जो तू आया अब को हनि
दां के समाचार कह और वहां का मुझे भेद बता हातिम ने
आदि से अंत तक कह सुनाया हुस्न बानू ने कहा कि सच कह
ता है पर कुछ चिन्ह दिखा जिस्से निश्चय होजाय हातिम ने हाथ
दिखाया कि यह सब चांदी को होगया था फिर एक मीठा तालाव
के पानी पर पहुंचा और उसे धोया तो यह जैसा था वैसाही होगया
परंतु नख अब तक चांदी के बने हैं दूसरा चिन्ह यह है कि सोने
की नदी के पानी से चार दांत सोने के होगये और वे तीनों रत्न
दिखाये तब हुस्न बानू ने बहुत भाव भक्ति की और स्वच्छ पवित्र
स्वादिष्ट खाना मंगवा के साम्हने रखवाया हातिम ने कहा कि इसे
मेरे साथ कर देना चाहिये कि मैं कारवां सराय में जाके मुनीरस्या
के साथ खाऊंगा फिर वहां से उठ के सराय में आया और मुनीरशामी
से मिलके बडे स्वाद से खाना खाया और अपनी बीती बातें बिस्ता
र से कहीं मुनीर शामी ने उसके साहस और वीलों की श्लाघा कर
के बहुत सी आधीनती की हातिमने दो तीन दिन आराम कर
के स्नान कर नवीन कपड़े पहिन हुस्नबानू के पास गया द्वार
पालों ने जाके कहा उस ने वैसे ही परदा कर के बुला लिया और
जड़ाऊ कुरसी पर बिठाया हातिमने पूछा कि छठी बात कौन
सी है उस को भी कहो कि जिस्से मैं शीघ्र पूरा करूं यह बात सुन
हुस्नबानू बोली कि एक मोती मेरे पास है वैसा दूसरा तलाश
कर लायदे हातिम बोला कि मैं उसे देखलूं उसने मंगवाकर दि
खा दिया और कहा कि सच कह यह मुरगावी के अंडे समान है किन

न नदी तीर थी ईश्वर की इच्छा से एक वृक्ष पर आ बैठ मादा बो
ली कि यद्यपि हमारे खाने की वस्तु यहां भांति भांति की हैं प
र यहां की पवन और जल सुखकारी नहीं इसलिये यहां से
उड़ चलना चाहिये नर बोला कि मेरा मन था कि कुछ दिन इस
जंगल में रहूं पर अब तेरे कहने से प्रातःकाल अपने देश को
चलूंगा धीर्य रख एक घड़ी चुंकोर रह मांदा ने फिर कहा कि यह म
नुष्य कौन है जो सिर झुकाये इस जंगल में उदास सोच में बैठा
है नर बोला कि यह हातिम यमन का शाहज़ादा है जितना उदा
स हो अयोग्य नहीं क्योंकि उसे मुरगाबी के अंडे समान मोती चा
हिये अपने लिये नहीं परमेश्वर हेत दूसरे के लिये इसने परिश्रम
किया है मुनीर शामी शाहज़ादा हुस्न बानु पर आशिक़ हुआ
है वोह सात बातें कहती है मुनीर शामी उसकी कोई बात पूरी
न कर सका और न उस को उस को उससे छोड़ा गया इससे वोह बा
बला सा फिरता २ यमन के जंगल में जा निकला और हातिम भी शि
कार खेलता उसी ओर चला गया आपस में दोनों मिले मुनीर शा
मी ने अपना सारा वृतान्त कहा तब हातिम ने तरस खाके उसके लि
ये बिदेश किया और यह दुःख अपने सिर पर लिये सो उसकी पांच
बातें पूरी कर चुका अब छठी बात की बारी है और वोह मुरगाबी के अं
डे समान मोती लाना है इसलिये इस वृक्ष के नीचे सोच का मारा बैठा
है किधर जाऊं और ऐसा मोती कहां से लाऊं सच है कि बानदेखी
राह कैसे चले और ऐसा मोती कहां से लावे पर जो तू कहे तो मैं उसे
राह बता दूं वोह बोली कि इससे क्या भला है कि मनुष्य का उपकार प
क्षी से हो सके जब उसकी इच्छा पाई तो नर कहने लगा ऐसा मोती ऐसे
उपजता है कि अगले समय में कितने पक्षी तीस वर्ष पीछे कहर-

थ लगा अब माहयार सुलेमानी ने जो मनुष्य और परी से उत्पन्न हुआ है उसे लेलिया इन दिनों वोह बरज़ख के टापू में रहता है उ सके एक लड़का परम सुन्दरी चन्द्रमुखी है परन्तु उस का ब्याह इ स बात पर ठहरा कि जो कोई उस मोती के उपजने की वृत्तान्त प्रगट करेगा तो मैं इस लड़की का ब्याह उसी के साथ क र दूंगा यह बात सुन बहुत से परीज़ाद उस के पास आये परंतु कोई उस मोती के उपजने का हाल नहीं जानता था जो वर्णन कर ता सब निरास होके फिर गये और माहयार सुलेमानी बड़ा वि द्यावान है उस समय की किताबें भी उस के हाथ लगी हैं उसने उन किताबों को पढ़ने के समय उस मोती के उपजने का वृतांत जाना है और उन पक्षियों को सुलेमान के समय से आग्या नहीं है कि कहीं अंडा देवें इसलिये ऐसा मोती अब नहीं उत्पन्न होता है इस बात के कहने की रोक है पर मैंने हातिम के साहस और दया को देखकर यह वृतान्त प्रगट किया यह भले कामों में तन मन से परिश्रम करता फिरता है उस मनोर्थ पूर्ण होगा मादा ने क हा कि यह दुखी अपाहिज कहरमान नदी तक कैसे पहुंचे गा क्योंकि वोह देवों की राज्य में है उस मारग में और भी बाधा है नर ने कहा कि जो यह जीता रहेगा तो परमेश्वर की कृपा से पहुंचना कुछ कठिन नहीं लेकिन हमारे पर कुछथो ड़े से अपने पास किस लिये कि जब कोह काफ़ की सीमा में प हुंचेगा तब एक बड़ा जंगल मिलेगा जिस का कुछ ओर छोर नहीं उसमें जाने के समय हमारे लाल पर जलाके पानी में घोल अपने सारे बदन में मले फिर बेधड़क चला जाय उसकी गंध से सब काटने फाड़ने वाले जीव भाग जायं और हम इस हातिम का आकार

ढूंढ़ते देखा कि एक लोमड़ी धरती पर हाथ पांव पीटती और चि
ल्लाती है उसकी यह दशा देख हातिमने बड़ी दया से पूछा कि तुझे
किस निर्दयी ने सताया कि ऐसी बिलबिला रही है वोह बोली
कि धन्य है तुझे तेरे साहस और वीरता को जो ऐसे दुःखमें मेरे
पास आके मेरा हाल पूंछा कि एक बहेलिया मेरे नर बच्चों समे
त पकड़ लेगया इसलिये मैं रो रो के पछारें खाती हूं और सब
ओर पुकारती फिरी पर किसी ने मेरा दुःख न सुना एक तू आया
है देखिये क्या हो क्योंकि तू मनुष्य और मैं पशु मैं जानती हूं कि
तू अपनी जाति का पक्ष करेगा हातिम बोला कि तू यह क्या कहती
है सब मनुष्य एक से नहीं कितने कोमल चित्त दयावान
और कितने निर्दयी जीव दुःखदाई हैं अब तू कह कि
तेरे बच्चों और नर को कौन कहां लेगया वोह बोली कि
यहां से छः सात कोस पर एक गांव है उस में एक बहेलि-
या रहता है उस दुष्ट का यही काम है मैं नहीं जानती कि हमा
रे दुःख देने में उसे क्या प्रयोजन कि परमेश्वर को नहीं डरता हा
तिम बोला कि आंधी को फल गिराने और निर्दयी को जीवों के
सताने का विचार नहीं उन्हो ने अपनी यही वृत्ति ठहराई है कि मुझे
राह बता दे तो मैं तेरे नर और बच्चों को छुड़ा लाऊं जो उनके बद-
ले वोह मेरा सिर मांगेगा तो नाहीं न करूंगा क्योंकि यह परमेश्व
र के मार्ग का सौदा है लोमड़ी बोली कि जो तेरे साथ चलूं तो ऐसा
न हो कि उससे मिल के मुझे भी पकड़ ले तो मेरी दशा उसी बंदरियां
कीसी हो हातिम बोला कि उस का हाल कैसा है वोह बोली कि
बंदरिया ने किसी जंगल में जाके गड़हे में बच्चे दिये एक दि
न उस जंगल में कोई बहेलिया जा निकला बच्चे अपने बा

लाया ज़िमींदार ने देखते ही कहा कि बच्चे मेरे पास रहें औ
र बंदर बंदरिया तू ले जा निदान बच्चों की बिरह की पीर से
बंदरिया मर गई और बंदर ने बंदरिया के दुःख से प्राण दिये
मनुष्य का निर्दयी पन और अन्याय तूने सुना फिर तेरी बात
का बिस्वास कैसे करूं जो तू भी मेरे साथ बेसाही करे और
मुझे भी आपदा में डाले तो हातिम बोला कि अरी लोमड़ी तू
निश्चय जान कि मैं उन लोगों में नहीं हूं परमेश्वर की सौगंद मैं तु
झ से विस्वास अंत न करूंगा तू बेधड़क मुझे उस गांव तक ले
चल कि मैं तेरे नर को बच्चों समेत छुड़ाऊं यह बात सुन वोह प्र
सन्न हुई और हातिम के साहस पर धन्य२ कर आगे होली
हातिम उस के पीछे २ चला पहर रात गये उस गांव के पास पहुं
चे हातिम ने लोमड़ी से कहा कि अब तू यहां छिप रह मैं बस्ती में
जाके बहेलिये को ढूंढ निकालता हूं किसी झाड़ी में छिप के बै
ठ रही और हातिम प्रातःकाल तक परमेश्वर का भजन करता र
हा सूरज निकलते ही उठ के बहेलिये के दरवाज़े आके पुकारा
वोह निकल आया और पूछा कि तुम्हें मुझ से क्या काम है जो
ऐसे प्रातःकाल आये तू तो हमारे गांव का रहने वाला नहीं
हातिम बोला कि मुझे ऐसा रोग हुआ है कि उसकी औषधी
वैद्य ने बताई है कि जो लोमड़ी का गरम रुधिर अपने बदन
में मले तो अभी अच्छा होजाय इसलिये तेरे पास आया हूं
कि तू लोमड़ी और गीदड़ों को पकड़ लाता है जो तीन चार ब
च्चे लोमड़ी के तेरे पास हों तो मुझे दे और जो दाम चाहे सो ले
उसने कहा कि मैंने सात लोमड़ियां पकड़ी हैं जितनी चाहिये ले ले
यह कह उन सातों हातिम के साम्हने लाया उसने सात रुपये दे सातों

के नदी तालाव में पानी पीलेता बहुत दिनों में चलते २ किसी जंगल में आ पहुंचा सूरज का तेज ऐसा हुआ कि प्यास से व्याकुल हुआ चारों ओर ढूंढ़ने लगा इतने में एक तरफ़ साफ़ जल का तालाव दूर से देख पड़ा हातिम सहसा उसकी ओर दौड़ा जब पास पहुंचा तो पानी तो न देखा पर एक उजला सांप गेडली मारे बैठा है चाहता था कि फिरे तव बोला कि अरे यमनी मनुष्य क्यों फिर चला किस काम के लिये आया था हातिमने उसे बातें करते देखा तो अचम्भे में हो कहने लगा कि मैं प्यासा बहुत हूं दूर से तेरा उजला पानी सा रंग देख इधर चला आया अब परमेस्वर की रचना देख फिर चला सांप बोला कि तू धीर्य कर तूझे यहां सब कुछ मिल जायगा यह कहि सांप वहां से चला हातिम अपने जीमें सोचा कि यद्यपि यह सांप बातें करता है पर इस के साथ जाना भला नहीं क्योंकि यह काल है फिर यह मनमें आया कि जो भाग्य में हो वही होगा चलना चाहिये उस पर भी धीरे २ पैर रखने लगा सांप ने देखा कि यह चलने में विलम्व करता है तब बोला कि अरे कुछ संका न कर पैर उठा हातिम वे खटके उसके साथ चला और एक परम सुहावनी फुलवारी में जा पहुंचा उसकी रमणीकता से उसका जी खिल गया और बहुत प्रसन्न हुआ क्योंकि ऐसी रमणीक फुलवारी कहीं नहीं देखी थी पर परियों के देश में फिर इधर उधर देखता हुआ एक ऐसी जगह जा निकला कि बहुत स्वच्छ बिछौना बिछा था और हौज़ के किनारे परम सुन्दर मसनद लगी थी सांपने कहा कि तुम यहां बैठो मैं आता हूं यह कहि हौज़ में गिर पड़ा थोड़े देर में परीजाद कई सोने चांदी के थाल-

जी में कहता कि मैने ऐसा खाना यहां भी खाया और पहले तो
पाल परी के यहां खाया था निश्चय है कि यह भी परीज़ाद है।
जब खाना खाचुके तब जड़ाऊ अतरदान पानदान आया
हातिम ने जो अतर मला तो जी लहक उठा अचम्भे में होम
न में कहने लगा कि परमेश्वर ने ऐसी उत्तम वस्तु और सुग
न्ध जो इस जात को दी है सो मनुष्य को नहीं मिलती इस में
क्या भेद है वही परमेश्वर जाने फिर घर के मालिक से पूछा
कि पहले तुम सांप थे फिर परीज़ाद कैसे हुए इस कारण
क्या है वोह बोला कि मैं परी की ज़ाति से हूं और मेरा नाम श
नशाह है एक दिन हज़रत सुलेमान के समय में अपने बाग़ की
सैर कर रहा था मन में यह आया कि अपना लश्कर ले के
मनुष्यों के देश पर चढ़ जाके उन्हें मार के उनके देश को
छीन लूं क्योंकि वह देश परम सुहावना और सुघर है
यह सोच अपने लश्कर के सिरदारों से कहा कि सब फ़ौजें तै
यार रहें मुझे प्रातः काल एक जगह पर चढ़ाई करना है इत
ने में रात होगई सुख पूर्वक चित्रसारी में जाके सयन किया
सवेरे जो जगा तो अपने सारे लश्कर सहित सांप के आका
र पाया सारे दिन मीन जलहीन सा धरती पर तड़फ़ा किया और
सांझ से सवेरे तक लटके के परमेश्वर से बिनती थी कि अब
मैं ऐसा मनोर्थ न करूंगा परमेश्वर की दया से मेरा सब
लश्कर जैसा था वैसा ही होगया पर पस किसी के न हुए
फिर मैं बहुत रोया तब आकाश बाणी हुई कि जो कोई अप
ने बचन से फिरता है उसकी यही दशा होती है रात को यही
आकाश बाणी नित्त हुवा करती कि एक रात को मैं बहुत रोया और

हातिम बोला कि अब तो मैं शाहाबाद से आया हूं और बरज़ख के टापू को जाऊंगा यह कहि के वोह चांदी का मोती जो नमूना लाया था दिखाया यह सुनके शमन शाह ने कहा कि सच कहते हो इस जोडी का मोती उसी टापू के बादशाह के पास है परंतु उस ने यह प्रतिज्ञा की है कि जो कोई इसके उपजने को बृतान्त बतावे उसे अपनी बेटी मोती समेत दूं परंतु तू वहां कैसे पहुंच सकेगा क्योंकि रस्ते में बहुत सी बाधा है और मनुष्य में इतना पराक्रम नहीं जो जा सके हातिम बोला कि जो होनी हो सो हो मैं वहां बिन गये न रहूंगा परमेश्वर मेरा रक्षक है शमन शाह ने कहा कि मैं तुम्हारे साथ बहुत से परीज़ाद किये देता हूं वोह तुम्हारी सहाय किया करेंगे यह कहि के परीज़ादों से कहा कि इसकी कृपा से तुम बड़ी व्याधी से छूटे इस काम में इस का साथ दो वोह बोले कि जो आपकी आज्ञा होगी सो तनमन से करेंगे बादशाह ने कहा कि तुम इसे बरज़ख के टापू में पहुंचा दो इस बात के सुन्ते ही बेसबके सब अपना शिर झुका के चुप रह गये फिर एक क्षण में सिर उठाके बोले कि प्रभु उस टापू में पहुंचाना बहुत कठिन है क्योंकि रस्ते में ऐसे २ देव हैं कि जो हमें जीता न छोडेंगे जो आप उधर जाने का विचार करेंगे तौभी लड़ाई होगी हम साथ चलने को तैय्यार हैं पर इतने लोगों से काम न चलेगा बादशाह ने कहा कि इस सूर बीर के काम में वीरता करना अवश्य है कि इस का उपकार व्यथा न होजाय किसी न किसी भांति इसको वहां पहुंचा दो यह बात सुन सात परीज़ाद साहस और हिम्मत बांध के बोले कि आपके प्रताप से हम इसे वहां पहुंचा देवेंगे पर

पुकार मचाने लगे कि यह मनुष्य कहां से आया है वोह परीज़ाद
उन्हें देख के डरा चाहता था कि हातिम को छोड़ के भाग जावें
वोह उससे लड़ने लगे दोतीन को उसने मारडाला अंत को पक
ड़ा गया फिर वोह देव उस परीज़ाद को हातिम समेत अपने घर
लाये और पूछा कि इस मनुष्य को कहां से लाया और कहां लि
ये जाता है उसने कहा कि यह मनुष्य यमन का रहनेवाला यमन
शाह का बड़ा मित्र है इसे न सताना नहीं तो बहुत बुरा होगा वोह देवों
कि बादशाह का बहुत दिन से पता भी न था अब कहां से उपजा परी
ज़ाद ने सब हाल बयान किया देवों के सिरदार ने सिर नीचा करके कहा
कि इस मनुष्य को परीज़ाद समेत उस कुएं में बंद कर दो और रात
खाना खाके उन्हें खाऊंगा देवों ने वैसा ही किया वोह दो परीज़ा
द जो हातिम और एक परीज़ाद को छोड़ के खाने की वस्तु लेने
गये थे वृक्ष के नीचे आये तो उन्हें न देखा और क्या देखा कि दे
वों की दोतीन लाशें पड़ी हैं अचम्भे में आ आपस में कहने लगे कि यह
देव किस परदे के हैं और उन को किसने मारा उस मनुष्य और प
रीज़ाद को कौन लेगया इन मुरदों को कोई न कोई खाने आ
वेगा इतने में सोच के देखा तो एक को सिसकता पाया उस के
मुंह में थोड़ा पानी टपकाया तो उसने आंखें खोल दीं तब उन्हों
ने पूछा कि तू कौन है और तेरा ठिकाना कहां है उसने कहा कि मैं
मकरनस के देवों में से हूं एक परीज़ाद ने मेरी यह दशा की है पर
उसे एक मनुष्य समेत पकड़ के मकरनस के पास ले गये हैं वोह
इस बात के सुनते ही उस देव को पकड़ अपने देश में लाके बा
दशाह के साम्हने पुकारे बादशाह ने उन की पुकार सुनके क
हा कि देखो उनको किसने सताया है और वोह यमन का रहनेवा

ने जाना कि शम्शाह बादशाह अभी तक जीता है जो मैं उस
के लोगों को पकड़ के क़ैद करूंगा तो बादशाह मुझे जीता न
छोड़ेगा अब इसी में कुशल है कि उस मनुष्य को परीज़ाद
समेत जल्द लादे उसने कहा कि मैं उस को उसी समय खागया
मनुष्य को देव कब छोड़ता है बादशाह ने क्रोध करके कहा
कि अरे दुष्ट हज़रत सुलेमान ने मनुष्यों के सताने को नहीं मना
किया था और तुम ने यह वचन नहीं दिया था कि हम मनुष्यों
को नहीं सतावेंगे और न खायेंगे उसने कहा कि वोह बात हज़र
त सुलेमान ही के साथ गई तब तो बादशाह क्रोध के मारे कां
पने लगा और कहा कि शीघ्र लकड़ियों का ढेर लगा के इस अ
हा दुष्ट को साथियों समेत जला दो तब मकरनस ने देखा कि अब
कुछ बस नहीं चलता और यह बिन जलाये न रहेगा किसी
भांति इसके हाथ से छूटना चाहिये फिर आगे समझ लिया
जायगा यह इसी सोच में था कि बादशाह ने शांत हो के क
हा कि अरे अन्यायी उस मनुष्य पर मेरी बड़ी प्रीति थी जो उसे
जीते जी मुझे दे दे तो मेरा तेरा कुछ बैर नहीं अपने जी में कुछ
चिंता न कर नहीं तो मार डालूंगा मकरनस ने कहा कि जो तु
म हज़रत सुलेमान की सौगंद खाओ कि उस मनुष्य को लेके
तुझे छोड़ दूंगा और कुछ न कहूंगा तो अभी उस मनुष्य को प
रीज़ाद समेत लादूं शम्शाह ने कहा कि हमारे तुम्हारे बीच
में हज़रत सुलेमान हैं तुझ से कभी छल न करूंगा तो उसने अ
पने नौकरों से कहा कि उस कुएं में एक मनुष्य परीज़ाद समेत कै
द है उनको अभी लाओ वोह दौड़े और हातिम को परीज़ाद
समेत ले आये बादशाह ने हातिम को देखते ही तख़्त पर

देखबतर पड़ने और कुछ खापी लेते ऐसेही परआर पच्छड़ाहि
नतके चलेगये सोलहवें दिन उस पहाड़ पर उतरे जिसपर
के प्राह ज़ादेबूसान परम सुन्दर परीज़ादे मे वरज़रखकोदेखी
पर आशिक होके अपने रहने की जगह बना के डाहेंमार
रोरहा था उसका रोना सुनतेही हातिम व्याकुल हो पूछने
लगा कि इस दुख से क्यों रोता है इसे निश्चय करना चाहिये यह
कहके आपही उठ खड़ा हुआ और उधर चला थोड़ी देर वहां
जा पहुंचा एक सुन्दर तरुण परीज़ाद को सिर झुकाके रोते
देख पूछा कि कौन है और इस जगह किस लिये रोता
है उसने आंख उठाके देखा कि एक परम सुन्दर मनुष्य
खड़ा है तब वोह बोला कि अरे मनुष्य यहां कहां से आया
औ क्या काम है हातिम ने कहा कि मैं मुरगाबी के अंडे समान
मोती ढूंढता हुआ यहां आया हूं क्योंकि ऐसा मोती वरज़ख
के टापू के वादशाह के पास है यह सुन के वह हंसके कहने ल
गा कि उस मोती का तेरे हाथ आना कठिन है क्योंकि वहबाद
शाह एक बात पूछता है सो कोई उस का उत्तर नहीं देसकाह
म परीज़ाद होके न बता सके फिर तू मनुष्य होके कैसे बतावेगा
कि वह मोती कैसे उपजा हातिम ने कहा कि परमेश्वर बड़ा समर्थ
है तू अपना हाल कह कि ऐसी दशा में क्यों पड़ा है वह परी
ज़ाद उसास लेके बोला कि वहां के बादशाह का मैं सेवक था
है एक दिन मैं अपनी सभा में बैठा था किसी ने उस की बेटी की
सुन्दरता बरनन की सुनतेही मैं अपनी देह में न रहा और उस
टापू में जाके उस के वाप को संदेशा भेजा उस ने अपने पास
बुलाके प्रतिष्ठा पूर्वक बैठला फिर उस मोती को मंगाके

नुष्य को कहां लिये जाते हो वोह बोले कि शम्शाह के पास
से आते हैं वोह बोला कि शम्शाह को सांप डस बकत दिन
बीते उस के देश में तो सांप बसते हैं परीज़ादों ने कहा तुम
सच कहते हो ऐसा होथा परंतु अब इस मनुष्य के प्रतापसे
फिर वैसाही होगया और हमारे सब के परभी होगए इंदने
कहा कि अब कहां जाते हो वोह बोले कि दरजख के टापू को
फिर उसने पूछा कि यह परीज़ाद कौन है मेहर आवर आ
पही बोला कि अरे महा काल मुझे भूल गया मैं मेहर आवर
शाहज़ादा मेहर बरबाद शाह का बेटा हूं उसने कहा कि
अरे शाहज़ादे तुझे मनुष्य से क्या काम है अपनी राह ले मैं
तुझे कुछ नहीं कहता क्योंकि परीज़ाद हज़रत सुलेमान के
संतान में से है यह कहि के हातिम को खटोले से खींच लिया
मेहर आवर बोला कि हज़रत सुलेमान से प्रतिज्ञा की थी उसे भू
लगया देख मनुष्य को न सता वोह बोला कि वोह समा कहां
है कि हम उस बचन पर रहें इस को छोडूंगा बहुत दिन पीछे
यह शिकार हाथ लगी है कुछ मुंह सलोना करूं मेहर आव
रने देखा कि यह मनुष्य को देख बावला होगया है कुछ छल
करना चाहिये मेहर आवर बोला कि अरे महा काल एक मनु
ष्य खाने से क्या होता है मैं तुझे दस मनुष्य ला दूंगा जो मेरी
बात माने और इस मुझे दे इस से मेरा बड़ा काम होता है वह
बोला शाहज़ादे मैं तेरे घराने व्योहार रखता हूं इस को मेरे पा
स छोड़ जा और जो कहता है सो कर दिखा तो मैं इस को तुझे
दे दूंगा शाहज़ादे ने देखा कि कुछ उपाय नहीं चलता तब बे
बस होके कहा कि यह मनुष्य मेरा बड़ा प्यारा है इसे तू बहु

ते थे कि कैदी को कोई ले गया निस्संदेह बाहर बैठ चौकी
दिया किये और वोह दिनरात चले गये जहां अच्छी जगह
देखते उतर पड़ते कुछ बिस्राम कर रहे हो चल देते जब अव
धि बीत गई तब महाकाल ने कहा कि जिस मनुष्य को परी
ज़ाद को छोड़ गये हैं उसे लाओ कई देव उस बाग़ में आये उसको
न पाया तो महाकाल से जा कहा कि वह मनुष्य वहां नहीं है
वोह क्रोध कर आपही उस बाग़ में आया तो देखा कि ठीक
वोह नहीं है फिर देवों पर झुंझलाके कहा कि अरे बिस्वास
घातियो तुम्हीं ने उसे खा लिया देखो तो कैसा स्वाद चखा
ता हूं यह कहिके कई देवों से कहा कि उन्हें क़ैद कर के
बहुत मारो उन्होंने सुलेमान की सोगन्द खाके कहा कि
हमने तो उसे हाथ भी नहीं लगाया खाने की तो क्या चर्चा
है महाकाल ने कहा कि तुम झूठे हो मुझे बिस्वास नहीं आ
ता यहां तो यह बीती और वोः परीज़ाद हातिम समेत जब
कहरमान नदी पर पहुंचे तो महाकाल का एक देव भी उस
टापू में गया था उन्हें पहिचान के उतर पड़ा चाहता था कि ह
तिम का हाथ पकड़ के उड़ा ले जाऊं वहीं मेहर आवर शाहज़ा
दे ने ऐसी एक तलवार मारी कि उस का हाथ कंधे से अलग होके
गिर पड़ा वोह कहता हुआ भागा कि अरे परीज़ादो तुमने भला
किया जो मनुष्य के लिये मेरे हाथ में तलवार मारी अभी इस
परदे के देवों को जनाता हूं कि कई परीज़ाद एक मनुष्य को
लिये जाते हैं देखो तो कैसा बदला लेता हूं मेहर आवर
ने यह सुनके कहा कि तू किस परदे का रहने वाला है वोः बो
ला कि मैं महाकाल के देवों में से हूं मेहर आवर ने कहा कि अ-

मुद्र में होता है और मैं कैसे पाऊंगा निदान एक वृक्ष के नीचे सि
र झुका के बैठ गया कि एक मुरग पक्षी का जोड़ा भी उस वृक्ष के
ऊपर आ बैठा पहले तो मादा ने उस जंगल के जल पवन को
अपने नर के सामने बुरा कहा फिर कहरमान नदी का व
तान्त वर्णन कर के मेरी दशा पूछी कि यह कौन है जो उ
दास बैठा है उस ने मेरा उन मोतियों के उपजने और उन
पक्षियों के उपजने और उन पक्षियों का हाल जिन के
यह अंडे हैं वर्णन कर अपने पर मुझे दिये और सब वृत्तांत
शाह यार सुलेमानी के सामने कहूंगा तू सुन लीजो हातिम
ने सब वृतान्त इसलिये उस से न कहा कि ऐसा न हो कि यह आगे
जाके अपना काम करले और मैं वैसा ही रहजाऊं निदान मेहर
आवर को संतोष इतनी ही बातों के सुनने से होगया कि मेरा
काम भी इसी से निकलेगा यह बातें कर मेहर आवर आ-
काश को उड़ा हातिम आगे चला रात को एक जगह रहने दि
न को अपनी अपनी राह चलने एक रात की बात है कि सुहा
वनी सी जगह में दोनों सो गये इतने में लूक साज के देवों में
से एक देव सुन के सरहाने आ पहुंचा देखा कि एक देव औ
र एक परीज़ाद पास पास सोते हैं उस ने जाके और देवों से क
हा जब वो हम आये तो देख के आपस में कहने लगे कि इन्हें
अपने बादशाह के पास ले चला चाहिये उन में से एक ..
ला कि और किसी इन्हें सताते हो यह हमारी जाति के ..
इन्होंने कुछ अपराध किया किसी और ..
म को जाते हैं रात का समय देख के सो रहे हैं ..
ता था उस ने उस को .. हब सुनी फिर ..

ज़ारों ग्रच्छे ग्रच्छे रंग के पक्षी पहाड़ों ग्रौर टापुग्रोंपर
किलोलें कर रहे हैं हातिमने परमेश्वर की यह रचना देख
मन में कहा कि सत्य है बुद्धि की क्या गति जो उस कीरचना
का पार पावे ग्रौर ग्रासमान का कितना प्रमाण जोड
स्लाभे दसमें फिर घबरा के मिहर आवर से कहने लगा
कि भाई इस नदी के पार कैसे जा सकेंगे ग्रौर उस की लहरो
की चोटें हम ऐसे निर्बल कैसे सहेंगे मेहर आवर बोला कि
सत्य है कि बड़े उड़ने वाले पक्षी कीभी सामर्थ नहीं कि सात
दिनमें भी उस के पार पहुंचे मैं परीज़ाद हो के यह साहस नहीं
कर सकता तेरी बात तो सत्य है यह सुन हातिम बोला कि कुछ
हो मुझे बरज़ख के टापू में जाना है तब वह बोला कि कुछ दिन
यहां ठहरो तो मैं इससे उतरने का उपाय करूं उसने कहा बहुत
ग्रच्छा फिर मेहर ग्रावर ने कहा कि यहां से कई कोस पर बदरे
न परदा है वहां का राजा शमशाम परीज़ाद राज करता है उसके
पास बहुत ग्रच्छे दरियाई घोड़े तेज़ उड़ने वाले हैं मेरा म
नोर्थ कि उसके पास जाके दो घोड़े लाऊं हातिम बोला कि सिद्धि करो
वोह वहीं उड़ गया ग्रौर रात बसे वहां जा पहुंचा उस बादशाह
से मिला उसने पूछा कि ग्राप का क्या कारण है कहो मेहर
आवर बोला कि मुझे दो घोड़े चाहिये जो ग्रापदें तो बड़ी क
पा करो उसने फिर पूछा कि तुम कहां से ग्राये हो उसने कहा
कि तूमान परदे से बादशाह बोला मैं तुझे पहिचानता हूं कि
तू मेहर आवर तूमान का शाहज़ादा है अकेले ग्राने का क्या
कारण है वोह बोला कि सच कहते हो पर मैं एक आपदा में फं
सा हूं इस से बिबस हो अकेला ग्राया इतनी सहाय करो तो मैं

लेगे तो हमारे पहुंचने से पहले ही उसको समाचार पहुंच जा
यगा तुम घबराना मत मैं सात दिन आ पहूंचूगा हातिम बोला
कि मैं यहां अकेला रहूं वोह बोला कुछ चिन्ता नहीं क्यों कि
यहां कोई दुष्ट दुखदाई नाम को भी नहीं हातिम बोला कि
परमेश्वर रक्षक है सिधारिये मेहर आवर वहीं से उड़ा जब
हातिम की दृष्टि से लोप होगया तब हातिम ने उगले पर ज
लाये उन की राख बदन पर मली जैसा था वैसा ही होगया
फिर तीर कमान ले के उठा एक बार हासिघा शिकार कर ला
या चकमक से आग झाड़ उस के मास के कबाब बना के खाये
और पानी पी परमेश्वर का धन्यवाद किया फिर सो रहा
ऐसे कई दिन बीते एक जंगल में सैर करता फिरता था कि
एक बाग़ का दरवाज़ा खुला हुआ दिखाई दिया उस में जा
के देखा कि भांति भांति के फूलों और मेवों के वृक्ष फूल
फल रहे हैं बहुत प्रसन्न हो वहीं रहने लगा कि एक घोड़ा
भी ऐसा था कि दिन भर जल के तीर चला करता रात को वहीं
आ रहता था इसी भांति दिन बीत गये और मेहर जो अपने
टापू में पहुंचा परीजादों ने पहिचान के पैरों पर गिर बलायें
लीं मेहर आवर शाहजादा कितनों की क्षेम कुशल पूछ कित
नों को कहने लगा अपने मा बाप के पास गया प्रणाम कर पै
रों पर गिरा उन्हों ने छाती से लगा के पूछा कि तू तो सब ल
श्कर समेत बरज़ख के टापू को गया था फिर लश्कर
छोड़ को ने में छिप गया कि फौज तुझे ढूंढती हुई तितर बि
तर होगई बहुत दिन तक देखा निदान हार मान फिर आई
भला कहो तो तेरा मनोर्थ पूरा हुआ मेहर यार सुलेमानी

बात पर वहां जा पहुंचा लश्कर नदी तीर छोड़ हातिम के मकान पर आया तो उसे न पाया अचम्भे में हुआ कि उस ने देसी प्रतिग्या भंग की जो पहले चला गया इतने में हातिम के घोड़े को देखा देख के पहिचाना कि वही घोड़ा है फिर परीजादों से कहा कि उस बाग में देखो वह सब उस बाग में जाके देखने लगे इतने में एक परीज़ाद ने देखा कि एक सुन्दर मनुष्य वृक्ष के नीचे बैठा तमाशा देख रहा है वोह उलटे पैरों फिरा और यह वृत्तान्त शाहज़ादे से आ कहा कि मैं एक मनुष्य को बैठा देख आया हूं पर मैं खबर जाने वही है या और बादशाहज़ादा उठ खड़ा हुआ और पैरों को उठाये वहां चला गया देखा कि हातिम सिर झुकाये चिन्ता में बैठा है पुकारा कि अरे भाई सिर उठा किस सोच में है हातिम ने सिर उठा के देखा तो मेहर आवर है उठ के गले लगाया फिर दोनों बाग़ से बाहर आये हातिम ने देखा कि बहुत सा लश्कर उतरा है और बादशाहों का सा डेरा खड़ा है हातिम ने पूछा कि यह लश्कर और डेरा किस का है वोः बोला कि आपही का फिर वोह उस का हाथ पकड़ सिरायचे में ले गया और जड़ाऊ तख्त पर बैठाला फिर खाना मंगवाया हातिम ने बहुत दिनों में जो भांति भांति के खाने देखे बड़ी रुचि से खाया फिर नाच होने लगा सारी रात आनन्द में बीती प्रातः काल कूंच का नक्कारा बजा के सवार हुए यह समाचार वरज़ख टापू के बादशाह को पहुंचा कि परीज़ादों का बड़ा लश्कर समीप आ पहुंचा पर उन के आने का अभिप्राय नहीं मिला उस ने क्रोध कर एक सरदार से कहा कि [illegible]

हुस्नबानू ने उसे दिया था उस के आगे रख के कहा कि इस की
जोडी का मोती आप दें तो बडी कृपा हो बादशाह ने कहा
कि इस की जोडी का मोती कहां से मिले हातिम बोला कि
मैं ने सुना है कि आप के यहां है जो दीजिये तो मेरा मनोरथ सु
फल हो बादशाह ने कहा कि जो तू मेरी बात पूरी करे तो मो
ती के साथ अपनी बेटी भी दे दूंगा हातिम ने सिर नीचा कर
लिया एक क्षण में सिर उठा के बोला कि मुझे मोती ही चाहि
ये बेटी आप जिसे चाहें उसे दें बादशाह ने कहा कि जब
तू मोती के उपजने का हाल कह देगा मैं मोती और बेटी तुझे
सौंप दूंगा तू जिसे चाहे उसे दे हातिम ने यह सुन बिनती की
कि मेहर आज़र को बुलवा लीजिये यह सुन के [illegible]
लगा एक कुरसी पर उसे भी बिठाया तब हातिम ने उस मोती

ने का उपाय करके स्त्रियों सहित पार उतरे यह कहिके हाति
म और आप घोड़ों पर चढ़ के चल दिये कई दिन में कहरमा
न से पार हो के एक जंगल में उतरे और देवों का समाचार प
हुंचा कि परीज़ादों का एक लश्कर आया है वोह इकट्ठे हो
राह रोक के आपड़े मेहर आवर ने एक परीज़ाद को भेजा कि ह
म तुम दोनों हज़रत सुलेमान के सेवक हैं हमारा मनोर्थ तुम
से बिगाड़ का नहीं है तुमने हमारा सामना क्यों किया हम तो श
म्स शाह को हर्ष बाद देने जाते हैं क्योंकि वोह बहुत दिनों में
ईश्वर के क्रोध से छूटा है उन्हों ने कहला भेजा कि हमारा भी
मनोर्थ तुम से लड़ने का नहीं केवल मिलने के लिये आये हैं
मेहर आवर ने बुला के भांति भांति के खाने खिला शराब
पिला बिदा किया हातिम को एक कोने में छिपा रक्खा था
कुछ दिन में देवों की राज्य निकल गये तब शम्स शाह बादशाह
ने सुना कि हातिम और मेहर आवर मेरे मिलने को आते हैं यह
सुन वोह भी अपने लश्कर समेत उन को लेने चला राह में प्रस
न्न हो हो मिले और हातिम ने अपना और मेहर आवर का
हाल वर्णन किया यह सुन शम्स शाह ने मेहर आवर से बड़ी
दीनता कर कहा कि यह तुम्हारी दया का भार मुझ पर है जो
हातिम को कुशल क्षेम से मुझ तक पहुंचाया परमेश्वर को ध
न्य है कि अपनी कृपा और तुम्हारे प्रताप से इस को जीता
जागता मुझे मिलाया मेहर आवर को एक बाग़ में उतारा चा
लीस दिन तक हर्ष आनन्द नृत्य गान की सभा रही और म
हमानी के सब प्रकार सम्पूर्ण हो इकतालीसवें दिन मेहर आव
र और हातिम तब शम्स शाह से बिदा हो अपने देश को चले

दोनों सात दिन तक एक साथ रहे जब हातिम ने देखा कि बद्र की आमदनी सब की सब जाती रही तब आठवें दिन कपड़े बदल हुस्नबानू के दरवाज़े आया चोबदारों ने जा जताया उसने वैसेही बुलाके जड़ाऊ कुरसी पर बिठाया हातिम ने कहा कि अब सातवीं बात बर्णन कीजिये जद हुस्नबानू बोली कि हम्माम बादगर्द का समाचार लाओ क्योंकि हम्माम को फिरने से क्या काम मैं ने सुना है कि वोह चक्की सा फिरता है फिर उस में लोग कैसे नहाते हैं जाके उस और उस का कारण देख आओ जब हातिम ने पूछा कि इतना तुम जानती हो किधर है हुस्नबानू बोली कि दक्षिण और पश्चिम के कोने में सुना है पर उस के बनने का हाल नहीं सुना और पहचान नहीं जानती कि किस परदे में है यह सुनते ही हातिम हुस्नबानू से बिदा हुआ और सराय में आ के मुनीर शामी को बहुतसा धीर्य देकर कहा कि ईश्वर की कृपा से यह बिदेश कर आऊं तो तेरी प्यारी से तुझे मिलाऊं. और अपनी बात से सच्चा होऊं यह कहिके मुनीर शामी से बिदा हुआ

सातवीं कहानी में हम्माम बादगर्द के समाचार लाने और हुस्नबानू का मुनीर शामी के साथ ब्याहे जाने और हातिम का अपने घर आने का बर्णन

हातिम शहर से निकल जंगल की राह ली कुछ दिन [illegible]

आदेवों ने आंसू भर भरोसा दिया कि परमेश्वर की इच्छा से कु
छ बस नहीं है संतोष करना चाहिये वोह बोले कि तुम सच कहते
हो पर जो लाश भी मिले तो उसे गाड़ के उसकी कबर देख अ
पने आकुल मन को थोड़ा बहुत धीर्य देवें क्योंकि सब कोइ य
तनों ही बहुत चिन्ह हैं एक की बिनती कर हजारों रुपये देते
हैं परन्तु कोई हमारी दुर्दशा पर दया नहीं करता और कुएं में
नहीं उतरता आज हमारा यह बिचार है कि आप उतर के उ
सकी लाश निकालें और दूसरे को क्या पड़ी है जो पराये लिये अप
ने प्राण की बाधा में पड़े यह सुनि के हातिम बोला कि तुम धीर्य
रक्खो मैं ईश्वर के मार्ग में अपना सिर हाथ में धरे फिरता हूं
मेरी यही अभिलाष है कि मेरे प्राण किसी के काम में आवैं ईश्व
र हेत कुए में जाके तुम्हारे बेटे की लाश ढूंढ के लाता हूं तुम मेरे
आने तक यहीं रहियो उन्हों ने कहा कि जाने की तो कौन ब
त है कि हम दिन रात यहीं बने रहेंगे हातिम बोला कि एक
महीने तक मेरी राह देखना जो आया तो भला नहीं तो अप
ना काम काज करने लगना इतनी बात कह कुए में कूद पड़ा
कई गोते खाके पैर धरती पर जा लगा और आंखें खोलीं तो
न कुआं देख पड़ा न पानी परन्तु एक बहुत लंबी चौड़ी जगह दि
खाई दी आगे चला तो एक बाग़ परम रमणीक दरवाज़ा
खुला हुआ देखा उसके भीतर गया तो भांति २ के द्रुम अति
मनोहर फूलों से लदे हुए देखे वोह बाग़ सुगन्ध से ऐसा म
हक रहा था कि हातिम का जी प्रसन्न होगया जी में कहा
कि ऐसा बाग़ किस उदार चित्त का है इस जानने के लिये
सारे बाग़ में फिरता था कि एक जगह बहुतसी परियां दि

हूं यह सुन वोह बोला कि भाई वोह स्त्री पुरुष जो वहां थे मैं उनका बेटा हूं एक दिन की बात है कि उस कुए पर मैं आनिकला वहां यह परम सुन्दरी शशि बदनी मुझे देख पड़ी उसी दम उस की छवि पर बिन दामों बिकगया और उस की चाह में बावला हो वहीं बैठ रहा और यह चपल चपलासी नित झलक दिखा जाती थी पर मुझे उस देखा भाली से संतोष नहीं होता था निदान इस की प्रीति ने मुझे खींच के गिरा किया फिर पवन के समान इस सुन्दरता के फूल को देखता भालता इस बाग में आ पहुंचा इसने मुझे दुखी देख बड़ी कृपा की और मुझ मिलाप के प्यासे अपने सनाम के अमृत से पूर्ण कर दिया अब दिन सुख से बीतता और रात आनन्द में कटती है हातिम ने कहा कि बड़ा सोच है कि तू तो यहां आनन्द में मनावे और वहां तेरे मा बाप तेरे लिये सिर पीटें यह कौन सा न्याय है वोह बोला कि मुझ विबस का क्या बस है जो वोह जाने देवे तो जा के उनका संतोष आऊं हातिम ने कहा कि तू धीर्य कर मैं उससे अभी कहता हूं यह कहि परी से कहने लगा कि अरी सर्वांग सुन्दरी यह दया वानों के अयोग्य है कि उस के मा बाप पुत्र के बियोग अग्नि में जला करें इसलिये इसे दो तीन दिन की विदा दे जो यह जा के अपने मा बाप को ठंढा कर आवे यह सुन वह बोली कि इसे कौन रोकता है अभी चला जाय इसे क्या मैं ने बुलाया है यह आप ही आया है जहां चाहे वहां चला जाय यह सुन हातिम ने कहा कि उठ खड़ा हो परी ने परवानगी दी वोह बोला कि यह परवानगी नहीं है यह तर्क है प्रसन्नता से बिदा करना यह है कि मुझ से प्रतिज्ञा करे कि नित्य देह अपने घर जाके आठवें में दो तीन वार रात भर के लिये आ जाऊंगा और

लगा कि परी घबरा के बावली सी दौड़ पड़ी और उस को गले से लि
पटा लिया फिर कहा कि तू सच्चा चाहने वाला है यह मुझे नि
श्चय हुआ अब जो कहे सो करूं मुझे सब अंगीकार है फिर
अपनी सहेलियों से कहा कि आनन्द सभा बनाओ उसके
कहते ही परम रसीली रंगीली कोमल जड़ाऊ सुथरी खुला
वियों में रंग रंग की सरावें और भांति भांति के खाने आये औ
र नाच रंग होने लगा ऐसे ही सुख चैन के आनन्द में एक
महीना बीत गया और वहां जो लोग कुएपर बैठे दिन गिन रहे
थे कहने लगे कि जो वह आज भी न निकला तो अपने आप
ने घर चले जायंगे ३१ वें दिन हातिम ने उस के परी से कहा कि
मुझे और भी काम है अब मैं नहीं रह सका तुम अपना बचन
पूरा करो परी बोली बहुत अच्छा हातिम ने कहा कि जो तु
म दृढ़ प्रतिज्ञा करो और हज़रत सुलेमान की सौगन्द खाओ
तो मुझे भरोसा हो उसने सौगन्द खा के कहा कि तुम सुचि
त रहो मैं अपने वचन से कभी न फिरूंगी तब अपनी परियों
से बोली कि तुम इन दोनों को उसी कुए पर पहुंचा दो उन्होंने
एक ही उड़ान में दोनों को कुए पर पहुंचा दिया सब लोग देख
के अचम्भे में हुए और उस के मा बाप दौड़ के हातिम के पैरों प
र गिर पड़े आनन्द से शहर में आये और बहुत अच्छा खाद
य खाना पीना और नाच रंग होने लगा घर २ बधाये बजे १४
दिन हातिम वहां रहा और परी भी अपनी बात पर आने लगी
और नियम कर लिया उस की सचाई देख हातिम ने अपने जी
में कहा कि धन्य इस को कि रूप भी अच्छा और स्वभाव भी सच्चा
वह रूपवान सुन्दरी नहीं जो बात न निबाहे और दोह आरख सनो-

बच्ची की छः बातैं परमेश्वर की कृपा से पूरी हो चुकीं अब सातवीं बात हम्माम बाद गर्द के समाचार लानेका है सो लेने जाता हूं देखिये परमेश्वर क्या दिखावे वोह बोला धन्य है तुझे और तेरे मा बाप कोजो दूसरे के लिये अपना सुख चैन छोड़ परिश्रम और आपदा सही पर उचित यह है कि यह इस मनोर्थ को मन से दूर कर लौट जाओ और उस से कहो कि वोह अंधकार है कोई उसे नहीं जानता न उस का पता मिलता है यह सुन हातिम बोला कि इस से परमेश्वर रक्षा करे झूंठ कैसे बोलूं और बात बनाऊं यह न चाहिये बहुत दिनों से उस की चाह में मुनीरशामी के प्राण होठ पर आ रहे हैं केवल मिलाप की आस पर स्वांस चलती है और मैं ऐसे समय में झूठी बातें बनाऊं और उस काम को छोड़ दूं परमेश्वर को क्या उत्तर दूंगा क्योंकि जो कोई परमेश्वर हेत संवध होता है वोह झूंठ नहीं बोलता जिन्होंने परमेश्वर के मार्ग में अपना घर बार छोड़ा है उन मनोर्थ निःसंदेह सिद्धि हुआ उस वृद्ध ने फिर कहा कि हातिम अपनी तरुणाई पर दया कर उस ओर न जा क्योंकि वहां का जाना जगत से जाना है जो मेरा कहा न मानेगा तो पछितायगा जैसे भेडक ने अपनी ज़ातिवालों का कहना न माना फिर पीछे पछितायगा हातिम ने पूछा कि उसका हाल कैसा है वोह बोला कि शाम के देश में एक नदी थी उसमें बहुत से मेंडक रहते थे एक दिन किसी मेडक ने अपनी ज़ात वालोंसे कहा कि जो चाहता है कि यहां से और कहीं चलें और दूसरी नदी में जा बसें क्योंकि बिदेश में बहुत लाभ है मिस्र कद दारिद्री धनवान होजाते हैं घर में किसी को धन नहीं मिलता हाथ पैर हिलाये बिन संपदा हाथ नहीं आती यह सुन उसकी

सने देखा कि इस का दृढ़ बिचार है साथ हो लिया शहर के बा
हिर जाके कहा कि अरे बटोही वहां से दाहिने ओर के रस्ते
जा आगे बहुत से शहर और क़स्बे मिलेंगे फिर एक
पहाड़ देख पड़ेगा उस के नीचे हज़ारों बलाएं और आफ़तें
हैं जो उस से बच जायगा तो एक बड़ा जंगल मिलेगा व
हां परमेश्वर के चरित्र देख पड़ेंगे आगे थोड़ी दूर जाके एक दु
राहा मिलेगा उस के बांई ओर जाइयो वह रस्ता बहुत अ
च्छा रमणीक है सुख से शहर कितान में पहुंच जाइगा दाहि
नी ओर का रस्ता यद्यपि शीघ्र पहुंचने का है पर उस में बहुत
दुख और ब्याधी है हातिम बोला बिना आयुदीय कोई नहीं जी
ता और बिना मौत मरता नहीं फिर पास का रस्ता छोड़ दू
र के रस्ते में क्यों जाऊं वोह बोला कि तुम ने नहीं सुना कि सु
गम मार्ग चलना चाहिये यद्यपि दूर हो और विधवा के सा
थ ब्याह न करना चाहिये चाहे वोह अपसरा क्यों न हो कोई बि
न मौत नहीं मरता परंतु अजगर के मुंह में जाना न चाहिये जो
मेरा कहा न मानेगा तो तू दुःख पावेगा निदान हातिम उस से
बिदा हो आगे चला कुछ दिन पीछे एक शहर दिखाई दिया
और उस में बाजे बजते सुने मन में कहने लगा कि क्या इस
शहर में किसी के घर ब्याह है जो बहुत से शहर के लोग एक
त्र हैं और बादशाही शिरायचे खड़े हैं और बड़े बड़े तंबू त
ने हैं और जगह जगह सुन्दर बिछौने बिछे हैं और पर लोग
सज धज से बैठे हैं और उन के सामने बाजे बजते हैं और
नाच रंग हो रहा है और खाने पक रहे हैं यह देख हातिम
ने पूछा कि आज इस शहर में क्या उत्साह है वोह बोले कि इस श

ओर प्रजा सहित जन्म भर तेरी आज्ञा में रहूंगा हातिम ने कहा कि मैं जो काम करता हूं सो ईश्वर हेत करता हूं जो पैर आगे बढ़ाता हूं अपने मौला के लिये धरता हूं जो यह भी काम करूंगा तो किसी पर मेरा भार नहीं जो मैं तुम से कहूं सो करो बादशाह ने कहा सिर आंखों से हातिम ने कहा कि जब वोह आवे और किसी की लड़की प्रसन्न करके ले चले तब लड़की का बाप उस से कहे कि ले जाना तुम्हारे आधीन है पर इतनी हमारी बात सुनले कि हमारे बड़े सिरदार का बेटा बहुत दिनों में आज आया है अब ये सब के सब उस के बस हैं उस के बिन कहे लड़की तुम्हारे साथ नहीं कर सक्के जो तुम्हें दे देवें तो बड़ी भूल है क्योंकि तुम क्रोध करोगे तो एक बर्ष में हमारे शहर को उजाड़ दोगे और जो वोह क्रोध करेगा एक पल भर में भस्म कर देगा निदान सब दिन हातिम को अपने पास बिठा रक्खा सांझ को सांप के आने की पुकार मची लोगों ने हातिम से जा कहा कि वोह दुष्ट आपहुंचा उसने सुन्तेही बादशाह से प्रार्थना की मैं भी उसे देखूं फिर उठ खड़ा हो खीमे के बाहर निकला देखा कि एक अजगर आसमान से सिर लगायेहुए चला आता है उस की लंबाई का ठिकाना नहीं देव दाना भी उस का साम्हना नहीं कर सक्के मनुष्य की तो क्या सामर्थ है जो आंख उठाके देखे पत्थर और वृक्ष जो उस की छाती के नीचे आता वोह पिस जाता है हातिम ने उसे ऐसा भयानक देख मन में कहा कि ईश्वर तूही इस से बचावेगा उस सांप ने पास आ के अपनी ऐसी पूंछ कड़ी करके हिलाई कि सब मनुष्य सिर झुका के धरती पर गिर पड़े फिर वोह चारों ओर देख और धरं

ले तो उसे घिस के पिलाता हूं वोह बोला कि जो यही चाल है
तो ला मैं पीलूंगा हातिम ने वोह मुहरा जो रीछ की बे
टी ने दिया था अपनी जेब से निकाल के थोड़े पानी में घिस
उसे दिया वोह न जाना कि इस का पीना मेरे लिये विष है
मारे अहंकार के सहसा पीलिया पीतेही जिन्नों की विद्यास
ब भूल गया उस पर भी ढिठाई कर कहने लगा कि जो औरभी
कोई रीति रही हो उसे भी करूं हातिम बोला दूसरी रीति यह
है कि तुम एक गोल में उतरो हम उस का मुंह बांधदें तुम बाह
र निकल आओ तब हम प्रसन्नता से यह लड़की तुम्हें दें औ जो
इसमें ना निकला तो एक हजार लाल और दो हजार हीरे और मोती मु
र्गाबी के अंडे समान जो परियों के देश में है गुनेगारी के लेवेंगे वोह
मूर्ख अपने बल के भरोसे पर सहसा कह उठा कि वह गोली कहां है
शीघ्र लाओ हातम ने एक बड़ीसी गोली बहुत मजबूत मंगवाक
र उस के आगे रखदी वोह उस में झट पट से उतर पड़ा हातमउस
की घात में था ही झट से उस के मुंह पर ढकना ढांक और कस
के बांध इसम आजम पढ़ने लगा और उस से कहा कि अबबाहर
निकल आ इस्म आज़म के प्रभाव से वोह ढकना पर्बत से भारीहो
उसने कितना ही बल किया परन्तु निकल न सका तबहातिम
ने लोगों से कहा कि इस के आस पास नीचे ऊपर लकड़ियां रखकर आग
लगादो उन्हों ने वैसाही किया आग लगते ही मैं जला मैं जला पुकारने
लगा पर उस के पुकारने पर किसी ने ध्यान न किया निदान जलके भस्म
होगया फिर हातम ने उन सब लोगों से कहा कि थोड़ी सी धरती-
खुदवाकर उस में उस को गाड़ दो और अपने घरों में जा के
चैन करो ईश्वर ने यह व्याधि तुम्हारे सिर से दूर की नहीं

गा तो परलोक बनेगा यह बात जी के अंदर ठान उस रस्ते में फि
रा और दाहिनी ओर चला कि बबूलों का जंगल कांटों से भरा
देख पड़ा परंतु ईश्वर के भरोसे पर वहां जा पहुंचा और आगे
बढ़ा बड़े दुःख से थोड़ी दूर चला कांटों से कपड़ों के टुकड़े
टुकड़े हो गये और बदन लोहू लुहान हुआ और धरती के
कांटों से तलवे छिदे और सूज गये तब सिथल होके कहने
लगा कि उस बृद्ध ने सच कहा था मुझ अभागे ने उस का कहन
न माना और इस आपदा में आपड़ा यह चिंता है कि और को
ई भयानक जंगल हो तो वहां कैसे निर्वाह होगा कितने दिनों
में बड़े बड़े दुख सहि उस जंगल से निकल आगे बढ़ा कि छि
पकलियों के जंगल में पहुंचा तो वह मनुष्य की सुगंध पाते
ही सब की सब उस के खाने को दौड़ी हातिम ने देखा कि ह
ज़ारों छिपकलियां चीते और कुत्ते के समान सैकड़ों गीदड़
और लोमड़ी सी दौड़ी आती हैं उन्हें देख हातम डरके कांप
ने लगा कि इन का आना साधारण नहीं निश्चय होता है कि मेरे
खाने को आती हैं परन्तु बिबस हूं कुछ उपाय नहीं कर सक्ता इतने
में वह पास आ पहुंची तब एक बृद्ध मनुष्य तेजस्वी दाहिनी ओर
से प्रगट हो कहने लगा कि अरे हातम तूने बड़ों का कहना न माना
और अंत को पछिताया तब हातिम बोला कि मैंने बुरा कि
या अपने किये पर लज्जित हूं तब उस ने कहा कि रीछ की बे
टी का मुहरा निकाल के धरती पर डाल दे वो नाश को प्राप्त
हो जायंगी तब उसने तुरंत मुहरा निकाल धरती पर फेंक दिया
धरती पीली काली फिर हरी हो लाल होगई और छिपकलि
यां जो दौड़ी आती थीं बावली हो आपस में लड़ मरीं और उस घ

जगह बैठगया वहां जूतियां उतार जो देखा तो सारे पैरों में ग्रष्ट धात के टुकड़े एक २ छेद में देख पड़े उन्हें निकालने लगा जब सब निकाल चुका तब पैरों पर कपड़ा लपेट जूतियां पहन लंगड़ाता चल दिया और अपने प्रसन्न था कि मैं इस व्याधिसे बचा पर यह न जानता था कि आगे सब से बड़ी व्याधी है कुछ दूर चला था कि वहां के बिच्छू मनुष्य की सुगन्ध पा के दौड़े उन में कितने बिल्ली और कितने कुत्ते के और बहुतेरे लोमड़ी के समान थे और उन के पैर गीदड़ के से और गलामु र्गी के समान तरह के आकार थे हातम उन्हें देख सहमा कर कांपने लगा और ऐसा घबराया कि सुरत भूल गई हाथपैर फूल गये इधर उधर तकने लगा फिर वही वृद्ध मनुष्य सहा यक हुआ हाथ पकड़ कहने लगा कि सुचित रह घबरामत धी र्य न छोड़ हातिम बोला कि मुझमें पराक्रम नहीं इन विच्छुओं से जिनके डंक ऐसे हैं कि जो पत्थर पर मारें तो टुकड़े २ हो जायं मैं कैसे सामना करूंगा उसने कहा कुछ चिन्ता न कर वही मु हरा उन के सामने धरती पर डाल देना और परमेश्वर का चरि- त्र देखले हातिम ने अपना सा मुहरा निकालना चाहा पर हाथ ऐसे कंपने लगे कि निकल न सका उसी वृद्ध मनुष्य ने निकाल के उस के हाथ में देके कहा कि धरती में डाल दे हातिम ने जो उस मुहरे को फेंका वहां छिपकलियों के ज गल समान धरती रंग बदल लाल होगई और बिच्छू भी आ पस में लड़ने लगे एक के डंक से दूसरे का बदन फट गया हात म खड़ा देखता था तीन दिन में वे सब आपस में लड़के मरगये हातम भी जबतक वहीं रहा चौथे दिन उस मुहरे के उठाके इ-

नार छिपकलियों के जंगल से छेम कुशल से निकल गया तब सौ
दके शहर में आ बादशाह से बिन्ती की कि जो इस बटोहीने कहा
सो सच कहे है इस राह में कोई उपाधि नहीं रही रही तब तो
बादशाह ने शहर में बिदित कर दिया कि वोह राह खुलगई
जिस का जी चाहे वोह बे खटके चला जाय फिर हातिम से ब
ड़ी आधीनता से बोला कि मुझ से भूल हुई क्षमापन करो और
बहुत साधन रत्न आगे रक्खा हातिम बोला कि जब से मैं इस आ
पदा के शहर में आया हूं कुछ आप का अन्याय नहीं देखा आप
इतनी आधीनता क्यों करते हैं बादशाह ने कहा कि तुम नहीं जा
नते मैं ऊपर से तुम्हारा आदर सन्मान सुश्रूषा करता था औ
र लोगों से कह दिया था कि जब तक एक राह का समाचा
र न आवें तुम जाने न पाओगे जो तुम्हारी बात झूठी निकल
ती तो शहर के बाहर तुम्हें सूली दी जाती कि फिर कोई
ऐसी बात न उड़ावे इस बात को सुन हातिम बोला कि आ
पने यह बहुत उचित किया था कि चतुर बादशाहों को ऐसा
ही चाहिये कि सच्चे प्रतिष्ठा करें और झूठे की गर्दन मारें
आप वृथा संताप करते हैं और मैं भी झूठ नहीं कहता था कि
अच्छे लोग झूठ नहीं बोलते इस बात का बुरा भी नहीं मान
ना बादशाहों को यही चाहिये परमेश्वर सदा आप का ऐश्वर्य
बढ़ावे और आप का देश आप के बस रहे और जो कुछ आप
मुझे देते हैं सो मेरे किस काम का है मैं अकेला हूं इसे कैसे लेजाऊं
गा बादशाह ने कहा कि तुम चिंता मत करो मैं तुम्हारे साथ भा
रबरदारी और कुछ मनुष्य रक्षा के लिये कर दूंगा सो तुम्हारे देश
तक तुम्हें पहुंचा देंगे हातम ने कहा कि मुझे एक और काम

माणिक बहुत बड़े दामों के जो बादशाह के यहां न थे वोह डि
बिया में रख बादशाही ड्योढ़ी पर गया चोबदारों ने अपने सि
रदार से कहा कि एक मुसाफिर किसी शहर से आया है उसने
यह बादशाह से निवेदन की बादशाह ने कहा कि उसका वृ
तान्त पूछ के आओ चोबदारों ने आके हातम से पूछा कि
तुम कहां से आये हो तुम्हारा नाम क्या है उसने कहा कि मैं सौ
दागर हूं मेरा आना शाहाबाद से हुआ है बादशाह के दरशन
का अभिलाष है इस बात को चोबदारों ने अपने सिरदार
से कहा उसने बादशाह से बिनती की कि एक सजीला सौदा
गर मधुर बादी आपके दर्शन की आशा कर शाहाबाद से
आया है बादशाह ने आज्ञा दी कि बुलाओ वह जा के हाति
म को सामने लाके वोह बादशाहों के योग्य प्रणाम और स्तु
ति कर आगे बढ़ के रत्न निवेदन किये उन्हें देख मारे हर्ष के बा
दशाह का रंग दमकने लगा उसे कुरसी पर बिठा के वृत्तान्त पूं
छा उसने कहा कि बहुत दिनों से सौदागरी करता था इस सं
सार को तुच्छ समझ सौदागरी और राज सेवा छोड़ देशाटन अं
गीकार किया यहां आप की इतनी स्तुति सुनि के सहसा दौड़ा
आया कि ऐसा नीतिवान बादशाह के दर्शन से दोनों लोक की
भलाई है बादशाने उसकी बातें सुन प्रसन्न हो बड़ी कृपा से
कहा कि कुछ दिन इस देश में रहि के हमें अपने समागम से
आनंद दो यही हमारी भेट है हातम ने प्रार्थना की कि यद्यपि
हम से लोगों को दो चार दिन भी एक जगह रहना कठिन है पर अ
प ऐसे विनीत और दयावान बादशाह की सेवा में रहना सब भां
ति भलाई है मैंने तन मन से अंगीकार किया फिर बादशाह ने

पेक्षा है बादशाह ने कहा कि कौन बात है मेरा राज्य सो सब
तेरा राज्य है जो चाहे सो कर बिन पूछे जो कुछ किसी को दिया
चाहे सो दे डाल जो काम चाहे जिस से करले तेरी आज्ञा
में है कोई नाहीं न कर सकेगा हातिम ने कहा कि आप सदा चि
रंजीव रहें और राज बना रहे मेरे मन के अभिलाष पूरे हो चुके
हैं एक रह गया है सो अकेले का बना रहेगा बादशाह ने कहा कि
वोह ऐसा क्या है जो तू तो मैं अपनी बेटी भी तुझे दे दूं देश का तो
क्या कहना है हातिम ने सिर झुका के बिनती की कि उन्हें तो मैं अ
पनी बेटी वह न जानता हूं यह कासा मेरे मन में नहीं वोह और ही
बात है इसे नहीं कह सकता कि जो आप न मानें तो काहे के लो
गों में लज्जित हूं बादशाह ने बड़ी कृपा कर कहा कि तेरी सुशी
लता और प्रीति का भार मुझ पर बड़ा है जो बादशाहत भी मां
गे तो दे दूंगा बेगम के सिवा जो चाहे सोई ले ले तेरा ही है हाति
म ने हाथ जोड़ बिनती की कि आप यह क्या कहते हैं वोह मे
री माता के समान है और बादशाहत का तरह आप को स
दा सर्वदा शोभायमान रहे मेरा अभिलाष और ही है तब
बादशाह बोला कि अरे भाई परमेश्वर के लिये कहो शीघ्र
कह मेरा जी उकता गया वोह क्या है हातिम ने कहा कि जो
आप बचन देवें तो प्रार्थना करूं बादशाह ने सौगंद खा के
प्रतिज्ञा की तब हातिम ने कहा कि हुस्न बादशाहजादे के देखने को मनो
रथ है जो आज्ञा हो तो उसका चरित्र देखूं और मन का संदेह
मिटाऊं बादशाह ने यह सुनि उदासीन हो सिर झुका लिया
और चुपका रह गया हातिम ने बादशाह को ऐसी चिंता में दे
ख पूछा कि आपने इतनी चिंता क्यों की यह प्रकार है आपको

दूसरे के लिये यहां तक आपदा में पड़ा कि मरना भी अंगीका
र किया क्योंकि इधर का गया फिर नहीं आया बहुत से सौदाग
र बच्चे उधर जाकर जीते न लौटे उन को भी उसी ने भेजा होगाय
ह तो कह कि तू किस शहर का रहने वाला है और तेरा नाम क्या
है वोह बोला कि यमन का रहने वाला नाम हातिम तै का बेटा
यह सुन बादशाह उठ के मिला और अपने पास बिठाके कहने
लगा कि बादशाहत के लक्षण तेरे माथे से प्रगट हैं और तेरा सु
यश भी प्रसिद्ध है और अधिक होगा यहां तक कि तेरा नाम
का लोग दृष्टान्त बनावेंगे जो कोई परोपकारी और दाता और
धर्मात्मा होगा वोह तेरे समान कहावेगा और यह कह के वज़ी
र को हुक्म दिया कि सामान अरक़ के नाम रुक्का लिख के
इसे दे दो फिर उठ खड़ा हो और हातिम के गले लगा पी रख
री उसास लेके आंखों में आंसू भर लिये कितने लोग साथ क
र बिदा किया जब तक हातिम देख पड़ा तब तक टक टकी बां
धे देखा किया जब आंखों से ओट हुआ बादशाह तख़्त से
उठ भरा सा महल में चला गया और हातिम शहर से निकल
हम्माम को चला साथियों से बातें करता चला जाता पंद्र
ह दिन बीते हम्माम दिखाई देने लगा हातिम ने साथियों
से पूछा कि यह क्या देख पड़ता है किला है वा परवत उन्हों
ने कहा कि यही हम्माम बादगर्द का दरवाज़ा है देखने
को तो थोड़ी दूर है पर सात दिन में पहुंचेंगे यह कह कह आगे
बढ़े सातवें दिन दरवाजे के पास जा पहुंचे तो हातिम क्या
देखता है कि पहाड़ के आसपास एक बड़ा लश्कर पड़ा है उस
ने पूछा यह फ़ौज किसकी है साथियों ने कहा कि हम्माम बादगर्द

उस की आयुर्बल पूरी हो चुकी है हम्माम में न जायगा तो सामा
न अरब तो जवाब की राह देखता था हातिम को अपने च
लने की पड़ रही है घर से भी धूला इधर आज कल हो रहा
कि बादशाही लिखा हुआ आ पहुंचा कि उसे मतरो को जा
ने दो उस पर भी सामान अरक ने बहुत समझाया कि अरे
प्यारे अभी कुछ नहीं गया जो जी प्यारा है तो मत जा नहीं तो
पछतायगा और प्राण भी जायंगे हातिम बोला कि अब वृथा
बातें मत कर परमेश्वर के लिये मुझे जाने दो तब समान अर-
क उठ खड़ा हुआ और हातिम को हम्माम के दरवाजे पर ले
गया वहां भी खड़े होके समझाया पर कुछ काम न आया हा
तिम ने ऐसा दरवाजा तमाम उमर में न देखा था जो आंख उ
ठा कर देखा तो खत अरबी यह लिखा देखा कि यह हम्मान कयू
मर्स बादशाह के वक्त में बना था इस का चिन्ह बहुत काल त
क रहेगा और जो इस में जायगा जीता न निकलेगा भूखा प्या-
सा मारा मारा फिरेगा जो कुछ जीता होगा तो एक बाग में जाप
ड़ेगा वहां के फल खा के आयुर्बल के दिन पूरे करेगा पर यह
नहीं होगा कि बाहर निकल सके हातिम ने उसे पढ़ मन में सो
चा कि जो वृतान्त सो दरवाज़े पर लिखा पाया भीतर जाना
अवश्य नहीं चाहता था वहां फिरूंगा फिर यह मन में आया
कि जो हुस्न बानू भीतर का हाल पूछा तो क्या कहूंगा लज्जित
होना पड़ेगा जो होना है सो हो भीतर चलना चाहिये लोगों को
विदा कर आप भीतर गया थोड़ी सी दूर चल के पीछे देखा
तो न उन लोगों को देखा न वह दरवाजा देख पड़ा एक बड़ा
जंगल था और कुछ दिखाई न दिखाई न दिया तब चिंता कर

उसने घबरा के जो पीछे देखा तो निश्चय क्षण में बन्द होग या. पर देख पड़ता है कि इस आशा से आगे बढ़ा कि जब चा हूंगा निकल जाऊंगा निदान वोह हम्मामी उसे हौज पर लेग या और कहने लगा कि आप इस में उतरें जो बदन परपा नी डार के मैल छुड़ाऊं हातिम ने कहा कि मैं कपड़े उतार लूं तो इसमें उतरूं परंतु बेलुंगी यह भी नहीं हो सका त ब हम्मामी ने एक बहुत अच्छी लुंगी दी हातिम ने उसमें क पड़े बांध कर रख दिये और आप हौज़ में उतरा फिर नाई ने एक जड़ाऊ तास गरम पानी से भर कर हातिम के हाथ में दिया उसने सिर पर डाल लिया फिर उस ने एक और दिया उसे भी सिर पर डाला तीसरी बार जैसे ऊपर डाला वैसे एक तड़ाका हुआ और हम्माम में अंधेरा होगया ए क्षण में अंधेरा जाता रहा तो क्या देखता है कि न नाई न हम्माम न हौज़ केवल पत्थर का एक गुम्बज़ है वहां सब जगह पानी देख पड़ा क्षण भर भी न बीता था कि पानी पिं डलियों तक आगया हातिम घबरा के इधर उधर देखता था और पानी बढ़ के घुटनों से भी ऊपर आपहुंचा तब तो व्याकु ल होके कहने लगा कि हे परमेश्वर पानी क्षण क्षण बढ़ता जाता है और निकलना नहीं देख पड़ता मैं ने जाना कि इसीमें डूब के मरूंगा सहसा घबरा के दरवाज़े की ओर गया चारों ओर सि र टकराता फिरा पर कहीं राह का पता न पाया इतने में पा नी डुबाव होगया जब हातिम तैरने लगा और अपने मन में कह ने लगा कि इस हम्माम से जो लोग निकल न हीं सके सो यही कारण है कि तैरते थके और डूबे इसी तरह मैं भी हाथ पांव मारते मारते

यह क्या आधी है इतने दुःख सहे परंतु अभी इसमाया जाल से बाहर न निकला निदान बिबस हो एक मकान की ओर चला वहां भांति २ के वृक्ष मेवे के थे भूखा तो था ही मेवे तोड़ तोड़ खाने लगा कितनी ही मेवा खाई परंतु पेट न भरा सो मन के अनुमान खाया परन्तु मन न ऊआ पर कुछ थक गया फिर तमासा देखता एक बारह दरी के पास जा पहुंचा उसमें बड़त पत्थर के मनुष्य नंगे खड़े थे पर एक २ लुंगी बांधे थे सो वोह भी पत्थर की अचंभे में ऊआ कि यह क्या भेद है और गांठ कैसे खोलूं इसी चिंता में था कि एक तोता बोला कि अरे क्यों खड़ा है यहां वही आता है जिसने प्राण से हाथ धोए हों हातिम ने जो सिर उठाया तो पिंजरे में एक तोता और दीवार पर यह लिखा पाया कि इस हम्माम में जो आवेगा सो जीता नहीं जायगा यह तिलिसमात कयूमर्स बादशाह का है एक दिन वोह शिकार खेलता ऊआ यहां आ निकला और एक हीरा पड़ा देखा उसे उठा लिया तुलाया तो साढ़े बाईस छटांक का ऊआ अचंभे में हो मंत्रियों और जौहरियों से पूछा कि ऐसा हीरा दूसरा मिलसक्ता है या नहीं उन्हों ने कहा कि जब से मनुष्य उपजे हैं न ऐसा देखा न सुना तब उसने कहा कि इसको ऐसी जगह रखना चाहिये कि किसी के हाथ यह बात मन में ठान यह छलावे का हम्माम बादगर्द बनाया है और इस तोते को वोह हीरा निगला के पिंजरे में रख यहां लटका दिया और इस जड़ाऊ कुरसी पर तीर कमान इसालिये रक्खा कि जो यहां आके बाहर निकला चाहे वोह तीर कमान उठाके इस तोते में तीर मारे जो तीर लगा तो उसी क्षण बाहर-

कोई नहीं जो तीर उलटा मेरा काम करता है फिर एक ठंढी सांस
ले अति दुःखी हो मन में बिचारा कि अपनी मौत अपनी आं
खों से देखनी न चाहिये इससे यही भला है कि आंखों से पट्टी
बांधके एक तीर जो यह रहगया है परमेश्वर के आसरे
इसे भी लगा क्योंकि ऐसे जीने से मरना उचित है झट प
ट तोते को ताक कर आंखों पट्टी बांध के ईश्वर का नाम ले
के वोह भी तीर मारा वहीं तोते के प्राणान्त होगये और
पिंजरे से बाहर निकल पड़ा इतने में एक आंधी आई और घटा
उठी बिजली कड़कने लगी और अंधेरा होगया [illegible]
ह गया और ऐसा सन्नाटा और अंधकार बीता कि हातिम बे
सुध होके गिर पड़ा और यह संदेह हुआ कि मैं भी पत्थर
का होगया एक घड़ी के पीछे आंधी मिट गई बादल आता

शा शाह से मुलाक़ात की बादशाह ने बड़ा अनुग्रह करके बै
ठने को कुरसी दी और सब वृतान्त पूछा उसने वहां का
ओर वार सब वृतान्त वर्णन किया और हीरा बादशाह के
सामने रख और कहा कि यह हुज़ूर की भेट है परंतु इतना
चाहता हूं कि हुस्न बानू को एक बार दिखालूं तो उसे नि
श्चय हो जायगा फिर आपके पास भेज दूंगा बादशाह ब
हुत प्रसन्न हुआ फिर हातिम ने प्रार्थना की कि यह बिचा
रे जो मेरे साथ आये हैं पत्थर के होगए थे बहुत से इनमें
बड़े बड़े सौदागर बच्चे हैं और सवारी और सामान
खो बैठे हैं उम्मेद वार हूं कि इनको एक एक घोड़ा औ
र असबाब और राह खर्च मिले जिससे कि अपने अ
पने देश को सुख पूर्वक पहुंचे और आपको दुआएं दें
हारस शाहने उसके कहने के मुआफ़िक़ किया फिर हा
तिम भी रुख़सत हुआ तब बादशाह ने बहुत माल और अस
बाब का सरंजाम उस के साथ करके बड़ी सुश्रुषा से हाति
म को रवाने किया हातिम कई महीने पीछे बड़े ठाट बाठ
से शाहाबाद में दाख़िल हुआ लोगों ने उसे पहिचान के
हुस्न बानू से जा कहा कि वोह जवान जो हम्माम बाद गा
र्द की ख़बर को गया था सो आया है हुस्नबानू ने चोब
दारों को भेजा कि मेरी तरफ़ से सलाम कह के कहो कि जो
आपको परिश्रम न हो तो चले आओ वोह सुनके उस के
महल में गया कि निदान हुस्न बानू बुलाके जड़ाऊ कुर्सी
पर बिठाया और समाचार पूछे उसने सारा वृतान्त बर्णन
किया और सुनते ही ठंढी होगई और हीरा भी निकाल के दि-

की रीति के अनुसार साचिक भिजवाई दूसरे दिन उधर से मेंधी भी उसी ठाट से आई प्रातःकाल ब्याह की ते यारी होने लगी मकानों के फ़र्श बदले बरातियों ने कपड़े झमझमाते पहिरे और बहुत सी अप्सरा बुलवाईं दोनों ओर रोशनी के ठाठर मीनाकारियों की टट्टियों समेत दुलहिन के महलन तक बंधवाईं और आतिशबाज़ी की चादरें जगह जगह खड़ी करवाईं लाखों गंज सितारों के गड़वाये आधी रात के समय मुनीर शामी बड़ी धूम से ब्याहने चढ़ा॥ काव्य॥ वोह नौशा का घोड़े पर होना सवार॥ मोतियों का सेहरा जवाहर निगार॥ ठहर कर वोह घोड़े पर चलना सँभल॥ हुमा के वोह दोनों तरफ़ से मोरछल॥ वोह फ़ानूस आगे ज़मुर्द निगार॥ कि होस बज़्म मीना भी जिस पर निसार॥ हज़ारों तमाशी तरहेर वां॥ और अहिल निसात उनपे जलवे कुनां॥ वोह सहनाइयों की सुहानी धुने॥ जिन्हें गोश ज़ुहरा मुफ़स्सिल सुने॥ फुलझड़ियों से हर कूचे में जा दर जा॥ फूलों का अम्बार था अना रों की कसरत से बाज़ार गुलज़ार था॰ महताबियों की रोश नी से चौदवीं रात की चांदनी मांद थी॰ सितारों की चमक से दिन से ज़्यादा रोशन रात थी॰ ग़रज़ तमाम आतिशबाज़ी की कैफ़ियत रोशनी की कसरत बरातियों की ज़ेनत नज़ वान को यारा है जो कहै न कलम को ताक़त है जो लिखे॥

बैत॥ जब आई दुलहिन के मकान पर बरात॥ कहूं वहां के आलम की तुम से क्या बात॥ यहां भी नाच हो रहा था और सामासब खुशी से बैठी थी कितने मनुष्य अगवानी को गये दूल्हा को हाथों हाथ ले आये गद्दी पर बिठाया हातिम भी दूल्हा के

बादशाह को उस के आने की ख़बर ऊई वज़ीर को लेने
के लिये भेजा वह बादशाह ज़ादे को बड़ी प्रतिष्ठा पूर्वक बा
दशाह के पास ले गया उस ने दौड़ के ख़ुशी से लगाया व
ह पांव पर गिर पड़ा बादशाह ने सिर उठा के छाती से ल
गा महल में लेगया उसने वहां जाके अपनी माता को प्र
णाम किया उस ने भी सिर से पांव तक बलाऐं लीं और चि
त्त को ठंढा किया महल में मुबारिक बाद की धूम धाम म
ची शहर में घर २ ख़ुशी ऊई बादशाह ने हरएक छोटे बड़े
को मुवाफ़िक़ रुतबे के ख़िलत दिया और ग़रीबों को द्रव्य
पात्र करदिया और हातिम का नये सिर से मल्का ज़रीपोश
के साथ ब्याह कर दिया फिर सब के सब परमेश्वर का धन्य
वाद करके आनंद पूर्वक रहने लगे मुल्क आबाद ऊआ बा
दशाह अपने दीवान आम में जा बैठा और अपने मुसाहिबों
से कहने लगा कि दुनियां में ऐसे भी लोग हैं कि अपना सुख चैन छो
ड़ें और गैर के काम में दुख सहें वास्तव में दोनों जहान में वही
भले हैं और जीना मरना भी तिन्हीं का भला है बादशाह य
बातें करके बिरक्त होगये और हातिम को अपनी जगह त
ख़्त पर बिठाया ॥ निदान हातिम की सातों सैर १० वर्ष और
सात महीने नौ दिन में समाप्त ऊई मुनीर शामी अपने पूर्ण
मनोर्थ को पऊंचा अंत में यह रहा न वो रहा एक कहानी क
हने सुनने को रह गई ॥

इति समाप्त
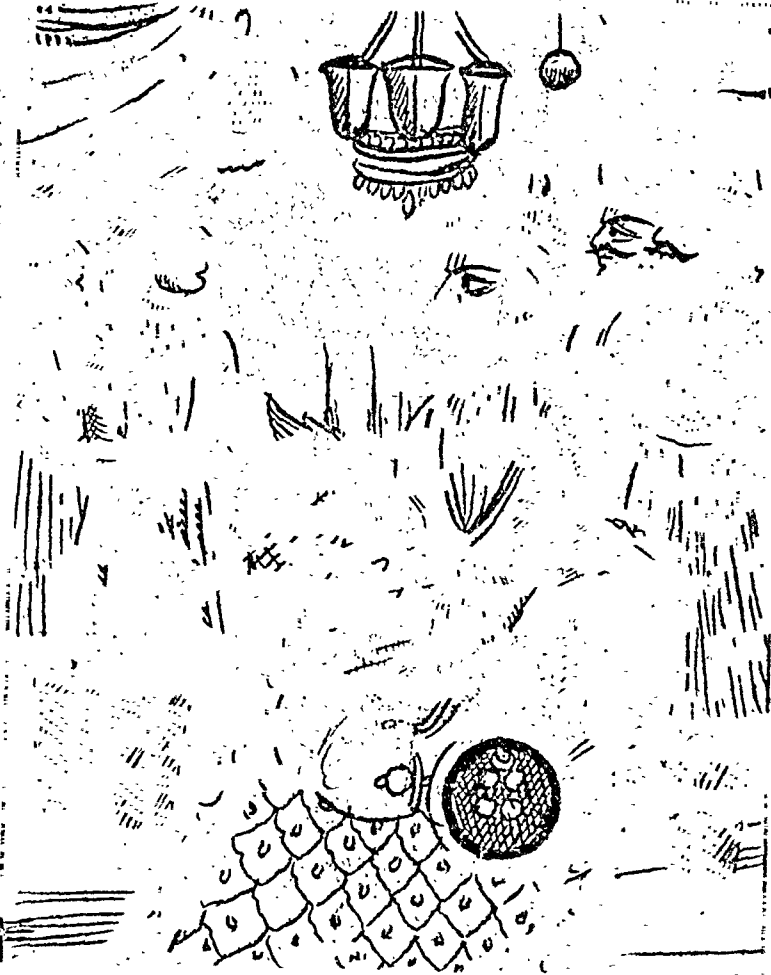
मतबअ ज्वालाप्रकाशमें
प्रशादके प्रबन्धसे मुद्रितहुई ॥ ० ॥

जिलाकार आइने सान अपने २ काम में सरगर्म थे जौहरीबा
ज़ार में जवाहर से किश्तियां भरी हुई मोती मूंगा ज़मुर्रद लाल
याकूत नीलम पुखराज जौहरी देखते भालते थे खरीदारों से
बाज़ार भरा हुआ और उसके बराबर दुकानों में मेवे फ़रोश
अनार सेब अंगूर पिटारे पिटारियां भरकर लगाये हुए और
ढेर छुवारे पिस्ता बदामों के लिये हुए बेच रहे फूल वाले फू
ल गूंथ रहे थे तंबोली बीड़े बांध रहे गंधियों की दुकाने तेल
फुलेल इतर अगर जाकी लपटों से महक रही और पन सारी
दुकानों में पड़े चुन धनिये सुपारी के लगाये हुए डिब्बे माजूनों
के आगे धरे और बिसाती हर रंग की जिन्सें दुकानों में धरे हुए
मोल गाहकों से कर रहे चौक चाकोर बना हुआ मीना बाज़ार
लगा हुआ तीसरे पहर को गुदड़ी लगी हुई असबाब तरह २
का नया पुराना बेचने वाले बेच रहे और लेने वाले मोल ले र
हे गर्म बाज़ारी एक २ चीज़ की होर ही करोरे हर तर्फ़ बज़ार रहे
सक्का कहीं नाच कहीं भगत कहीं नकल कहीं किस्सा हो र
हा माशूक बाजारों में सैर करते हुए आशक पीछे २ फिरते हुए
दिन रात यह समा वहां का बना रहता था बाग़ बगीचे सैर तमाशे
को बने हुए दरख़्त मेवों से झूमते हुए और फूल क्यारियों में लिये
हुए तालाब से कमल फूले हुए व नालियों में पानी फलकता हुआ
कुओं पर रहट चलते हुए पनघट लगा हुआ राजा के चौरासी मह
ल खास ऊंचे २ दर्वाज़े खुशकत अचार दिवारियां सीधी खिची हुई
चारों तर्फ़ उनके बाहर अंदर मकान अनूठे २ बने हुए कोठड़ियां
दालान बारह दरियां बालाखाने चौरैसले रंगमहल शीश महल
और अटारियां बंगले तैयार चिमनने परदे हर २ दरपर लगे हुए
तर्फ़ चांदनी सोजनी कालीनों का जाबजा बिछा हुआ मसनद तकिये
लगे हुए शाह नशीनों में दगले और कुरसियां सोने रूपे की जड़ाऊ

ठाया और वेगया गरूर का जितना नशा था चढ़ा था उतर गया तो
वो धाकर पावों पड़ा और कहने लगा मैंने नहीं ऐसी तकसीर की
जो मुझ पर मार पीट इधर उधर की राह बाट के लोग जो व्हां इकट्ठे
हुए थे उन्होंने कहा तू ने ऐसी बात मुंह से निकाली अगर राजा सु
ने अभी तुझे तोप के मुंह से बांध उड़ा दे ये सुन्ते ही वो: गिड़गिड़ाने
लगा रहे सहे उसके होश हवाश भी जाते रहे कि जान के डर से घ
बरा दम उसका होठों पर आरहा मिन्नत आज़ीजी से वारे छूट गया रा
जा के उस सिपाही ने वहां से घर की राह ली पर वो: जब उस मचान
पर चढ़ा तो ऐसी बकवाद किया करता एक दिन चार हरकारे रा
जा ने एक काम को किसी तर्फ़ में गये थे वो: रात को उधर से चले
हुए आते थे और वो मचान पर चढ़ा हुवा बक रहा था कि बुला
वो हमारे दीवान और हलकारों को कि इस जगह खासे महल औ
र गढ़ बनावें सब सरंजाम लड़ाई का इसमें जमा करें कि मैं राजा भोज से
लड़ूंगा उसे मारूं जो मेरी ७ पुश्त का यह राजा राज करता है यह सुन्ते
ही उन चारों को अचंभा हुआ और एक २ को मन में से गुस्सा आया एक
ने ग़ज़ब से कहा इसे जान से मारो दूसरे ने कहा इसे तबीह करके
मुश्कें बांध राजा के पास ले चलो वो: इनके बाब में जो चाहे सो करें तीस
रे ने कहा इसने शराब पी है मतवाला है जो मुंह में आता है सो कहता
है चौथे ने कहा [illegible] अब जाने दो देर होगी आपस में यह
बात कह कर राजा के पास गये पहिले मुजरा किया और जहां गये
थे वहां का अहवाल अर्ज़ किया राजा ने सुनकर पूछा हमारे राज में
सब लोग खुश थे अपने घर बैठ के हमारे हक़ में क्या २ कहते हैं तब उन्हों
ने हरएक का अहवाल कह कर वो: किस्सा राह का जो सुना था बयान
किया और कहा कि अजब असर उस मकान का है कि जब वो: उस मचान
पर चढ़ता है एक रौनक उस पर चढ़ आती है और जब वो: वहां से उतरता
है नशा उतर जाता है फिर अपनी हालत असली में आता है राजा ने कहा
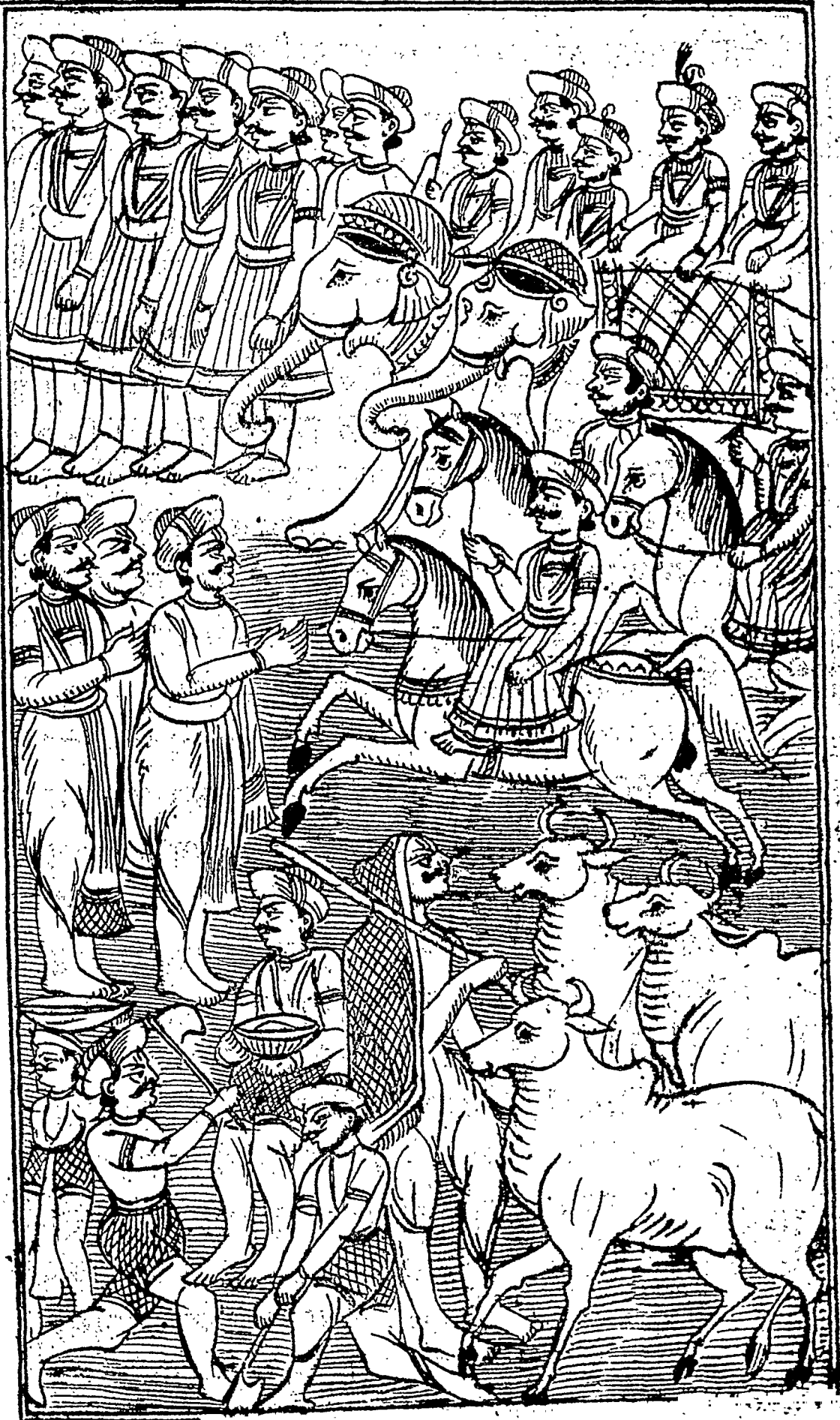
नाँचरंग राग मचे जितने लोग आये थे उन सबकी ज़ियाफ़त की ब्राह्मणों को वृत्ति मांवा दिये भूखों को खाना और रुपये बख़शे नंगों को कपड़ा और माल असबाब दिया रइयत को बख़शीश और इनाम दिया तमाम शहर में ख़ैरात बांटी फ़ौज को खिलत और इज़ाफ़े कर दिये हम ने भी भोपर तरह २ की मेहरबानियां नवाजिशें फ़रमाईं फिर जितने लोग उस सभा में इकट्ठे हुए थे जै जैकार करते थे और राम नाम लेते थे बीच में सिंहासन धरा था राजा खुशी रंगरलियां मनाता हुआ सिंहासन के पास खड़ा हुआ दाहना पांव बढ़ा कर चाहा कि उस पर रक्खे बेइख़्तियार पुतलियां खिलखिला कर हंसी और सबने यह देखा राजा अपने दिल में काटा रुक कर निहायत शरमिन्दा हो कुछ देर दहशत खाय खड़ा रहा उसे अचम्भा हुआ कि बेजान पुतलियां जानदार क्योंकर हुईं दहशत खाकर जब मैं आ

केआगेभी हल्के होंगे इस कहलानेसेनहीं कहलाना अच्छा है हम तौऊ-
सही रोज़ मरचुके थे और सिंहासन फटचुका था जिसरोज़ से
महाराज विक्रमाजीतने छोड़ी अबहमें क्याडर है इतनेमेंदीवा
नराजा का पुतली से कहनेलगा किसलिये तू अपने राजा का ब
यान नहीं करता गुस्सा छोड़दे अब बातकरदेंयावेभेद छिपाकर
रक्खा है तब पुतली बोली शाकेबन्द राजा बड़ा बली था और नगर
अम्बावती में राज करता था बड़ा उसका दबदबा था देवताओं का पू
जने वाला तमाम दुनियां को दान देने वाला आगे में उसकी कथा क
हती हूं राजा कान धरके सुनो श्याम सुवहनगरी का राजा था जात
का ब्राह्मण पर बड़ा राजा हुआ गंधर्वसेन नाम उसका हत्तर्फ मा-
जनेलगा और उसके घरमें चार वर्णों की चार रानियां थी ब्राह्मणी छ
त्रणी बैश्यणी शुद्रणी उनके जो ब्राह्मणी थी बहुत अच्छी खूब सूर
त नाज़ूक थी उनके एक बेटा हुआ बड़ा पंडित हुआ ब्राह्मीत उस
का नाम रक्खा और राजा वैसा कोई दुनियां में पंडित न था जित
ने इल्म थे सब उसने पढ़े थे वहांतक कि मौत का भी अहवाल क-
ह देना और छत्रणी से तीन बेटे हुए उन्होंने छत्रियों का धर्म इख्तिया
र किया एक का नाम शंख दूसरे का नाम विक्रम तीसरे का नाम
भरतरी एक से एक बली सब जग में उनका नाम मशहूर था और
उन्हें काल्प वृक्ष दुनियां के लोग कहते थे और वैश्यानी से
जो बेटा उसका नाम राम चन्द्र रक्खा वो: बड़ा सखी रहम
दिल था शूद्रानी से जो बेटा हुआ उसका नाम धन्वंतर वेदों
में बड़ा बैद्य था छः बेटे राजा के हुए एक से एक अच्छा
मारज़ अमर सिंह के घराने में सब खूब हुए और वो:
जो ब्राह्मणी से वो: राजा की दीवानी करता था उसमें
जब कोई तकसीर हुई तब राजा ने खिदमत लेली वो: लड़
का वहां से निकलकर धारापुर में आया और राजा वहां सब तुम्हारे

फल्गनेजंगल में राजा विक्रमाजीत आन पहुंचा राजा शंख उस रोज चुप रहा उसके सुबह उठा और उनबन में जातेही छिपकर देखनेलगा कि वोः क्या करता है जहां राजा विक्रमाजीत बैठाथा वहां से वोः उठ और तालाव में न्हाकर फिर अपने आसनपर आन बैठा और उसीतरह महादेवजी की पूजा करने लगा और यह राजा भी वहां से निकल कर खड़ा हुआ जब वोः महादेव की पूजा कर चुका तब उसी महादेव के सिर इसने पेशाब किया जितने राजाके साथ लोग थे कहने लगे इसकी अकिल मारी गई है कि पूजे हुए देवता पर इसने मूता एक पंडित उनमें से बोला उठा महाराज तुमने यह क्या किया तब वोः बोला हम जात ब्राह्मण हैं देवताकी पूजें या मिट्टीको तब ब्राह्मणोंने कहा राजा हम अच्छा नहीं देखते क्योंकि तुम्हारी मति कुमति होगई जब मरने के दिन आदमी के नजदीक आते हैं तो उसकी मती मारी जाती है राजा बोला तुम दिवाने हो और मुझे भी बावला बताते हो भगवानने लिखा है वही होवेगा उसे कोई मिटा नहीं सक्ता तब पंडित आपसमें कहने लगे इस राजाने अपना क्या अकाज किया राजा शंखने विक्रम के मारने का फिक्र किया कि सात लकीरें कोयले से उसके नाम की काटीं और उसपर भुस फैला दिया जो उसे मालूम न हो और उन लकीरों का यह गुण था जो उस पर पांव धरे बावला होजाय और एक खीरा मंगाकर जादू किया और एक छुरी पढ़कर हाथ में रक्खी उस छुरी खीरे का यह असर था जो उस छुरीसे खीरा काटे उसका सिर कट जाय पंडितों से कहा उसे बुलाओ उसलकीरों पर पांव धरके जो आवेगा दीवाना होजायगा बावला होय है खीरा जो हाथ से लेकर काटेगा तो सिर उसका कटजावेगा जितने क्षत्री राजाके साथ थे अपने दिलमें फिक्रमंद हुए कि इस राजाने दगा किया यह क्षत्रियों का धर्म-

निहायत आबादथा कबूतर वहां उड़ रहे हैं चीले मंडलाती हैं सूरज की झलक से हवेलियां चमक रही हैं अपने जी में यह कहा यह नया शहर है देखा कल इसे छीन लूंगा और उस नगर का राजा का दीवान जिसका नाम लूत वरण था वो कउवे के भेस में रहता उस तरफ से उड़ा हुआ आता था उसने राजा के मुंह से यह बात सुनी बहुत खफा हुआ दिल में गुस्से से उसके मुंह में बीट कर दी राजा गजब में आया इतने लोग उसके कुछ वहां आन पहुंचे उन के साथ होकर अपने शहर में दाखिल हो दीवान को हुक्म किया जहांन में जहां तक कउवे हैं पकड़ लावो वो सुनते ही चारों तरफ हवेलियों के दौड़े और कउवे पकड़ लाये पिंजरे में बंद किये राजा ने जाकर उन कउओं से कहा अरे चंडालों वह कौनसा कउवा था जिसने हमारे मुंह पर बीट की तुम सच कहोगे तो हम छोड़ देंगे नहीं तो सब को मार डालेंगे यह सुन कर सब बोले महाराज हम में कउवा कोई नहीं रहा जो पकड़ा नहीं आया और वो: काम हम से नहीं हुआ जब राजा जियादा खफा हुआ कि तुम सब के सिवाय कौन कउवा है कि जिसने यह काम किया जब उन्होंने कहा कि महाराज सच पूछते हो तो हम कहते हैं बाहु बल नाम एक राजा है उदय अस्त में उसका राज है और उसका दीवान लूत बर्णी नाम बड़ा दानी है बहुत बड़ा दानी है बहुत होशियार बड़ा पंडित है वो: कउवे के भेष में रहता है वह काम उसका होनसे क्योंकि कउवे की सूरत में एक वो: कउवा रहा है तब राजाने कहा कि वो: किसतरह आवे इसका कुछ समझ कर मुझे इलाज बताओ कोई तुम्हारे यहां से वकील जाय और उसको ले आवे तुम अपने यहां से कउवों को भेज देवे जाकर ले आवे उसमें दो कउवे वहां गये उनको लूत-

इसजगह का राजा हुआ उसका बेटा तू विक्रम है तुझे जगमें कौन नहीं जानता पर जब तक राजा बाहुबल राजतिलक नदेगा तब तक तेरा राज अचल नहोगा और वोः जो खबर पावेगा तब चढ़ दौड़ेगा तुझे एक घड़ी में आकर खाक की बराबर करदेगा तुझे जो मैं मसलहत दूं उसे मान और किसी तरह से उस राजा के पास जाकर राजाकी मुहब्बत दिलाकर तिलक उस से ले जिस्से अचल राजतू करे राजा-विक्रम बड़ा अकलबंद था इस बात पर कायम रहा ऐसी सरह बातें लूतबरण से सुनकर कुछ दिलमें नलगी हंसकर कान दे सब सुनी फिर लूत बरण ने कहा तुम्हें चलना है तो हमारे ही साथ चलो और पण्डितों से अच्छी साअत दिखा दिखा कर चलने की तैयारी करो दूसरे दिन सुबह के बक्त राजा लूत बरण मंत्री साथ हो चला और राजा बाहुबल के नगर में पहुंचा तब उस दीवानने राजा से कहा तुम बैठो और मैं अपने राजा को तुम्हारे आने की खबर दूं यह बात राजा से कह के अपने राजा के मंदिर में गया उसको सलाम किया और सब समाचार अपनी हकीकत समेत राजाको अहवाल कह कहने लगा कहा राजा गन्धर्बसेन का बेटा बिक्रम आपके दर्शन के लिये आया है यह बात सुनकर तुरत बुलाया तब वोः दीवान राजा को लेगया और अपने राजासे मिलकार राजासे मिलाकर राजा उस्से उठकर मिला आदर करके आधे आसन पर बिठाया क्षेम कुशल पूंछी बाद उसके रहने के लिये मकान बताया राजा उठकर उस मकान में आया वहां रहने लगा जब पांच दिन बीते दीवान से राजा विक्रमने कहा हमें तुम बिदा करदो तो हम अपने स्थान को जायें तब मंत्री कहने लगा हमारे राजाका यह सुभाव है जो [illegible]

पदीप के राजा खिदमत के वास्ते आये और जो राजा कोई ग-
रूर कर्त्ता था उसका वो: राज जाकर छीन लेता था और और
अपना राज करता गरज उदय से अस्त में तक खूब उसने
अपना राज किया सब रइयत आनन्द से उसके राज में व-
स्ती थी और जो सत्री थे उसके डर से डरते थे और जो कोई दे
श बिदेश जाता था वहां विक्रम का धर्म सुन्ता था सब
मुल्क आबाद रखता था कहीं दुखी उसे नज़र न आता था
दंड और बांध उसके राज मेर में किसी के कान से न सुना
बल्कि घर घर आवाज़ बेद और पुराण की आती थी औ
र जितने लोग थे अस्नान ध्यान करके तीनों वक़्त अपने भ-
गवान की याद में रखते थे अपने २ घर में राजा की सी सभा
करके खुश रहते थे राजा राज प्रजा सुखी इस में एक दि-
न राजा विक्रमा जीत ने सभा की और सब पंडितों को बुला
कर पंडितों से पूछा अब जी में है कि मैं इस बात के लायक
हूं कि नहीं तुम शास्त्र देखकर मुझ से विचार के कहो तब
पंडितों ने विचार के राजा से कहा महा राज अब तो तुम्हा
रा प्रताप है सो तीनों भुवन में छा रहा है तुम्हें जो करना हो
सोही कीजे दुश्मन तुम्हारा कोई नहीं राजा ने यह सुन
कर पंडितों से कहा कि अब तुम बताओ कि किस विधि
से संबत् बांधें शास्त्र की रीति से मुनासिब हो जिस तरह
से हमें कहो तब पण्डितों ने कहा पहिले तो तुम अजीत
माला पहिनों फिर इसके बाद देश २ के ब्राह्मण जिमीदार
और अपने सब कुनबे के लोग बुला ओ सवा लाख कन्या
दान और गऊ दान सवा लाख ब्राम्हणों को करावो और
जितने ब्राह्मण तुम्हारे मुल्क में हैं उनको वृत कर दो एक
वर्ष का खज़ाना जमीदारों को माफ़ करो और जो भूखा कंगल इस

आको गया वहां एक जती से मुलाकात उसने राजा को योग की
रीति बताई राजा ने अपने जी में इरादा किया कि योग कमा-
वे योग करने को तैयार हुआ राजा निकल भरतरी को
दिया राज पाट पर बैठा आप राज काज धन दौलत छोड़
कंथा पहन भस्म लगा सन्यासी बनकर जंगल को निक-
ल गया और उत्तराखण्ड में जाकर योग साधने लगा उस
शहर के जंगल में एक ब्राह्मण तपस्या करता था धुआं
पीकर रहता था और भूख प्यास के दुःख सहता था ब्राह्म-
ण की तपस्या देख के खुश हुआ बर उसे देने लगे उसने नहीं
लिया तब आकाशवाणी हुई कि हम अमृत भेजते हैं सो
तू ले एक आदमी की सूरत में आकर देवता उसे फल दे-
यह कह गया कि जो तू इसे खावेगा चिरंजीव होगा फल ले
कर वोः तुरत चला खुशी से अपने घर को आया ब्राह्मणी
के हाथ में वोः फल दिया और कहा आज देवता ने अमृत
फल देकर मुझे कहा जो तू इसे खावेगा सो अमर होजावे
गा यह बात सुन ब्राह्मणी व्याकुल हो रोने लगी फिर वोः
बोली दुख और पाप हम किस तरह काटेंगे और हमेशा
भीख क्यों कर मांगेंगे खाल मास सब हाड में मिल जावे-
गा ऐसे जीने से मरना बेहतर है इतना दुःख मरने वाले
को नहीं होता इस फल को वोः खावेगा जो हमेशः दुख
उठावेगा इसके जोग है यह फल ले जाकर राजा को दो औ
र उससे कुछ धन लो यह सुन कर अपने जी में समझा यह
सच है इस संसार में इतना जंजाल कौन सहेगा इसी तर-
ह बातें आपस में सलाह की करके ब्राह्मण वो राजा के पा-
स चला जब द्वारे पर आ पहुंचा द्वारपाल से कहा राजा को खबर
दो ब्राह्मण आपके लिये एक फल लाया है दर्बान ने राजा को खबर

तेरे वास्ते लाया हूं तू इसे खायगी सुनके उसने फल हाथ से ले लिया और उसे बिदा किया फिर अपने जी में विचारा एक तो में कसबी हूं और अमर हूंगी तो कितने पाप में कमाऊंगी इस्से बेहतर यह है कि यह फल राजा को जाकर दीजिये तो राजा जियेगा तो मुझे याद करेगा और पुण्य होवेगा पाप सब कटेंगे यह सोचकर राजा के दर्बार में गई वो: फल राजा के हाथ में दिया राजा फल को देखकर बेसुध हुआ अपने दिल में कहने लगा कि फल तो रानी के हाथ में दिया था जी में यह विचार और हंसिके उस्से पूछने लगा यह फल तुझे किन्ने दिया वो: वेश्या सब बातें जानती थी पर राजा से फक्त यह कहा कि मुझे कोतवाल ने दिया है यह सुनकर वो यह समझा के रानी ने बुरा काम किया उसे कुछ रुपये देकर बिदा किया आप भयचक्र होगया फिर समझकर कहने लगा मैंने तो मन अपना रानी को दिया अरु उसने अपना दिल कोतवाल को दिया मन का भेदी कोई न मिला ऐसे [illegible] बुद्धि को धिक्कार है जो मैं फिर राज करूं और फिर उस रानी के तईं औ र लानत उस कोतवाल वेश्या के तईं और धिक्कार है कामदेव को जो ये भक्ति संसार की करता है कि जिस से संसार अगया न होता है बाद उसके फल लिये हुए को महल में गया अपने चित्त में कहने लगा यह तन मन धन जीव सब चंचल है और यह संसार जान हार है यह कोई न रहेगा जब ही पैदा हुआ तब ही कालने खाया और जब मरता है तो कुछ साथ नहीं ले जाता और मरा२ करके जन्म गमाता है सुख के सब साथी हैं और दुख को कोई नहीं बांटता यह संसार है और माया इसका जाल है सारा मछली है ऐसे बधिक है कोई न मिला जो इसे मार के खाय जब यों विचार करता हुआ

उस्से कहा वोः मेरा छोटा भाई है फिर दैत्य बोला मैं नहीं जा-
नता कि तुम कौन हो और जो तुम विक्रम इस देश के राजा
हो सो मुझ से लड़ो और मुझे मारकर जावो बिना लड़े मैं तुम्हें
इस शहर में नहीं बढ़ने दूंगा यह सुन राजा भी खड़ा हो बोला
मेरे तईं तू क्या डराता है और जो लड़ा चाहे तो तैयार हो-
इस तरह दोनों बातें कर तैयार हो लड़ने लगे और राजा उस
देव को पछाड़ कर छाती पर चढ़ बैठा तब वोः बोला राजा तू
वर मांग मुझ से मैं तुझे जी दान दूंगा यह बात सुन उसको राजा
हंसा और बोला मैंने तुझे पछाड़ा है और चाहूं तो मार डालूं
तुझ से जी दान क्या देगा तब वोः बोला राजा तू मुझे छोड़
दे मैं तेरे आगे इसका ब्यौरा सब कहता हूं तेरे राज की
धूम सब देश में है और सब राजा तुझ से डरते हैं पर मैं जो
बात कहूं सो तू कान देके सुन तेरे शहर में एक तेली है
और एक कुम्हार सो तेरे मारने के फिक्र में हैं पर तुम तीनों
में से दो को मारेगा वोही अव्वल राज करेगा तेली तो पा-
ताल का राज करता है और वो कुम्हार योगी बना हुआ
जंगल में तपस्या करता है और अपने दिल में कहता है
कि राजा को मारके तेली को तेल के कढ़ा में डालूंगा देवी
को बल देकर मैं निःसंदेह राज करूं और तेली कहता
है कि राजा और योगी को मैं मारके त्रिलोकी का राज करूं
और तू इस बात को न जानता था मैंने इस वास्ते तुझे खबर
दार किया कि तू उनसे बचा रहना और आगे जो मैं कहता हूं
सो तू सुन योगी ने उस तेली को मार और अपने बस किया
है सो तेली एक सिरसके दरख्त पर रहता है अब वो
योगी तुमको न्योता देने आवेगा छल करके तुझे ले
जायगा तू न्योता लेकर वहां जाइयो तब वोः कह बैता

को जलते कड़ाहे में डाल दिया तब देवी बोली धन्य है विक्रम ते रे साहस को मैं तुझ पर प्रसन्न हुई तू मुझ से बर मांग और धन्य है तेरे पिता को कि जिसके घर में तूने औतार लिया देवी तब कह चुकी तब वोः बीर आकर हाज़िर हुए राजा से कहने लगे कि हमें आग्या करो हम दोनों तुम्हारी सेवा को आये हैं एक का नाम अगिया दूसरे का नाम कोयला सो बोले तुम्हारी कामना हो सो हमें कहदो हम तुरन्त ही पूरी करदें सब जगह जाने की हमको सामर्थ है जल थल मही आकाश में पवन के रूप होकर जहां कहो हम चले जायेंगे जैसे हनूमान तुरंत लंका जाय पहुंचे ऐसे ही हम भी जासक्ते हैं यह सुन खुश हो राजाने कहा मुझे तो कुछ कामना नहीं है अगर मेरे तई बचन दो तो में देवी से तुम्हें मांगलूं लेकिन आप बीरों जो तुम से बचन देकर निर्वाह किया जाय तो बचन दो उन बैतालोंने कहा कि अच्छा तब राजानें उनको बचन बन्द कर मांग लिया और कहा जिस जगह में याद करूं तुम उस जगह मेरे पास पहुंचना तब बोले कि राजा तू जिस जगह में याद करेगा वहां हम पवन रूप होकर पहुंचेगे यह बात उनके कहके राजा घर को गया ये बातें चित्ररेखा पुतली ने राजा से कही कि जिस राजा विक्रम के ये काम थे इतने योग तो तू नहीं है- फिर वोः बीर राजा के ताबअ़ हुए और आगे बहुत से काम किये जहां विक्रम को गाढ़ी भीड़ पड़ी वे दोनों आकर हाज़िर हुए जो कोई ऐसा काम करे तो सिंहासन पर बैठे राजा तू अपने जोर पर मगरूर मत हो तुम से पृथ्वी में करोड़ों होगये हैं इतनी बात जब पुतलीने कहा राजा की वोः भी साअ़त टलगई तब दूसरे दिन सुबह को राजा ने फिर सिंहासन पर बैठने की तैयारी की और जो चाहा कि सिंहासन पर पांव धरे इतने में

हीजाता है धर्म करते अधर्म होवे यह राजा कह बहुत ज़ोर करने लगा और जो उसका कुछ काम न आता था तब उसने अगिया और कोयला दोनों बीरों को याद किया करतेही वे बीर आकर हाज़िर हुए और उठ किनारे पर रखदिया तब वोः बिदेशी राजा के पावों पर गिर पड़ा कि महाराज तुमने हम तीनों को दान दिया तुम्ही हमारे भगवान हो क्योंकि जीदान तुम से पाया राजा हाथ पकड़ उन तीनों को रंगमहल में ले आया बिठाकर कहा तुम्हें कुछ चाहिये सो हम से मांगलो तब वोः बोला महाराज हम कू हुकम कीजिये हम घरको जायें और जब तक जियेंगे आपको अशीस दिया करेंगे ऐसा कुछ तुमने हमें दिया है फिर राजा ने अपनी तरफ़ से लाख रुपये देकर उनको घर भिजवायदिया इतनी बात कर पुतली फिर बोली राजा इतने लायक होतो सिंहासन पर बैठो और यों बैठोगे तो तमाम लोग हंसेंगे वोभी मुहूर्त राजा का टलगया दूसरे दिन राजा फिर दिल में सोच करता हुआ सिंहासनपर बैठा

चन्द्रकला चौथी

पुतलीबोली

सुन राजा तुम मन मलीन क्यों बैठे हमारे पास आओ और सुनो जो मैं कथा कहूं पंडित कहीं से राजा विक्रमाजीत के पास आया और उसने आकर ब्यान किया जो कोई एक महल बनाने की नीव मुवाफ़िक मेरे कहने के धरै चैन उड़ावे और बड़ा नाम पावेगा तब राजा ने कहा अच्छा हाज़िर कर ब्राह्मण कहने लगा तुलालग्न आवे जब उसमें मन्दिर उठावे जब तलक वोः लग्न रहे तबतक काम उसमें जारी रक्खे और जब तुलालग्न हो चुके तब उसका काम मोकूफ़ करे

कुछ जवाब न दिया तब वो दो पहर सत गये फिर आई कहा कि अय ब्राह्मण अपनी मुझे आग्या दे उन्ने चिन्ता करके रात गवाई और सुबह हुए राजा के पास आया मन मलीन रात के अहवाल से डरा हुआ रंग जर्द चेहरे का डर से कुम्हलाया हुआ राजा इस शिक्ल से देख उसे हसने लगा फिर कहा कि क्या कैसी बात है खुशी हमने आज न देखी अय ब्राह्मण यह अचंभे की बात है तब ब्राह्मण बोला सुन स्वामी मेरा दुख तुम दाता हो प्रजा के सुख देने वाले हो और तुम आके पांथ राजा हो जैसे करण और इन्द्र अपने बक्त में दाता थे ऐसे इस समय में तुम हो आपने जो मंदिर मेरे तई दिया है इसकी हकीकत मैं कहता हूं मालूम नहीं कि उसमें भूत है या पिशाच मेरे तई उसने सारी रात सोने नहीं दिया आपके प्रताप से या लड़कों के भाग जीता बच के मैं यहां तक आया हूं इससे भी ख भांग खाना मुझे बेहतर है पर उस महल में न रहूंगा यह बात सुन राजा ने प्रधान को बुलाया उससे कहा जो उस मकान में लागत है सो हिसाब करके इस ब्राह्मण को दो राजा की आज्ञा पाय दीवान ने हिसाब कर तोड़े रुपयों के लदवाकर ब्राह्मण के साथ करवा दिये और बोः अपने घर को गया एक दिन साअत देख हवेली में राजा जा रहा और बैठकर कुछ बिचार करने लगा इसमें हाथ बांध कर लक्ष्मी आन खड़ी रही बोली धन्य राजा बिक्रम तेरे धर्म को इतना कह लक्ष्मी उस वक्त तो चली गई और राजा ने वहां आराम किया जब पहर रात रही तब लक्ष्मी फिर आई और कहने लगी कहां गिरूं राजा ने कहा जो तू पड़ा चाहती है तो पलंग छोड़ जहां तेरी इच्छा हो पड़ इतने में खूब तरह से सोने का मेह तमाम नगर में बर्षा सुबह हुई राजा उठ देखकर यह कहने लगा हमारी रय्यत पर बहुत सख्ती थी लेकिन कोई दिन निचिन्त हो

ने कहा आज तुम अपने २ घरको जाओ छः महीने के बाद ह-
मारे पास आना तब जवाब इसका देंगे यह सुनकर वो दोनों
अपने घर गये राजा मन में चिन्ता कर चरना पहन का छाखां
डा फरी लेकर बिदेश को चला और अपने दिल में यह अ-
हद किया कि जब तक इसका भेद न पायेगे तब तक देश
में न आवेंगे जब फिरते फिरते समुद्र के किनारे पहुंचा वहां
एक नगर उन्ने बहुत बड़ा निपट सुहावना खूब आबाद पा
या और उसमें तरह २ की हवेलियां जिनको करोड़ों रुपये-
लगे थे और उसमें सिवाय जवाहिर के कुछ नजर न आया
था देखकर राजा कहने लगा कि जिसका यह नगर है वो-
राजा कैसा होगा शहर में फिरते २ शाम होगई और शहर
आखिर न हुआ इतने में क्या देखता है कि एक दुकान में
महाजन शिर निहुड़ाये हुए बैठा है राजा उसके साम्हने जाख
ड़ा हुआ तब सेठने राजा से कहा तू किस देश में आया है (
और तेरा मन मलीन क्यों होरहा है किसे ढूंढ़ता है और (
क्या तेरा नाम अपना अर्थ मुझसे कह किसका बेटा है तू और
क्या तेरा नाम है तब वोः बोला सेठजी मेरा नाम विक्रम है मैं आ
ज तुम्हारे पास आया हूं मेरे दिल में मवासद है यह था कि मैं
राज से मुलाकात करूं सो आज मुलाकात हुई कलमें राजासे
मिलुंगा उनकी सेवा करूंगा जो वे मुझे नोकर रक्खेंगे और मेरा महीना
कर देंगे तो मैं रहूंगा यह बात सुनके वह महाराज बोला तुम क्या रोज
लोगे तब राजा कहने लगा जो कोई लाख रुपये रोज देतो रहूं-
तब वोः साहुकार बोला भाई तुम क्या काम करते हो तो तुम्हें ला
ख रुपये रोज कोई देवे वोः काम मुझे कोई बता सो तब उसने कहा
कि जिस राजा के पास मैं रहता हूं उसको गाढ़ी मुशकील में काम आता हूं
सेठ हंसकर बोला लाख रुपये हमसे लो और सरवली मे स-

बात याद आई है जब तू हमारे पास नौकर रहा था तब तूने
इकरार किया था कि मुश्किल काम में आसान करना इस जग
गह खुदा निगाह देया तू इस्से और क्या कठिन होगा कि काल
के मुंह में पड़े हैं यह सुनकर विक्रम उठा और फरी खांडा हाथ
में ले रस्सा पकड़ जहाज के नीचे उतर गया जाकर बहुत सी हि-
कमत की कोई हिकमत वहां न चली तब सेठ ने कहा कि
पहिले इसकी चढ़ा दो लोगों ने पालें चढ़ा दीं और उसने कूदकर
लंगर काट दिया पानी की तेजी से और हवा की तुंदी से जहाज
चल निकला और कोई रस्सा उसके हाथ न लगा उसी जगह रह
गया जो कुछ विधाता ने लिखा है उसे मिटा नहीं सकता अल
किस्सा वो: राजा वहां से बहता हुआ चला और जाते जाते
से एक नज़र नगर पड़ा यह वहां जा लगा उस नगर का
दर्वाजा था उसे जोहीं निगाह कर देखा कि चौखट पर लिखा
हुआ है कि सिंहावती की राजा विक्रम से शादी होगी यह देखक
राजा को अचरज हुआ कि यह किस पंडित ने लिखा है तब
स दर्वाजे के अन्दर गया तो वहां जाकर एक महल देखा
और वहां औरतें हैं मर्द कोई नहीं और पलंग पर सिंहावती
सोती है चौकी सहेलियां बैठी हैं यह भी पलंग पर बैठ गया
और तुरत उसको जगा दिया वो उठि है तब बैठी राजा ने हाथ
से हाथ पकड़ लिया और दोनों सिंहासन पर जा बैठे तब
दासियां हाजिर हुईं और इस भेद से वाकिफ़ थीं कि राजा
विक्रम जीत यहां आवेगा और उसे इसकी शादी होगी
राजा को तो देखा तो फूलों की माला ले आईं और गंधर्ब
बिवाह किया राजा जैसे दुख पाकर गया था वैसा वहां उसने
सुख भोग किया अलगरज वे दोनों आपस में आनन्द पूर्वक
रहने लगे और नौजवानी की ऐसे करने लगे हर एक लहजा

पछता पछता रह गई राजा जब अम्बावती नगरी में पहुंचा वहां नदी किनारे एक सिद्ध बैठा देखा राजा उसके पास घोड़ी से उतर दंडवत कर जा बैठा सिद्ध का जब ध्यान खुला तब उसने इसे देखा देख कर खुश हुआ एक फूलकी माला इसे दी और कहा विजय माल माला मैंने तुझे दी इसका गुण यह है कि जहां जायगा वहां फतह पावेगा और तू सब को देखेगा तुझे कोई न देखेगा फिर एक छड़ी राजा को दी और उसका असर भी समझा कर कि इस लकड़ी का यह खवास है पहिले पहरे रात को सोने का जड़ाऊ गहना जो इससे मांगोगे सो यह देगी और दूसरे पहरे रात को एक खूबसूरत नारी ऐसी देगी कि जिसे देख राजा तुम मोहित हो जावोगे और तीसरे पहरे रात को जब इसे हाथ में लोगे तो तुम सब को देखोगे कोई न देखेगा चौथे पहरे रात को साबित काल के यह होगी इस डरसे कोई दुशमन तुम्हारे पास न आसकैगा यह बात योगी ने कह राजा को रुखसत किया राजा उज्जैन नगरी के पास पहुंचा तब उधर से एक ब्राह्मण और भाट को आते देखा और जब नजदीक पहुंचा तो उन्होंने असीस देकर कहा महाराज आपके द्वार पर बहुत दिनों हमनें सेवा की पर हमारा भाग ही ऐसा था कि कुछ उसका फल न मिला तब राजाने सुनते ही ब्राह्मण को छड़ी दी और भाट को माला और उसका भेद सब कह दिया असीस देकर वो कहने लगे कि महाराज इस समय में तुम राजा करन हो तुम्हारे बराबर दानी पृथ्वी में दूसरा और नहीं यह कहा और निदान घरको गये और राजा अपने स्थान को गया दीवान प्रधान सब आन हाजिर हुए शहर की तमाम

तरफ को जो रन निकलती है तब उस सरोवर में वोः खंभ भी
निकलता है और ज्यों ज्यों सूरज चढ़ता है त्यों त्यों खंभ भी बढ़
ता है जब ठीक दोपहर होती है तब वो खंभ सूरज के रथ की-
बराबर पहुंचता है तब उस जगह पर खड़ा रहता है और व-
हां जब सूरज कुछ भोजन करलेता है तब रथ चल निक-
लता है खंभ भी घटजाता है बिदा नाम के वक्त पानी में लो
प होजाता है इस को देवता या देव कोई नहीं जानता यह
बात ब्राह्मण से सुन कर अपने मन में रक्खी जाहिर न की
उसके तईं कुछ रुपये दे बिदा किया और लाल बेताल
को याद किया वे दोनों बीर आकर हाजिर हुए उन्होंने
कहा हमें जो इस वक्त आपने याद किया है सो आग्या की
जिये कहीं ए तुम ले जावें कहिये पाताल को कहिये स-
मुद्र पार तीनों लोक में जहां आप की मरजी हो तहां ले च
लें तब हंसकर राजा ने कहा एक कौतुक हम देखने जाया
चाहते हैं सो वोः उत्तरखंड में है वहां तुम चलो यह बात सुन
कर बीर कंधे पर चढ़ाय राजा को ले उड़े और उस जगह
तुरत जाय पहुंचाया राजा ने वोः ताल व देखा कि चारों
घाट उसके पुख्ताः हैं हंस बगुले उसमें फिरते हैं और मुरगा
बियां चकोर पनडुब्बियां किलोलें करती हैं कंवल फूलों
पर भौरे गूंज रहे हैं और बोल रहे हैं कोयल कूक रही है
और तरह तरह के पक्षी इस ताल में हैं फूलों की सुगं-
धों के साथ पवन चली आती है और मेवा के दरखतों
की डालियां फल के खाती है राजा यह सभा देखकर बहु-
त खुश हुआ रात भर वहीं रहा जब सुबह हुई सूरज निकला
कि जो कुछ ब्राह्मण ने कहा था वोः सब वहां देखकर बहुत
खुश हुआ बीरों से कहा एक बात मेरे जी में आती है कि

अपना कुंएडल उतार कर राजा को दिया कहा अब निडर राज कर सूरज का रथ आगे बढ़ा और खम्भ भी चढ़ने लगा राजा अकेला रहगया तब वीरों को बुलाया बीर आकर हाज़िर हुए उसके कांधे पर सवार होके अपने मकान में आया जब शहर दाखिल होने लगा साम्हने से एक गुसाईं आया उसने राजासे अपने योग की मति से कहा महाराज जो तुम कुण्डल लाये हो वह मुझे दान दीजिये और जस धर्म बड़ाई लीजिये राजा बोला आप योगी मति हीन ऐसा योगी तूने कब कमाया जो तू कुंडल मांगता है वो : सन्यासी कहने लगा महाराज मैंने जोग कुछ नहीं साधा पर सुन्ला था कि राजा है इससे मैंने आपको जा चा राजा ने कुंडल उसके हाथ दिया आप खुश आप खुश होता हुआ अपने घरमें आया कामकंदला यह बातें सुन कर कहने लगी कि राजा तुममें भी इस राजा की इतनी कुदरत होतो सिंहासन पर बैठ यह बात सुन राजा मन मलीन हो फिर गया उसके दूसरे दिन राजा दिलमें गुस्सा सा खाता हुआ फिर सिंहासन पर बैठने को चला और पुरोहित से कहा इस बेरमें पुतली के रोकनेसे न रुकुंगा आज सिंहासन पर जरूर बैठूंगा जब राजाने पांव उठाकर चाहा कि सिंहासन पर बैठे तब ॥

कमोदी सातवीं पुतली बोली॥

पुतली पांव तले आनगिरी राजाने यह तौर देख दुखित हो पांव खैंच लिया और उस पुतली से कहा तू किसका रनचरनोंमें आनगिरी उसने कथा पुरुकी कि हमजो हैं अवला

ने नहीं पाता नरपतिने कहा यह तो थोड़ी बात है इसवे वा-
स्ते तू क्या रोती है उन्ने जवाब दिया कि मुझे यह थोड़ी बहुत सी
तब राजा बोला मेरे कांधे पर चढ़के उसे खिलादे यह कंका-
लन राजा के कांधे पर चढ़ी उस सूली पर जो चोर टंगा था उसे
खाने लगी रक्त उसके मुंह से राजा के बदन पर गिरने लगा-
राजा मन में सोचा कि यह कोई और है इसने मुझे धोका दि-
या अपने जी में राजाने यह सोच के पूछा कह सुंदरी तेरा पिया
भोजन करता है कि नहीं तब कंकालन बोली अब से खाचुके
अब इस का पेट भरा मुझे कांधेसे नीचे उतारो तब उसे उतारि
राजा ने कहा उसने अब के खाया तब कंकालनी हंस के बोली
तू मांग जो तुझे चाहिये मैं तुझसे बहुत खुश हुई मैं कंकालिनी
हूं तू मुझसे अपने जी में मत डर वो: बोला मैं तुझसे क्या डरूंगा-
और क्या मांगूंगा तूने मुरदा मेरे कांधे पर चढ़कर खाया तू मुझे
क्या देगी वो: फिर बोली कि राजा तू इसके ख्याल मत पड़
कि मैने क्या किया क्या न किया तुझे इच्छा आवे सो मुझ
से मांगले राजा से हंस कर कहा अन्नपूर्णा मेरी छोटी बहन
है तू मेरे साथ चल मैं तुझे दूंगी इस तरह आपस में दोनों
बाहम बचन कर चले आगे२ कंकालिनी पीछे२ राजा न-
दी के किनारे जा पहुंचे वहां एक मंदिर था उसके दर्वाजे कं-
कालिनीने ताली मारी और अन्नपूर्णाने प्रगट होके उसे
कहा कि यह भूपाल कौन है वो: बोली यह राजा विक्रम
है इसने मेरी सेवा की है मैने इस्से बचन हारा है अगर
मेरी महोब्बत तेरे दिल में है अन्नपूर्णा इसे दे हंस कर
उसने राजा को एक थैली दी और कहा इसमें से जितनी शय जित-
नी खाने की चीज मांगोगे सब पावोगे राजाने हाथ फैलाके ली वहां
से खुश हो नदी किनारे अस्नान ध्यान कर निश्चिन्त हुआ कि एक

आबदई नेजो हिकमत का घोड़ा बनाया था नज़रदिया राजा ने घोड़े को देख उस्से पूंछा कि इस्में क्या२ गुण हैं निज्जार ने कहा महाराज इस्में यह गुण है न कुछ खाता है नपीता है और जो योजन दां लेजाता है दरयाई घोड़े के बराबर है घोड़ा उस वक्त चला की से एक जगह नठहरता था कूद फांद रहा था जो२ राजा देखता था खुश होता था आखिर पसंद करके कहा कि इसको मैदान में फेरकर दिखा दे जोंही उसने कोड़ा किया फिर तो गर्द हीन जर आती थी और घोड़ा मालूम न-होता था जब ऐसे गुण घोड़े में राजाने देख दीवान को बुलाकर कहा लाख रुपये इसे दो दीवान ने अर्ज़ की महाराज यह काठ का घोड़ा और लाख रुपये इतना इनाम मुनासिब नहीं राजाने दो लाख रुपये फर्माइये और उस दीवान ने चुपके से हवाले कर दिये और अपने दिल में सोचा कि जो कुछ और तकरार करूंगा तो और बढ़ेंगे वो: बढ़ई रुपये ले-अपने घर को गया घोड़ा थान पर बांधा और वह चलते हुए कह गया कि इस पर सवार होकर कोड़ा न कीजो नएड मारयो पर किसमत का लिखा कोई मिटा नहीं सकता जो बात हुआ चाहती है सो होती है कई दिन के बाद राजाने घोड़ा मंगवाया अपने मुसाहब से फरमाया कि कोई तुम में से सवार होकर इस घोड़े को फेरो हम देखेंगे यह बात राजा की सुनकर एक२ का मुंह देखने लगा घोड़े की चाला की से कोई न चढ़ा तब राजा झुंझला कर बोला घोड़े को साज़ लगा करके लाओ यह बात सुनते ही एक की जगह हज़ार दौड़े और जल्दी तैयार कर लाये राजा सवार होकर वहां फेरने लगा जितना कि वो: चाहता है कि आसन जमाकर घोड़े को अपने काबू में लावे पनों से निकल जाता था और पारे की तरह एक जगह ठहरता न था छलावे की मानिंद छल बल करता

आता है कौन जाता है जब ठीक दोपहर दिन हुआ एक सिद्ध आया बाई तरफ़ जो कूंवा था उस्में इसने एक तूंबा जल निकाला कि वो बंदरिया उत्तर आई सिद्ध ने एक चुल्लू उस पर डाल दिया वो खूबसूरती स्त्री होगई और उस रूपवती स्त्री से जोगीने भोग किया जब तीसरा पहर। हुआ जोगीने कुएसे पानी खेंच उस पर छींटा मार फिर वो: बंदरीया बनादी और दरखत पर चढ़ी जोगी भी पहाड़ की गुफ़ा में जा बैठा अपना जोग करने लगा राजाने प्रगट हो चतुराई करवाए कुएसे जल निकाल उस बंदरिया पर छींटा मारा फिर वो: ऐसी सुन्दरी हुई कि गोया इंद्रके अखाड़े की अप्सरा है और राजा को देखला जसे मुंह फेर लिया काम के बाण राजा आन लगे प्रेम कर उस को अपने पास बिठायलिया जब उसने आंख प्यार की देखी तब हंस कर बोली महाराज हमें और २ दृष्टि से मत देखो। क्योंकि हम तपस्वी हैं जो हम सराप देंगे और तुम भस्म होवोगे राजा बोला कि सराप मुझे नलगेगा में राजा वीर विक्रमाजीत हूं कोई मेरा क्या कर सक्ता है कि मेरे हुक्म में ताल बैताल है विक्रम का नाम सुन्ते ही यह बोली राजा के चरन पड़ी और कहा महाराज तुम तो नरेश हो महाराज उपदेश सुन जल्दी। यहांसे चले जावो अभी जती आता है तो मुझे तुमे दोनों को सराप देकर जला जाता है तब नरपति बोला कि हम जतीके सामने न होंगे हमारा तो वो: कुछ कर न सके गा पर स्त्री हत्या लेनी हमें उचित नहीं क्योंकि स्त्री हत्या लेने से आखिर को नरक भोगना पड़ता है। फिर राजाने कहा कि उस सिद्धने तुझे कहां पाया तब वोः वो बोली कामदेव मेरा बाप है और पहुपावती मेरी मां है मैंने उस्के कुलमें अवतार लिया था जब मैं १२ वर्ष की हुई तब उन्होंने मुझे एक आज्ञा की थी और भंग की तब मेरे माता पिताने क्रोध-

राजाने कहा कि अब चल यहां ठहरना उचित नहीं बेहतर
यह है कि मेरे देश को चल यह बात राजा की सुन वो: बोली
सुनो महाराज एक मेरी आधीनी में पांव पकड़ हाथ जोड़
कर कहती हूं कि तुम बड़े दानी हो ऐसा दानी मैंने कहीं
नहीं सुना ऐसी नहो कि कहीं किसी को मुझे दान करदो मैं
दासी होकर हरवक्त तुम्हारी सेवा करूंगी तब राजा बोला
ऐसा नहीं होसकता कोई अपनी नारी पर पुरुष को दे यह
धर्म विरुद्ध है इस तरह खातिर जमा कर और दोनों को बु-
लाया वे आकर हाजिर हुए उनसे कहा हमारे देश ले चलो
वीर तखत पर बैठ उनको हवा की तरह ले उड़े वे तो यों अ
पने शहर की तरफ गये और जोगी वहां जो आया और उस
सुंदरी को वहां न पाया सो अछताय पछताय करके मुर्झा
रह गया निदान राजा अपने नगर के पास आया और सिंहास
न से उतर उस राकन्या का हाथ थाम शहर को चला रस्ते-
मे देखा कि उस समय किसी का खूबसूरत लड़का दरवाजे प
र खेल रहा था हाथ में कमल का फूल देखकर वो: लड़का रो-
ने लगा और बिकल २ बोला कि मैं यह फूल लूंगा राजाने कंव-
ल उसके हाथ में से लेकर लड़के को दिया लड़का फूल ले हं
सता हुआ अपने घर में गया राजा भी अपने मंदिर में जा वि-
राजा तब सुबह हुई उस कंवल के फूल में से एक लाल गिरा
लड़के के बापने उसे देख उसे उठा लिया और कमल को
छिपा रक्खा इसी रंग से हररोज लाल निकला कि एकि-
एक दिन कितने लाल वो: लेकर बाजार में बेचने गया
यह कोतवाल को खबर पाई कोतवालने उसे पकड़ बा
रहाया कि तूने यह लाल कहां पाये यों कह बहुत सा सियास
त कर लाल लेकर राजा के पास आया वो: सब अहवाल

सुन राजा भोज यहां बैठकर मैं एक दिन की कथा राजा वीर
विक्रमाजीत की कहती हूं एक दिन राजा ने होम का आ
रम्भ किया और जितने उसके देश के राजा साहूकार थे वो:
भी हाज़िर हुए जहां देश के ब्राह्मण थे उनको नौता भेजक
र बुलवाया भाट भिखारी भिक्षुक सुनकर सब धाये देश
२ के राजा अपने सब लोगों को ले आये और जितने देवता
थे वो: भी सबके सब आये राजा अपने सिंहासन पर बैठ
यज्ञ होम करने लगा कि एक ब्राह्मण उस समय आया
राजा अपने यज्ञ के मंत्र पढ़ता था ब्राह्मण दूर से देख दंडवत
करी उस पंडित ने आगम बिद्या से मालूम किया हाथ बढ़ा
राजा को आसीस दी कि चिरंजीव रहो जब राजा ने मंत्र से
फुरसत पाई तब उस ब्राह्मण से कहा कि महाराज आपने
बहुत मंद काम किया कि विना प्रणाम से आसीर्वाद तु-
मने दिया जब तक पांव न लागे कोई तौ वो असीस आ
पस में लागे ब्राह्मण बोला राजा जब तुमने मन में दंड-
वत की तब मैंने आसीस दी यह वात सुन राजा ने लाख
रुपये ब्राह्मण को दिये ब्राह्मण कहने लगा महाराज इतने
रुपयों में मेरा निर्वाह न होगा ऐसा कुछ विचार कर दीजि
ये कि जिस्में से मेरा काम होवे राजा ने पांच लाख रुपये
उसको दिये वो: लेकर अपने घर को गया और जो २ ब्राह्म-
ण उस यज्ञ में थे उनको भी वहुत कुछ दिया इस वास्ते राजा भो
ज ने तेरे आगे यह बात कही तू सिंहासन के जोग नहीं सिंह
की बराबरी सियार नहीं कर सकता और हंस की बराबरी क
उवा नहीं होता और बंदर के गले में मोतियों की माला नहीं सो
हती और गधे पर पाव नहीं फवती मेरा कहा मान इस ख्याल
से दर गुज़र नहीं तौ नाहक किसी दिन तेरा मान जायगा यह सुन

आग भड़काई है और एक कड़ाह में भरकर घीव चढ़ा रक्खा
है वो घीव बड़ा खौलता है और यह शर्त है कि उस की जो इस
कड़ाह में स्नान कर जीता बच निकले उस्से कन्या की शादी२
करूंगा यह बात उस जोगी से सुनकर मैं वहां गया था सो मैने
अपनी आंखों में से यह तमाशा देखे हैरान हुआ और वहां जो-
हजारों राजा देश२ के लोग लाखों नौकर चाकर जाते हैं उन में
से जो इरादा करता है कड़ाह में गिरकर भुन जाता है तब से
शक्ल उस राज. कन्या की नज़र आई है यह सुध बुध मैने गवा
य अपनी हालत उस के इश्क में बनाई यह बात सुन राजा ने
कहा आज तुम यहां रहो कल हम तुम मिल कर वहां चलेंगे
और उसे तुम्हें दिलादेंगे अपनी खातिर जमा रक्खो यह बात-
कह उसे स्नान करवा कुछ खिलवा अपनी सभा में बिठलाय य-
ह हुक्म किया कि जितने संगीत विद्या में हैं सब तैयार हो आज-
यहां आकर हाजिर होवें और अपना मुजरा बनावें राजा की आ-
ज्ञा पाय आन हाजिर हुए और अपना२ गुण जाहिर करने लगे२
राजा ने उस्से कहा कि इस्से जिस पातुर को तुम चाहो हम तुम्हें
दे तुम यहां बैठकर सुख भोगकर और उसका ख्याल दिल से-
भुलादे यह सुन कर यह वियोगी बोला महाराज सिंह अगर सा
त दिन का भूका हो तो भी घास न चरे सिवाय उसके मुझे किसी
और की इच्छा नहीं इस तरह तमाम रात बीती जब तड़का हु-
आ तब राजा ने स्नान पूजा कर उन बीरों को याद किया वे तुर्त आन
पहुंचे और अर्ज की महाराज क्या हुक्म है हम किस देश को तु-
म्हें ले चलें राजा बोला जहां यह प्रेमी कहे उन्हे कहा राज कन्या के नग
र में ले चलो जिस जगह वो: घी का कड़ाह खौलता है और सारा आल
म वहां जमा है उसी देश को ले चलो राजा ने तख्त पर उसको भी बि-
ठा लिया अगिया कोयला दोनों बीरों को हुक्म दिया कि उसी-

दी दहेज में जवाहिर घोड़े हाथी पालकी और तमाम माल अ-
सबाब कई करोड़ का दिया यह देखके आधा राज संकल्प क-
र दिया और दासी दास भी बहुत से दिये तब यह विरही जो
इसके साथ था देख २ बहुत खुश हुआ जब सब देले चुके २
राजा ने सब माल असबाब और उस ब्याही हुई दुलहन समे-
त साथ उसके रुखसत किया और कहा अपने देश को तुम
जाओ हमपर दया रखियो वो: बोला महाराज मुंह इसला-
यक नहीं कि तुम्हारी कुछ तारीफ़ करों जो साहस तुमने २
किया ऐसा न हमने आंखोंदेखा न कानों सुना इस कलियुग
में तुम कोई अवतार होएक जवान से हम तुम्हारा कहां तक
बयान कर सकें एक सिर है हमारा हम तुम्हें क्या चढ़ावें तुम्हा-
रे पराक्रम करोड़ों सिर सदके हैं जो नीयत हमने की थी सो
तुमने पूरी की इसका भरोसा हमें न था कि यह इरादा हमारा
पूरा होगा राज कन्या हाथ जोड़ कर राजा से कहने लगी म-
हाराज मेरा यह महा दुःख तुमने छुड़ाया नहीं तो मेरे बापने
ऐसा पाप किया था कि आप नरक भोगता और मैं उमर भर बिन
ब्याही रहती इतनी बात कह प्रेमवती पुतली बोली कि
सुन राजा भोज ऐसा पराक्रम करके उस कन्या को राजा २
लाया और उस विरही को देते बार न लाया राज कन्या २
और सब माल असबाब देकर खाली हाथों अपने मंदिर
आया।-

और तू विद्यार्थी है ऐसा साहस मुझ
से नहो सकेगा यह सुन कर राजा
ने हैरान हो सिर नीचे कर लिया वो: साअत भी गुजरी
फिर दूसरे दिन राजा सिंहासन के पास गया और चाहा
कि सिंहासन पर बैठ तब-

न पाऊंगी वो: आकर ले जायगा उसके बिन मेरे मेरी ज़िंदगी नहीं होगी उसके पास एक मोहनी पुतली वो उसके पेट में रहै है ज-हां में छिपेगी इसके बलसे वो: दुद निकाल लेता है और इस पुतली में यह ताकत है कि देव के मरने से वो: चार देव बन सक्ता है यह बात उसकी सुनकर राजा उसी बन में छिप रहा सुबह होते वो देव आया उस औरत से फिर खा हिस करने ल-गा तब उसने न माना बाल सिरके पकड़ के जमीन पर पटकने लगा वो: तो बेधड़क करने लगी उसकी आवाज़ सुनते ही राजा नि-कल आया और लड़ने को तैयार हुआ देवने भी रंडी को छोड़ रा-जा के सामने हुआ चाहै कि मारै इतने में राजा ने ऐसा खांडा मा-रा कि धड़ से सिर जुदा होगया धड़ से वोही मोहनी निकल आ-ई अमृत लेने चली राजा ने वोही बीर को आग्या दी यह जाने न पावे बीर दौड़ कर उसकी चोटी पकड़ खैंच लाये राजा के सामने हाज़िर की राजा ने पूंछा कि तू चंपा बरनी मृगनैनी गज गामुनी कटि केसरी चंद्र मुखी नख सिख से ऐसी कि हंसी से तेरी फूल झड़ते हैं और तेरी सुगंध से भौंरे मंडलाते हैं बतला कि तू देव के पेट में क्या कर रही थी कि वो बोली सुन राजा पहिले मैं शिव ग

नथी एक आग्या शिव की मैं चूक गई।

तिस्से उन्होंने श्राप दिया मोहनी रूप होगई और इस में दैत्य ने महादेव की बहुत तपस्या की तब सदाशिव ने मेरे ताईं इ-सको बखस दिया फिर इस पापी ने मुझ लेकर अपने पेट में डा-ल दिया रक्खा तब से मैं मोहनी कहलाई पर शिव की आग्या थी कि इसकी सेवा कीजिये जो यह कहै सो मानियो यों इस्के बस में रहती हूं मेरा माजरा यों था सो मैं ने तुम से कहा अब यह बैताल मुझे काबू कर तुम्हारे पास लाया है आदमी की इतनी कुदरत नथी बल्कि जो तु-म भी बहुतेरा उपाय करते तो भी तुम्हारे हाथ न आती अब राजा मैं तु

तेरा ऐसा हो कि कोई न जीते इतनी असीस जब वो: दे चुकी त-
ब उसे बेटी कर राजा ने अपने पास तखत पर बिठाली और मो-
हनी को उठा बैतालों को हुक्म दिया कि हमारे नगर को चलो
बैताल वो ही ले उड़े पलक मारते महल में ला दाखिल किया
राजा ने आते ही दीवान को याद किया वो: मंत्री आकर हाजि
र हुआ कहा कोई पंडित सुग्यानी ढूंढ कर जल्दी ले आओ
प्रधान ने आग्या पाय नगर के ब्राह्मणों को भेज एक ब्राह्मण
बिद्यावान को बुलवाय मार्कंडेय नाम वो: ब्राह्मण जब आ
या प्रधान राजा के पास ले गया राजा ने हाथ जोड़ कर कहा ए-
क ब्राह्मण की कन्या हमारे यहां है उसे हम तुम को दिया
चाहते हैं तुम भी यह बात कबूल करो ब्राह्मण बोला राजा
यह कन्या हम को दो जग में धर्म जस बड़ाई लो राजा ने यह
सुन्ते ही ब्राह्मण को तिलक दे शादी का सामान किया
दान दहेज तैयार किया फिर ब्राह्मण को संकल्प कर कन्या
दान कर दिया इतनी बात कह कर पुतली समझाने लगी
राजा सुन राजा बीर बिक्रमाजीत ने सोच कुछ किया और
लाख रुपयों का दान दहेज दे एक पल में ब्राह्मण के हवाले
किया तू इस लायक नहीं है इस सिंहासन पर बैठने से डर
अब राजा भोज तू गुण गाहक है दान और साहसी नहीं तू ना
हक हिस करता है यह सुन राजा चुप हो गया और सुबह हो
ते ही फिर आया और बैठने को
तैयार हुआ

कीर्तवती बारहवीं पुतली बोली

राजा सुन भोज एक दिन राजा बीर बिक्रमाजीत ने अपनी मजलि
लिस में बैठ कर कहने लगा कि कलियुग में और कहीं दाता है
यह सुन्ते ही एक ब्राह्मण बोला सुन राजा प्रजा के हित कारी-

मेरा नाम विक्रम है राजा विक्रम के देशका रहने वाला हूं कुछ वैराग मेरे जीमें इससे आपके दर्शन को आयाहूं आपका दर्शन मैने किये सोच मेरे बिसर गये राजा बोला तुम्हें हम क्या रोज करदें और कितने में तुम्हारा निर्वाह होगा तब उन्ने कहा बारह हज़ार रुपये में मेरी गुज़र नहोगी यह सुन कर राजा ने कहा ऐसा क्या काम करते होजो बारह हज़ार रुपये रोज़ीना हमें तुम्हें देवें वो: काम हमसे कहो कि हम यह करेंगे फिर विक्रम बोला कि जिस राजा के पास रहता हूं उसकी गाढ़ी भीड़ में काम आता हूं इसतरह से बारह हज़ार रुपये कर राजा बन्दो रहने लगा यह बात पुतलीने समझा कर राजा भोज से कही जब इसतरह से मैं दसदिन गुज़रे तब राजा बिक्रमाजीतने अपने मन में बिचारा कि जो लाख रुपये रोज दानकरता है यह उसका नित्य नेम क्या है इसे मालूम किया चाहिये कि तदेवता का इसे वल है ऐसे सोचने लगा एक दिन देखता क्या है दो पहर रात के समय राजा अकेला बन को जाता है यह देखते ही उसके पीछे २ होलिया आगे२ राजा और पीछे२ बिक्रमाजीत इस तरीक शहर से बाहर निकल एक बन में पहुंचा वहां जाकर देखा तो एक देवी का मंदिर है इस मंदिर के बाहर कढ़ाह चढ़ा है और उसमें ब्रह्मा की आगसे घीव औटता है वो: राजा तालाव में स्नान करके देवी का दर्शन कर उस कढ़ाह में पड़ा पड़ते ही भुनगया वोहीं चौसठ योगनियां आनके उसतले हुए बदन को नोच कर खागई इतने में कंकालन अमृत ले आई और उसके हाड़ पिंजर पर छिड़का वो राजा राम राम कहता खड़ा हुआ तब देवीने मंदिर में से लाख रुपये दिये और बोलिकर अपने घर को आया तब योगनियां अपने धाम को गई राह तमाशा देख कर राजा विक्रमाजीत भी उसी कढ़ाह में कूदपड़ा और उसीतरह जलगया फिर तलें योगनि भा

किसी परमात्मन थी इतने अपने समय पर राजा विक्रमाजी
तभी गया और पूछा कि तुम्हारे मन में क्या है दुःख को कहो
क्या कि मैंने तुमसे प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुम्हारी मुशकिल में
काम आऊंगा सो मेरा बचन क्या आप भूल गये मेरे आगे अप
नी व्यवस्था ब्योरेवार कहिये तब राजा बोला कि मैं तेरे आगे
क्या अपनी बात कहूं पर एक मेरे जी में है प्राण त्याग करुंगा
विक्रमने कहा पृथ्वी नाथ एक बेर मेरे आगे अपने मनकी
व्यथा कहिये तब पीछे और जतन कीजियेगा राजाने कहा
एक देवी मेरे पास थी सो मैं नहीं जानता वोः कहां गई ला
खरुपये मैं नित्य दान करता है जब मुझे बड़ा कष्ट है अब मेरी नि
त्य क्रिया निभेगी नहीं इसतरह इस वास्ते मैं जान दूंगा और ऐ-
सा मैं किसी को देखता नहीं कि जिस्से मेरा नित्य नेम चले और
जो धर्म पुन्य रहेगा तो मेरा जी ना संसार में अकारण है यह-
बात उसकी विक्रमने सुनते ही वोः थैली हाथ दी और क
हा महाराज अब स्नान ध्यान कर नित्य धर्म कीजिये -
और थैली से जितने रुपये खर्च करोगे
कम कभी न होगी नहीं।-
यह सुनते ही खुश होकर उठ बैठा और थैली हाथ में ले
अपने प्रधान को बुला उसमें से रुपये निकाल खर्चे को दि-
ये और कहा जितने ब्राह्मण सदा दान पाते हैं उनको इस
तरह से दो दीवान मुवाफिक हुक्म के अपने काम में मश-
गूल हुआ राजा वीर विक्रमाजीतने कहा या राजा मुझे आ
ग्या दीजिये।-
मैं अपने देश को जाऊं बहुत दिन गुज़रे हैंगे तब वोः राजा-
बोला हम तुम्हारे कहां तक गुण मानेंगे तुमने हमें जो दान
दिया है फिर यह कहा जो तुम अपने देश में पहुंचने काम

गी चाहता हूं तव पुतली बोली सुन राजा काम देके एक दिन राजा विक्रमाजीत शिकार खेलने चला और साथमें जितने मुसाहब राजपुत बड़े २ बली थे वह भी सज तैयार हो आये और एक २ की सवारी में हज़ार २ कोसके धावे का तुरंगथा राजा अपने घोड़े पर सवार था और वो गोया छाला वाया राजा अपने २ शिकारी जानवर बाज बहरी जुर्रा शाही बकुहील गढ़ मगवा अपने २ हाथों पर लेले साथ हुए और राजा ने भी एक बाज अपने हाथ पर बिठालिया मीर शिकार को हुक्म दिया कि जिस २ पास जो जो शिकारी जानवर है तैयार रकाब में हाजिर होवे इसतरह चल उनके साथ एक वनकी राहली और वहीं आकर किसीने बाज और किसीने कुही किसीने शाहीन उड़ाई और अपने २ जानवरों के पीछे घोड़े दौड़ाये और इधर राजाने भी जितने मीर शिकारी थे उन्हें हुक्म किया कि इस जंगल में सब शिकार करो मैं तमाशा देखूंगा जो शिकार कर लावेगा वोः इनाम इतना पावेगा जो शिकार न लावेगा वोः नौकरी से दूर होगा यह बात सुन्ते ही जितने मीर शिकारी थे उन सबोंने वनमें चारों तरफ जानवर छोड़े और उधर हुक्म बहेलियों को दिया कि तुम भी शिकार करो इसी तरह सब शिकार करते थे और ला २ के राजा को गुजराते थे वह खड़ा तमाशा देख रहा था फिर उसने एक परंद पर बाज उड़ाया और घोड़ा उसके पीछे दिया जिधर वो जाता था राजा भी पीछे से जाता था इसमें कोसों निकल गया देखा तो वहां शाम होगई तब तुरत आई फिर पीछा देखा तो वहां कोई आदमी नज़र आया और वहां तमाम फौज राजा की शाम हुए पर राजा का दूंढ़ शिकार लेले आन नगर में दाखिल हुई और वहां सुनसान जंगल में राजा भटकता फिरता था और कहीं राह न पाता था जब अंध

वड़ा मूर्ख है जो इसने मुझ से झगड़ा लाया है मैं हजार कोस से-
इस मुर्दे को ले आया हूं यह मुझ से मांगा रहा है मैं इसे क्योंकर दूं
कि इस मुर्दे के लिये मैंने वहुत कष्ट किया ना हक देखके मन ल-
लचाता है मैं क्या करूं कि जो२ मैंने इसके वास्ते दुख उठाये अ-
ब हारके समय इस दुष्ट ने आन सताया इसका न्याव तेरे हा-
थ है क्योंकि तू धर्मात्मा राजा है जो तू कहेगा सो मुझे प्रमाण है
गा सो मुझे प्रमाण है तब राजा कहने लगा तुम दोनों वड़े हो प्र-
साद में दो कुछ तुम से मांगते हैं तब वह तुम्हारा न्याव चुका
देंगे यह सुन कर जोगी ने हंस कर झोली में से एक वटुवा
निकाल राजा के हाथ में देकर कहा कि राजा तू जितना द्रव्य चा
हेगा इसमें कभी कम न होगा उतना ही यह वटुआ देगा फिर वे-
ताल ने कहा राजा मैं एक मोहनी तिलक तुझे देता हूं इसे तू घिस
कर माथे से लगा सब तुझ से दवेंगे तेरे सामने कोई न होगा-
यह दोनों ने प्रसाद राजा को दिया उसने कर ओट कर ले लिया और
बोला कि सुन बेताल तू इस मुर्दे को छोड़ दे मेरे घोड़े को खाले यह
मुर्दा जोगी के हवाले करदे क्योंकि तू भूखा न रहे और उसका
काम भी वंद न होय यह सुनते ही बेताल उस घोड़े को चबाय
गया और जोगी मुर्दा ले अपने मंत्र साधने गया राजा ने वीरों को
वुलाय और अपने देश को चला रास्ते में एक भिखारी सन्मुख
से चला आता था इन्ने जाना कि सामने से राजा आता है डरते२
उसने सलाम किया कि महाराज आपके नगर में वहुत दिनों
रहा लेकिन कुछ अर्थ सिद्ध न हुआ अब मैं कुछ तुम से मांगता
हूं मेरे तई दीजिये यह सुन्ते ही राजा ने वो बटुआ उसके हाथ दि-
या और कहा उसका भेद बताया वो: असीस देता हुआ अपने घर-
को गया राजा अपने मंदिर में गया इतनी बात कह त्रिलोचनी पुतली
बोली कि सुन राजा भोज ऐसा दानी और साहसी होवे सो इस सिंहासन

आता है यह देखकर ब्राह्मण अपने जीमें चिन्ताकरकहने ल-
गा कि संदेशा राजा का मैं किससे कहूं यहां कोई जीव भी दि-
खाई नहीं देता और जो तो जलही जल है एक विचार अपने
मनमें कर वोः पुकारा कि राजा वीर विक्रमाजीत का नोता मैं
दिये जाताहूं और तुम जल्दी पहुंचना वह इतना कह जब
वहांसे चला रास्ते में एक बूढ़े ब्राह्मण के रूपमें समुद्र नज़र
आया और उन्ने पूछा कि वीर विक्रमाजीतने हमें किसवा-
स्ते बुलाया है तब उसने कहा कि राजा के यहां यज्ञ है
और तुम्हें जरूर बुलाया है तब समुद्र बोला कि मैं चलूं-
गा पर मेरे चलने से जल जो यहां से बढ़ेगा तो कई नगर
डूब जायंगे मेरी तर्फ से राजा को विन्ती कर कहना मेरे न
आने का कुछ पछतावा न करना मैं इस सबब से पहुंच
नहीं सक्ता जब समुद्र ने ब्राह्मण को पांच लाल दीने और
एक घोड़ा सो राजा को सोगात में भेजा आप वहीं रहा-
ब्राह्मण खुश हो राजा के पास गया वे पांचों रतन राजा-
को दिये और घोड़ा ला सामने खड़ा किया फिर वहां का सब
वृतान्त कहा तब राजाने प्रसन्न हो ब्राह्मण से कहा कि
ये लाल और घोड़ा तुम्हीं लो मैंने तुम्हें दिया यह कह कर
पुतली ने राजा भोज को समझाया कि सुन राजा भोज ऐसे प-
दार्थ राजा ने देते विलम्ब न किया लाल और घोड़ा कई
राज की बराबर की कीमत के ऐसे दानी राजा के आसन
पर बैठने योगत् नहीं पंडित तू है परमाया तुझ से छूटती
नहीं वो दिन भी योंही गुज़रा फिर सिंहासन पर बैठनाचहा

अनूपवती पंदरवीं पुतली
बोली ॥

सुन राजा वीर विक्रमाजीत का गुण कहने में नहीं आसक्ते जो

ष विद्यामें अतिनिपुण था और चित्र की विद्यामें भी पंडित था उस राजाने कहा कि रानी की सूरत का चित्र लिखदे जो मैं अपनी नजरों हमेशा रखूं यह सुनकर उस मारद पुत्रने मस्तक झुकाके कहा अच्छा मैं लिखता हूं राजा से रुखसत हो अपने घर आया लिखने का आरंभ किया कितने क दिनों में लिखकरके चित्र तैयार किया सो ऐसा कि अभी इन्द्र लोक से अप्सरा उतरी है और उस रानी का जैसा अंग जहां था तैसा ही उन्ने अपनी विद्या के जोरसे लिखा जब वोः तसवीर अप्सरासी तैयार हुई लेकर राजा के पास गया और राजाने देखकर बहुत पसंद किया अंग २ उसने निरखकर देखा नखसे शिखतलक गोया सांचे की ढाली हुई थी राजा की दृष्टि देखते २ दाहनी जांघ पर जा पड़ी तो वहां १ तिल देखा बहुत सो अपने मनमें घबराया और कहने लगा कि उन्ने रानी की जंघा का तिल क्या कर देखा होय न होय तो रानी से उस्की मुलाकात है इस तरह अपने मन में विचार कर क्रोधकर दीवानसे कहा कि उस चित्रकार को तुरंत बुलाओ उसने तुरंत सुनते ही उसे बुला भेजा जाना कि राजा खुश हुआ है कुछ इनाम देगा जब वोः आनकर राजा के सन्मुख हुआ तब वधिक को बुलवाकर हुक्म किया कि इसकी गरदन मारो आंख निकाल मेरे पास ले आओ जब वोः उसे मारने चला-दीवान भी विदा हो पीछे होलिया बाहर निकल जल्लाद से कहा कि तू इसे हमें दे और आंखे हिरनकी निकाल कर राजा के पास लेजा जल्लादने प्रधानका कहना किया और दीवान राजा की तर्फ़ से बहुत बेऐतबार हुआ कि ऐसा मूर्ख राजा हमने कहीं न देखा न सुना कि गुणवंत पुरुषका यों जी लेकरता बिन गुणी पुर्ष से कुछ तकसीर भी होजाय तो उसे देश निकाला देते हैं यह राजाओं का चलन है हम सांचे हैं पर कोई राजाओं की चाल पर

आता जब वो: जागा उठेगा तो तू सोवेगा अब येही बेहतर है कि
मेरा कहना कर फिर यह औसर न पावेगा रीछ ने जवाब दिया
कि सुन अज्ञान बाघ अपने ऊपर अपराध लेना उचित नहीं जि-
तना होता है पाप राजा के मारने वृक्ष के काटने गुरु से झूठ-
बोलने विश्वास घात करने से इतना ही होता है शरणागत
के मारने से इन सबों का पाप महा पाप है यह पाप किसी
तरह से छूटता नहीं इन्ने मेरी शरण ली है क्या हुआ एक
जीव मैं ने न खाया तब बाघ खफ़ा होकर बोला कि तू ने मे-
रा कहा तो न माना मैं भी तुझे जीता न जाने दूंगा इतने में
रीछ की बारी तो पूजी और राज कुमार जागा फिर रीछ सो-
या वो: चौकी देने लगा इसे भी येही कहा बाघ ने भाई
जो मैं कहूं सो तू सुन भूल कर भी तू इस से मत पतियाय सो
वार सुबह को जब उठेगा अलसी कर तुझे खा जायगा वो: य-
ह मुझ से कह चुका है कि सो के उठूंगा तो इसे खा जाऊंगा
इस में यह भला है कि तू पहिले ही इस रीछ को गिरा दे जो
मैं इसे खा जाऊं और अपनी राह लूं तू भी रहो सलामत
अपने घर को जा इस के परमोधने से यह बातों में आ गया-
और उस टहने को पकड़ ऐसा हिलाया कि जिस से वो: रीछ-
नीचे गिर पड़े इस में उस की आंख खुल गई और टहने से लिपट
कर रह गया और इस से कहा कि फिट अय यावा जो तूने मुझ से यह
सलूक किया मैं ने तेरी जान रक्खी और तू मतिहीन मेरे मारने को
तैयार हुआ अब जो मैं तुझे मार कर खा जाऊं सो तू क्या कर सक्ता है
यह बात रीछ की सुनते ही इस को जान सूख गई अपने दिल में जाना
अब यह मुझे मुकर्रर खा जायगा इस में सवेरा हो गया बाघ उठ कर
वहां से चला गया रीछ ने उस के कानों में मूत दिया और कहा तुझे जीता-
तो क्या मारूं यहां कोई तेरा बचाने वाला नहीं है इस्से असमर्थ जान

वाकर कपड़े पहनवा चौकी दिलवा एक पटला बिछवा बिठा
श्रो श्रौर कुंवर से कहा कि तू सावधान होकर बैठ श्रौर जो मं-
त्र कहूं सो तू कान देकर सुन विभीषण बड़ा सूरवीर था श्रौर
दगा करके रामचन्द्र से जा मिल उसने रावण का राज सब ख-
राब किया श्रपने कुल का नास किया उस लाज से एक वर्ष सिर
न उठाया श्रपने किये का फल पाया कि सब कुल गवाया श्रौर भ
स्मासुर ने महादेव की तपस्या कर बर पाया श्रौर उन्हीं से विश्वा
स घात की या पार्वती की इच्छा की उसका फल भी उसने तुरं-
त पाया कि क्षण भर में जलकर भस्म होगया श्रौर तू मित्र द्रोही
श्रौर विश्वास घाती क्यों हुश्रा कि सोते हुए रीछ को क्या धके-
ला उने तो तेरा उपकार किया था तूने उसका बुरा विचारा पर-
इस्में तेरा दोष कुछ नहीं है तेरे पिता का दोष है इस वास्ते कि
जैसा बीज बोवेगा वैसाही फल पावेगा यह तुमने पिता के पाप-
से दुख पाया इतनी बात सुन्तेही कुंवर सुचेत हो बोला उठा ।
तब राजा बोला श्रय सुन्दरी तू सच कह कितने बोबन का ज्ञान
घर क्योंकर पहचाना था ये सुनकर उसने जबाब दिया कि रा-
जा मैं श्रपनी पूर्व व्यवस्था तेरे श्रागे प्रगट करूं हूं सुन जब मैं
श्रपने गुरु के पास पढ़ने जाती थी तब गुरु की श्रति सेवा कर
ती थी गुरु ने प्रसन्न होके मुझे एक मंत्र बताया वोः मंत्र मैं ने
साधा तब से सरस्वती मेरे मन में बस्ती है ।-

श्रौर जैसे मैंने राणी की-

जांघ का तिल पहचाना तैसे ही बन के रीछ को भी जाना यह
यह सुन्ते ही राजा ने प्रसन्न हो परदा मियान से दूर कर दिया
श्रौर कहा तू सच सारदा पुत्र है तेरे गुण को श्रब मैंने जाना यह कह
राजा ने श्राधा राज दिया श्रौर उसे श्रपना मंत्री किया इतनी बात क
हवोः ब्राह्मण बोला कि राजा वीर विक्रम नीत इस श्लोक का-

ह्मण ने समाचार पाया कि समुद्र पार एक सेठ है और उसकी बेटी बहुत सुंदर है उसे भी वरकी तालास है यह सुनकर एक जहाज पर बैठ समुद्र पार गया वहां जा सेठ का ठिकाना पूछ उसके द्वारे पर ठहरा और खबर करी कि उज्जैन नगरी से एक ब्राह्मण वहां के सेठ का आया है यह खबर सुन उसके सेठने उस को बुलाया और दंडवत कर आसन देकर बड़े आदर सत कार से बिठाया—

तब ब्राह्मण आसीस देकर बैठा सेठने पूंछा किस कारण के लिये तुम आये हो सो कहो ब्राह्मण ने कहा हमारे सेठ ने भेजा है लड़के की शादी के लिये और कह दिया है कि जहां कन्या अच्छे कुलकी हो वहां का टीका ले हमारे पास पहुंचो सेठ यह बात सुन कर यह बोला मेरी भी इच्छा थी कि पुत्री का व्याह मैं कहां करूं पर भगवान ने घर बैठे संयोग बना दिया फिर कहा कितने दिन तुम यहां आराम करो मैं अपना पुरोहित साथ दूंगा वो लड़के को देख टीका जाकर दे और तुम भी लड़की को देखलो और वहां जाकर उस सेठ से कहो कि अपनी आंखों देख आये हैं वो: ब्राह्मण कितने दिनों वहीं रहा और उस कन्या को देख आये हैं अपनी आंखों-सेठके ब्राह्मण को साथ ले उज्जैन नगरी को फिर चला उस सेठने अपने पुरोहित से कह दिया कि टीका दे व्याह की जल्दी कर आना ये दोनों वहां चले जहां पर अब कितने दिनों में उज्जैन नगरी में जाय पहुंचे ब्राह्मण ने सेठ को खबर की—

कि मैं कन्या ठहराय आया हूं और उस सेठका पुरोहित साथ लाया हूं उनेदूसरे रोज ब्रा॰ को बुलाया और लड़के को अपने पास बिठाया दिखलाय वो ब्राह्मण ने देखा उस तिलक कर दिया और हाथ जोड़ अपने सेठकी

नेकहा कि वला ओदवान आकर उसे लेगये सुनें उसने जाकर दीवान की दंडवत करी और विन्ती करके कहने लगा कि महा-राज के दर्शन को मैं आया हूं और अपना बड़ा जरूर काम लाया हूं यह सुनकर मंत्री ने कहा कि राजा महल में है सेठ यह सुन कर बड़ा उदास हुआ कहा मेरा बड़ा कारज था कि लड़के की शादी है और जाना समुद्र पार चार दिन बाकी रह गये हैं इसमें जो न पहुंचा सका तो मेरे कुल की हंसी होगी इनिये से यह बात सुन दीवान राजा से यह बात हकीकत जाकर कही-राजा ने आग्या दी कि वोः उड़न खटोलना उसे ले जाकर दो औ-र जो कुछ वोः कहे उसकी तैयारी कर दो जो किसी तरह उस-के काम में विघन न होने पावे प्रधान ने खटोला मंगवाय उसे दिया और कहा जो कुछ सामान तुम्हें दरकार हो सो कह महाराज का यो हुक्म है तब सेठने कहा महाराज की दया से सब कुछ है मेरे यही जरूरथी आपकी कृपा से सब काम सिद्ध होगया महाराजन खटोलना लिये अपने घर को आया ब्राह्मण बुलाक र साथ लिया लड़का आप उसपर बैठ समुद्र पार चला थोड़े

अरसे में वहां जापहुंचा-

जब जाकर देखे तो मंगलाचार सारे नगर में हो रहा है-और सब राह देख रहे हैं जब लोगों ने देखा तो हाथों हाथ ले गये जाकर हवेली में उतारा और अपने सेठ को खबर दी कि तुम्हारा समधी बरात ले आपहुंचा है वोः सेठ भी वहां उसकी मुलाकात को आप गया और देखकर इतने आदमियों को अपने जी में बहुत पछताये कर पूछा क्या सबब है जो तुम इ-तनरह से आये हो तब उसने ब्योरा और सब व्यथा सुना-

ई सुनते ही सेठने अपने गुमास्ते से-

कहा कि कल ब्याह है कि आज बरात की तैयारी सब तुम जल्दी कर दो

पुतली बोली

किसुने राजा भोज एक दिन राजा वीरविक्रमाजीत सभा में इंद्र
समान बैठा था और गंधर्व मधुर २ सुरों से गा रहे थे पातुर नृत्य
कर भाव बता रही थी कहीं भाट खड़े हुए जस वर्णन कर रहे
थे किसी तरफ़ मल्ल आपस में युद्ध कर रहे थे किसी तरफ़ ब्रा-
ह्मण वेद पाठ कर रहे थे और किसी तरफ़ चीते कुत्ते सियाहगोश
हिरण मेढ़े और शिकारी लिये खड़े थे और जितनी तैयारी राजाओं
की चहिये सब थी सभा में एक से एक पंडित चतुर वीर बैठे थे उ-
न में राजा इन्द्र की तरह बैठा था और सभा मानो इन्द्र के अखाड़े
का साथ था इस में राजा ने अपने चित्त में विचार किया फिर पंडितों
से कहा कि तुम एक बात मेरी सुनो कि स्वर्ग में राजा इंद्र जो है सो
मृत्युलोक का सब भरम जानता है कहो कि पाताल का राजा कौन
है और किस जगह रहता है तब उन में से एक पंडित बोला कि महा-
राज पाताल का राजा शेषनाग है कि जिसके हज़ार फन हैं और प-
द्मिनी राणी उसके यहां का भी सोग संताप उसके नहीं व्यापता आनन्द
से अचल वहां का राज करता है और जैसा वो: राजा सुखी है वैसा सं-
सार में कोई नहीं यह सुनकर राजा को उस्से मिलने की इच्छा हुई
बैतालों को बुलाकर कहा कि मैं इसी पाताल को ले चलो मैं शेषना
ग के दर्शनों को जाऊंगा बैताल उठाकर पाताल को ले गये और शे-
षनाग का दूर से मंदिर दिखा दिया राजा ने दूर से देख बैतालों को विदा
किया और आप मंदिर को चला-

जब जाकर उसके पास पहुंचा देखे तो वो: कंचन-
का मंदिर है रत्न जड़े हुए जगमगा रहे हैं और ऐसी ज्योति उस-
की कि जिसमें रोशनी के सिवाय रात दिन कुछ मालूम न होता था
द्वार २ पर कमल के फूलों की माला की चंदनवार बंधी हुई है और
घर २ आनंद हो रहा है राजा कुछ डरता हुआ कुछ खुशी इस पर जा खड़ा

तरह पांच सात दिन हुए राजा वहां रहा बाद इसके एक दिन हाथ-
जोड़ कर कहा पृथ्वीनाथ मुझे विदा कीजिये तो मैं अपने नगर में
जाऊं और वहां से बैठ आपका गुण गाऊं तब शेषनाग ने हंस कर
कहा कि अब राजा तुम्हें घर जाने की इच्छा हुई है भला कुछ प्र
साद हम ने देते हैं तुम लेते जाओ यह कह चार लाल मंगवाय रा-
जा को दिये और उनका गुण कहने लगा एक रत्न का यह स्वभाव
है कि जितना गहना चाहोगे सो यह तुम्हें देगा और क्षण भर देने
विलम्ब न करेगा और दूसरे लाल का यह स्वभाव है कि हाथी घो
ड़े पालकी यां जितने तुम मांगोगे इतने इससे पावोगे और तीसरे लाल
का यह स्वभाव है जितनी लक्ष्मी मांगोगे उतनी देगा और चौथे रत्न
का यह स्वभाव है हरिभजन और सुकर्म करने की इच्छा रक्खो
गे उतनी यह पूरी करेगा इस तरह चारों लालों का गुण राजा से स-
मझाय कर कहा और विदा किया राजा हाथ जोड़ कर खड़ा हो क
हने लगा महाराज मैं आपके गुणों की उपमा नहीं दे सकता पर-
आप मुझे दास समझा कर कृपा रखियेगा यह कह राजा वहां से-
रुखसत हुआ और बैतालों को बुला सवार हो अपने नगर को आ
या जब कोस एक नगर रहा तब बैतालों को छोड़ आप राजा अप
ने शहर को चला देखता क्या है कि एक दुर्बल भूखा ब्राह्मण-
चला आता है जब वो: पास आया उसने कहा मैं भूखा हूं कुछ मुझे
भिक्षा दे तो जाकर मैं कुटुंब को पालूं सुनते ही चिन्ता कर अपने मन
में कहा इस ब्राह्मण को इसमें से एक लाल दूं यह विचार कर

ब्राह्मण से कहा-

कि देखो मेरे पास चार रत्न हैं और चारों के ये गुण हैं जो तू इन
में से चाहे तो मैं दूं तब ब्राह्मण ने कहा पहिले अपने घर को
हो आऊं तब तुमसे कहूं यह कह वो: अपने घर को गया और
राजा वहां खड़ा रहा वो: घर में जाकर अपनी स्त्री और पुत्र-

की चार मत दे और अपने यहां खड़े हो कर हमारे लिये दुख पाया पर हमारा मतो बन न आया यह सुन राजा ने कहा कि महाराज-तुम अपने चित्त में निरास होकर उदास न हो चारों लाल तुम अपने घर ले जाओ मैं तुम्हें देता हूं क्योंकि जिस्में तुम्हारा कुटुंब भी प्रसन्न हो और तुम भी हम भी इसी में कल्यान रहै निदान राजा ने चारों लाल खुश होकर ब्राह्मण के हाथ दिये ब्राह्मण लेके असीस दे अपने धाम को गया पुनः राजा बिक्रमाजीत भी अपने मंदिर को आया देते दान कुछ बिलंब न लाया ऐसा दानी इस कलियुग में कौन है उसके समान दान देवे इस आसन पर बैठे और नहीं तो न ही पावे अभी बल मत डर उसका थी राज धर्म और आगे कथा जो २ राजा ने ता हम दान किये हैं वह बात पुतली की सुनकर राजा सिंहासन के पास से उठ कर घर में आया सारी रात सोच चिन्ता में गंवाई सुबह होते ही स्नान पूजा करने बैठा इतने में दीवान असान आकर हाज़िर हुए सब को साथ सिंहासन के पास गया चाहै कि पांव उठाकर धरे कि-

रूपरेखा अट्ठाईसवीं पुतली बोली ॥ ॰ ॥

हाहा कर उठी और कहा कि राजा मुझ पर दया कर पहिले मेरी बात सुन फिर पीछे जो इच्छा में आवे सो करना तब राजा बोला तू कह जो तेरे चित्त में है तब पुतली बोली कि सुन राजा भोज एक दिन दो सन्यासी आपस में जोग की रीत से झगड़ते थे उनसे जीत न सकता था न यह उस्से आखिर इस तरह झगड़ते २ वीर बिक्रमाजीत के पास आये और कहा महाराज हम दोनों बिवादी हैं इस्का आप न्याव चुका दे आप धर्मात्मा राजा हैं यह समझकर हम आये हैं राजा ने कहा मुझसे समझाकर तुम ज़ाहिर करो कि सब बात पर झगड़ा है इस्में से एक जती बोला महाराज मैं कहता हूं कि मन के बस में प्रान है और मन को बस आत्मा है और मन के बस देह है और माया मोह पाप

कीमूर्ति लिखी पीछे सरस्वती फिर देवताओं की इतने में शाम हुई और एक बार जैसे २ शब्द होने लगा जो २ देवता लिखे थे सो संपूर्ण साफ देख दे खते ही राजा मोहित हो गया और जो २ बातें वो: आपस में करते राजा सुनता था और देखता लेकिन मुंह से कुछ कह नहीं सकता था इतने में प्रभात हुआ और देवताओं ने उठ २ अपनी राह ली और वो: पुतलियां की पुतलियां रह गई तब राजा ने दूसरी तरफ दीवार में हाथी घोड़े पालकी रथ और फौज यह सब कुछ लिखा जब शाम हुई तो सब वैसाही हुए राजा देख २ अपने जी में प्रसन्न होता था कि मुझे वो: पदारथ दे गया है जब भोर भई तब वो: चित्र का चित्र रह गया फिर तीसरे दिन राजा ने पहिले एक मृदंग लिखा फिर गंधर्व लिखा पुनि अप्सरायें पंची ताल बीन रबाब तंबूरा मुंहचंग सितार पिनाक बांसुरी करताल अलगोजा एक २ साज एक २ मूरत के हाथ में दे लिखी जब शाम हुई तब पहिले शब्द हुआ और गंधर्व संगीत शास्त्र की रीत से गाने लगे और सब साज सुरों के साथ मिल २ कर बजाने लगे और अप्सरा नृत्य करने लगी और भाव बताने लगी इस तरह से हमेशः आनंद रात काटता था और दिन को यही लिखता था इसी तरह से वो: रात बीत गई इस तरह बितीत करता था और रणवास में नहीं जाता था राणियों के जी में चिंता हुई कि राजा किस कारण महल में नहीं आता और जुदे मंदिर में रहता है इसका क्या सबब है यह मालूम किया चाहिये यों रानियां मन में विचार के राजा की खोज लेने को तैयार हुई उन में से चार रानियां आपस में विचार कर के कहने लगी।-

हमारी जीना भी धिक्कार है कि राजा हमें छोड़ कर वहां बैठ रहा है औ रहें मैं यहां बिरह से दुखित हैं इतने दिनों तो हमने दुख पाया पर अब एक छिन भर भी बिन प्रीतम रहा नहीं जाता यों विचार कर रात को सब वांतो जिस मंदिर में राजा बैठा कौतुक देख रहा था वे भी वहां जा पहुंची हाथ

को मत जा और आसा छोड़ दे तुझसे बहुत समझा कर सच क-
हती हूं तू बौरान जाय और इस जोग तू नहीं वो: भी साअत गु
जर गई राजा उठकर वहां से महल में दाखिल हुआ तमाम रात
सोच में गुज़र गई सुबह को उठकर स्नान पूजा से फरागत हो
फिर उसी मकान में आया सिंहासन के पास खड़ा चाहे कि

पांव धरता उठाकर तो

इतने में।-

तारा उन्नीसवीं पुतली

बोली॥

खिल खिला कर हंसी और कहने लगी कि आप राजा आज्ञा-
नी बावले मेरी बात सुन पीछे [illegible] कर जो तू इस
सिंहासन पर चरन रक्खेगा तो अपराधी होगा मुझपर पांव दि-
याथा राजा विक्रमाजीत ने तूनें अपने मन में क्या विचारा है जो इ-
रादा करके आया है मेरा हृदय जो है कमल है मधुर कर विक्रमा
जीत था तू गोबर का कीड़ा मुझपर पांव किस तरह रक्खेगा राजा
बोला सुन तूने गोबर का जीव क्यों कर जाना पुतली बोली सुन रा-
जा भोज एक दिन की बात है एक ब्राह्मण सामुद्रिक पढ़ा हुआ ब
न में चला जाता था इसके बराबर दुनियां में कोई पंडित न था उ-
सने दरयाफ्त किया कि इस रस्ते में कोई आदमी गया होय तो ब
ता जब उसके पांव के नीसान देखे तो उसमें उर्द्ध रेखा और कमल
का चिन्ह नज़र आया तब उसने बिचार किया कि कोई राजा नं-
गे पांव इस राह में गुजरा है उसको देखा चाहिये कि कहां गया
है विचार कर उस पांव के निशान देखता हुआ जब कोस भर

जा पहुंचा तो-

उस बन में देखा कि एक आदमी दरख्त से लकड़ियां तोड़क
र गठड़ियां बांध रहा है ब्राह्मण उसके पास जाकर खड़ा हुआ

कीझूठेकारणकेपीछेगवाईतोआगेसंसारमेंक्याफलमिले गाउस्से भगतभजन करनाश्रेष्ठहै इसलियेजोस्वारथ नहोतोप रमारथतोहोगायेविचार२ कर राजाके नजदीक गयाजापहुं चाराजाको असीसदी राजाने दंडवतकर कहाब्राह्मण देवता इतनेगलीनक्योंहोक्यादुखमनमें उपजाहैतोकहो ब्राह्मण ने कहाराजातूपहिलेचरणमुझेतूदिखलाजोमेरेचित्तकासं देहजाय राजानेअपनापांवदिखलाया उसनेकुछलक्षण उसमें नपायायहदेखसांसनिवायचुपहोरहाश्रौरश्रपनेमनमेंकहने लगाकिपोथियांसबजलाय संसारकोत्यागवैरागलेदेश२फिर येयहतोअपनेजीमेंविचारकररहाथाराजानेकहापंडितूक्या क्रोधकरसिरडुलायपछतायचुपहोरहाहै अपनेमनकीबात मुझसेकहाकितूनेश्रपनीजीमेंक्याठानीहै ब्राह्मणबोलामहा राजमेरेप[illegible]कुपोथीहैबारहबर्षमेंनेपढ़करयादकरीहै सोमेहनतमेरीनिर्फलगई इसवास्तेसंसारसेमेराजीउदासहुश्राहै राजानेहंसकरकहाकितुमनेयहअत्यक्ष्यक्याकरदेखाबो ला महाराजएकमैंनेबड़ादुखीदेखिउसकेपांवमेंऊर्द्धरेखा औरक मलथा उसकीरोजीयहथीकिलकड़ीबन२सेलाताथा औरबेच करखाताथा यहदेखकर मैंनेतेराजोपांवदेखातोकोईअच्छा

लक्षणनपायाश्रौरतूराज-

सारनगरकाकरताहैकि।-

इस्सेमेराजीक्रोधहुश्राहैग्रंथजलादेशत्यागकरूंगा-

जबराजानेकहाब्राह्मणसुनमैंतुझसेबूझकरकहताहूं तब तेराजीवतिपावेगाकिसीकेलक्षणगुप्तहोतेहैंकिसीकेप्रग ट ब्राह्मणनेकहामैंकिसतरहसेजानूं राजानेछुरीमंगवायतलवेकीखा लचीरलक्षणदिखलादिये ब्राह्मणनेदेखाकिकमलश्रौरऊर्द्धरेखाहै देखकरउसकेजीकोसन्तोषहुश्राश्रौरकहाकिएविप्रऐसीविद्यापढ़ी

चंद्रजोती वीसवीं पुतली बोली २०

महाराज समभ्राकर कथा आपके आगे कहती हूं एकदिनरा जा वीरविक्रमाजीतने पुरहीतोकरासमंडलकोप्रधान कोआ ग्याादीयहकार्तिकमहीनाहै ममहीना है इसमेंकुछहरिभजन मंगलाचारकिया च।।हिये सरदपुनोंको ठाकुरोंकीरासलीलाक रो ... आज्ञापायदेसरके राजाओरपंडितोंकोनोताभ जवलाया औरजितने नगरकेजोगीथेउनकोभीखवरदीतसवकि या औरजितनेदेवताथे उनकोमंत्रोंसे आवा ... रास होनेलगा चारोंतर्फसेजय२कारशब्दहोनेलगा औरराजाएक को शिष्टाचारवनुहार२फूलमालाठाकुरकीप्रसादीदेनेलगा दे खाराजानेसवदेवताआये परचन्द्रमानहीं आये यह अपनेजीमेंवि चार वैतालोंपरसवारहो चंद्रलोककोगयावहांजासन्मुखसे होदं डवतकी औरकहाकि स्वामीमेराक्या अपराधहै जोआपनेकृपान की औरसवनेमेरेभागपरकृपाकीहै तुम्हारेविन मेराकाम अधूरा है अबविजैकीजिये औरकाममेरासुधारिये आपकोधर्महोगासु क संसारमेंजससिलेगाजोकदाचित आपविलम्बकीजियेगातो मेंहत्यादूंगा तबचंद्रमानेहंसकरकोमलमधुरवचनसेकहाराजा मेंतुमसेसत्यकरकहताहूं अपनेजीमेंउदास नहो मेरेजानेसे सं सारमें अंधकारहोजायगा इसलिये मेराजानानहीं होसकता तु के अभिलाषाथी मेरेदर्शन-

कीसोतेरी इच्छापूजीतेरा ... गा तूजा अपने नगरमें जोकामतूने आरंभकियाहै सोतेरापूरणकर इसतरहसे राजाकोसमझायकर अमृतदे विदाकिया।-

राजानेसिरचढ़ालिया और दंडवतकरअपने नगरकोच लारास्तेमें देखाजमकेदूत एकब्राह्मणकेप्राणलियेजातेहैं राजानेयेदेव हसीसेजाना औरउस ब्रा० के प्राणने राजाकोदेखदूरसेकहाकिइस

राजा क्या तू अपनी बड़ाई करता है इस अनीत की कौन बड़ाई है प हिले मुझ से बात सुन ले (ई) पीछे उस पर बैठ तब पुतली बोली सा धो नाम एक ब्राह्मण था बड़ा गुणी उसकी तारीफ़ नहीं हो सक ती जो मैं कहूं वो जोगी होकर बोतमाम पृथ्वी पर फिरी आया क हीं ठहर के रहने न पाया मानो काम का औतार था स्त्री देखते ही उसे मोहित होजाती थी अय राजा वो: सब विद्या पढ़ा था अति च तुर था ऐसा मृत्यु लोक में मनुष्य कम पैदा होता है जिस राजा की सेवा करने जाता था दिन दस एक उसका आदर होता और जब वो: अपना गुण प्रकाश करता तब वो: राजा उसे देश निकाला दे श निकाला देता इस तरह से देश २ भटकता हुआ पुखपाल कामा नगरी में आन पहुंचा कामसेन वहां का राजा था उसके यहां कामकं दला एक पातरथी वह गोया उरवसी का औतार थी गंधर्व विद्या में अति चतुर थी वो: राजा की सभा में नृत्य कर रही थी माधो भी उ सी राजा के द्वार पर जा पहुंचा द्वार पालों से कहा राजा से जाकर हमा रा समाचार कहो आपके दर्शन को एक ब्राह्मण आया है ड्योढ़ी दार उसकी बात सुनी कर गये वो: द्वारा मांदा वहीं बैठ गया जो २ वहां से मृदंग की आवाज़ और गाने के शब्द आता तो २ यह सिर धुन २ कर कहता था कि राजा भी मूर्ख है उसकी समान मी कूड़ है जो विचार न हीं करता यह बात पांच सात दफा कही द्वार पाल खफा हो ब्राह्मण देख राजा के डर से कुछ कह न सके पर राजा के सन्मुख जा हाथ जो ड़ खड़ा हुआ महाराज ने जो इसकी तरफ़ देखा उन्होंने विन्ती करके म हाराजाजी एक विदेशी ब्राह्मण दुर्बल द्वार पर आन बैठा है शिर डुला २ कर कहता है कि राजा की सभा के लोग अति मूर्ख है जो गुण विचार न हीं करते तब राजा ने उन द्वारपालों से कहा उसे पूछो कि उनको मूर्ख तू ने किस लिये कहा उन्होंने राजा की आग्या पाय बाहर आय ब्राह्मण।

काभिखारी यहां हमारे आगे सखावत दिखाता है राजाने खफा हो ब्राह्मण से पूछा कि तू इसके किसी गुण पर रीझा है वोः मेरे आगे बयान कर ब्राह्मण ने कहा कि सुन राजा तू भी मूर्ख और तेरी सभा में भी कूढ़ है तेरी सभा में ऐसा यह गुण प्रकाश करे और कोई गुण का विचार न धरे इसकी कुच पर भौंरा आन बैठा था इसने सांस रोक कुच की राह से निकाल उसे उड़ा दिया यह काम देख मैंने इसे सब बख्श दिया माधो ने जब यह बात कही तब राजा लज्जित हो रह गया और कुछ राजा से बन न आया कहा इसी समय मेरे नगर से निकाल दो जो सुनूंगा कि मेरे नगर में तू है तो मैं बंधवा कर दरया में डुबवा दूंगा तब माधो ने कहा महाराज मुझ से ऐसा क्या अपराध हुआ है जो आप मुझे देश निकाला देते हो राजा ने कहा मैंने जो कुछ तुझे दिया था सो तूने मेरे ही आगे दान कर दिया क्या मेरे पास कुछ देने को न था जो तूने दिया ये सुन कर माधो मलीन हो राजा की सभा में से निकल बाहर जा एक दरख्त के नीचे व्याकुल खड़ा हो अपने जी से कहने लगा कि माता बेटे को विष दे और पिता पुत्र को बेचे और राजा सरबस ले कोई शरण किसकी ले फिर कहने लगा कि राजा ने तो मुझे निकाला अब मैं कहां रहूं यों अनेक अनेक भांति की चिन्ता कर कामकंदला का नाम ले ले रोता था और इधर कामकंदला भी राजा से बहाना कर विदा हुई और एक आदमी दौड़ाया कि यह ब्राह्मण जाने न पावे उसे लाकर मेरे मकान में बिठावो आदमी गया और ब्राह्मण को ले जाकर उसके मकान में बिठाया इधर से यह भी तुरंत जा पहुंची दोनों आपस में बैठ कर प्रेम की बात करने लगे तब उस ब्राह्मण ने कहा मुझे राजा ने देश निकाला दिया है और तूने अपने घर बुला बिठलाया है एता जो यह बात सुनेगा तो मेरे प्राण नाश करेगा इससे कुछ उपाय कर उसने कहा भी राजा अति कष्ट देगा इस और

है भला उसके पास जाइये और देखिये कि लोग सब सच कहते हैं या झूठ यह विचार कर उज्जैन नगरी को चला और वहां लोगों से पूछा यहां राजा से भेट आधीन की क्योंकर होती है तब एक नगर का वासी बोला गोदावरी नदी के किनारे शिव का मठ है उसमें राजा शिव के दर्शन को नित आता है वहां तू जाके जो तेरा मनोरथ है सो तू कह तेरी कामना पूरी होगी यह सुनकर वो वहां गया और उस मठ के द्वार की चौखट पर लिखा कि मैं ब्राह्मण बिदेशी अति दुखी बिरह से व्याकुल तुम्हारे नगर में आया हूं सुन के राजा पर दुःख निवारण है और यह जो दुख मेरा खोवेगा तो मैं अपना आण रक्खूंगा नहीं तो तीसरे दिन गोदावरी में प्राण घात करूंगा-यह सुकारिर मैंने जी में ठहराई इसमें तुम राजा हो और सदा से ब्राह्मण की रक्षा करते आये हो और अब भी करोगे मैंने अब भी अपने मन की सब बात प्रकाश कर दी है इतनी बातें वो पुतली ने राजा भोज से कही कि सुन राजा वीर विक्रमाजीत का यह नेम था कि अन्न दुखी वस्त्र दुखी द्रव्य दुखी भूमि दुखी बिरह दुखी और किसी तरह का दुखी नगर में आता है राजा सुनकर जब तक उस्का दुख न मिटा देता तब तक अन्न जल का तो क्या जिक्र है दांतन भी न चीरता था सवेरे राजा महादेव के दर्शन को गया परिक्रमा करने लगा राजा ऊंची दृष्टि कर देखे तो कोई दुखी अपने दुख की अवस्था लिख गया है राजा ने सब बांच महादेव को दंडवत कर मंदिर में आग्या की कि माधो नाम ब्राह्मण हमारे नगर में आया है कोई जो उसे ढूंढ लावे तो मुंह मांगा द्रव्य पावेगा-

यह बात सुन नगर में लोग ढूंढने को निकले घाट घाट मुहल्ला टोला बाग बगीची सब नगर ढूंढ फिरे और कहीं ठिकाना उसका न पाया जब राजा ने एक दूती को बुला कर आग्या दी कि जो तू उसे ढूंढ लावे तो मुंह मांगा धन पावेगा उस

रे उन्ने जवाब दिया कि महाराज मैं आपके आगे सत्य कहूं कि
मेरी आंखों में वो: बस रही है इसलिये मेरी दृष्टि में कुछ नहीं
आता चातक की तृषा स्वात की बूंद से ही बुझती है और जल पर
उसे रुच नहीं होती ऐसी प्रेम की दृढ़ता विप्र की देख राजा अप-
ने मन में विचारा कि इसे साथ ले जाकर काम कंदला को दिला
दूं उसके नाम इसके मन को स्थिरता नहीं होगी यह बात राजा
ने विप्र से कही देवता तुम स्नान पूजा कर कुछ खालो तब तल
क मैं भी अपने लोगों को बुला तुम्हें साथ ले चलूं और उसे दिला
दूं तुम अपने जी में किसी और बात की चिन्ता मत करो मैं ने
तुम से यह वचन किया तब विप्र अपने खाने पीने में लगा राजा
ने प्रधान को बुलाकर आग्या की कि मेरे डेरे नगर के बाहर नि
कले चार घड़ी के बाद कामा नगरी की तर्फ मेरा कूच है सब
सब लोगों को खबर दो इसमें कितनी देर के पीछे राजा तैयार हो
विप्र को साथ ले कूच कर डेरों में दाखिल हुआ और जितने राजा
के नोकर थे सब काम में हाजिर थे राजा वहां से कूच दर कूच जा
ता था कितनी एक मंजलों के बाद कामा नगरी से दश इधर डे
रा किया और उस राजा को पत्र लिखा कि हम इसलिये आये हैं
कि तुम्हारे यहां काम कंदला है उसे भेज दो नहीं तो हम से यु-
द्ध करने का सामान करो यह पत्र लिख एक दूत के हाथ राजा
के पास भेज दिया राजा को खबर हुई कि एक दूत राजा वीरवि-
क्रमाजीत का खबर लेकर आया है यह सुन्ते ही राजा ने उस को
सन्मुख बुलाया जो उसने जुहार करके खत राजा के हाथ में दिया
राजा ने उस चिट्ठी को बांचकर कहा कि अच्छा कहो अपने राजा से
चले आवें हम युद्ध करने पर तैयार हैं दूत ने राजा से कहा महाराज
वो लड़ने पर तैयार है राजा ने भी हुक्म अपने लोगों को दिया कि ह
मारा भी दल तैयार हो फिर राजा के जी में आया कि जि: वा: हम आये

आगलगावे कि वैतालने हाथपकड़ लिया और कहा कि राजा तू अपनाजी क्यों देता है तब इसनेकहा कि दोकीजान क्योंखोई मैं नेजान केसे खोई मेराभी जीना संसारमें उचित नहीं इसबदनामी केजीनेसे मरना उत्तम है वैतालने कहा कि राजामैं अमृतलादे-ताहूं तू दोनों को जिलादे यहजल्द वैतालसे अमृतले आयाउस ब्राह्मण पर छिड़का वो:जी उठा फिर लेजाकर काम कंदला पर छिड़का वो:भी जी उठी और माधो २ पुकारने लगी राजा की सूरत देख कर कहा तुम कोनहो कहांसे आये हो मुझसे कहो तब राजा ने कहा हम वीर विक्रमाजीत हैं माधोका विरह दूर करने के लिये उज्जैन नगरी से यहां आये हैं तू खातिरजमा रख कि तुझे हम माधो से मिलादेंगे यह सुन्ते ही वो: उठ राजा के पांवपर गिर पड़ी कि राजा ये तुमजीदान-दोगे और जैसा तुम्हारा नाम सुन्तेथे सो दृष्टि में आया इतनी बात सुनरा जा वहांसे फिर अपने लशकरमें आया दूसरे दिन अपनी फौज लश्कर लेकामा नगरी पर चढ़ आये वहां राजासे युद्ध किया उस राजाने हार मानी और कवूल किया कि हम काम कंदला को भेज देंगे और यह जो

हमनेकुछ युद्ध किया-

सो आपके दर्शनके वास्ते और इसलिये कि किसी तरह ह-मारे नगर में आपका चरन फिरे आगे राजासे सुलाकात करके वो राजा अपने मंदिर में लेगया वहुत भेट आगे धर काम कंदला

बुला राजाके आगे खड़ा किया-

और उनने भी माधो को बुला काम कंदला का हाथ पकड़ा हवाले किया फिर वहां कूच कर अपने नगर में आया माधोको वहुत धनदौलत दे

विदा किया इतनी बात कह अनुरोध

ती पुतली बोली कि राजा भोज इतनी सामर्थ और ऐसे साहस जो तुमसे होतो सिंहासन पर चरण धरो नहीं तो पतित हो

जो सीखसे बुद्धि होतो वही पंडितहो इसमें राजाजी कर्मके लिखे विना विद्या होती नहीं किरोड़ यतन कोई करे कम की रेखा मिटती नहीं राजाने कहा ए दीवान तूने यह क्या कहा संसार में यह तो जाहिर देखते हैं कि जन्म लेते ही लड़का माता पितासे जो सुन्ता है उसी व्यवस्था हार में चलता है इस में कर्म का लिखा क्या यह सिखाये से सीखता है और जैसी संगत वैठता है तैसी ही उसकी बुद्धि होती है इतनी बात सुन्ते ही मंत्री बोला कि कर्म धर्मावतार आपकी बराबरी हम नहीं करसकते यह अपने मनमें विचारके तुम कहो और समझो कि कर्म का ही लिखा होता है तब राजाने कहा वन में मंदिर बनाया जाय कि जहां मनुष्य की आवाज भी न जाय एक अपने बेटे को पैदा होते ही कि आंखों से आंधी कानों से बहरी मुंहसे गूंगी थी उसे दूध पिलाती थी और परवरश करती थी फिर उसी तरहसे एक दीवानके बेटे को एक ब्राह्मण सुने को एक कोतवाल के पुत्रको जन्मते ही गूंगी बहरी दाई दे उसे भी मंदिरमें भिजवा दिया अच्छा इस बात की परीक्षा लिया चाहिये एक महासे दिन वा दिन वो बढ़ने लगे ऐसी गाढ़ी चौकी उस मंदिर के दो दो कोस गिर्द में बैठा दी।

मनुष्य के जाने को तो सामर्थ ही क्या थी ढोल नकारे की भी आवाज न आती थी इसी तरहसे जब बारह वर्ष बीतगये तब एक दिन ब्राह्मणी ने अपने स्वामी से कहा कि एक अवयुग पूरा होचुका।

और मैंने अपने पुत्रका मुंह नहीं देखा कदाचित जो निकला जो तो मन में देखने की अभिलाषा रहजाय इससे तुम अब राजा के निकट जाकर कहो कि महाराज १२ वर्ष होचुके मैं ने बेटे की सूरत नहीं देखी अब मेरे जी में है कि पुत्रको घर लाय पढ़ी होतय

इसे यह किसने सिखाया है जो कुछ तुमने कहा था यह सब सच है यह फल कर्म से इसने पाया फिर राजा ने जो कोतवाल के बेटे को बुलाया उसने आतही राजा को सलाम किया और हाथ जोड़ खड़ा हुआ राजा ने कुशल पूछी तब उसने कहा पृथिवीनाथ दिन रात नगर का पहरा देते हैं जिस्में भी और आनके चोरी करता है वोः नाम हमारा होता है बिन अपराध कलंक लगे तो फिर कुशल कहे की है राजा ने फिर ब्राह्मण के पुत्र को बुलाया जब वोः सन्मुख आया राजा ने दंडवत की उसने मंत्र पढ़ असीस दी राजा ने कुशल पूछा उसने कहा कि महाराज आप पुछे है कुशल है तेरी फिर शरीर में कुशल कहां है मेरे शरीर में कुशल कहां है मेरे शरीर में दिन बदिन उमर घटती जाती है महाराज कुशल तो जब कहने में आवे कि मनुष्य चिरंजीव हो जीवन मरन साथ है उसकी क्या खुशी करूं चारों की चार बाते सुन कर दीवान से कहा कि सच है पढ़ने से पंडित नहीं होता पंडिताई जो कर्म में लिखा हो तो मिले यह कह दीवान से कहा सब प्रधानों का सरदार किया और अपने राज का भार दिया और अति उत्तम ये लड़के चारो थे उनका बिवाह करदिया बहुत धन दौलत दी इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोज कालियुग में ऐसा धर्मात्मा साहसी राजा होना कठिन जो इतनी चतुराई और धन पाय अपनी कही बात पर ख्याल करे और जो न्याव का धर्म था सोई कहा ऐसा जो तू काम करे और इस जोग होय तो सिंहासन पर पांव धरे और नहीं तो अपनी यह आस नज राजा अपने मन में चिन्ता करता हुआ वहां से उस मंदिर में आया रात को लेटा हुआ बिचार करने लगा कि देखूं मेरा भाग फिरे कि अभागा हूं रात तो इसी तरह बीत गई सुबह हुई फिर यही आन मोजूद हुआ चाहे कि पांव उठाकर सिंहासन पर धरे तब वही ॥ ॥

राजा जो तुम स्थिर होकर बैठो और कान रखकर सुनो तो मैं सब कथा कहती हूं राजा यह बात सुन प्रसन्न हो आसन बिछाया वहां बैठ गया और जितने लोग राजा के साथ थे गिर्द आय२ सब बैठ गये और जितने सब सुनने लगे पुतली बोली कि राजा बीर बिक्रमा जीत के गुण राजा भोज तू सुन ऐसा सा हमी पुण्य त्मा इस कलियुग में कोई जन्मा न हो और न कोई जन्मेगा जिस समय राजा बीर बिक्रमा जीत शंख को मार राज गद्दी पर बैठा शंख के दीवान को बुलाकर कहा कि तुम से मेरा काम न चलेगा इस से बेहतर यह है कि बीस आदमी अच्छे मुझे ढूंढ़ कर ला दो और राज काज करने के लायक हो क्योंकि कि मुझसे काम का बन्दोबस्त न होगा मैं उन से अपना सब काम लूंगा राजा की आज्ञा पाय दीवान बीस आदमी उस नगर से ढूंढ़ कर ले आया कुल थे ऐसे मैं सुन्दरता में और इल्म में सब के सब बराबर थे राजा के सामने लाकर खड़े किये राजा उन को बागे पहराय पान देकर कहा कि सब हमारी खिदमत में सदा हाज़िर रहो फिर उसने कई दिन बाद उनमें से किसी को दीवान किसी को कोतवाल किसी को फौजदार किया गरज इसी तरह सब के सब को काम देने लगे पुराने लोगों को जवाब दिया और सब नया बन्दोबस्त किया-

पहले उस पुराने दीवान को जवाब दिया दीवान जब अपने घर बैठा करता था वे सब पुराने लोग आकर हाज़िर हुवा करें और आपस में चर्चा करते कि यह राजा बुद्धिमान है जो ऐसा किया और बन्दोबस्त यों किया-

कई दिन बाद दीवान ने उन लोगों से कहा कि तुम मेरे पास न आया करो इसलिये कि काम तो तुम्हारा मेरे हाथ से निकलता नहीं और नाहक को राजा सुनेगा तो खफ़ा होगा और कहे

मरजाइये इतनी बातें अपने जी में विचार दादस करके बैठा आप ने दीवान को बुलाकर कहा कि किसी कारीगर बढ़ई को बुला दो कि एक नाव हमें ऐसी त्यार करदे कि बगैर मल्लाह और बिद्रन केवट कि जिधर को चाहे लेजाय वही कारीगर बढ़ई को बुलाय दीवान ने हाजिर किया बढ़ई ने कहा कि महारा-ज कुछ खर्च की मुझे आज्ञा होवे तो मैं जल्द बनालाऊं मंत्री ने दीवान को कहा कि जितने यह रुपये मांगे उतने इसे दो यह जल्द बनालावे रुपये उसे दियेवो: घरको लेगया कितने दिनोंके बाद नाव तैयार करके खबर दी कि नाव तैयार होचुकी तो दीवान ने अपने स्वामी से कहा आपने जो नाव बनवाई थी सो तैयार है यह सुन्ते ही दीवान उठके नदी के किनारे नाव को देखकर प-सन्न हो उस बढ़ई को घोड़ा जोड़ा ५ गांव देकर बिदा किया दीवा न अपना सरसामान नाव ऊपर रखवा आप कुटुंब से बिदा हो हाथ जोड़कर कहने लगा कि हम जीवेंगे तो फिर तुमसे मिलेंगे और मरगये तो यही बिदा हमारी है जबवो: यह कहकर रुख-सत हुआ तमाम घरके लोग कूक मार २ कर रोने लगे फिर यह भी जी भारी किये हुए उस नाव पर बैठ पाले नदी किश्ती

खोलदी जिस तर्फ से वो फूल बहता

आया था उसी तर्फ से वो: चला जाता था और दोनों किनारों के दरख्तों को देखता जाता था कि कितने दिनों में १ चला एक महावन में जापहुंचा और खाने की जिन्स भी तमाम होगई तब उसने अपने जी में विचारा कि अब नाव में बैठ रहना उचित नहीं जिसकाम को आये हैं उसका भी फिक्र किया चाहिये यह अपने जी में कहता था और किश्ती पाल उड़ाये जा-ता कि एक पहाड़ दरम्यान उस दरिया के नजर आया और उसी पहाड़ से पानी आता था किश्ती वहीं लगा आप उतर।

गिरपड़ा राजाने उठा छातीसे लगा लिया क्षेम कुशल पूछी और क-
हाकि तू कहां गया था और कहां ठिकाना उसका कर आया यह
सुन्तेही वो फूल जो लाया था भेट किया और हाथ जोड़ कर कह
नेलगा कि महाराज एक अचंभे की बात है जो मैं कहूं तो आप
नहीं पतियावेंगे फिर राजाने कहा कि जो अचंभा देखा बयान
कर तब वोः बोला महाराज मैं यहां से चला हुआ एक जंगल
में पहुंचा और वहां जाकर एक पहाड़ देखा उस पहाड़ परजब
में चढ़ाथा और एक पहाड़ नज़र आया इसतरहके पहाड़ लांघ
जब में उसके पास गया तो एक पहाड़ के तले एक सुंदर मंदिर
देखा जब मैं उसके पास गया तो एक पेड़के तले एक तपस्वी पा
वोंमें जंजीर बांधे हुए उलटा लटकता हुआ नजर पड़ा मास चाम
उसके हाड़ में सठरहा अरु रक्त से उस देहसे टपकता है सो फूलब-
नकर बहता है और उसके नीचे देखा तो बीस तपस्वी जिस ध्यानमें
आसन मारे बैठेथे जोंकेतोंवो हिरहगये और जान एक मैं भी नहीं यह
सुनकर राजा हंसा और मंत्रीसे कहा कि सुनबे तुझसे उसका विचा
र कहता हूं कि वो जो तूने तपस्वी संकल में लटकता हुआ देखा वोः
तो मेरी देह में उस जन्ममें ऐसी तपस्या की थी उसका फल येहै कि
मुझे राज मिला और वे जो बीस सिद्ध तूने देखे सो मेरी बीसोंदास हैये
जो तूने लादिये उसी तपस्याके जोरसे और देनेसे मेरे आगे कोई न-
हीं ठहर सक्ता और उसी बलसे मैंने शंख को मारा और यह पूर्व जन्म
का लिखा था इसमें कुछ दोष मेरा नहीं जबतक मैं इस पृथ्वीमें अ
ज अखंड करूंगा तोतब मंत्री रहेगा तू अपने जीमें चिंता मत कर

इसमें दोष तेरा भी कुछ नहीं जैसा पूर्व-
जन्ममें लिखाथा सो हुआ।-

और जैसी इन्होंने मेरी सेवा करीथी अब इसका फल भोग करेंगे और सबइ
न्होंने मेरे साथ जी दियाथा इसलिये मैंने उसको अपने निकट बीसों को रक्खे

तेरे आगे कहती हूं सो तू अपने दिल में खूब तरह समझ एक दि
न राजा नदी के किनारे दशहरा नहाने को गया था वहां जाकर
देखे तो एक रंडी जवान बनये की खूबसूरत नदी के तीर खड़ी हु
ई बाल सुखाती है और सामने उसके एक साहूकार बच्चा बैठा तिल
क दे रहा है और आपस में दोनों की सेन चल रही हैं कभी तो हंस
ती हाथ न चाय मुंह मटकाय बाल सुखाती है और कभी सिर
का आंचल छाती से सरका बदन दिखला कर छिपाती है कभी
आरसी दिखा चूम कर छाती से लगाती है इसतरह अनेक २ रीति
से चेष्टा कर रही है और वो भी इसी तरह इशारे कर रहा है उन दोनों
का हाल तें देख राजा ने अपने जी में विचारा कि इनका तमाशा
देखिये कि यह क्या करते हैं - राजा ने अस्नान ध्यान अपना सब
किया पर उनकी तरफ भी देखता रहा इतने में वो अस्नान कर
चद्दर ओढ़ घूंघट कर अपने धाम को चली और साहूकार बच्चा
भी उस औरत के पीछे २ चला राजा ने हलकारा उन दोनों के पीछे लगा
या और उस हलकारा को कह दिया कि इन दोनों का मकान देख
सबसे वाकिफ़ हो आओ और हमें जल्दी खबर दे जब यह औरत
अपने घर गई तब उसने फिर वार देख और सिर को खोल कर दि
खाय कि फिर छाती पर हाथ धर अपने मंदिर में गई और सेठ के बे
टे ने भी अपनी छाती पर हाथ रक्खा यह खबर हरकारे ने आक
र राजा से कही राजा अपनी सभा में बैठा और उन सबों से पूछा कि
कोई त्रिया चरित्र हमें सुनाओ कि हमारी भी सुनने को जी चाहता है
तब पंडित ने उत्तर दिया कि महाराज मेरी क्या सामर्थ है जो मैं
त्रिया चरित्र आप के आगे कहूं त्रिया का चरित्र और पुरुष का
भाग को ब्रह्मा भी नहीं जानता आदमी की तो क्या कुदरत है
यह देखते ही घन आजुवान से कहा न की जाना यह बात पंडित
से सुन राजा चुप हो रहा और अपने जी में कही यह चरित्र देखा तो

वहां खड़ा हुआ और अपने जी में विचार करने लगा कि जिसने
अपने स्वामी के मारने में देर न की तो दूसरे मनुष्य को क्या तब क्या
इससे होगा अब इससे जुदा होइये और इसका चरित्र देखिये कि
अब क्या करती है यह दिल में विचार कर राजा ने कहा हे सुंदरी प-
हिले मैं देखूं इस नदी में जल कितना है जो मैं इस नदी की थाह
पाऊंगा तो इसी रस्ते तुझे भी ले चलूंगा यह कह राजा नदी में बैठा
और तैर कर पार जाकर राह लिया जब उस किनारे जाय पहुंचा
तब पुकार कर कहा कि मैं तो पार उतर आया परंतु तुझे ला नहीं
सकता क्योंकि पानी अथाह है यह कह राजा ने आगे को राह
ली तब उस औरत ने अपने मन में विचारा कि द्रव्य उसके हाथ
लगा है उसके लोभ से यह मुझे छोड़ गया है अभी रात कुछ फिर
घर चलिये और स्वामी के साथ जलिये यह दिल में ठान कर अप-
ने घर में आई खाविंद के पास जाकर मार हाय २ कर रोने लगी
और पुकारी दौड़ियो मेरे खाविंद को चोर हुए जाता है और घर-
का माल भी लिये जाता है यह सुनकर घर बाहर के लोग सब
दौड़े और पूछा चोर किधर है उसने कहा अभी इस रस्ते में नि-
कल गया लोग तो ढूंढने लगे और यह सिर पटक २ कहती थी
कि मेरा सुहाग लुट गया मुझे अनाथ किये जाता है सब लोग
कुटुंब के समझाने लगे कि भगवान की माया है इससे किसी
का वस नहीं चलता जब मौत आती है तब कुछ बहाना लिये
आती है इसके दिन पूरे हो चुके और कौन सी कि कोई मार स-
कता है तू अपने जी से ढाढ़स बांध।-
और इसकी गति कर तब वो: बोली कि मैं भी इसके साथ सती
हूंगी क्योंकि मेरा जगत में कोई नहीं लोगों ने बहुतेरा समझाया पर
उसने न माना खाविंद को ले नदी किनारे गई और चिता बनाई उसको
लेकर आप भी जलने को बैठी तमाम नगर के लोग देखने आ-

मुझे आपके दर्शन की इच्छा थी इसलिये में आया हूं तब वोः
जोगी बोला कि राजा तू मुझसे जो कामना मांगे सो तेरी पूरी करूं
फिर राजाने कहा कि स्वामी एक देह की छः देह किसतरह बने यह
यह विद्या में तुमसे मांगता हूं मुझे बताओ नहीं तो में तुझे जानसे
मारडालता हूं इतनी बात कह पुतली कहने लगी कि सुन रा-
जा भोज जब राजाने उस सिद्ध से यह बातें कहीं तब उसने डर-
के वो विद्या दी और राजाने वहां परीक्षा करली तिस पीछे जो-
गीके तलवार मारी टुकड़े कर डाले फिर वहां से महल में
आया और जहां छओं रानियां बैठी थी वहां आन कर और रा-
नीभी राजा को देख छओं उठ खिदमत में हाजिर हुई दासी ने
पंखा हिलाया किसीने मुंह धुलाया किसीने पान बना खिला
या इसीने इसीतरह सब अपनी २ प्रीति राजासे करने लगी और
जो २ वो प्यार करती थी तो २ राजा न करता था तब राजा बोला
सुनो सुन्दरीओ में तुमसे हितकरता हूं तुम मुझसे अनहितकर
और ध्यान धरो यह तुम्हें उचित नहीं तब बोली कि महाराज हमा
रे तो प्राणरक्षक तुम्हीं हो तुम्हें देख हम जीते हैं तुम्हारा ध्यान
हम आठ पहर करती हैं जो कभी बाहर कहीं तुम जाते हो तो
हम चकोर की तरह तुम्हारे मुख चंद को तरसती हैं और जल
बिन मीन तड़फती है जैसे हम व्याकुल रहती हैं और क्षण
भर के वियोग में जल कमल की तरह कुमलाती हैं राजा
सुन क्रोध कर मुस्काया कि सच है सुन्दरियां हमने जाना तु-
म्हारा दिल हमें नहीं छोड़ती जिस सिद्ध के छः सिद्ध होगये
और फिर वोः एक ही सिद्ध होगया यह सुन रानियां एक २
दंग रूप होकर बोलीं कि महाराज मेरे से अचरज की बात
तुम कहते हो जो कभी न देखी न सुनी और किसी को इसपरभी न
आवे ऐसा कर एक देह की छः देह हो और इस बात को कौन मानेगा तब

जयलक्ष्मी पचासवी पुतली बोली २५

सुन राजा भोज एक दिन की बात है कि एक भाट निपट दरिद्री-
था बहुत सब पृथ्वी के राजाओं के पास फिर आया था और
एक कौड़ी किसी से उसने न पाई थी जब अपने घर में आया तो
देखा कि बेटी जवान व्याहने योग्य है यह अपने जी में चिन्ता-
ही करता था कि उसकी भाटन बोली तमाम देश २ तुम फिर
आये पर जो कुछ भाई कर लाये सो कहो तब उसने जवाब दिया
री पालल्ले में धन नहीं है क्योंकि सब राजाओं के पास में गया
मैं खुशामद कर सब किया एक दाम हाथ न आया अब मेरे जी में एक
बात है राजा वीर विक्रमाजीत बाकी रह गया है उसके पास भी जा
कर मांगूं जो मेरे जी का संदेह मिटे फिर वो भाटन बोली अब तुम-
कहीं मत जाओ और संतोष कर रहो कर्म का लिखा फल यहीं बैठे
पाओगे कि भाटने कहा कि राजा वीर बिक्रमाजीत सुन्ते हैं बड़ा दा-
नी है उसके पास अपनी कामना जो लेगया है वो खाली हाथ न फिरा
और अपने मकसद को पहुंचा है यह बातें कर राजा के पास चला और ग-
या वहां असीस दे राजा के सन्मुख जा खड़ा हुआ राजा ने दंडवत की
वो असीस देकर बोला कि-

वहुत भूमि फिर आया हूं आपका यश यहां ले आया
है आप इस मृत्यु लोक में इंद्र का अवतार हैं।

और गुणों को निधान है आपके बराबर दानी संसार में कोई
नहीं इस समय आप दान देने को राजा हरिचंद्र हैं तमाम
पृथ्वी में आप का ही यश छा रहा है और मैं कालीका सेवक हूं मा
त्र वंश में आकर औतार लिया है अब तुम्हें जांचने आया हूं मेरा
मनोरथ पूरा करो मैंने संसार में फिर कर खूब देखा कि सिवाय
तुम्हारे मेरी आस का पुजाने वाला और कोई नहीं तब हंस के रा-
जाने कहा कि तू अपना मतलब सब मेरे आगे प्रकाश करके कहो तो तेरी का-

और राजा की तसवीर है ॥ ५ ॥

विद्यावती २६ वी पुतली बोली ॥

कि सुन राजा मैं तेरे आगे ग्यान की बात कहती हूं और तू मन दे
कर कान लगा कर सुन जब आदमी जन्म लेता है तो कुछ संग-
नहीं लाता और कुछ नहीं ले जाता है इस जी का यही फल है
कि संसार में जीवना थोड़ा है इससे ऐसा यश करो कि जाने पर भी जग
में नाम ठहरा रहै दोनों लोक में सुख पावै और यह मनुष्य बारंबार
जन्म नहीं पाता पूर्व जन्म दान व्रत तपस्या बहुत कर आता है तो
यह नरदेह पाता है और जो लक्ष्मी दान कर कुछ लोच मत कर य-
ही अपने जी में सदा किया कीजिये यह भव रूप जो संसार सागर
इसके तरने को सिवाय दान उपकार और हरीभजन के चौथा उपाय
नहीं मैने तुझसे कहा कि सामर्थ थोड़ी कुछ नहीं जानता है तेरे आगे
तब कहती हूं कि राजा हरिश्चन्द्र राजा करन वीर बिक्रमाजीत क्या ले ग-
ये और उन्होंने दान उपकार हरिभजन किया उनका जग में नाम रहा औ
र अंतकाल बैठ बैकुंठ वास किया यह बातें सुन पुतली का राजा भोज
बोला कि राजा बीर बिक्रमाजीत ने क्या २ किया है यह कह तू प विद्या
वती बोली कि एक दिन राजा बीर बिक्रमाजीत राजसभा में बैठे।
आनन्द की वारता कर रहा-

देनहार उनके सहाय हुए हो यह स्तुति करके उन तपस्वियोंने क-
हा महाराज एक नृपति भी हमारे साथ तपस्या करता था मालूम
नहीं कि उस को आपकी आग्या हुई कि नहीं यह सुन महादेव ने
अगन की तर्फ देखा देखते ही उसने अमृत लेजाकर जो धूनी-
राख की रही थी उसपर छिड़का राजा हर २ करता उठ खड़ा हुआ
और हाथ जोड़ स्तुति करने लगा कि महाराज इस संसार में जितने
जीव है आपके बिना रक्षा करने वाला कौन है इस संसार सागर से
कौन पार उतारने वाला जिसने जग में आपको नहि पहिचाना उ-
सने अपना जन्म निर्फल खोया फिर जितने तपसी वहां थे शिवने
उनको मुंह मांगा बर दिया और सब को बिदा किया सब के पीछे
जब राजा अकेला रहगया -

तब उसे कहा जो तेरी इच्छा में आवे सो तू मांग तुझे दूंगा य-
ह सुन राजा ने कहा महाराज आपकी दया से सब कुछ है पर
एक मांगता हूं कि संसार के जन्म मरण से मेरा निबड़ा करो जैसे
और भक्तों का निबड़ा किया तैसे मुझ से परम पापी अधीन दी-
न हीन को त्यारो यह राजा की बिनती सुन दया कर शिवने हंस
कर कहा कि तेरे समान कालि में कभी कोई नहीं और तू ज्ञा-
नियों को दाता साहसी तपस्वी है कालि के राजाओं का उद्धार कर
नेवाला है और मैं तुझसे कहता हूं कि अब जाकर तू अपना राज कर
र काल निकट आवेगा तब तू मेरे पास आइये यह मैंने तुझसे ब
चन दिया कि अन्त समय तुझे मोक्ष पद दूंगा इससे तू जाकर
अब मृत्यु लोक में आनन्द से राज कर -

फिर राजा करुना करके बोला कि महाराज संसार में से तु-
म्हारे प्रपंच जाने नहीं जाते या मुझे इस समय तारो नहीं तो मैं अपनी
मृत्यु बिना तब हंसकर शंकर ने कहा जो मैं तुझे जाने देता तो मृत्यु बिना
जमतुझे हाथ भी न छूयगा और फिर आवेलके दिन भरने पड़ेंगे इससे

अपने मकान को फिर गया सुबह होते ही हाथ मुंह धो अस्नान पूजा कर फिर वही आन मौजूद हुआ जितने राजा की सभा के लोग थे वे भी सब हाजिर हुए राजा ने अपने लोगों से कहा कि ये पुतलियां बातें झूठ बनाकर मेरे आगे कहती हैं अब मैं इनकी बातें न सुनूंगा और और इस सिंहासन पर बैठूंगा जो: यह अपने लोगों से बातें करता था कि इतने में।-

जगजोती सत्ताईसवीं पुतली बोली

सुन राजा भोज एक दिन राजा वीर विक्रमा जीत अपनी सभा में बैठा था कि कोई प्रसंग निकला जिसमें कोई बोल उठा कि आज राजा इंद्र के समान कोई राजा नहीं क्यों कि वह देवलोक का राज करता है यह बात सुन राजा ने किसी से न कहा और बैतालों को बुलाकर कहा मुझे इन्द्रलोक को ले चलो बैताल तुरंत ले उड़े और एक दम में लेजाकर इन्द्र की सभा में पहुंचा दिया राजा ने जाते ही वहां इंद्र को दंडवत की और हाथ जोड़ खड़ा हुआ तब इन्द्र ने बैठने की आग्या दी यह हुकम पाकर बैठ गया इन्द्र ने कहा कहां से तुम आये हो और नाम तुम्हारा क्या है और तुम्हारा देश कौनसा है किस अर्थ को यहां तुम आये हो तुम कहो राजा बोला कि स्वामी अम्बावली नगर का राजा हूं मैं विक्रम आपके पद पंकज के दर्शन के अर्थ आया हूं तब प्रसन्न हो इन्द्र बोला कि हमने भी तुम्हारा नाम सुनाया था और मिलने की इच्छा

थी।-

सो तुमने आन यहां उलटी रीति की अब जो तुम्हारा मनोरथ हो सो कहो और जो तुम्हें चाहिये सो मांगो हम तुम्हें देंगे तब राजा ने कहा स्वामी आपकी कृपा से और धर्म से सब कुछ है

इन्द्र ने राजा की यह बात सुनकर प्रसन्न

हो अपना मुकट दिया और एक विमान दे यह असीस दी कि जो तेरे सिं-।

मैं गया रात जौं तौं काट फिर उसी मकान पर आनकर खड़ा हुआ

मन मोहनी अट्ठाइसवीं पुतली बोली २८

सुन राजा भोज बीर बिक्रमा जीतके समान बली साहसी ग्यानी कालि में दूसरा हुआ होय तो मुझे बतादे और मैं कहती हूं सोच कर जान एक दिन मैंने राजा बीर बिक्रमा जीत से कहा हे सरकार कि स्वामी पाताल में राजा बल बड़ा राजा है कि जिन के दास समान भी तुम नहीं हो सकते हो और जो अपना राज स्थिर किया चाहते तो एक बार राजा बल के पास तुम हो आओ यह बात सुनते ही बैतालों को बुला आज्ञा दी कि पाताल पुरी में मुझे राजा बल के पास ले चलो सुनते ही बैताल तुरत ले उड़े दम भर में पहुंचा दिया राजा वो: नगर देख भय चक हो रहा अपने मन में कहने लगा कि ऐसा नगर आज तक नहीं देखा मानो कैलाश हो रहा धन्य राजा बलि को जो इस नगर का राज करता है इस तरह से नगर देखता हुआ राजा को सि-

दिया और कहा कि उसे जिला समझाकर उसके नगर को पठादो
एक दूतने आकर राजापर अमृत छिड़क जिलाया और कहा-
कि तू अपने मनमें ढाडस रख अब तुझे तुरंत दर्शन होगा औ
र जितने राजा की सभामें लोग थे इन्होंने एक मता कर राजा से
कहा कि महाराज विक्रम की आस को निरास मत करो क्यों
कि इससे बड़ा [illegible] है उनकी बातें सुन राजा बल उठ-
कर द्वार पर आया और विक्रम ने दर्शन पाया और दंडवत कर
कहा कि महाराज धन्य है भाग मेरे जो मैने आपका दर्शन कि
या और जन्म २ का दुःख गया फिर कहने लगा कि महाराज क्या मे
रा अपराध था जो मुझे आप दर्शन न देते थे क्या मैं साहसी नहीं
हुआ मैं दानी नहीं हुआ मुझे लोक के लोग नहीं जान्ते: के कौ
नसा पाप था जो मेरे द्वारे आने से आपने बुरा माना तब राजा ब-
लि बोला कि सुन विक्रम कुलतारक तेरे समान और कोई नहीं
अब कान देकर सुन कि मैं तेरे आगे इसका ब्योरा कहता हूं प-
हिले राजा हरिचंद बड़ा दानी साहसी होगया और राजा जगदे-
व भी बड़ा दानी साहसी होगया और राजा जगदेव भी बड़ा दा-
नी और बड़ा प्रतापी होगया और बड़ा साहसी था पर तेरे समान
न था और उन्होंने भी मेरे दर्शन की बहुत अभिलाषा की थी पर द-
र्शन मैने किसी को न दिये तू एक दीप का राजा किस गिनती में है
पर तेरी तपस्या बड़ी जोरावर है तुझे दर्शन मिल गया राजा विक्रम
ने फिर हाथ जोड़कर कहा महाराज जो आपने कहा सब सत्य
है मैने निश्चय कर अपने जी में माना कि आपने मुझपर बड़ी कृपा
कर दर्शन दिया और दया कर भवसागर से पार किया फिर राजा बल
ने कहा कि राजा तू अब विदा हो और जाकर अपना राज कर विक्र
मा मेरा सुन विक्रम ने बड़ा खेद माना इतने में राजा बलि ने एक लाल
मंगाय विक्रम को दिया और उसका गुण बताया जो तू इस्से

बैदेही उन्तीसवीं पुतली बोली २९

राजा भोज तू किस बातपर भूला है सब सखियों ने तुझे कथा सुनाई तब भी तू पत्थर नपसीजा पहिले मुझसे बात सुनले पीछे सिंहासन पर पांव दे राजा ने कहा अच्छा कह पुतली बोली एक दिन राजा विक्रमाजीत अपने मंदिर में सोता था कि एक स्वप्न देखा वो मैं तेरे आगे कहती हूं क्या देखता है कि एक सोने का महल है और उसमें अनेक २ प्रकार के रत्न जड़े हैं और तरह २ के पाक पकवान और सुगंध धरी हुई है और एक तरफ फूलों के गहने वगैरा भरे हुए हैं और अच्छी फूलों की सेज बिछी है अतर दान पान दान गुलाब पाश भरे धरे हैं और मकान के चारों ओर फुलवाड़ी खिली हुई है बाहर उस मकान के भीतों पर रंग व रंग के चित्र बने हुए हैं कि जिन के सुख से तुरत आदमी मोहित हो और उस मंदिर के भीतर खूब सूरत स्त्रियां अच्छे २ साज मिलाय मीठे २ मधुर २ सुरों से बैठी हुई गाती हैं और एक तपस्वी बैठा हुआ राग सुनता है यह देख राजा ने जी में कहा कि यह जगह तो इस बावजी के योग्य नहीं है इतने में आंख खुल गई और सुबह हुई तब स्नान ध्यान पूजा करके बीरों को बुलाकर कहा कि मैंने जिस जगह को स्वप्न में देखा है तुझे वहीं ले चलो राजा की बात सुनते ही बीर उठ सठोर ले उड़े और पलक मारते वहां पहुंचाया राजा ने वहां से बीरों को रुखसत किया और आप उस बगीचे में गये और उस मकान की तैयारी देखते ही भेचक होगया।

अपने मन में कहने लगा कि यह मकान किसने बनाया है आदमी का तो मकदूर नहीं चाहिये तो ब्रह्मा ने अपने हाथ से चित्र देकर रचा है फिर मंदिर में अंदर जो राजा खड़ा हुआ इतने में वहां जो रंडियां बैठी गाती थीं सो राजा को देख अपने मन में चुप होरहीं और उस सिद्ध को स्मरण किया उसमें उसके

बन सुनकर राजा बाहर निकल आया और उससे कहा क्या मांग
ता है मांग तुझे दूंगा तब उसने कहा महाराज मैं तमाम पृथवी
में फिर अपनी इच्छा का स्थान नहीं पाया कि जहां मैं बैठूं यह
सुन राजा हंसकर बोला कि यह ठांव तुम्हारी इच्छा के मुवा
फिक होतो लो यह सुनकर ब्राह्मणने असीस दी राजा उसी उ-
सी जगह बैठा अपने घरको आया इतनी बात कह पुतली
सुन राजा भोजतू उसके सिंहासन पर बैठने जोग नहीं है तू
अपने जीमें क्या बिचारता है बिना समझे ऐसा इरादा करता है
जो उसकी बराबर होवो: सिंहासन पर बैठ वह राजा भी योंही
गुजरा अछताय पछताय अपने मंदिर में गया राजा तो जों रा
त काटी सुबह हुए स्नान पूजा कर मौजूद हुआ और सिंहासन
पर पांव धरे तब-

रूपवती तीसवीं पुतली बोली ३०

कि सुन राजा बावला अग्यानी ऐसा पुरुषार्थ न कर सका जो इस
सिंहासन पर बैठने को आया है एक दिन की बात है राजा वीरवि
क्रमा जीत थी में तुझसे कहती हूं तू सुन कि अपने महल में एक
रात को राजा वीर विक्रमा जीत वो आराम से सोता था इसमें कु-
छ राजा के जीमें आया एक बागी उठकर छाया बांध ढाल तल
वार लगा शहर के कूंचे २ में फिरने लगा आगे जाकर देखे तो
चार चोर खड़े हुए बातें कर रहे हैं कि घरको चोरी करने को च
ले उनमें से एक कहने लगा अच्छी साअत में चलो तो कुछ
माल हाथ लगे और बुरी साअत चलने से-
दुख पाकर खाली हाथ फिर-
आवेंगे इस तरह से सब बात उनकी राजाने सुनी और उन्हों
ने राजा को देखकर उनमें से एक बोला कि तू कौन है राजाने कहा
जो तुम हो सो मैं हूं यह कह सुन उन्होंने साथ भी लगायें लिया औ-

का गधा देखकर बोला और धोबी जागा क्रफा होगये को खूब सा पीटकर कहने लगा कि अय कंबख्त मेरे पीछे क्यों पड़ा है दिन भर घाटपर में महनत करूं सोते में यह सतावे इतना कह धोबी फिर जासोरहा गधा चोरों को देख फिर बोला आखर धोबी ने उस गधे को चार पांच मर्तबे लात २ कर रस्सी खोल छोड़ दिया और आप के सोरहा चोर तो तो चोरी करने लगे और राजा ने अपने मन में विचारा कि वो अपना धन था जो चाहा सो किया और अब इन के साथ रहकर धरम का अभागी कौन होगा यह समझ कर राजा अपने महल में चला आया और वे पांचों बांध अपने घर को गये सवेरा होते ही सोर हुआ कि राजा के भंडार में चोरी हुई कोतवाल आया और कोतवाल ने जगह २ जासूस हरकारे भेज दिये घाट बाट सब बन्द किये आखिर को तलाश कर चोरों को बांधकर हरकारे कोतवाल के पास ले आये कोतवाल ने लेजाकर राजा के सन्मुख खड़े किये राजा का मुंह देख २ वो: जो अपने जी में विचार करने लगे कि राजा ही की सूरत का पांचवां चोर हमारे साथ था और जब धोबी के यहां चोरी को गये तो वो: जाता रहा यह बड़ा अचंभा है कि अपना हिस्सा भी वो:

न लेगया यह अपने जी में विचारते थे राजा ने मुसकराकर कहा तुम मुख देख २ मेरा क्या अपने जी में सोचते हो खैर तुम्हारी इसी में कि वो: माल जहां रक्खा है तहां से लादो चोर बोले महाराज बड़े अचंभे में हैं एक चोर रात को हमारे साथ चोरी करने में शरीक था जब तक चोरी की तब तक वो साथ था अपना भाग लेने के वक्त भागगया राजा ने कहा अच्छा उस चोर को भी बतादो तब उन में से एक चोर बोला महाराज जी चाहे तो हमें मार डालो चाहे छोड़दो पर आपके रोबरू संका करते हैं कि इस वक्त तुम एना दो और साथ चोरियां की हैं पर ऐसे किसी को नहीं देखा जो अपना बांटा छोड़ दे इस

पास खड़ा हुआ कि आपने जी में विचार करता था एक वक्त वो था कि जिस का पुत्र विक्रम जैसा हो और एक मैं हूं कि कुल को दाग लगा या और जो मन सूबा किया सो बन न आया ऐसी रवानि राजा मन में विचार करता २ चिन्ता में था और कुछ जी में गैरत आती थी और कुछ क्रोध होता था कि जिस में झुंझला कर जल्दी कर चाहा था कि इसी साअत में सिंहासन पर बैठे तब—

चौपाई इकत्तीसवीं पुतली बोली

कि सुन राजा भोज तू बड़ा मूर्ख है जो कहा नहीं मानता और सादह सको तू सहज कर मानता है कंचन की बराबर पीतल नहीं कर सकता और हीरे की बराबरी सीसा नहीं होता और जी में मन सूबा किया करे लेकिन बीर बिक्रमाजीत के बराबर तू नहीं हो सकता और उनके सिंहासन पर बैठने लगा तुझे शरम नहीं आती इतनी बात पुतली की सुन राजा अपने जी में धिक्कार कर माना फिर इतनी बात पुतली ने कही कि राजा राजा में एक दिन की बात राजा बीर बिक्रमाजीत की तेरे आगे कहती हूं जब राजा के दिन नजदीक आये तब राजा को मालूम हुआ और मालूम कर के वोही नगर में गंगा तीर पर गया मंदिर बनाया जब वो मंदिर बन कर तैयार हुआ तब आप भी वहीं जा रहा तब मुल्कों में खबर की कि जो कोई दान लिया चाहे नगर में आकर ले ले।—

और जितने ब्राह्मण पंडित भाट भिखारी आये थे—

तिन्हें मुंह मांगे दान पाये यह खबर देवताओं को भी पहुंची इस में बहुत से देवता रूप बदल दान लेने का बहाना कर—राजा का सत देखने आये और आकर जो २ जिस के जी में आया सो २ मांगा और राजा ने भी साई २ दिया जब दान ले चुके सब राजा के पेंदी

में बिताई सबेरे हुए मनमें बैराग लिये जाकर सिंहासनके पास-
खड़ा हुआ और पांव रखने लगा तब-

भानमती बत्तीसवीं पुतली
बोली ३२

राजा एक मेरी विन्ती सुन और अन्तकथा मैं तुझसे बूझकर कह
नीहूं तू अपना मनलगाकर सुन कि जब अंतसमय राजा बीर
विक्रमाजीतका आया तब बिवान पर बैठ इंद्रलोकको गया-
और अम्बावती नगरीमें सोर हुआ तीनोंलोकोंमें हंगामा मचा
कि राजावीरविक्रमाजीतकाकाल हुआ उसवक्त अग्याकोइ-
त्ता दोनों वीरभी राजाहीके अलोपहोगये राजाकेसाथनवोस्वामी
रहानवोदामरहे संसारमेंधर्मकीध्वजा टूट गई सबरइयत राजा
की रोनेलगी ब्राह्मण भाट भिखारी रांड दुखी सब धाड़े मार२कर
रोरो कहने लगे कि हमारा आदरकरनेवाला और मान रखने वाला
आजजगतसे उठगया सारवियां राजा के साथ सती हुई जिनने लोग

सन निकाल कर आया था वहीं गड़वा दो यह मंत्री को आज्ञा दई और आपने जीसे राज काज छोड़ बैठा मंत्री राज करने लगा और आप उदास हो एक तीरथ में तपस्या करने गया और खबर सब राजाओं को पहुंची कि राजा भोज ने राज्य त्याग करके वैराग्य लिया है सच है कि जिस जोग न हो उस काम को करेगा तो उसका फल नहीं पाता बल्कि काम अपना बिगाड़े है और जग में हंसी होती है उन राजाओं की तो यो: रीति थी और अब के राजाओं की यह छल है प्रजा से दंड लेते हैं साधुलोगों को दुख देते हैं और अनाथलोगों को पालते हैं थोड़े से राज में इतराते हैं सब बात को सुनी अनसुनी करते हैं झूठ बात पर दिल लगाते हैं इसके पढ़ने से पंडित चतुर होजाता है कैसा ही मूर्ख हो ॥ श्री० ॥

इति सिंहासन बत्तीसी अथ तसवी रात सम्पूर्णाम् संवत् १९५१

वैतालपचीसी
بیتال پچیسی
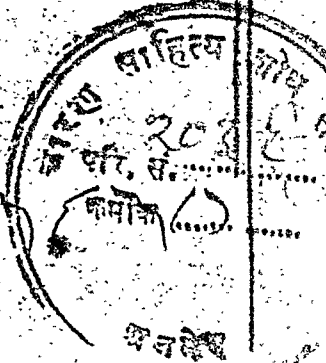
गा· देवता ने फल देते वक़ यह हमसे कहा · यह सुन के ब्राह्मणी बहुत रोई और कहने लगी हमें बहुत पाप भुगतने पड़ा क्योंकि अमर होके कब तक भीख मांगेंगे · इससे बेहतर यह है कि मरजा वें तो संसार के पाप दुख से छूट जायं ब्राह्मण बोला लेती बेर आ या पर तेरी बात सुनके अकल खोगई अब जो तू बतावे सो क रू फिर उससे ब्राह्मणी ने कहा यह फल राजा को दो · और इसके बदले लछमी लेवें · जिससे दीन और दुनियां का काम हो यह बात सुन ब्राह्मण राजा के पास गया · और असीस दी · और फल का अहवाल राजा से कहा यह फल आप लीजिये और मुझको कुछ लछमी दीजिये · आपके चिरंजीव रहने से मुझे सुख है फिर राजा ने ब्राह्मण को लाख रुपिया देकर बिदा किया औ र आप महल में गया · जिस रानी को बहुत चाहता है उसे वो फल देकर कहा कि ऐ रानी इसे तू खाले कि जिससे अमर हो वेगी · और हमेशा जवान रहेगी · इस बात को सुन रानी ने राजा से फल लिया और राजा बाहर सभा में आया · उस रानी की दो स्ती एक कोतवाल से थी · उसने वह फल उसे दिया · इत्तफ़ाक न एक वेश्या से कोतवाल की दोस्ती थी उस रानी ने उसे फ ल देकर उसकी खूबी उससे बयान की · उस वेश्या ने अपने मन में ठहरा कि यह फल राजा के देने योग्य है · यह बात अपने मन में बिचार वह फल राजा को जाकर दिया · राजा ने फल ले लि या · और उसे बहुत सा धन देकर बिदा किया · और फल को देख अपने जी में चिंता कर संसार से उदास हो कहने लगा कि इस संसार की माया किसी काम की नहीं क्योंकि इससे आखिर को नर्क में पड़ना होता है तिस्से बेहतर यह है कि तपस्या की ये · और भगवान की याद में रहिये · कि जिस्से आनन्द रहे ।

वड़ा दाता था इत्तिफ़ाकन एक रोज़ वह जंगल को निकल गया तो देख
ता क्या है कि एक तपसी दरख्त में लटका हुआ है उलटा और धुआं पी
पी कर रहता है न किसू से कुछ लेता है न वात करता है उसका यह
देख राजा ने अपने घर आकर सभा में बैट कर कहा जो कोई उस तप
सी को लाये वह लाख रुपया पाये इस वात को सुनकर एक वेश्या
ने राजा के पास आ यह अर्जे की अगर महाराज की आज्ञा पाऊं
तो उसी तपस्वी से एक लड़का जनवा उसी के कंधे पर चढ़ा कर ले
आऊं इस वात को सुनके राजा के अचंभा हुआ और उस वैश्या
को तपस्वी के लाने का वीरा दिया और रुखसत किया वह उस
वन में गई और योगी के मकान पर पहुंच कर देखती क्या है कि व
ह योगी उलटा सच लटका है न कुछ खाता है न पीता है और सू
ख रहा है गरज़ उस वेश्याने हलवा पका उस तपस्वी के मुंह में दि
या उसे मीठा २ जो लगा तो चाट गया फिर उस वेश्या ने और लगा
दिया इसी तरह से दो रोज़ तक हलवा चटाया कि उसके खाने से
एक कुव्वत उसको हुई फिर उसने आंखें खोल दरख्त से नीचे उ
तर कर उससे पूछा तू यहां किस लिये आई है वेश्याने कहा मैं दे
व कन्या हूं स्वर्ग लोक में तपस्या करती थी अव इस वन में आई
हूं फिर उस तपसी ने कहा तुम्हारी मढ़ी कहां है हमें दिखाओ त
व वह वेश्या उस तपस्वी को अपनी मढ़ी में लाकर षटरस भोज
न कर वाने लगी फिर तपस्वी ने धुआं पीना छोड़ दिया और हर
रोज़ खाना खाने पानी पीने लगा निदान कामदेवने उसे सताया फिर
तपस्वी ने उस्से भोग किया योग खोया और वेश्या के गर्भ रहा मुद्द
पन उस वक्त लड़का पैदा हुआ अव कई एक महीने का हुआ तव उ
स वेश्याने तपस्वी से कहा कि गुसाईं जी अव चलकर तीर्थ यात्रा की
जिये जिस्से शरीर के सव पाप कटें ऐसी वातें कर उसे भुला लड़का

फिर राजा धर्म राज करने लगा. एक दिन का ज़िक्र है कि शांतिशी
ल नाम योगी एक फल हाथ में लिये राजा की सभा में आया और
वह फल उसके हाथ में दे आसन उस जगह बिछा कर बैठा. फिर ए
क घड़ी के पीछे चला गया. राजा ने उसके जाने के बाद अपने मन
में विचारा कि जिसे देव ने कहा था वही तो नहीं. फिर गुमान क
र फल न खाया भंडारी को बुला कर दिया. कि इसे अच्छी तरह से
रखना. पर योगी इसी तरह से हमेशः आता और एक फल रोज़
दे जाता. इत्तफ़ाकन एक रोज़ राजा अपने अस्तबल में गया था
और मुसाहिब भी कुछ साथ थे. इतने में योगी भी वहीं पहुंचा औ
र उसी तरह से फल राजा को दिया वह उसे उछालने लगा कि एक
बारगी हाथ से ज़मीन पर गिर पड़ा और बन्दर ने उठा कर तोड़ डा
ला तो ऐसा उसमें से एक लाल निकला कि राजा और मुसाहिब
उसकी जोत देख हैरान हुये. तब राजा ने योगी से कहा कि तूने मु
झे यह लाल किस वास्ते दिया तब उसने कहा ऐ महाराज शास्त्र में
लिखा है कि खाली हाथ इतनी जगह न जाय राजा. गुरु ज्योतिषी
वैद्य के बेटी के. इस वास्ते कि यहां फल से फल मिलता है ऐ राजा.
तुम एक लाल को क्या कहते हो मैंने जितने फल दिये उन सब में र
त्न हैं. यह बात सुन राजा ने भंडारी से कहा जितने फल तुझे दिये
हैं वह सब ले आ. भंडारी राजा की आज्ञा पाय तुरन्त ले आया. औ
र उन फलों को जो तुड़वाया. तो सब में से एक२ लाल पाया. जब इ
तने लाल देखे तो राजा निहायत खुश हुआ. और रत्न पारखी को बु
ला लालों को परखाने लगा और यों बोला कि साथ कुछ नहीं जा
यगा दुनिया में धर्म बड़ी चीज़ है जो कुछ हर एक पर्व का मोल हो
सो कहदो यह बात सुन जोगी बोला कि महाराज तुमने सच फ़र्मा
या जिसका धर्म रहेगा उसका सब कुछ रहेगा धर्म ही साथ जाता है

इतने में वह सायत भी आन पहुंची तब राजा वहां तलवार बां
ध लंगोट कसके अकेला सांझ के वक़्त जोगी के पास जा पहुंचा
और उसको आदेश सुनाया योगी ने कहा आओ बैठो फिर रा
जा वहां बैठ गया तो देखता क्या है कि चारों तरफ़ भूत प्रेत डा
यन तरह ब तरह की डौल नाक सूरतें बनाये हुये नाचते गा
ते हैं और सबों के बीच वह योगी बैठा दो कपाल बजाता है रा
जा ने यह अहवाल देख कुछ डर भय न किया और योगी से कहा
मुझे क्या आज्ञा है उसने कहा राजा तुम आये हो तो एक काम
करो यहां से दक्षिण की तरफ़ दो कोस पर एक मरघट है उस में
एक सिरस का दरख़्त जिस में एक मुर्दा लटका है उसे मेरे पास
ले लाओ कि मैं यहां फ़िक्र करता हूं राजा को उधर भेज आपआ
प आसन मार जप करने लगा· एक तो अंधेरी रात की डरानी·
दूसरे मेंह की ऐसी लगी झड़ी होरही थी कि अब बरस के फिर न
बरसेगा और भूत पलीत ऐसा शोर गुल करते थे कि सूर बीर·
भी हो तो डर जाय लेकिन राजा अपनी राह चला जाता था·
सांप जो आन आन कर पांव में लिपटते तो उनको मंत्र पढ़
छुड़ा देता निदान ज्यों त्यों कठिन बाट काट राजा उस मसान में प
हुंचा तो देखा कि हाथ पकड़ २ आदमियों को दे दे मारते हैं डाय
न लड़कों के कलेजे चाबती हैं· शेर डुंकार मारते हैं हाथी चिंघा
रते हैं· गरज़ उस दरख़्त को जो ध्यान करके देखा तो जड़ से फु
नगी तक हर एक डाल पात उसका दहक २ जल रहा है· और
हर चहार तरफ़ से एक शोरा बरपा होरहा है कि मार २ लेव २
ख़बरदार जाने न पावे राजा उस अहवाल को देख न डरा ले
किन अपने दिल में कहता था कि हो न हो यह वही योगी है
जिसकी बात मुझसे योगी ने कही थी और पास जाकर जो देखा

न के बेटे को साथले शिकार को गया · और बहुत दूर जंगलमें जा निकला और उसके बीच एक सुन्दर तालाव देखा कि उस के किनारे हंस चकवा चकवी वगले मुरगाबियां सबके सब कलोल में थे · और चारों तरफ पक्का २ घाट बने थे · कमल तालाव में फूले हुये · किनारों में तरह ब तरह के दरख्त लगे हुए कि जिनकी घनी २ छांह में ठंडी २ हवाएं आती थीं और पंछी परवेरू दरख्तों पर चह चहाते थे और रंग बरंग के फूल वनमें फूल रहे थे उन पर झुंड के झुंड भौंरों के गुंज रहे थे कि यह उस तालाव के किनारे पहुंचे · और मुंह हाथ धोकर ऊपर आये वहां एक मन्दिर था महादेव का घोड़ों को बांध मन्दिर के भीतर जा महादेव का दर्शन कर बाहर निकले जितनी देर उनको दर्शन में लगी उतने अरसे में किस राजा की बेटी सहेलियों को साथ लिये हुये उसी · तालाव के दूसरे किनारे पर स्नान करने आई सो स्नान ध्यान पूजा कर सहेलियों को साथ लिये दरख्तों की छांह में टहलने लगी · इधर दीवान का बेटा बैठा था और राजा का बेटा फिरता था · कि अचानक उसकी और राजा की बेटी की चार नजरें हुईं देखते ही उसके रूपको राजा का बेटा फरेफ़ः हुआ और अपने दिलमें कहने लगा कि ऐ चांडाल काम मुझ को क्यों सताता है और उस राजा पुत्री ने कुंअर को देख सिर में जो कमल का फूल पूजा करके रक्खा था · वह फूल हाथ में ले कान से लगा दांत से कुतर पांव तले दिया फिर उठा छाती से लगा लिया और सखियों को साथ ले सवार हो अपने मकान पर गई · और यह राज पुत्र निराधार निराश हो विरह में डूबा हुआ दीवान के लड़के के पास आया और साथ शर्म से उसके आगे हकीकत कहने लगा कि ऐ मित्र मैंने एक ऐसी सुन्दरि नायका देखी न उसका नाम जानता हूं न गांव को

मुझे न मिलेगी तो अपनी जान न रक्खूंगा यह मैंने जीमें निश्चय विचारा है यह अहवाल राजा का बेटा सुन उसे सवार करवा घर को तो ले आया पर राजा का बेटा विरह की पीर से ऐसा बेकल था लिखना पढ़ना खाना पीना सोना राज काज सब कुछ तज बैठा नकश: उसकी सूरत का लिख २ देखता और बोला न अपनी कहता न दूसरे की सुनता दीवान के बेटे ने उसकी हालत जो देखी जो उसके विरह में हुई थी देखी तो उस्से कहा कि जिसने इश्क़ की राह में क़दम रक्खा है वह जिया नहीं और जो जिया तो उसने बहुत दुःख पाया इस वास्ते ज्ञानी लोग इस राह में पांव नहीं धरते फिर उस्की बात सुन राजपुत्र बोला कि मैंने तो इस राह में पांउ दिया इसमें सुख हो या दुख जब ऐसा मज़बूत कलाम सुना तब यह बोला महाराज तुम से चलते वक्त उसने कुछ कहा था या तुमने कहा था तब उसने कहा कि न मैंने कुछ कहा न उसने दीवान का बेटा बोला उसका मिलना मुश्किल है उसने कहा जो वह मिले तो मेरी जान रहे नहीं तो गई फिर उसने कुछ इशारा भी किया था या नहीं कुंवर ने कहा उसने हरकतें कीं थीं सो यह हैं एक तो मुझको देख सिर पर से कमल का फूल उतार कान से लगा दांत से कुतर पांव तले दबा कर छाती से लगाया यह सुनके दीवान के बेटे ने कहा उसके इशारों को हम समझे नाम ठाम सब जाना बोला समझे हो तो कहो यह कहने लगा सुनो राजा कमल का फूल सिर से उतारा कान से लगाया तो गोया उसने तुम्हें बताया कि मैं करनाटक देश की रहने वाली हूं और दांत से कुतरा सो कहा दंतवक्र राजा की बेटी हूं पांव से दबाया तो कहा पद्मावती मेरा नाम है छाती से लगाया तो कहा तुम्हीं मेरे हृदय में बसे हो इतनी बात कुमर ने सुनी तो कहा कि अब मुझे वहां ले चलो यह कहते ही कपड़े पहिन द-

रूं तो मुझे भी चैन होवे इसी तरह की बात मुहब्बत आमेज़ करने लगी कि जेष्ट सुदी पंचमी को तालाव के किनारे पर जिस कुमर को तैने मन लिया है सो मेरे घर आन कर उतरा है उसने तुझे यह संदेशा दिया है कि जो हमसे वचन किया था वह पूरा कर अब मैं भी यही चाहती हूं कि वह कुमर तेरेही योग्य और वर लायक है जैसेही तू रूपवती है वैसाही वह सारा इंत से सवबा तैं सुन खफ़ा हो हाथों में चन्दन लगा बुढ़िया के गालों पर तमाचा मारा और कहने लगी कि कम्वख़्त मेरे घर से निकल यह मन में उदास हो उसी तरह से बैठती हुई कुंमर के पास आई और सब अपना अहवाल कहा राजकुंमर सुनकर हक्का वक्का होगया तव दीवान का बेटा बोला महाराज कुंमर कुछ फिकर नकीजिये यह बात आपके ध्यान में नहीं आई फिकर न कीजिये फिर उसने सच कहा है तो मुझे समझा मेरे जीको चैन होवे उसने कहा जो दश अंगुली चन्दन की भरके मारी मुह पर सो उसने यह बताया दश रोज़ चांदनी के हो चुकें तो अंधेरे में मिलूंगी गरज़ दश रोज़ के बाद बुढ़ियाने उसकी खबर की सब उसने तीन अंगुलियां केसर की भर कर मारी उसके मुंहों पर और कहा निकल मेरे घर से आखिर लाचार होकर वहां से चली और जो कुछ बीताथा राजपुत्र से आकर कहा ये सुनतेही गम के दरिया में डूब गया इस्का यह अहवाल देख वजीर का बेटा बोला अंदेशा मत कर इसका मुद्दा कुछ और है वह दोस्त मेरा जी बेचैन है मुझसे जल्दी कहो तब उसने कहा वह उस हाल में है जो महीने २ स्त्रियों को होता है इस लिये और तीन दिनका वादा किया है चौथे दिन वह तुम्हें बुलवेगी गरज़ जब ३ दिन होचुके तो बुढ़ियाने उसकी तरफ़ से खैर आफियत पूछी तब उसने

मेहनत न करो तुम्हारे यह नाजुक नाजुक हाथ पंखेके लायक न
हीं पंखा हमें दो तुम बैठो पद्मावती बोली की महाराज आपब
डी मेहनत करके हमारे वास्ते आये हैं हमें आपकी खिदमत करनी
लाजिम है· तब एक सहेलीने रानीके हाथ से पंखा लेकर कहा
यह काम हमारा है· हम खिदमत करें और तुम आपस में आ
नन्द करो· वह बाहम पान खाने लगे और इखतिलात की बा
तें करने लगे· कि इतने में भोर हुआ· राज कन्याने उसे छिपा
रक्खा· जब रात हुई तो फिर आपस में दोनों ऐश में मशगूल
हुये· इसी तरह से कितने एक दिन बीत गये राज कुमर जब जा
ने का इरादा करे तो राज कन्या जाने न दे· इसी तरह से एक म
हीना गुज़र गया· तबतो राजा घबराया· और फिक्र मंद हुआ ए
क रोज़ की बात यह है कि रातके वक्त अकेला बैठा हुआ· यह
चिंता करता था कि देश राज पाट सब घर तो छूटाही था परए
क ऐसा दोस्त हमारा कि जिसके बायस यह सुख पाया उससेभी
महीने भरसे मुलाकात नहीं हुई वह अपने जी में क्या कहता
होगा और क्या जानिये उसपर कैसी गुज़रती होगी इसी फ़िक्र
में बैठा हुआ था· कि इतने में राज कन्या भी आन पहुंची और उ
सकी हालत देखकर पूछने लगी· महाराज तुम्हें क्या दुख है जो
तुम ऐसे उदास बैठे हो मुझसे कहो तब वह बोला कि दोस्त हमा
रा एक बहुत प्यारा दीवान का बेटा उसका कुछ अहवाल महा
ने भरसे मालूम नहीं वह ऐसा चतुर पंडित मित्र है कि उसीके
गुणों से मैंने तुझे पाया और उसीने तेरा सब भेद बताया राजक
न्या बोली महाराज तुम्हारा चित्त तो वहां है तुम यहां सुख क्या
करोगे· इससे बेहतर है कि मैं पकवान मिठाई सब कुछ तैयार
करके भिजवाती हूं आपभी सिधारिये उसको खिलापिला बहु

सो दूरवलास प्यार करो जब वह सोजावे तब उस्का जेवर उतार व
ह त्रिशूल उस्की वाई जांघ में मार वहां से तुर्त आजाना यह सुन रा
जकुमार रातको पद्मावती के पास गया वहुत सी वातें दोस्ती की क
र सोरहे लेकिन वातों से यह कावू देखता था गरज़ जब राज कन्या सो
गई वह उसने सारा गहना उतार लिया और वाई जांघ में त्रिशूल मा
र अपने मकान को चला आया सारा अहवाल प्रधान के वेटे से वयान
किया और सब गहना उसके आगे वयान किया फिर वह जेवर उठा रा
जकुमार को साथ ले योगी का भेष वना एक मशान में जा वैठा आप
गुरू वना और उसे चेला ठहरा कर उस्से कहा तू वाज़ार में जाकर इ
स गहने को वेच अगर इसमें कोई तुझे पकड़े तू उसे मेरे पास ले आना
उसकी वात सुन राज पुत्र ने ज़ेवर ले शहर में जा मुत्तसिल राजा की
ड्योढी के एक सुनार को दिखाया उसने देखतेही पहिचान कर कहा
यह राज कन्या का ज़ेवर है सच कह तूने कहां पाया · यह उस्से कहरहा
था कि दश वीस आदमी और भी इकट्ठे होगये गरज़ कोतवाल ने यह
खवर सुन आदमी भेज राज कुमार को मय जेवर और सुनार पकड़वा
मंगाया और उस जेवर को देख उस्से पूछा कि सच कहो यह तूने कहां
से पाया जब उसने कहा मुझको गुरू ने वेचने को दिया है पर मुझे मालू
म नहीं के वे कहां से लाया तब कोतवाल ने उसके गुरू को भी पकड़ मंगा
लाया और दोनों को जेवर समेत राजा के हुजूर में लाकर तमाम हाल
अर्ज़ किया · यह माजरा सुनके राजा योगी से पूछने लगा कि नाथ
जी यह गहना तुमने कहां से पाया योगी वोला महाराज काली चै
दश को रात को मैं मरघट में डाकिनी मंत्र सिद्ध करने को गया था
जब वह डाकिनी आई तो मैंने उसका जेवर उतार लिया और वाई
जांघ में उसकी त्रिशूल का निशान कर दिया इस तरह से यह गह
ना मेरे हाथ आया है यह बात राजा योगी से सुन महल में गया और

रानी से कहा कि पद्मावती की जांघ में निशान है रानी ने जाकर दे
खा तो त्रिशूल का दाग़ था राजा से आकर कहा कि महाराज तीन
निशान बराबर हैं पर ऐसा मालूम होता है कि योग्या किसीने त्रिशूल
मारा है यह बात सुन बाहर आया राजाने कोतवाल से कहा कि यो
गी को लाओ कोतवाल हुक्म पातेही योगी के लेने को गया और आ
ने मनमें राजा चिन्ता करने लगा कि अहवाल दिल का और घर
का जो कुछ नुकसान हो सो किसी से जाहिर करना मुनासिब न
हीं कि इतने में कोतवाल ने योगी को ला हाजिर किया फिर योगी
को राजा एकान्त में ले जाकर पूछा कि गुसांई जी वेद में किसीके बा
स्ते क्या दंड है तब योगी बोला महाराज ब्राह्मण गौ स्त्री लड़का
जो अपने आसरे हो और इनमें किसी से खोटा काम होतो उनके
वास्ते यह दंड लिखा है कि देश निकाला दीजे यह सुनके राजाने
पद्मावती को सवार कराय एक जंगल में छुड़वा दिया फिर कुमार
और दीवान का बेटा दोनों सवार हो जंगल में से पद्मावती को सा
थ ले तीनों मिलकर अपने शहर को चले चन्द रोज़ के बाद बादशा
ह के पास पहुंचे सब छोटे बड़ों को निहायत खुशी हुई और [illegible]
हम ऐश करने लगे इतनी बात कह बैताल ने राजा विक्रम से पू
छा कि उन चारों में यह पाप किसके तईं हुआ जो तुम इसबात का
न्याव न करोगे तो तुम नरक में पड़ोगे राजा विक्रम बोला उस राजा को
पाप हुआ क्योंकि दीवान के बेटेने तो अपने मालिक का काम कि
या और कोतवाल ने राजा का हुक्म माना राजकुमार ने स्वार्थ
का काम किया इससे राजा को पाप हुआ क्योंकि उसबिचारी को
देश निकाला दिया यह सुनके बैताल उसी पेड़ पर जा लटका।

दूसरी कहानी

राजा ने देखा बैताल नहीं है फिर उलटा फिरा उसी तरह दरख्त पर

आप अब उसकी गति कीजिये हम सब विदा होते हैं यह कहकर गुनी तो चले गये और ब्राह्मण उस मुर्दे को लेजा मशान में फूंक आप चले गये फिर उस्के पीछे उन तीनों जवानों ने यह किया कि एक तो उनमें से उस्की जली हुई हड्डियों को ले फ़क़ीर बन जंगल की सैर करने लगा दूसरे ने उसकी राखकी गठरी बांध वहां झोपड़ी बना रहने लगा· तीसरा योगी बन झोली ले देश विदेश की सैर करने लगा एक दिन किसी देश में किसी ब्राह्मण के घर भोजन करने लगा वह गृहस्थी थी ब्राह्मण उसे देख कर कहने लगा अच्छा आज यहीं भोजन करो यह सुनके वह बैठ गया जिसव रसोई तैयार हुई उसके हाथ पैर धुलवाय चौके में बिठाया आप भी उसके पास बैठ गया और उसकी ब्राह्मणी परसने आई कुछ परोस गई कुछ परोसना बाक़ी था कि इतने में उसके छोटे लड़केने रोकर अपनी मां का आंचल पकड़ा वह छुड़ाती थी और लड़का नहीं छोड़ता था· ज्यों २ वह फुसलाती थी त्यों २ वह दूना रोता था और हठ करता था· इसमें जो उसे ग़ुस्सा आया तो लड़के को जलते चूल्हे डाल दिया· वह जलकर खाक होगया यह हाल जब उस ब्राह्मणने देखा तो बिन खाये उठखड़ा हुआ तब वह घर वाला बोला तुम किसवास्ते भोजन नहीं करते · तब वह बोला जिस्के घर में ऐसा राक्षस काम होता उस्के घर में किस तरह भोजन करे यह सुन गृहस्थी उठकर एक तर्फ़ अपने घर में गया और संजीवनी विद्या की पोथी ला उसमें से एक मंत्र निकाल लड़को जिलादिया तब वह ब्राह्मण यह चमत्कार देख अपने जी में चिन्ता करने लगा कि जो यह पोथी मेरे हाथ लगे तो अपनी प्यारी को जिलाऊं यह अपने जी में ठान रसोई खा वहीं रहा गरज़ रात हुई तो कितनी देर के पीछे सबने व्यालू करी अपनी २ जगह पर जा बैठे और बातें करने लगे यह

के पलंग की चौकी में हाजिर रहता और सोते हुये जब राजा पुकारता के कोई हाजिर है तब यही जवाब देता इससे जिस काम को फर्माया जाता वह फौरन बजा लाता इस तरह से धन के लालच से रात भर सुचेत रहता बात यह है कि कोई किसी को बेचता है तो बेचता है पर चकरिया चाकरी करके आप बिकता है और बिक कर ताबेदार जो वर बस हुआ तो सुख कहां मसल मशहूर है कि कैसाही चतुर अकल वर पंडित हो लेकिन जिस वक्त अपने खाविन्द के सामने होता है जब तलक तफावत से है बैन इसी वास्ते पंडित लोग कहते हैं कि सेवा धर्म करना योगेश्वर धर्म्म में भी कठिन है एक रोज़ इत्तेफ़ाकन रात के वक्त मरघट से रंडी के रोने की आवाज़ राजा सुन के बोला कि कोई हाजिर है बीर बरने कहा कि हाजिर हूं फिर राजाने यह हुक्म दिया के जहां से यह रोने की आवाज़ आई है वहां जाके उसके रोने का सबब पूछ कर जल्द आइयो राजा उसे यह फर्मा के दिल में यह कहने लगा कि जिस किसी को चाकर अपना आजमाना हो तो वक्त बे वक्त उस काम को कहे अगर यह हुक्म उसका न माने तो जाने यह नौकर खराब है और जो तकरार न करे हुक्म बजा लावे तो जानिये काम का है और भाइयों व दोस्तों को भी बुरे वक्त में परखिये और इस्त्री को गदी में देखिये यह हुक्म पाकर उसको रोने की धुन पर गया और राजा भी उसका साहस देखने के लिये काले कपड़े पहिन कर उसके पीछे होलिया वे मालूम कि इसमें बीर बर थोड़ी देर बाद उसी समय मरघट में जहां रंडी रोती थी क्या उसी समय देखता है कि उसी वक्त एक औरत खूब सूरत सिर से पांव तक गहना पहिने हुये ढाड़ें मार मार के रो रही है कभी

से लाभ व पुत्र नारी हुक्म वरदारी जो यह पांच वातें आद
मी को मय्यसर होवें तो सुख की देने वाली हैं और दुख की
दूर करने वाली अगर चाकर वे मरजी और राजा वखील दो
स्त कपटी और जोरू वे फर्मान हो तो यह चार वातें ऐश
को खोने वाली हैं फिर वीर वर अपनी स्त्री से कहने लगाकि
जो तू लड़के को अपनी खुशी देतो राजा के लिये देवी के आ
गे वल दूं वह वोली कि मुझे वेटा वेटी भाई वन्धू मां वापकि·
सी से कुछ काम नहीं मेरी गीत तुम्हीं से है और धर्म शास्त्र
भी योंही लिखता है कि नंगा नादान नारी पतिव्रत से का
म रखती हैं नहीं लंगड़ा लूला·गूंगा·वहिरा·अंधा·काना·को
ढी·कुवड़ा केसाही उस्का स्वामी हो उस्को उसी की सेवा क
रने से धर्म्म है अगर किसी तरह का धर्म्म कर्म्म दुनियां में क
रना हो और खाविन्द का हुक्म न माने तो दोजख में पड़े उस्का
वेटा वोला पिता जिस आदमी से खाविन्द का काम होवे ज
ग में उसी जीना सुफल है और इस से दोनों जहान में भला है
फिर उसकी वेटी वोली जो मां देवे बिष लड़की को और वाप·
वेंचे वेटे को और राजा सरवस्व छीन ले तो पनाह किसकी ले
ऐसा कुछ वे चारो आपस में विचार करके देवी के मन्दिर में
आये राजा भी छिप कर उनके पीछे चला जव वीर वर वहां प
हुंचा तो मन्दिर में जा देवी की पूजा कर हाथ जोड़ कहने ल·
गा हे देवी मेरे पुत्र के वलि देने से राजा की सौ वर्ष की उमर·
होवे इतना कह एक खांड़ा ऐसा मारा की लड़के का सिर ज़
मीन पर गिर पड़ा·भाई का मरना देख उस लड़की ने अपने ग
ले मे तलवार मारी तो रुंड मुंड जुदे हो कर गिर पड़े वेटे वेटी को
मुआ देख वीर वर की स्त्री से ने तलवार अपनी गरदन पर मारी

राजा भोगावती नाम एक नगरी है यहां का राजा रूपसेन और चू
डामन नाम तोता उसके पास है एक दिन राजा बोला और उ
स तोते से कहने लगा कि तू क्या जानता है तब तोता बोला म
हाराज मैं सब कुछ जानता हूं राजा कहा जो तू जानता है तो
बतला कि मेरी बराबर सुन्दर नायका कहां है उस तोतेने कहा
महाराज मगध देश में मगधेश्वर नाम राजा है और उसकी बेटी
का नाम चन्द्रावती तुम्हारी शादी उसके साथ होगी वह अति
सुन्दर और चतुर पंडिता है राजा तोते से यह बात सुन कर एक
चन्द्रकांती नाम ज्योतिषी को बुलाके मेरा ब्याह किस कन्या के
साथ होगा उसने भी अपने नजूम के इल्म से मालूम करके कहा
चन्द्रावती नाम एक कन्या है उसके साथ तुम्हारी शादी होवेगी यह
बात राजाने सुन एक ब्राह्मण को बुलवा सब कुछ समझा राजा मग
धेश्वर के पास भेजने के वक्त यह कहा अगर हमारे ब्याह की बात पक्की
करि आओगे तो हम तुम्हें खुश करेंगे यह बात सुन ब्राह्मण रुख
सत हो चला और वहां मगधेश्वर राजा की बेटी के पास एक मैना
थी कि उसका नाम मदन मंजरी था इसी तरह से राजकन्याने भी एक
दिन मदन मंजरी से पूछा कि मेरे लायक सौहर कहां है तब सारिका
बोली कि भोगावती का राजा रूप सेन है सो तेरा पति होगा गरज कि
दोनों एक पर एक फरेफ़्तः हुआ था कि चन्दरोज़ के अरसे में वह ब्रा
ह्मण भी वहां जा पहुंचा और उस राजा से अपने राजा का संदेशा क
हा उसने भी उसकी बात मानी और अपना एक ब्राह्मण बुलवा
उसे टीका और रसूम की चीज़ें सौंप उसी ब्राह्मण के साथ भेजा और
यह कह दिया कि तुम हमारी तरफ़ से जाकर विनती कर राजा से को ति
लक देके जल्दी चले आओ जब तुम आओगे तब हम शादी की तैयारी
करेंगे अल क़िस्सा यह दोनों ब्राह्मण वहां से चले कितने एक दिनों में

राजा रूपसेन के पास आन पहुंचे और सब अहवाल वहां का कहा यह सुन राजा खुश हो सब तैयारी कर ब्याह करने को चला बाद चन्द रोज़ के वहां देश में पहुंच शादी कर दान दहेज ले राजा से बिदा हो अपने देश को चला राज कंन्या ने भी चलते वक्त मदन मंजरी का पिंजरा साथ ले लिया कितने एक दिनोके पीछे अपने देश में आन पहुंचे और सुख से अपने मन्दिर में रहने लगे एक दिन की बात है कि दोनों पिंजरे तोता मैने के गद्दी के पास धरे हुये थे कि राजा रानी आपस में कहने लगे अकेले रहने से किसी का दिन नहीं कटता इस्से बेहतर यह है कि तोता मेना की बाहमशादी कर दोनों को एक पिंजरे में रखिये तो यह भी सुख से रहें आपस में इस तोर की बातें कर एक बड़ा सा पिंजरा मंगवा दोनों को उसमें रक्खा चन्द रोज़ के बाद राजा रानी आपस में बैठे कुछ बातें करते थे कि तोता मेना से कहने लगा कि दुनियां में भोग असल है और जिसने जगत में पेदा होके भोग नहीं किया उसका जन्म नारक गया इस्से तू मुझे भोग करने दे यह सुनके सारिका बोली मुझे पुरुष की इच्छा नहीं तब उसने पूछा किस लिये मेना बोली पुरुष पापी अधर्मी दगा बाज़ स्त्री हत्या करने वाले होते हैं यह सुनके तोतेने कहा कि नारी भी दगा बाज़ झूठी बे वकूफ लालची हत्यारी होती हैं तब यह तरह से दोनों झगड़ने लगे महाराज पुरुष पापी स्त्री घातक होते हैं इस वास्ते मुझे पुरुष की चाह नहीं महाराज मैं एक बात कहती हूं आप सुनिये कि मर्द ऐसे होते हैं इलापुर नाम एक नगर और वहां महाधन नाम एक सेठ था कि उसके औलाद न होती थी कि इस वास्ते हमेशः तीर्थ व्रत करता था और नित्य पुराण सुनता था ब्राह्मणों को बहुतसा दान दिया करता गरज़ कितनी मुद्दत में भगवान की मर्ज़ी से उस साहू के एक लड़का पैदा हुआ उसने बड़ी धूम से

बैठे मन की कामना पूरी हुई इससे बेहतर यह है कि अब देर मत क
रो और जल्द पुरोहित को बुलवा लगन अथवा शादी करदो तब
सेठने ब्राह्मण को बुलवाय शुभ लगन मुहूर्त ठहराय कन्या दान
कर बहुत सा दहेज दिया गरज जब ब्याह हो चुका तब वहां वाह
म रहने लगे फिर कितने एक दिनों के पीछे साह की बेटी से उस
ने कहा हमें तुम्हारे देश में आये हुये और अपने घर बार की कु
छ खबर नहीं इससे चित्त हमारा बहुत उदास रहता है हमने स
ब अहवाल अपना तुमसे कहा अब तुम्हें यह चाहिये कि अप
नी मां जी से इस तरह समझा कर कहो कि वे राजी होकर हमें
विदा करें जो हम अपने शहर को जावें तुम्हारी इच्छा हो तो तुम
भी चलो तब उसने अपनी मां से कहा कि बालम हमारे अपने
देश को विदा हुआ चाहते हैं अब तुम भी यह कहो कि जिसमें उ
न के जी को दुख न होवे सिठानी ने अपने स्वामी के पास जाकर क
हा तुम्हारा दामाद अपने घर जाने की विदा मांगता है यह सुन-
कर साह बोला अच्छा विदा कर देंगे क्यों कि बिरानेपूत पर कुछ
अपना जोर नहीं चलता जिसमें उसकी खुशी होगी वही हम क
रेंगे यह कह कर अपनी बेटी को बुला के पूछा तुम अपनी बात कहो
कि सुसराल जाओगी या पीहर में रहोगी इसमें लड़की ने शरमाके
जवाब न दिया उलटी फिर आई और खाविन्द से आनके कहा हमा
री माता और पिता कह चुके हैं कि जिसमें उनकी खुशी होगी वह
हम करेंगे तुम हमें मत छोड़ जाइयो गरज उस सेठने अपने दामा
द को बुला बहुत सी दौलत देकर विदा किया और लड़की का भी
डोला एक दासी समेत साथ कर दिया तब यह वहां से चलकर
ब एक जंगल में पहुंचा उसने साह की बेटी से कहा यहां बहुत
डर है जो तुम अपना सब गहना उतार दो तो हम अपनी कमरमें

आभूषण देकर बहुत सा दिलासा दिलावरी की और वह साहूका लड़का भी अपने घर पहुंचा सब ज़ेवर समेत बेच दिन रात रं डीबाज़ी करने लगा और जूआ खेलने लगा यहां तक कि सब रुपये तमाम हुए तब रोटी को मुहताज़ हुआ आख़िर जब निहा यत दुख पाने लगा तो अपने दिल में एक दिन विचारा कि सु सराल जाके यह बहाना कीजिये कि तुम्हारे नवासा पैदा हुआ उसकी बधाई देनेको मैं आया हूं यह बात जी में ठानकर चला कई दिन में वहां जा पहुंचा जब उसने कहा कि घर में पैठू साम ने से उसकी स्त्रीने देखा कि मेरा शौहर आता है ऐसा न होकि अपने जी में ग्लानि हुर कर फिर जावे उन्के नजदीक आकर कहा कि स्वामी तुम अपने जी में किसीबात की चिंता मत करनाौ अपने बाप से कह चुकी हूं कि चोरोंने आनकर दासीको मारा औ र मेरा जेवर उतरवा मुझे कुएं में डाल मेरे खाविंद को मार ले गये यही बात तुम भी कहियो कुछ चिंता मत करो घर तुम्हारा है और मैं दासी हूं यह कह कर वह घर में चली गई यह उस सेठ के पास गया उसने उठकर गले लगा सब अहवाल पूछा जिस तरह उसकी ओरु समझा गई थी इसने उसी तरह से क हा सारे घर में खुशी हुई फिर सेठ ने उसे स्नान करवा रसोई जिमा बहुतसा निहोरा कर कहा कि यह घर तुम्हारा है आनन्द से रहो यह वहां रहने लगा ग़रज़ कितने दिनों के बाद रातके वक़्त वह साह की बेटी गहना पहने हुये उसके पास सोने को आई और सो गई जब दो पहर रात हुई उसने देखा कि यह ग़ाफ़िल सोगई है तब एक छुरी ऐसी उसके मारी कि वह म र गई और उसका सारा गहना उतार अपने देश की राह ली इतनी बात कह मैना बोली महाराज यह मैंने अपनी आंखोंसे

कहा कि तू अपने घरको जा जब वह आवे तब मुझे खबर क
रना तो मैं भी घर से सुचित्त हो चलूंगी सखी उसकी बात
सुनके अपने घरको गई द्वार पर बैठ उसकी राह तकने लगी इ
तने में वह आया उसने उसे अपनी ड्योढ़ी में बिठाकर कहा तुम
यहां बैठो मैं जाकर तुम्हारी खबर करती हूं और आकर जयश्री
से कहा कि तुम्हारा प्यारा आ पहुंचा है यह सुनके उसने कहा
ज़रा ठहर जा घरके लोग सो जावें तो मैं चलूं फिर कितनी एक
देर के बाद जब आधीरात का अमल हुआ और सब सोगये
तब यह चुपके से उठकर उसके साथ चली और एक सरा में व
हां आन पहुंची और बे इखतियार दोनों ने उसके घरमें सुखका
ल की जब चार घड़ी रात बाकी रही यह उठकर अपने घरमें आ
न कर चुप चुपाती सोरही और वह भी भोर के वक्त अपने घरको
गया: इसी तरह से कितने एक दिन बीत गये निदान उसका खा
विन्द भी विदेश से अपनी सुसराल में आया जब इसने अपने शौ
हर को देखा तो जी में चिंता कर सखी से कहा इस सोच में मेरा
जी है क्या करूं किधर जाऊं मेरी नींद भूख प्यास सब बिसर गई
न ठंडे से रुचि है न गर्म से और जो कुछ अहवाल अपने चित्तक
है सो सब कहा गरज़ ज्यों त्यों करके दिन तो काटा पर शाम के व
क्त जब उसका शौहर ब्यालू कर चुका तो उसकी सासने एक सुंदर
चौबारे में सेज बिछवा कर कहला भेजा कि तुम वहां जाकर अप
ने शौहर की सेवा करो और अपनी बेटी से कहा तुम वहां जाकर
अपने आरा प्यारे की सुश्रूषा करो इस बात को सुन नाक भौं च
ढ़ा कर चुपकी होरही फिर उसकी मां ने डाट के उसको [illegible] भेज
जा बे बस होके उसके पास गई और मुंह फेर पलंग पर लेट रही व
ह ज्यों २ नेह की बातें करता था त्यों २ उसे ज़्यादा दुख होता था

स्वांग देख चिंता कर अपने जी में कहने लगा कि चंचल काले सांप का शस्त्र धारी का दुश्मन का विश्वास न कीजिये और त्रिया चरित्र से डरिये कवीश्वर क्या वर्णन नहीं कर सक्ता और योगी क्या कुछ नहीं जानता मतवाला क्या कुछ नहीं वक्ता रंडी क्या नहीं कर सक्ती सच है घोड़े का रुख बादल का गरजना त्रिया का चरित्र पुरुष का भाग देवता भी नहीं जानते आदमी का तो क्या मकदूर है इतने में उसके बापने कोतवाल को यह खबर दी वहांसे प्यादे च बूतरे के आये और इसे बांध कोतवाल के पास लाये कोतवाल ने रा जा को खबर की राजाने उससे यह अहवाल बुलाके पूछा तो उस ने कहा मैं कुछ नहीं जानता और सेठ की लड़की से बुलाके पूछा तो उसने कहा महाराज जाहरा देखके मुझ से क्या पूछते हो फिर राजा ने उससे कहा तुझे क्या सज़ा दें यह सुनके बोला जो आ प के न्याय में ठहरे सो कीजिये राजाने कहा इसे लेजाके शूली दो लोग राजा की आज्ञा पाके उसे शूली देने लेचले यह संयोग देखो वह चोर भी खड़ा तमाशा देखता था जब उसे यकीन हुआ कि यह नाहक मारा जाता है तो उसने दुहाई दी राजाने उसे बुला के पूछा कि तू कौन है महाराज मैं चोर हूं और यह बे गुनाह है ना हक इसका खून होता है आपने कुछ न्याय न किया तब राजाने उसे भी बुलवाया और चोर से पूछा कि तू अपने धर्म से सच कहो कि य ह मुकद्दमा किस तरह से है तब चोरने व्योरे वार अहवाल कहा और राजा भी अच्छी तरह से समझा निदान हरकारे भेज उस रंडी का यार जो मुआ हुआ पड़ा था उसके मुंहमें से नाक मंगवा कर देखी तब जा ना की यह बे तकसीर है और चोर सच्चा है फिर चोर बोला कि मह राज नेकों को पालना और वदों को सज़ा देने राजाओं का परापरध र्म चला आता है इतनी बात कह कर खुजस्ता तोता बोला सदार

इससे पूछा रे हरिदास अभी कलियुग का आरम्भ हुआ कि नहीं तब उसने
हाथ जोड़ कर कहा महाराज कलिकाल वर्तमान है क्यों कि संसार में
झूठ बढ़ा है और सत घट गया लोग मुंहपर बात मीठी करते हैं औ
र पेट में कपट रखते हैं धर्म जाता रहा पाप बढ़ा पृथ्वी फल कमदे
ने लगी राजा डांड़ लेने लगे ब्राह्मण लालची हुए स्त्रियोंने ला
ज छोड़ दी बेटा बाप की आज्ञा नहीं मानता भाई भाई का येतबा
र नहीं करता मित्रोंसे मित्रताई जाती रही खाविन्द से वफा उठ
गई सेवकों ने सेवा छोड़ दी और जितनी नालायक बातें थीं बेस
ब नज़र आती हैं जब राजा से यह सब कहि चुका तब राजा उठ
कर महल में गया और यह अपने स्थान पर आके बैठा कि इत
ने में एक ब्रह्मबेटा उसके पास कहने लगा कि मैं तुझ से कुछ मां
गने आया हूं यह सुनके उसने कहा अपनी बेटी मुझको दे हरि
दास बोला कि जिसमें सब गुण होंगे मैं उसको दूंगा यह सुनके व
ह बोला कि मैं सब विद्या जानता हूं फिर उसने कहा कुछ अपनी
विद्या मुझे दिखा तो मैं जानूं कि तुझे विद्या आती है तब उस ब्र
ह्मने कहा कि मैंने एक रथ बनाया है उसमें यह सामर्थ है कि
जहां जाने का इरादा करो तहां वह एक छिनमें ले पहुंचावे तब
हरिदासने कहा उस रथ को फजर के वक्त मेरे पास ले आइयो गर
ज वह भोर को रथ ले हरिदास के पास आया फिर यह दोनों रथ
पर सवार हो उज्जैन नगरी में आन पहुंचे पर यहां इत्तफाकन उ
सके आने के पहिले किसी और ब्राह्मण के लड़के ने उसके बड़े बे
टे से आकर कहा था कि तू अपनी बहिन मुझे दे और उसने भी य
ही कहा था कि जो सब विद्या जानता होगा उसको दूंगा और उस
ब्राह्मण के पुत्र ने भी कहा था कि मैं सब ज्ञान विद्या जानता हूं य
ह सुनके उसने कहा था कि तुझे दूंगा एक और ब्राह्मणके पुत्रने

बोला ऐ राजा विक्रम सबका गुशा बराबर है किस तरह से वह जोरू उसकी हुई राजा ने कहा उन दोनों ने पहचान किया इससे उनको सबाव हुआ और यह लड़कर उसे मार के लाया है इस वास्ते वह उसकी जोरू हुई यह बात सुन बेताल फिर उसी दरख़ पर जा लटका और राजा भी वहीं जा बेताल को बांध कांधे पर रख कर ले चला ॥

कठी कहानी

फिर बेताल बोला ऐ राजा धर्मपुर नाम एक नगर है वहां का राजा धर्मशील और उसके मंत्री का नाम अंधक उसने एक दिन राजा से कहा महाराज एक मंदिर बना उसमें देवी को बिठा नित पूजा कीजिये कि इसका शास्त्र बड़ा पुन्य लिखता है तब राजा एक मंदिर बनवा देवी को पधरा शास्त्र की विधिसे पूजा करने लगा और बिना पूजा किये जल भी न पीता था इस तरह से जब कितनी एक मुद्दत गुज़री तो एक रोज़ दीवान ने कहा महाराज मशल मशहूर है कि निपूते का घर सूना मूरख का हृदय सूना और दरिद्री का सब कुछ सूना है यह बात सुन राजा देवी के मंदिर में जा हाथ जोड़ स्तुति करने लगा कि हे देवी तुझे ब्रह्मा विष्णु इन्द्र रुद्र आदि पदिर सेवते हैं और तूने महिषासुर चंड मुंड रक्तबीज ले दैत्यों को मार पृथ्वी का भार उतारा और जहां २ तेरे भक्तों को विपत्ति पड़ी तहां २ जा तू सहाय हुई और यही आस लग मैं तेरे द्वार पर आया हूं अब मेरे मन की इच्छा पूरी कर इतनी स्तुति जब राजा कर चुका तब देवी के मंदिर से आवाज़ आई कि राजा मैं तुझ से प्रसन्न हुई वर मांग जो तेरे मनमें है राजा बोला हे माता जो तू मुझसे खुश हुई तो मुझको पुत्र दे देवीने कहा राजा तेरे पुत्र होगा महाबली और महाप्रतापी तबतो राजाने चन्दन अक्षत फूल धूप

की तैयारी कर व्याहने को गया और वहां जा विवाह कर बेटे वहू को ले फिर अपने घर आया और दूल्हा दुलहन आपस में आनंद से रहने लगे फिर कितने दिनों के बाद उस लड़की के पिता के पिता के यहां शुभ कार्य था सो वहां से न्योता उनको भी आया ये स्त्री पुरुष तैयार हो अपने मित्र को साथ ले उस नगर को चले जब नगर के निकट पहुंचे तो देवी का मंदिर निकट आया तो उसे वह बात याद आई तब उसने अपने जी में विचार कर कहा कि मैं बड़ा असत्य वादी अधर्मी हूं कि देवी से असत्य बोला इतनी बात अपने मन में कह उस दोस्त से कहा तुम यहां खड़े हो मैं देवी के दर्शन कर आऊं और स्त्री को भी कहा तू यहां ठहर यह कह मंदिर के पास पहुंच कुंड में स्नान कर देवी के सन्मुख जाकर जोड़ नमस्कार कर खड्ग उठा कर गरदन पर मारा कि सिर तनसे जुदा हो जमीन पर गिरा गरज कितनी देर पीछे उसके मित्र ने विचारा कि इसे गये बड़ी देर हुई है अब तक फिरा नहीं चलकर देखा चाहिये और स्त्री से कहा तूं यहां खड़ी रह मैं उसे शिताबी से ढूंढ कर लाता हूं यह कह कर देवी के मंदिर में गया तो देखता क्या है कि धड़से उसका सिर जुदा पड़ा है यह हालत वहां की देख अपने मन में कहने लगा कि संसार बहुत कठिन जगह है कोई यह न समझेगा कि इसने अपने हाथ से शीश देवी को चढ़ाया है बल्कि यह कहेंगे कि इसकी नारी जो अति सुन्दरी थी उसके लेने के लिये मार कर यह मकर करता है इससे यहां मरना उचित है पर संसार में बदनामी लेनी उचित नहीं यह कह तालाब में नहा देवी के सामने आ हाथ जोड़ प्रणाम कर खाड़ा उठा गले में मारा कि रुंड से मुंड अलग होगया और यह यहां अकेली खड़ी २ उकता कर राह देख २ निराश हो ढूंढती हुई देवी के मंदिर में गई वहां जा देखती

योवन की जोति दिन व दिन वढ़ती थी जब वह वालिग़ा हुई तो राजा रानी अपने मन में चिंता करने लगे और देश २ के राजाओं को खबर गई कि राजा चंपकेश्वर के घरमें ऐसी कन्या पैदा हुई है कि जिसके रूप को देखतेही सुर नर मुनि मोहित हो रहते हैं फिर मुल्क २ के राजोंने अपने २ चित्र खिंचवा २ ब्राह्मणों के हाथ राजा चंपकेश्वर के यहां भिजवाई यहां ले राजाने अपनी वेटी को सवराजों की तसवीरें दिखाई पर उस्के मनमें एक न समाई तवतो राजा ने कहा तू स्वयम्बर कर यह वात भी उसने न मानी अपने वापसे कहा रूप-वल-ज्ञान जिसमें यह तीनों गुण होवे पिता जी उसीको मुझे देना गरज जव कितने दिन वीते तव चार देश से चार वर आये फिर उनसे राजाने कहा अपने २ गुण विद्या मेरे आगे जाहर करके हो उनमें से एक वोला मुझमें यह विद्या है कि एक कपड़ा मैं वना कर पांच लाख को वेंचता हूं जव उस्का मोल मेरे हाथ आता है तव उनमें से १ लाख ब्राह्मणों को देता हूं दूसरा देवता को चढ़ाता हूं चौथा स्त्री के वास्ते रखता हूं और तीसरा अपने अंगमें लगाता हूं पांचवें कोवेंच रुपये ले नित भोजन करता हूं यह विद्या दूसरा नहीं जानता और जो मेरा रूप है वह जाहिर है दूसरा वोला मैं जल थल के पक्षी की भाषा जानता हूं मेरे वल का दूसरा नहीं और सुन्दरताई मेरी आप के आगे है तीसरे ने कहा मैं ऐसा शास्त्र जानता हूं कि मेरे समान दूसरा नहीं और खूव सूरती मेरी तुम्हारे रोवरू है चौथे ने कहा मैं शास्त्र विद्या में एकही हूं दूसरा मुझसा नहीं शब्दभेदी तीर मारता हूं और मेरा हुस्न जगमें रोशन है-आपभी देखतेही हैं यह चारो की वात सुन राजा अपने मनमें चिंता करने लगा कि चारो गुणमें वरावर हैं किसे कंन्या दूं यह विचार राजा वेटीके पास जा चारों का गुण वयान किया औ कहा तुझे किस्को दूं यह सुनवह लाज-

सने मां के पेट में रोज़ी पहुंचाई थी जबकि हम पेदा हुये और दुनिया
के मिजाजों के लायक हुए अब वह खबर नहीं लेता नहीं मालूम
कि सोता है या मरगया और अपने नज़दीक माल और दौलत चा
हनो किस बड़े आदमी को देते वक्त मुंह वनावें और नाक भों चढ़ा
वे इस ज़हर हलाहल खाकर मरजाना वेहतर है और यह छे बातें
आदमी को हलका करती हैं- एक तो खोटे नर की प्रतीत -दूसरे वि
ना कारण की हंसी - तीसरे स्त्री से विवाद करना- चौथे असज्जन
स्वामी की सेवा - पांचवें गधे की सवारी -छठे विना संस्कृत की भा
षा और यह पांच चीजें विधाता मनुष्य के कर्म से पेदा होतेही लि
ख देता है - एक तो आरवल - दूसरे कर्म - तीसरे धन -चौथे विद्या-
पांचवे यश- महाराज जबतक आदमी का पुराय उदय होताहै सब
उसके दास बने रहते हैं और जब पुराय घट जाता है तो वंधु वैरी हो
जाते हैं पर यह एक बात मुकर्रम है कि स्वामी की सेवा करने से क
भी न कभी फल मिलता है निर्फल नहीं रहता -यह सुन राजाने
सब बातों को गौर कर उस वक्त कुछ न कहा पर उससे यह कहा
कि मुझे भूख लगी है कहीं से कुछ खाने को ला चिरम देवने कहा
यहां अन्न भोजन न मिलेगा यह कह जंगल से जा एक हिरन मार
खीसे से चकमक निकाल आग सुलगा गोश्त के तिक्के भून राजा-
को खूबसा खिला आप भी खाये गरज़ जब राजा का पेट भर चु
का तब उसने कहा ऐ राज पुत्र अब हमें नगर को लेचलो राह सुझे
नहीं मालूम उसने राजा को नगर में ला उसके मंदिर में पहुंचा
दिया- तब राजाने उसकी चाकरी मुकर्रर करदी और बहुतसे उ
से वस्त्र आभूषण दिये फिर वह राजा की सेवा में हाजिर रहने
लगा गरज़ एक दिन राजाने किसी काम के लिये समुद्र के कना
रे उस राज पुत्रको भेजा जब वह किनारे पहुंचा तो उसने एक देवका

हुआ तव राजा वीर विक्रमा जीतने कहा कि जिनको धर्म उपकार करना है तिनको उपकार करने से अधिक क्या है और आपकाजो हो परकाज करे सोई अधिक है इसकारन सेवक का सत अधिक हुआ यह वात सुन वेताल उसी दरख्त पर जा लटका और राजा जा फिर वहां से उतार कंधे पर रख ले चला ॥ ८॥

नवमी कहानी

वेताल बोला ऐ राजा मदन पुर नाम एक नगर है वहां वीरवर नाम राजा था और उसी देश में हिरराय दत्त एक वनियां कि उसकी वेटी का नाम मदन सेना था वह एक रोज़ वसंत ऋतु में सखियों को साथ लिय अपने बाग़ में वास्ते सैर के और तमाशे के गई इत्तफ़ाकन उसके आने के पेशतर धर्मदत्त सेठका वेटा सोमदत्त नाम अपने मित्र को लिये वन विहार को आया था वहां से फिरता हुआ वाड़ी में आन पहुंचा इसे देख मोहित होगया और अपने दोस्त से कहने लगा भाई कदा यह मुझसे मिले तो जीवन सफल होजाय और जो न मिले तो इस दुनियां में जीना अवसर है यह अपने दोस्त से वातें कर विरह में व्याकुल हो वे इख़्तियार उसके पास जा हाथ पकड़ के कहने लगा जो तू मुझसे प्रीति न करेगी तो मैं अपना प्राण तेरे ऊपर दूंगा वह वोली ऐसा मत कीजो इसमें पाप होगा तव उसने कहा तेरे इश्क़ ने मेरे दिल को छेदा है और तेरे विरह की आग ने मेरे शरीर को जला दिया इस पीर से मेरी सुध बुध सव जाती रही है और मुझे इस समय इश्क़ के ग़लवे से धर्म अधर्म का लिहाज नहीं है पर जो तू मुझे वचन दे तो मेरे जी में जी आवे वह वोली आज के पांचवें दिन मेरी शादी होगी तो पहिले मैं तुझसे मिल जाऊंगी पीछे अपने सोहर के पास रहूंगी यह वचन दे सौगंध खा वह अपने घर को गई और यह अपने घर आया ग़रज़ पांचवें दिन उसकी शादी हुई खाविंद उसका व्याह कर उसे अपने घर

त्याग करके तेरे पास आऊंगी सो मैं आई हूं जो तेरी इक्षा में आवे सो कर फिर उसने यह पूछा कि यह वृत्तान्त तूने अपने पतिके आगे भी कहा था नहीं इसने उत्तर दिया कि मैंने तमाम अहवाल कहा और उसने मुआफ़ करके मुझे तेरे पास विदा किया सोमदत्त बोला यह बात ऐसे है जैसे विना वस्त्र का गहना या विन घीके भोजन या विना सुरके गान यह सब एक सां हैं इसी तरह मैले बसन तेज को हरते हैं कुभोजन बल को कुभार्या प्राणको कुपुत्र कुलको हरे और राक्षस खफा होता है तो प्राणको लेता है पर स्त्री हित और अनहित में दोनों में दुख देने वाली है स्त्री जो न करे सो थोड़ा क्योंकि जो बात इसके मनमें रहती है सो ज़बान पर नहीं लाती और जो ज़बान में है उसे ज़ाहिर नहीं करती और जो करती है सो करती नहीं स्त्री को संसार में भगवान ने अजब कोई पैदा किया है इतनी बात कह उस सेठके बेटेने इसे जवाब दिया कि मैं पराई औरत से इलाक़ा नहीं रखता यह सुनके फिर उलटी अपने घर को फिरी राह में उस चोर से भेंट हुई उसके आगे सब वृत्तान्त कहा चोर ने सुनके शाबशी दे छोड़ दिया यह अपने पतिके निकट आई और उससे सब अहवाल बयान किया और उसके खाविन्द ने उससे बात न की और कहा कोयल का सुरही रूप है और नारी का रूप पतिव्रत और कुरूप मनुष्य का रूप विद्या तपसी का रूप क्षमा इतनी कथा कह वेताल बोला हे राजा इन तीनों में से किसका सत अधिक है वेताल ने कहा किस तरह राजाने कहा औरत पुरुष पर उसकी इक्षा देख स्वामी ने छोड़ा राजा का डर मान सोमदत्त ने छोड़ा और चोर को छोड़ने का कुछ कारण न था · इससे चोर ही प्रधान है यह सुन वेताल फिर उसी दरख़्त में जा कर लटका और राजा वीर विक्रमादित वहीं जा उसे दरख़्त से उतार गठरी बांध कांधे पर रखले चला ॥

ती है. और लूले लंगड़े काने अंधे बौने कुबड़े ऐसे अंग हीन हो हो
जन्म लेते हैं जैसे पशु पक्षी के अंग खाते हैं वैसेही अपने अंग गंवा-
ते हैं और मद पान करने से महा पाप होते हैं इससे मद्य मांस का खाना
उचित नहीं इसी तरह से दीवान राजा को अपने मत का ज्ञान समझा के स-
ब धर्म में लाया कि जो यह कहता था वही राजा करता था और ब्राह्मण
योगी जंगम सेवड़ा संन्यासी दुर्वेश किसी को न मानता था और इसी
और इसी धर्म से राज करता था एक दिन काल के वस हो मर गया फि-
र उसका बेटा धर्मध्वज नाम गद्दी पर बैठा और राज करने लगा एक दि-
न उसने आमद चन्द दीवान को पकड़वा सिर पर सात चोटी रखवा
मुंह काला कर गधे पर चढ़ा डौंडी बजवा नगर के घेरे दिलवा दे-
स निकाला दिया और अपना राज निःकंटक किया एक दिन वह
राजा वसंत ऋतु में रानियों को साथ ले एक बाग की सैर को गया उस-
बाग में एक बड़ा तालाब था और उसमें कमल फूल रहे थे राजा उस
सरोवर की शोभा देख कपड़े उतार स्नान करने को उतरा एक फूल तोड़
तट पर आ रानी को दिया रानी हाथ में लेने लगी त्योंही हाथ से छू-
ट कर रानी के पांव पर गिरा और उसकी चोट से रानी का पांव टूट
गया तब राजा घबरा कर एक बारगी बाहर निकल उसकी औष-
धि करने लगा कि इतने में रात हुई और चंद्रमा ने प्रकाश किया चांद
की ज्योति के पड़ते ही दूसरी रानी के शरीर में फफोले पड़ गये कि
अचानक दूर से किसी गृहस्थी घर से मूसल की आवाज़ आई वों-
हीं तीसरी रानी के ऐसा दर्द हुआ कि गश आगई इतनी बात कह
बैताल बोला हे राजा इन तीनों में अति सुकुमार कौन है राजा ने
कहा जिसके मूड़ में दर्द हो मूर्छा आई सोई बहुत नाज़ुक है
यह बात सुन बैताल बोला फिर उसी दरख्त पर जा लटका और
राजा वहां जा उसे उतार गठरी बांध कंधे पर रख ले चला ॥ १०॥

अगिले मनुष्य कहिगये जो बात किसी की समझ में आवै औरको ई उसबात को किसी के आगे न कहें पर मैं आंखों से प्रत्यक्ष देखा है इस्से मैं कहता हूं महाराज जहां रघुनाथ जीने समुन्द्र में पुल बांधा है उस जगह देखता क्या हूं कि सागर में से एक सोने का तरवर निकला है कि ज़मुर्द के पत्ते पुखराज के फूल मूंगा के फलों से ऐसा लदा हुआ था कि जिस का बयान नहीं होसक्ता औरउस पर महा सुन्दरी स्त्री बीन हाथमें लिये मीठे २ सुरों से गाती थी एकघड़ी के बाद वह पेड़ समुद्र में समा गया यह बात राजा सुन दीवानं कोराज सौंप अकेला समुद्र के किनारे को चला कितने एक दिनों के वाद वहां जा पहुंचा और महादेव के दर्शनों को मंदिर में गया ज्यों पूजा करबा हर आया कि समुद्र से वही दरख़्त नायका समेत निकला राजा उस को देखतेही सागर में कूद उसी तरवर में जा बैठा वह राजा समेत पाताल को चला गया वह इस को देख के बोली कि ये वीर पुरुष किस वास्ते तू यहां आया है राजा ने कहा मैं तेरे ऊपर कारण से आ या हूं उसने कहा कि जो तू काली चौदस के दिन मुझ से न मिले तो मैं तेरे साथ विवाह करूं राजा ने यह बात मानी तिसपर भी उसने बचन ले राजा के साथ व्याह किया गरज़ जब अंधेरी चतुर्दशी आई तो उसने कहा ऐ राजा तू आज मेरे निकट से चला जा यह सुन के राजा खड्ग हाथ में ले वहां से उठा और एक किनारे जा छिपकर देखता रहा जब आधीरात हुई उस वक़्त एकदेव आया और उसने आते ही इसे गले से लगाया यह देखते ही राजा खांडा ले के धाया और कहा अरे राक्षस पापी मेरे सामने स्त्री को तू हाथ न लगा पहिले मुझ से संग्राम कर और मुझे जभी तक डर था तबतक तुझे न देखा था अब मैं निडर हूं इतनी बात कह खांडा निकाल एक ऐसा हाथ मा रा कि रुंड से मुंड जुदा हो ज़मीन पर तड़पने लगा यह देख कर ॥ ५॥

इस लिये मैं नहीं जाती यह सुन राजा बहुत खुश हुआ और ला-
खों रुपये का दान किया राजा के इस अहवाल के सुन्ने से दीवान
की छाती फटी और मरगया इतनी बात कह बैताल बोला ऐ राजा
किस लिये वह मंत्री मरगया तब राजा वीर विक्रमादित्य ने कहा
कि मंत्री ने देखा कि राजा तो ऐश करने लगा और राजकाज की
चिंता सब भुलादी प्रजा अनाथ हुई अब मेरा कहा कोई न मानेगा
इसी चिंता से वह मरगया यह सुन बैताल फिर उसी वृक्ष पर जा
लटका राजा फिर उसी तरह से कांधे पर रख ले चला ॥

बारहवीं कहानी

बैताल बोला ऐ राजा वीर विक्रमादित्य चूड़ापुर नाम एक नगर है वहां का
चूड़ामन नाम राजा था जिस्के गुरू का नाम देव स्वामी और उस्के बेटे
का नाम हरि स्वामी वह कामदेव के समान सुन्दर और शास्त्र में वृह-
स्पति के समान और धन उस्के कुबेर का सा वह एक ब्राह्मण की बेटी
नाम उस्का लावण्यवती था ब्याह लाया उन दोनों में बहुत सी प्री-
ति हुई यहां एक दिन गरमी के मौसम में रात के वक्त चौबारे की छ-
त पर दोनों गाफ़िल पड़े सोते थे इत्तफ़ाकन स्त्री के मुंह पर से ओ-
ढ़नी सरक गई और गंधर्व विमान पर बैठा हवा में उड़ा हुआ कहीं
जाता था अचानक उस्की नज़र इस पर पड़ी कि वह विमान को नी-
चे लाया और उस सोती को विमान पर रख ले चला कितनी देर के
पीछे ब्राह्मण भी सोने से उठा तो देखता क्या है स्त्री नहीं तब घब-
राया और वहां से उतर तमाम घर को ढूंढा जब इसे वहां भी न मिली
तो नगर की गली २ कूचः २ ढूंढता फिरता लेकिन कहीं उसे न पाया
फिर अपने जी मे कहने लगा कौन उसे लेगया और कहां गई गरज़ जब
व कुछ बस न चल सका तो आख़िर लाचार हो अफ़सोस करता हुआ घ-
र को आया और वहां उसे फिर हर जा भी ढूंढा और न पाया जब उस दिन

बेतालफिरउसी दरख़्तपर जा लटका ओर राजा भीजाउसेउतारग ठरी बांध कांधेपर रखले चला॥

तेरहवीं कहानी

बेतालबोला हेराजा चन्द्र हृदयनाम नगरी है और उसजगह का रणधीर नाम राजा था उसकी नगरी में धर्म ध्वजनाम एकसेठ थाओ र उसकी बेटी का नाम शोभनी पर अति सुन्दरी जवानीउस की दि न ब दिन बढ़ती थी ओर रूपउसका पल २ अधिकहोता थाइत्तिफ़ा कन उस नगरी में रातों को चोरी होने लगी जब चोरों के हाथसेम हाजनो ने बहुत दुःख पाया तब इकट्ठे हो राजा के निकटजाकरस बने कहा महाराज चोरोंने नगरमें बहुत ज़ुल्म किया है हमइस शहर में अब नहीं रहसक्ते राजाने कहा ख़ैर अब जो कुछ हुआ सो हुआ लेकिन अब आगे दुख न पावोगे मैंउन का यत्न करता हूं यह राजाने बहुत लोग बुलवा चौकसी के लिये भेजदिये और चोकीपहि रे का ढब उनको बता दिया और हुक्म किया कि जहां चोरों को पाओ बि ना पूछे मार डालो लोग रात को नगर की रखवाली करने लगे इस पर भी चोरी होती थी तब फिर सारे साहूकार इकट्ठे होकर राजाकेपा स आये और अर्ज़ कि महाराज आपने भेजे पहरुए तो भी चोर कम नहुए और रोज़ चोरी होती है राजा ने कहा इस वक़्त तुम रुख़सत हो आजसे रात को चौकसी करने मैं निकलूंगा यह सुनके राजा से बिदा वह अपने २ घर गये ओर जिस वक़्त किरात हुई राजा अकेला ढाल तरवार ले प्यादा नगरी की रक्षा करने लगा इसमें आगे जाके देखा तो एकचोर सामने से चला आता है राजा उसे देखकर पुकारा तू को न है वह बोला कि मैं चोर हूं तू कौन है वह बोला कि मैं चोर तू कौन है राजा ने कहा कि मैं भी चोर हूं यह सुन वह खुश हुआ और बोला आओ।

नगर में ले आया फिर उसको नहलवा धुलवा अच्छे वस्त्र प-
हिराय एक ऊंट पर सवार कराके ढडोरियो को साथ दे सारे न
गर के फेर को भेजा ओर सूली उसके वास्ते खड़ी करने का हुक्म
दिया इसमें शहर के लोगों में से जो इसे देखता था सो कहता था
कि इसी शख्सने तमाम नगर को लूटा है अब इसको सज़ा रा
जा शूली की देगा. जब कि उस धर्म्मध्वज सेठ की हवेली के नी
चे को गया तो उस वक्त उस सेठ की बेटी भी ढडोरिये की आ
वाज़ सुन अपनी दासी से पूंछा कि यह काहेकी सुनादी वजती
है वह बोली कि चोर जो नगर में चोरी करता था उसे राजा पकड़
लाया है अब शूली देगा यह सुनके देखने को वह भी दोड़ी ओ
र उस चोर का योवन देखके मोहित होगई और अपने बाप
से आकर कहा कि तुम उस राजा के पास जाओ और उस चोर
को छुटा के ले आओ सेठ बोला जिस चोरने राजा का तमाम
नगर राजपाट को लूटा है और जिस लिये राजाका तमामक
टक और सेना कटी है उसको मेरे कहने से क्योंकर छोड़
देगा फिर उसने कहा कि तुम्हारे सर वस दिये से भी राजा
छोड़े तो तुम उस चोर को छुड़ा कर ले आइयो और जो वह
चोर न आवेगा तो मैं भी अपनी जान उसके साथही खोदूं
गी यह सुनकर वह सेठ राजा के पास गया और हाथ जो
ड़ कर अर्ज़ की कि महाराज पांच लाख रुपया मुझ से ले
लीजिये और इस चोर को छोड़ दीजिये यह राजा बोला कि
इस चोरने मेरा तमाम नगर लूटा है और तमाम लश्कर
इसके सबब से ग़ारत होगया इस सबब से मैं इस चोर को
कभी नहीं छोड़ सक्ता हूं. जब राजा ने उस सेठकी बात न
मानी लाचार होकर फिर यह अपने घर को फिर आया

तार गठरी बांध कांधे पर रखले चला ॥

चौदवीं कहानी

वैताल बोला ए विक्रम सुकुमावती नाम एक नगरी है व
हां सुविचार नाम राजा है जिसकी बेटी का नाम चन्द्रप्रभा
वती जब वह बर योग्य हुई तब एक दिन बसंत ऋतु में
सब सखियों को साथले बाग़की सैर को गई वहां जाने
के बंदोबस्त के पहिले एक ब्राह्मण का बेटा वर्ष बीस
का अति सुन्दर मनस्वी नाम कहीं से फिरता हुआ बाग़
में आ एक वृक्ष के नीचे ठंडी छांह पाकर सोरहा थाप
र राजा के लोगोंने बंदोबस्त करते वक्त इसे सोते न देख
ब्राह्मण कालड़का वहीं ठंडी छांह पाकर सोता रहा औ
र राज कन्या अपने लोगों समेत दाखिल हुई सहेलि
यों के साथ सैर तमाशा देखती हुई वहां आई जहां ब्राह्म
ण का लड़का सोता था वहां पहुंची कि वह लोगों केपां
व का आहट से उठ बैठा दोनों की चार नज़रें हुईं औरका
म देव के ऐसे बस हुए कि उसी समय उधर ब्राह्मण का
लड़का उसी वक्त मूर्छा खाकर भूमि पर गिरा और उधर
और इधर बेसुध हो राज कन्या के भी पांव कांपने लगे
तो सखियोंने हाथों हाथ थाम लिया निदान सुखपाल
में बिठा कर घर में ले आई और यहां ब्राह्मण का बेटा ऐ
सा बे सुध पड़ा था कि अपने तन मन की कुछ खबर न थी
इस अर्से में दो ब्राह्मण शशि और मूल देव कामरू से वि
द्या पढ़ वहां आ निकले मूलदेव उस ब्राह्मण के बेटेको दे
खा पड़ा बोला शशी यह ऐसा बे सुध क्यों पड़ा है वह बोला
नायका ने भौंहकी कमान से नैनके तीर मारे हैं इस से यह

करा वनगया और उस वनी हुई कन्या को लिये अपने राजाके पास गया राजाने ब्राह्मण को देख दंडवत करके आसन वैठने को दिया उस लड़की को भी तव इस ब्राह्मण ने एक श्लोक पढ़ असीस दी कि जिसकी शोभा त्रिलोकी में फैल रही है जिसने वौना होय राजा वलिको छला और जिसने वन्दरों को साथ ले समुद्र का पुल वांध और जिसने पर्वत हाथ पर धर इन्द्रसे व्रज के ग्वाल वचाये सोई वासुदेव हो तुम्हारी रक्षा करे यह सुन उसने पूंछा महाराज तुम कहां से पधारे विप्रने कहा मैं गंगापार से आया हूं वही मेरा घर है और वेटा की वहू को लेने गये थे पीछे मेरे गांव में भगाई पड़ी सो मैं नहीं जानता हूं कि हमारे घरके सव आदमी मेरी स्त्री और लड़का किधर को गया सो मैं अपने पुत्र की स्त्री को लिये २ फिरता हूं और उनको किस तरह से ढूंढूंगा जव तक मैं न आऊं वहतर यह कि तुम्हारे पास छोड़ जाता हूं तुम इसे वड़े परिश्रम से रखना यह वात सुन रूप सोचने लगा कि अति सुन्दर तरुण स्त्री को मैं किस तरह रक्खूंगा यह वात राजा अपने जी में विचारने लगा और वोला महाराज जो आपने आज्ञा की सो मुझे कवूल है फिर राजाने अपनी पुत्री को वुलाकर कहा वेटी इस ब्राह्मण की वहू को लेजाकर अपने पास वहुत यत्न से रक्खो और सोते जागते खाते पीते पीते छिन भर इसे जुदा न कीजो यह सुन राज कन्या उस ब्राह्मण की वहू को अपने मंदिर में लेगई रात के समय दोनों एक जगह सोईं आपस में वातें करने लगीं तव ब्राह्मण की वेटी वोली ऐ राज कन्या तू किस दुख से दुर्वल होरही है सो मुझ से कह राज कन्या वोली कि एक दिन वसंत ऋतु में सखियोंको साथ ले वाग़की सैर कोगई थी और वहां एक ब्राह्मण का लड़का

पने घरको आया पर उसके कानमें भनक पड़ी अपने सामने लड़के का दुःख देखके उसने भी अन्न जल छोड़ दिया तबतो सकल कारबारी पञ्जी इकट्ठे होकर राजा से अर्ज़ की कि महाराज मंत्री का पुत्र अब तब होरहाहै और उसके मरने से दीवान भी न बचेगा बेहतर यह है कि जो कुछ हम लोग अर्ज करें वह कबूल हो यह सुनके आज्ञा दी कि कहो तब उनमें से एक शख्स बोला महाराज उस बूढ़े ब्राह्मण को गये बहुत दिन हुए कि फिर नहीं भगवान जाने क्या वह मरगया या जीता है इस से उचित यह है कि उस ब्राह्मण की बहू को मंत्री के बेटा को दे अपना राज का धर्म रखिये और कहा कदाचित वह आवे तो गांव धन दीजिये और इस पर भी राज़ी न हो तो उसको बेटी ब्याह दीजिये यह बात सुन राजा ने ब्राह्मण की बहू को बुलाकर कहा तुम मंत्री के घरमें जा उसके पुत्रकी स्त्री हो वह बोली स्त्री का धर्म नष्ट होता है अति रूप से और ब्राह्मण का धर्म जाता है राजा की सेवा से और गाय खराब होती है दूध की चतुराई से और धन जाता है अधर्म से करे इतना कह फिर बोली महाराज तुम मुझे मंत्री के बेटे को देते हो और उससे यह बात ठहरा दीजिये जो कुछ मैं उससे कहूं वह करे उन्ने कहा महाराज मैं ब्राह्मण वह क्षत्री उसे बेहतर है कि तीर्थ कर पहिले आवे सब तब मैं उसके साथ घर रहूं यह सुनके राजा ने मंत्री के बेटे को बुलाके कहा पहिले सब तीर्थ कर आ तब ब्राह्मणी तुझे देंगे राजा की बात सुन दीवान के बेटे ने कहा महाराज वह मेरे घर जा बैठे तो मैं तीर्थ को जाऊंगा राजा ने ब्राह्मणी से कहा जो तू पहिले उसके घर में जाके रहे तो वह तीर्थ को जाय लाचार हो राजा के कहने से ब्राह्मणी उसके घर में जाके रही तो वह तीर्थ यात्रा को जाय

छने लगा देवने कहा तुम्हें इतने दिन कहां लगे ब्राह्मण·
बोला महाराज इसी पुत्र को ढूंढने गया था सो इसे खोज कर
आपके पास लाया हूं अब इसकी बहू को दो तो बहू बेटे को
घर लेजाऊं तब राजाने ब्राह्मण से सब हाल कहा यह सुन
तेही ब्राह्मण कोप कर बोला यह कौनसा बिवहार है जो तुम
ने मेरे बेटे की बहू और को दी अच्छा जो तुमने चाहा सो कि
या परन्तु अब मेरा श्राप ओढो तब राजा बोला हे देवता तुम
क्रोध मत करो जो तुम चाहो सो करो अच्छा तुम मेरे श्रापसे
डर कर मेरा कहना करो तो तू अपनी पुत्री मेरे बेटेको बिवाह
दे यह सुन राजाने एक ज्योतिषी को बुला शुभ लगन महूर्त
ठहरा अपनी पुत्री ब्राह्मण के लड़के को ब्याहदी फिर वहांसे
राज कन्या को दान दहेज समेत ले राज से बिदा हो अपने गां
व में आया यह खबर सुन मनुष्वी विप्र भी वहां आ उससे झग
ड़ने लगा कि मेरी स्त्री मुझे दे शशी बोला कि मैं तो दश पञ्चों
में इसे ब्याह के लाया हूं यह स्त्री मेरी मुझे दे वह बोला मेरा गर्भ
रहा तेरी स्त्री कैसे होगी और आपस में विवाद करने लगे मूल
देव ने इन दोनों को बहुत समझाया लेकिन किसूने इसका
कहना न माना इतनी कह बेताल बोला गर्भ जिसका उस
की जोरू हुई राजा ने कहा उस ब्राह्मण का बेटा हुआ सो कि·
सीने मालूम न किया और इसने दश पंचों में बैठकर शादी की
इस लिये इस की जोरू ठहरी है और लड़का भी इसका स्त्री
कर्म का अधिकारी हुआ· यह बात सुन बेताल उसी वृक्षपे
फिर जाकर लटका और राजा भी वहां जा गठरी बांध ले चला॥

पन्द्रहवीं कहानी

फिर बैताल बोला रे राजा हिमांचल नाम एक नगरी का राजा·

नित्य और धन भी स्थिर नहीं है जब आदमी जन्मा तो मृत्यु भी
उस्के साथ है इस से अब राज छोड़ धर्म्म कार्य्य कीजिये इस
शरीर के कारण और राज के वास्ते महा पाप करना उचित
नहीं क्योंकि राजा युधिष्ठिर महा भारत करके पीछे पछ
ताये यह बात सुन कर उसने कहा अब क्या करें राज अप
ना गोतियों को दीजे आप चलके तपस्या कीजे यह बात
ठहराय भाई भतीजों को बुला राज दे दोनों पिता पुत्र कोम
ले पर्वत को गये वहां जा कुटी बना रहने लगे जीमूत से
और ऋषी के बेटे से दोस्ती हुई एक दिन पर्वत के ऊपर रा
जा का बेटा और ऋषि का पुत्र शैर के वास्ते गया वहां देवी
का मंदिर नज़र पड़ा उस्में राज कन्या देवी का पूजन कर रही
थी उस राज कन्या की और जीमूत वाहन की चार नजरें हुईं
और दोनों का मन मोहित हुआ पर राज कन्या मन मार लाज
की मारी अपने घर को पधारी और इधर यह भी उस ऋषी के
बेटे की शर्म की वापस अपने स्थान को आया वह रात दोनों गु
ल उजारों को निहायत बेकली से कटी सुबह होतही उधर से
राज कन्या भी देवी के मंदिर में गई और उधर से राज पुत्र भी
जो देखा तो राज कन्या भी जाती है तब इसने उसकी सखी से
पूछा यह किस्की कन्या है सखीने कहा मलय राजा की बेटी है
मलयावती इसका नाम है अभी कुंवारी है यह फिर सखीने पूं
छा तुम कहां से सुन्दर पुरुष आये हो और क्या नाम है यह
बोला विद्या धरों का राजा जीमूत वाहन केतु उस्का मैं पुत्र
और जीमूत वाहन मेरा नाम है राज के भंग होने से पिता पु
त्र हम यहां आकर रहे हैं फिर सखी ने यह बातें सुन कर
राज कन्या से कहीं यह सुन कर बहुत दुख मती भई और

वाहन ने साले से कहा कि मित्र तुम जाके भोजन करो क्यों कि मैं इस समय नित्य पूजा करता हूं कि मेरी पूजा करने का अब समय हुआ है यह सुनके वह तो गया और जीमूत वाहन आगे बढ़ा तो रोने की आवाज़ आने लगी उसी की धुन पर यह चला गया वहां जाकर पहुंचा तो क्या देखता है कि एक बुढ़िया दुखसे व्याकुल हो रोती है उस्के पास जाके पूछा हे माता तू किस कारण रोती है बोली शंख चूड़ नाम नगर है वहां मेरा बेटा है उस्की आज बारी है उसे गरुड़ आज खावेगा इस दुख से मैं रोती हूं इसने कहा ऐ माता मत रोवै तेरे पुत्र के बदले में अपनी जान दूंगा वह बोली ऐ बेटा ऐसा मत करना तूही मेरा शंख चूड़ है यह कहती थी कि इतने में शंख चूड़ आ पहुंचा और उसने सुनके कहा महाराज मुझ से दरिद्री बहुत कम पैदा होते हैं दयावंत संसार में इस्से आप मेरे पलटे जान न दीजिये क्यों कि आप के जीते रहने से संसार में लाखों जीवों का उपकार और मेरा मरना जीना बराबर है जब तो जीमूत वाहन कहने लगा कि यह तो सत पुरुषों धर्म नहीं जो मुंहसे कहके न करें तू जहां से आया है वहीं जा यह सुनके शंख चूड़ तो देवी के दर्शनों को गया और आकाश में गरुड़ उतरा इसमें राजकुमार देखता क्या है पर तो उस्के चार २ बांस बराबर हैं और ताड़सी लम्बी चोंच पहाड़ और फाटक के मानिन्द आंखें घटा से पर एका एकी चोंच पसार दौड़ा पहिले तो राज पुत्रने अपने आपको बहुत बचाया परन्तु दूसरी बार आया दौड़के तो वह राज पुत्रको चोंच में दबा करके उड़ा ले चला और चारो तरफ़ को चक्र मारने लगा कितनी एक देरके बाद वह उंगली की अंगूठी के नग पर राजा का नाम खु

वास करते हैं गरुड़ बोला जगमें सत आज्ञा करते हैं और अ
पना जी दूसरे के वास्ते बचाने को देते हैं संसार में बिरले होते हैं
यह सुन जीमूत वाहन ने कहा जो तुम मेरे ऊपर प्रसन्न हुए
तो अब नागों को न खाया करो जो खाये हैं उनको जिला दो
यह सुनकर गरुड़ ने पाताल से अमृत लाकर सांपों के हा
डों पर छिड़का कि वे फिर जी उठे और इससे कहा ऐ जीमू
त वाहन मेरे प्रसाद से तेरा गया राज फिर मिलेगा यह वर
दे गरुड़ अपने स्थान को गया और शंखचूड़ अपने धामको
और जीमूत वाहन भी वहां से चला कि राह में उसका ससुर
और स्त्री मिली फिर उन समेत अपने बाप के पास आया यह
अहवाल सुन उसके चचा और चचेरे भाई बल्कि सारे कुटुम्ब
के लोग मिलने को आये और पांव पड़के उन्हें लेगये राज पर
बिठाया इतनी कथा कह बैताल ने पूछा ऐ राजा इनमें से कि
सका सत अधिक हुआ राजा बोला शंखचूड़ का फिर बैताल
बोला किस तरह से राजा ने कहा गया हुआ शंखचूड़ फिर जी
देने को आया और गरुड़ के खाने से उसे बचाया बैताल बोला
कि जिसने पराये लिये अपनी जान दी उसका सत क्यों न अधि
क हुआ राजा ने कहा जीमूत वाहन जात का छत्री है उसे जी दे
ने का अभ्यास होरहा इससे उसे जान देनी कठिन नहीं है यह सु
न बैताल फिर उसी पेड़ में जा लटका राजा वहां से जाके फिर
उसे बांध कांधे पर धर ले चला ॥

सोलहवीं कहानी

बैताल बोला ऐ राजा विक्रमा जीत चन्द्रशेखर नाम एक नगर है
वहां का रहने वाला रत्न सेठ था उसके एक बेटी थी उसका नाम
उन्मादिनी था योवनवती बहुत सुन्दर थी जब वह जवान हुई

क्या विथा राजा ने कहा आज मैंने आते हुए वाट में एक कोठे के ऊपर सुन्दर स्त्री देखी है मे नहीं जानता वह हूर है या परी है या इन्सान है कि जिस्के रूपने एक वारगी मेरा मन हर लीना है इसी से वेकल हूं यह सुनके दीवान ने अर्ज की कि महाराज उसी सेठ की वेटी है जो तुम्हारा सेना पति वलभद्र उसे विवाह लाया राजाने कहा मैंने जिन लोगों को लक्षरा देखने को भेजा था उन्होंने हमसे कुलकिया यह कह राजाने चोवदार को हुक्म दिया उनको जल्दी ले आओ राजाकी आज्ञा पाय उन्को ला हाजिर किया गरज वह राजाके सन्मुख आया तो राजाने कहा मैंने तुम्हें भेजा था और जो मेरी इच्छा थी सो तुमने न किया आज मैंने उसे अपनी आंखों से देखा वल्क एक वात गोठें वनाके कहीं और वह ऐसी सुन्दरी गुरा की भरी है कि उससी मुझे मिलनी कठिन है यह सुन उन्होंने कहा महाराज जो आप फर्माते हैं वह सच है पर हमने उसे कुलक्षीन देखी इस वास्ते हुजूर में अर्ज किया। वावह मुद्दा सुनिये आपस हमने विचारा कि ऐसी स्त्री जो राजाके घर में आयगी तो महाराज उस्के वस होंगे राज काज सव छोड़ देंगे तो राज गद्दी भंग होगी इस भयसे हमने झूठ वोला यह सुनके राजाने सवको छोड़ दिया मगर उस्की याद से राजाको निपट वेचैनी थी और सव लोगों पर राजाकी वेकरारी जाहिर थी कि इतने में वलभद्र आ पहुंचा उसने हाथजोड़कर राजाके अर्ज किया कि हे पृथवी नाथ मैं आपका दास और वह आपकी दासी उसके हेत आप इतना दुख पावें इस में महाराज आप की आज्ञा क्या है जो हुक्म हो तो हाजिर करूं यह वात सुन राजा क्रोध कर वोला कि पराई स्त्रीके पास जाना वड़ा अधर्म है यह वात क्या तूने मुझसे कही क्या मैं अधर्मी हूं जो ऐसा करूं पराई स्त्री माताके समान है ॰

दे चिता पास जा परिक्रमा कर बोली रे माध मैं दासी जन्मकी हूं इतनी कह आगमें जा बैठी और जलगई इतनी कह बैताल बोला रे राजा इन तीनों में किसका सत अधिक हुआ तब राजा ने कहा सैन्यापतिका अधिक हुआ स्त्री को पतिसंग सती होना उचित है और राजा को सेवक को देनी उचित है इससे राजा का सत अधिक हुआ यह सुन बैताल उसी पेड़ में जा लटका राजा फिर जाके गठरी बांध कांधे पर धर ले चला ॥

सतरहवीं कहानी

बैताल बोला रे राजा उज्जैन नाम नगरी है वहां सेना राजा था सो सब जुये में हारगया तब कुटुम्बके लोगोंने उसे निकाल दिया और उस्से कुछ न बन पड़ा लाचार होकर वहांसे चला तो कितने दिनों में एक शहर में पहुंचा वहां क्या देखता है कि एक योगी धूनी लगाये बैठा है उसे दंडवत कर यह भी जा बैठा योगीने इस्से पूछा तू कुछ खायगा उसने कहा महाराज जो देउगे सो खाऊंगा योगीने आदमी की खोपड़ी में रखके ला दिया तब उसने कहा इस कपाल के अन्न तो मैं न खाऊंगा यह सुन योगी ने ऐसा मंत्र पढ़ा यक्षनी हाथ जोड़ आ खड़ी हुई और बोली महाराज जो आज्ञा हो सो करूं योगी ने कहा इस विप्रको भोजन खिला सब प्रकारके इतनी सुन उसने अच्छा सा मंदिर बना कर उसमें सब सुखके सामान रखके फिर आई और उसे अपने साथ लेगई और अच्छे सन्मानके साथ एक चौकी पर बिठाय भांति २ के व्यंजन और पकवान थाल भर २ उसके रूबरू रख दिए और चंदन गुलाबदान इतरदान सब खुशबू यो गरज खाके उठे तब सब वस्त्र सुगंध में बसा कर पहिराये पान खवा चंदन घिस बदन में लगा कर और अच्छे सुगंधके फूलोंके हार माला पहिराए

र का क्या भरोसा है इसे बहुतेरा पवित्र कीजे पर पवित्र नहीं होता जिस शरीर में मल के सोते नित बहें वह क्योंकर शुद्ध हो इतना कह फिर बोला किसके मा बाप किसकी जोरू किसकी बहू किसका इस संसार की यही रीति है कितने आये कितने चले गये यह मोक्ष के करने वाले अग्नि को ईश्वर जानते हैं सो प्रतिमा कर भगवान को मानते हैं योगी लोग अपने घट में ही हरि मानते हैं गृहस्थी धर्म को मैं कभी न करूंगा बल्कि योगी लोगों का अभ्यास करूंगा इतनी बात कह उसने घर से बिदा ली योगी के पास जा बैठा आसन में बैठ मंत्र साधा पर पद्मिनी न आई तब योगी ने कहा विद्या तुझे न आई फिर उसने कहा महाराज न आई इतनी कथा कह बेताल बोला कि ऐ राजा कहो किस कारण उसे विद्या न आई फिर राजा ने कहा कि साधक दुचित्त हुआ एक मन होके मंत्र सिद्ध करता तो कार्य सिद्ध होजाता और शास्त्र में ऐसा कहा है जो दान के हीन हैं तिन की कीर्ति नहीं होती और जो सत्य के हीन हैं उन्हें लक्ष्मी नहीं मिलती जो ध्यान के हीन हैं तिन्हें ईश्वर नहीं मिलता यह सुन बेताल ने कहा जो साधक मंत्र करने के लिये आसन में बैठा वह कैसे दुचित्त हुआ राजा ने कहा मंत्र साधने के वक्त जब वह कुटुम्ब के मिलने को गया उस समय योगी ने क्रोध कर अपने जी में कहा ऐसे साधक को क्यों विद्या मैंने सिखाई इस से उसे विद्या न आई ऐसा लिखा है कि मनुष्य कितना ही पराक्रम करे पर भाग्य का लिखा होता है यह सुन कर बेताल उसी पेड़ में जा लटका राजा बांध ले चला

अठारहवीं कहानी

बेताल बोला ऐ राजा कुंभलपुर नाम नगर वहां का राजा सुदक्षी उस नगर धनपती नाम सेठ भी रहता उसकी बेटी का नाम

गड़ीहै तू जाके ले यह कह चोरकी जान निकल गई यह घरको चली वहां जाके कुछ थोड़ीसी अशर्फ़ी ले अपने मा बाप के पास आई सब वृत्तांत कहा उनको साथ ले अपने स्वामी के डेरे गई व हां एक बड़ीसी हवेली बनवा रहने लगी और वह लड़की दिन व दिन बढ़ने लगी और वह जवान और योवन वती हुई तब एक दिन सखी को लेके कोठे पर खड़ी बाट निहारती थी कि इतने में एक जवान गली सें निकला और यह उसे देख काम के वस हुई और सखी से बोली की इस जवान को मेरी मांके पास ले आ वह उस्को उस्की मांके पास ले गई वह उसे देख के बोली कि ऐ ब्राह्मण मेरी बेटी जवान है जो इसके पास रहेगा तो मैं तुझे सौ अशर्फ़ी पुत्रके निमित्त दूंगी यह सुन ब्राह्मण बोला रहूंगा इतने में शाम होगई यहां रह भोजन किया मसल है कि भोग आठ प्रकारका है १ स्नान २ खाने ३ वस्त्र ४ गीत ५ पान ६ सुगंध ७।८ आभूषण सब यहां मौजूद हैं गरज़ जब पहिर रात गई तब रंग महल में जा उस्के साथ रात आनन्द में काटी जब भोर हुआ तब वह अपने घर गया वह उठके अपनी सखियों में आई तब उन से एक ने पूछा कि कहो दोस्त के साथ कैसी रैन की उसने कहा जब मैं उस्के पास बैठी थी मेरे मनमें धड़का सा हुआ जबकि उसने मुसकुरा कर मेरा हाथ पकरा मैं उस्के वस होगई मुझे खबर नहीं फिर क्या हुआ ऐसे कहा है नामी रहतरमा तीजे चतुर सरदार पांचवे सखी छठे गुणवान सतावें स्त्री रक्षक हो ऐसे पुरुषको नारी इस जन्म में क्या उस जन्म नहीं मिलती हासिल यह है कि रात इस से गर्भ रहा जब बेटा पैदा हुआ तब छठीकी रातको उस्की मांने स्वप्न में क्या देखा कि एक योगी जिस्के सिर पर जटा माथे पर चांद उज्जल भभूत मले जनेऊ पहिने मुंड-

की रीति से नाम करो कौरंगो यह सुन दीवान को राजाने आज्ञा दी जो यह कहें सो करो राजाके पुत्र होने की ड्योढ़ी फिर बादी यहसुन मंगला मुखी हाज़िर हुईं घर २ से बधाई आने लगी रानीके मंदिर में आनंद मंगल होने लगा खुशीके बाजे बजने लगे राजा रानी लड़के को गोद मेंले चौक पर आ बैठे ब्राह्मण वेद पढ़ने लगे रक ज्योतिषीने घड़ी लग्न मुहूर्त साध हरदत्त नाम रक्खा फिर वह दिन २ बढ़ने लगा निदान नौवर्ष की उम्र में ६ शास्त्र १४ विद्या पढ़ पंडित हुआ नारायण की करनी कि मां बाप उसके मरगये फिर वह राज गद्दी पर बैठा और धर्म राज करने लगा कई वर्ष के बाद वह राजा मनमें चिंता करने लगा कि मैंने मांबापके जन्म लेके उनके निमित्त किया मसल है जो दयावान है जो दयामैन हैं वे सब पर दया करते और उनको बैकुंठ होता है जिनका मन शुद्ध न हो तिनका दान पुन्य जपतप तीर्थ करना शास्त्र सुनना सब वृथा है और पितर उनके निरास जाते हैं यह बात राजाने सोच विचार कि अब पितृ कर्म किया चाहिये फिर राजा हरदत्त गया जाकर अपने पितरों का नाम ले फल्गू नदी के किनारे पिंड देने गये कि नदी में से तीनों के हाथ तीन निकले यह देख अपने दिल में घबराया कि मैं किसे दूं इतनी कथा कह बैताल बोला कि हे राजा कि उन तीनों में किसको पिंड योग्य था तब राजाने कहा चोर को फिर बैताल ने कहा क्यों तब राजाने कहा ब्राह्मण का बीज तो मोल लिया गया और हजार अशर्फी लेके राजाने पाला हुआ था रा इन दोनों को पिंड का अधिकार न हुआ इतनी बात सुनते ही बैताल वहीं जा लटका राजा बांध कंधे पर रख ले चला ॥

उन्नीसवीं कहानी

बैताल बोला हे राजा चित्रकूट नाम नगर है तहां रूपदत्त नाम

सम धर्म और ना अपने धर्म में सावधान हैं और धन गुण विद्या यश प्रभुता पाय अभिमान करते हैं और जो अपनी स्त्री के दुख दया को सत्यावाद हैं और अंतकाल मुक्ति गति पाते हैं और जब धारी वस्त्र हीन निरायुध को हनते हैं वे लोग अंत समय उन्को नर्क प्राप्त करके भोगते हैं और जो राजा रैयत को दंड नहीं देता वह राजा भी नर्क भोग करता है ऐसा शास्त्र में लिखा है यह सुन राजा ने कहा आजतक जो महानादानी में जो पाप किया फिर ईश्वर ने चहा तो कभी न करूंगा राजा के यह कहने से मुनि प्रसन्य हो बोले तू कर्म से सो हूं तुझ से बहुत प्रसन्न हूआ तब राजा ने कहा महाराज जो तुम मुझसे प्रसन्य हुए तो अपनी कन्या मुझे दो यह सुन मुनि ने अपनी पुत्री का गंधर्व विवाह कर दिया राजा के साथ और अपने स्थान को गया राजा ऋषिकन्या को ले अपने नगर की तर्फ को चला कि रास्ते में करीब आधी दूर के सूर्य अस्त हुआ और चन्द्रमा का उदय हूआ तब राजा ने एक पेड़ घनासा देख उसके नीचे उतर घोड़ा उसकी जड़ से बांध जीन पोश बिछा दोनों सो रहे फिर दो पहर रात के बक्त एक राक्षस ने आ राजा को जगा के कहा हे राजा में तेरी स्त्री को खाऊं नहीं जो तू सात वर्ष के ब्राह्मण के लड़के का सर अपने हाथ से काट मुझे दे तो मैं न खाऊं राजा ने कहा ऐसा ही मैं करूंगा पर आज के सातवें दिन तू मेरे नगर में आना मैं दूंगा इसतरह राजा को बचनबन्द कर राक्षस अपने घर गया और राजा भी भोर भये अपने महलों में दाखिल हुआ और राजा ने मंत्री से सब वृत्तांत कहा आप किसी बात की चिंता न कीजिये और भगवान सब भली भांति रक्षा करेंगे फिर इतना कह सवा मन सोने का पुतला बनवा उसमें जवाहिर जड़वा एक छकड़े पर रख चौराहे पर खड़ा करके उसके रखवालों से कहा जो कोई इसे देखने को आवे

बीसवीं कहानी २०

वैताल बोला रे राजा विशालपुर नाम एक नगर है वहां के राजा
का नाम विपलेश्वर वहां एक वैश्य उस्का नाम अर्थदत्त ताकी
बेटी का नाम अनंगमंजरी ब्याही उसको कमलपुर के कुम्भीवणि
ये से करदी थी कुछ दिन बाद समुद्र पार वनियां बनिज को गया
था जब वह जवान हुई तब एक दिन अपने चौबारे में खड़ी रास्ते
का तमाशा देखती थी कि इतने में एक बम्नेटा कमलाकर ना
म चला आता था इन दोनों की चार नजरें हुईं देखते ही मोहित
होगया फिर घड़ी बाद संभल बम्नेटा विरह से व्याकुल हो अ
पने घर गया वहां वह भी उस्की जुदाई से बेचैन थी इतने में सखी
ने उठाया पर इसे अपनी कुछ सुध न थी फिर सखी ने गुलाब छि
ड़का खुशबू सुंघाई कि इस्में उसे होश हुआ वह बोली रे कामदेव
महादेव ने तुझे जलाकर भस्म किया तिस्पर भी तू नहीं चूकता
बिन अपराध दुख देता है यह बातें करती थी कि शाम हुई चंद्र नज़
र आया चांदनी की तरफ़ देखके बोली रे चंद्रमा सुनते हैं तुझमें
अमृत है सो आज मेरे लिये तू भी विष बर्षाने लगा फिर सखी से
कहा यहां से मुझे उठाले चल मैं चांदनी में जलती हूं वह उसे चौबा
में लेगई फिर कहा तुझे ऐसी बातें करते लाज नहीं आती तब उ
सने कहा रे सखी मैं जानती हूं पर विरह की आग से जलती हूं बावि
क्षा नजर आता है सखी बोली धीरज बांध तेरा सब दुख दूर करूंगी
यह कह घर गई इसने कहा कि इस देह को तजूं तो फिर जन्म ले
कर सुख भोगा करूं यह अपने दिल में सोच अपने गले में फांसी
डाल करके चाहा कि खैंचूं तब सखी ने निकाली और कहने लगी कि
रे सखी जीने से तो सब कुछ है और मरने से क्या लाभ होगा वह
बोली ऐसा दुख पाने से मरना बेहतर है सखी ने कहा एक घड़ी ठहर

वेतालबोला ऐ राजा अल घल नास एक नगर है वहांका वर्द्धमान
नाम राजा उस्के नगरमें विद्या खान नाम ब्राह्मण उस्के चार बेटे
एक ज्वारी दूसरे रंडीबाज तीसरा छिनला चौथा नास्तिक एक
दिन वह ब्राह्मण अपने बेटोंको समझाने लगा कि जो कोई जु
वा खेलेगा उस्के घरमें लक्ष्मी नहीं रहती यह सुनके ज्वारी
बहुत दिक हुआ फिर कहा राजनीति में ऐसा लिखा है कि ज्वा
रीके नाक काट देश निकाला दे इसलिये कि मनुष्य जुवा न खे
ले ज्वारी के ज्वारी घरमें हो तोभी घरमें न जाय क्योंकि नहीं मा
लूम किस वक्त हारदे और जो वेश्या के चित्रोंपर मोहित हो सो
अपने जीमें दुख बिसारते हैं और वेश्याके वसहो सर्वस अपना दे
अन्तको चोरी करते हैं और ऐसा कहा है जो अनारी आदमी के म
नमें एक घड़ीको मोहले एभी ज्ञानी नारीसे दूर रहते हैं अज्ञा
नी उस्की प्रिती कर अपना सत शील यश धर्म सब गमाते हैं और
उस्को अपने गुरूका उपदेश भला नहीं लगता ऐसे कहा है कि जि
सने अपनी लाज खोई तो दूसरेकी हुरमत लेते क्या डरता है और
मसल है कि जो बिलैया अपने बच्चोंको खाता है सो चूहेको कब
छोड़ेगा फिर कहने लगा कि जिन्होंने बालकपनमें विद्या न पढ़ी
और जवानीमें कामसे आतुर होके गर्भमें रहे सो वृद्धकालमें पछ
ताकर हिरसकी आगिनमें जलते हैं तब यह बात उन चारोंने सुन
आपसमें विचारा कि विद्याहीन पुरुषसे मरनाही भला है अब
चाहिये कि विदेशमें जाके विद्या पढ़ें यह मनमें ठानके एक नगरको
गये कितनी मुद्दतके बाद पढ़के पंडित हो अपने घरको चले राह
में देखते क्या हैं कि एक कंजर मरे शेरकी हाड़ चमड़ा सुदा गठ
री बांधा चाहे है कि लेजावें इतनेमें उन चारोंने आपसमें कहा कि
अपनी २ विद्या आजमावें यह ठहरा कि फिर उसी समय एकने उ

के मोह हे भांति के पाखंड ब्रह्माने रचे परन्तु बुद्धिमान इनसे बचें आसा तृष्णा को मार सिर मुड़ा हाथमें दंड कमंडल ले काम क्रोध को मार योगी हो नंगे पांव तीर्थ में फिरते हैं सो मोक्ष पाते हैं और यह संसार सुपने की तरह है इस्में किसी को खुशी किसी को ग़म केले के नामके मानिन्द संसार है इस्में सार नहीं धन योवन विद्या जो गर्भ करते हैं वे अज्ञान हैं और जो योगी हो कमंडल हाथमें लेकर द्वार द्वार भीख मांग घी दूध चीनी से अपने शरीर को पुष्ट करके काम आतुर स्त्री से भोग करे हैं सो अपना योग खोते हैं इतना कह वैताल बोला जब उसने तीर्थ यात्रा की कुटुम्बसे आज्ञा ली तो रे राजा किस कारण वह रोया और किस कारण हंसा तब राजा ने कहा बालक पनका मां बापका प्यार जवानी का सुख पाकर और इतने दिनों उस्के कहने मोह से रोया अपनी विद्यासे कई वार काया में बैठ हंसा खुशीसे बोला· तब बैताल वहीं गालका राजाने

२३ तेईसवीं कहानी

बैताल बोला रे राजा धर्मपुर नगरका धर्मध्वज राजा उस्के नगर में गोविंद नाम ब्राह्मण ४ वेद ६ शास्त्र जानने वाला और धर्म कर्म में सावधान और हरिदत्त और सोमदत्त ब्रह्मदत्त यज्ञदत्त उस्के ४ बेटे पंडित चतुर अपने पिताकी आज्ञा में रहते कितने दिनों पीछे उस का बड़ा बेटा मरगया तो उस्के दुखसे मरने लगा तबतो राजा का पुरोहित विष्णुशर्मा उसे समझाने लगा कि मनुष्य जब मां के गर्भ से आता है तो पहिले दुख पाता है दूसरे जवानी में कामके वश हो स्त्री के वियोग में रहता है कि वृद्ध हो शरीर निर्बल होने से दुख पाते हैं इस संसार में तो केवल दुखही है और सुख थोड़ा है और संसार पापका मूल है इसी से अंतकाल में दुख प्राप्त होते हैं पाप के प्रभाव से जो कोई दरख्तकी फुनगी पर लटका या पहाड़ की

चोटी पर जा बैठे या पानी में रहे या पिंजरे में घुसरहे या पाता
ल में जा छिपे तो भी काल नहीं छोड़ता पंडित मूर्ख धनवान
ज्ञानी अज्ञानी बलवान निर्बल कैसाही कोई होवे पर यह सर्व
भक्षी काल किसी को नहीं छोड़ता तमाम सौ वर्ष की मनुष्य
की आर्बल तिस्में से ले अपनी रात में गाती है और आधी
की आर्बल और वृद्ध अवस्था में शेष जो रही सो वाद वियोग
शोक में गुज़रती जो जो पानी की तरंग से चंचल इस्से मनु
ष्य को सुख कहां अब कलियुग के समय सत्यवादी मनुष्य
दुर्लभ हैं दिन बदिन देश उजड़ते हैं राजा लोभी होते हैं प्रथ
वी मंद फल देती है चोर दुराचारी प्रथ्वी में उपाधि करते हैं
धर्म तप संसार में थोड़ा रहा है राजा कुटिल ब्राह्मण स्त्री के
वस हुए स्त्री चंचल पिता की निन्दा पुत्र करने लगा मित्र श
त्रुता मामा कृष्ण पिता अर्जुन अभिमन्यु को काल ने न छोड़ा
जब मनुष्य को यम लेजाता है लक्ष्मी उस्के घर में रहती है और
मां बाप जोरू पुत्र भाई बंधु किसी काम नहीं आता भलाई
बुराई पाप पुन्य ही साथ जाता है और कुनबे के लोग उसे मरघ
ट में ले जा जलाते हैं इधर देखो पिता न हो रात कि दिन आता है
इधर चंद्र का अस्त उधर सूर्य्य का निकलना ऐसे जवानी जाती है
बुढ़ापा आता है इसी तरह काल बीता चला जाता है पर यह देख
के भी मनुष्य को ज्ञान नहीं होता है और देखो सत्युग में मानधा
ता ने कैसा राज किया जिसने धर्म के यश से सारी प्रथ्वी को छा
दिया और त्रेता में राजा रामचंद्र ने समुद्र में पुल बांध लंका का ग
ढ तोड़ रावण को मारा द्वापर में युधिष्ठर ने ऐसा राज किया कि नि
स्का यश अबतक लोग गाते हैं पर उस्को भी न छोड़ा आकाश में
पक्षी समुद्र के रहने वाले जीव समें पाय बाभी आपस मे मर रहते हैं

तिसकी स्त्री का नाम सोमदत्ती वह अति रूपवती थी ब्राह्मण
यत्न करने लगा इससे उसकी स्त्री के लड़का हुआ जब वह पांच
वर्ष का हुआ तब पिता उसको शास्त्र पढ़ाने लगा वह १२ वर्ष की
उम्र में सब शास्त्र पढ़ गया पंडित हुआ तब अपने पिता की से
वा में हरदम रहता कितने दिनों के बाद वह लड़का मर गया उ
सके शोक में माता पिता चिल्ला २ कर रोने लगे यह खबर सुन
सब कुनबे के लोगोंने अर्थी में रख कर मरघट में लेगये वहां
जा उसे देख २ कर आपस में कहने लगे कि देखो मरेहुये पर भी
सुन्दर लगता है इसी प्रकार से बातें करते थे और चिता चुनते थे
कि वहां एक योगी बैठा तपस्या करता था वह बात अपने जी में
बिचारने लगा कि मेरा शरीर अति वृद्ध हुआ जो इस लड़के की
देह में बैठ जाऊं यह सोंच ऐसाही किया लड़का उठ बैठा जैसे सो
ते से उठता है यह तमाशा देख सब लोग बड़े अचम्भे में होगये
तब उसके बापने यह आश्चर्य देखा तो बैरागी आया पहिले हंसा
फिर रोया यह कह बैताल बोला हे राजा वह क्यों हंसा और क्यों
रोया तब राजा ने कहा योगी को इसके शरीर में जाते देखा इसवि
द्या को देख कर हंसा और निज शरीर के छोड़ने के मोह से रोया कि
मुझ को भी शरीर छोड़ना पड़ेगा यह सुनकर बैताल फिर उसी
पेड़ पर जा लटका राजा भी जा गठरी बांध कांधे पर रख ले चला

पच्चीसवीं कहानी २५

बैताल बोला दक्षिण दिशा में धर्मपुर नाम एक नगर है वहां
के राजा का नाम महाबल उसी देश पर एक राजा सेना ले चढ़
आया उसका नगर आ घेरा कितने दिन लड़ता रहा जब उसकी
सेना मिलगई कुछ कट गई तब लाचार होकर रात के समय
राजा और रानी कन्या समेत जंगल को निकल गया तब कई

नगर में ले आया फिर उसको नहलवा धुलवा अच्छे वस्त्र
चाहता है इस लिये मैं तुझे समझाता हूं कि जब वह पूजा कर चु
केगा तब तुझसे कहेगा कि राजा मुझे दंडवत कर तब तू कहियो
कि मैं सब राजों का राजा हूं सब राजा मुझे आनकर दंडवत करते
हैं मैंने आज तक किसी को दंडवत नहीं की और मैं नहीं जानता
आप गुरु हैं कृपा कर बता दीजे तो मैं करूं जब दंडवत करे तो ऐ
सा खांडा मारना कि सिर जुदा होजाय तब तू अखंड राज करेगा
इतनी बात कह राजा को चिता बैताल उस मुर्दे के कालिबसे नि
कल चला गया- और कुछ रात रहे वह मुर्दा ले राजाने योगीके
आगे रख दिया योगी ने उसको देख खुश हो राजा की बहुत बड़ा
ई की फिर मंत्र पढ़ उस मुर्दे को जिला होमकर बलिदिया और द
क्षिण की तर्फ बैठ जितना कुछ वहां सामान किया था सो अप
ने देवता को चढ़ा दिया और पान फूल धूप दीप नैवेद्य दे पूजाक
र राजा से कहा कि तू दंडवत कर तेरा तेज प्रताप होगा अष्ट सि
द्धि नौनिद्धि तेरे घरमें रहेंगी यह सुन राजाने बैताल की बात या
द कर हाथ जोड़ निपट आधीनता से कहा कि महाराज मैं प्रणा
म करना नहीं जानता पर आप गुरु हैं जो कृपा कर मुझे सि
खाइये तो मैं करूं यह योगीने ज्योंही दंडवत करने को सिर झु
काया त्योंही राजाने एक खड्ग ऐसा मारा कि सिर जुदा होगया औ
र बैताल ने आन फूलोंका मेंह बर्षाया ऐसा कहा है कि जो अ
पने तईं मारा चाहे उसके मारने में अधर्म नहीं है उस समय रा
जा के साहस को देख कर राजा इन्द्र समेत सब देवता अपने
अपने विमानों के ऊपर सवार होहोकर वहां आनकर जय
जय कार करने लगे राजा इन्द्र ने प्रसन्न होकर राजा वीरवि
क्रमा जीत से कहा कि हे राजा वर मांग तब राजाने कहा कि

शुकबहत्तरी

अर्थात्

शुक और प्रभावतीका सम्बाद

जिसमें

७२ कथा बुद्धिमान् जनों के विनोदार्थ
अति मनोहर ब्रजभाषा में और
उचित २ स्थानोंपर सामायिक
श्लोक रचित हैं ॥

पांचवींबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
जून सन् १८९४ ई० ॥

श्लोक पीठसत्कृतिक्रिया॥ श्लो०॥ अमोघंवासरेविद्युत् अमोघंनिशिगर्जितं॥ अमोघाचसतांवाणी अमोघं सिद्धदर्शनं। ऐसा ब्राह्मण ने कहा तब सिद्ध ने ध्यान किया उस वक्त एकसुवा एक सारिका सिद्ध की दृष्टि आई उन दोनों को जन्मान्तर की बातें जानबे में आई कि ये दोऊगंधर्व हैं कोई ऋषीश्वर के शाप सों सुवा कीयोनिपाईहैऔरऋषीश्वरनेअनुग्रह किया जोपृथ्वीके विषे मनुष्य भाषाकिया प्रभावती आगे रात्रिको उपदेशकरै प्रात वहसुवा गन्धमादनपर्वतपर जायगा तब शरीरको छोड़ैगा फिरगन्धर्वहोजायगा अब शुकअपना शरीरबेचे मुहर ५०० को तौ या ब्राह्मणकोदिखावै तौ पापतेछूटै ऐसेसुवा सुवटीको देवऋषि ने कहा कि अरे शुक तू इसब्राह्मणकेसंगजा और मुहरोंकादानकर तेरा भलाहोगा इतना शुकसुन हाथपरआबैठा तब ऋषिने उस ब्राह्मणसेकहा अय ब्राह्मण तू इसेलेजा जो कोई तुझे५००मुहरेंदे उसेदीजो मेरीआज्ञासेतेराभलाहोगा ऐसेकहा तो ब्राह्मण सुवाको ले आज्ञामांग चला और ठौरहोआयो फिरशुकनेकथावार्त्ता बहुतकिया ऐसीवार्त्ता को करतेविक्रमब्राह्मणके घर चन्द्रकलानगरी में आया हाथमेंपिंजराको लियेहुये श्रीदत्तकीहाटकेआगे विश्राम किया तापीछे बहुतशुक सुन्दरश्लोक कहतभयोअपूर्व वार्त्ता हित उपदेश शास्त्र पुराण वेद कला ज्ञान विज्ञान कहनेलगा तबवह दतधा शुककीकथासुनकरबहुतखुश हुआ औरयहशोचा कि जो ब्राह्मण मुझेयहसुवादेतौमें मांगू और जोद्रव्यचाहैसोदूं यह विचारब्राह्मणसेबोला

एकचम्पावतीनगरीथी वहांसत्यशर्मा ब्राह्मण रहता था उसकीभार्या धर्म्मशीलारही जिसका बेटा देवशर्म्मा बिद्यावन्त और गुणवन्तथा परन्तु माता पिताकी सेवा न करताथा देशांतरों को गया बिद्या बहुत पढ़ी महा-तपस्वीहुआ तीर्थयात्रा बहुतकिया एकदिन तीर्थोंको जातेथे कि राहमें धूपलगी तब सिरसकेनीचेखड़ेहुयेउस वृक्षकेऊपरबगुलीबगुलाबैठेथे सोवहबगुलीउसतपस्वी के माथेपरबीटकिया तब ब्राह्मणको क्रोधहुआ देखतेही दोनोंभस्महुये तब ब्राह्मणआगे चला मनमेंसुखभयाकि तपस्यापूरीहुई यह बिचारकेदेशकोगयाएकब्राह्मणकेघर जाकेकहाभिक्षादेहि यहबात ब्राह्मणकी स्त्रीनेसुनी भिक्षा लेचली उसवक्तपतिने जलमांगा वहपतिव्रताथी इससे जललेकेपतिकोदिया पीछेभिक्षाले ब्राह्मणको देने लगी तबब्राह्मणने क्रोधकिया कि मैं शापदेदूंगा तब ब्राह्मणी बोली रेतपस्वी मैंबगुलीनहींहूं जोअपनी तपस्यादिखावै ऐसाकह बहुत निर्भत्सना किया तब ब्राह्मणने जाना कि मैं जोपापकिया इससेप्रसिद्धहुआ यहजानलज्जितहुआ भिक्षालिया तबब्राह्मणीनेकहा तूपापीहै तुझे तपस्याका फलनहीं तब ब्राह्मणी फिर बोली तू बाराणसीजा तहां एकधर्मव्याधीनाम कसाईरहताहै जा तू तबवह ज्ञानउ-पदेशकरेगा सबबात तू निर्भय उसको बतावैगा यह सुन ब्राह्मणवहांगया धर्मव्याधी सों खबरकिया वासों मिलो देखा सो मांसबेचताहै और हाथलोहूमें भरे हैं साक्षात् यमराजकारूप है देखकर राम राम करनेलगा और यह कहा कि ब्राह्मणीने तुम्हारे पास भेजाहै मुझे धर्म उप-

श्रममें रहनेलगा और मातापिताकी सेवा ईश्वरसमान करनेलगा यहसुन मदनसेनबोला कि माता पिताकहैंगे सो करूंगा बचन न टालूंगा इसतरह शुक के कहने से पिताकेपासगया नमस्कारकी पिताने बहुतआदरकिया सुतकोदेख बहुतखुशहुआ हरदत्तबोला हेशुक जिसके सत्पुत्रहों तिसको चिन्ता किसबातकीहै इतनासुन पुत्र बोला हे पिता तुमकोचिन्ता किसबातकीहै सोकहोतब हरदत्त ने कहा कि राजा विक्रमसेनकी बेटीका ब्याह है तासेंराजानेआज्ञादीहै किबारहआभूषण व वस्त्रदेशांतर से लेआवो आजसे उन्नासीदिन ब्याहकेहैं सो चिन्ताहै द्वीपांतरसे लाना अपने समान राजा कोईनहीं कैसाकरैं जिससे मैंवृद्धहुआ यहबातसुनकर पुनि विनतीकिया कि जोमुझे आज्ञाकरो मैं सबकरूंगा तबसेठ निहायतखुश हुआ इसके बाद पिता पुत्र राजा के पासगये राजा से विनयकिया कि हमकोआज्ञादीजे तबराजाबोलाकिसेठ तुम रत्न मोती माणिक द्वीपांतरसे लेआओ आजसेउ-न्नासीदिनव्याहके हैं तामें पांचसातरोज पहले आजाना तब मदनसेननेकहा जो आज्ञाहुईहै सोकरैंगे और मेरी इच्छाहै रत्नउत्तमलाऊंगा तबराजाकासेवक औरराजा ने दोउनको शिरपावदी उन्होंने बहुत दिलासा दिया व बहुत द्रव्य जितना मांगा तितनादिया घोड़ा रथ पया-देबहुतदिये आज्ञादी कि सुबहहोतेहीसिद्धकरो विलंब मतकरो यह आज्ञाहुई तब सेठ मुजराकरि घरआया लेकिन पुत्रके सनेह में चिन्तावानहुआ तिसपीछेमदन-सेन अपनेघरआया प्रभावतीसेकहा मैं परदेशचलूंगा

को जातेभये जाकररत्नादिकवस्त्रादिकलिये और जो २ राजाने आज्ञाकिया था सबलिये और इधरघरमें जो कौतुकहुआ सो सुनो राजाबिक्रमसेन का प्रधान जयसेन तिसकाबेटाविजयसेन वहबड़ा सुलक्षण औसुभग था और बहुत गुणवान् शीलवान् कामदेवकी मूर्ति विद्यावान् था एकदिन घोड़ेपरचढ़ महादेवके दर्शनको चला उसेजो देखे सो मोहित होजावै मध्याह्नके समय निकला हरदत्तसेनके महलकेनीचे खड़ाहुआ उसवक्त प्रभावतीकी नज़रपड़ी देखतेही बेहालहुई कामके वश हुई शिरके बाल नहाये सुखातीथी लटका पानी उसके ऊपरपड़ा तोबिजयसेनभी ऊपरदेखनेलगा और प्रभावतीपर नज़रपड़ी तो देखतेही वहभी कामकरके पीड़ित हुआ प्रभावतीकाम का तीरमार चलीगई और विजयसेनभी इसकीचोटखाय चलागया और दोनोंकेचित्तमें अतियादगारीकी लगनलगगई तब बिरहके दुःखसे बिजयसेनने एकश्लोकपढ़ा॥ किंकरोमिक्कगच्छामिरामो नास्तिमहीतले।कांताविरहजंदुःखमेकोजानातिराघवः॥ इसीतरह फेरफेर पढ़ता और जो चीज़देखता उसमें प्रभावतीकी सूरत देखता ऐसा वश्यभया कि कहीं चित्तनहीं लगता और किसी से कुछ नहीं बोलता और दिलमें बिचारता कि रुपये औ वस्त्र जो चाहै सो ले प्रभावतीकी मुलाक़ात कोईकरादेवै ऐसारातदिन दिल में शोचता और फिकरकरता और प्रभावतीभी इसतरहजीमें चाहती और रातदिन शोचमेंरहती और विरहकेबियोगमेंरहती श्लोकः॥ सुवेषपुरुषंदृष्ट्वापितरंभ्रात-

और तेरीमुरादभी पूरीहोगी जब ऐसा कहा तब प्रभा-
वती निहायत खुशहुई और यहकहा मुझसे यह काम
पूराहोगा तब ऐसा सारिकाने सुना तो बोली इसमालिन
को घरसे जल्दनिकालो बड़ीखराबहै तबसुवाबोलाआ-
दमीकेपास आदमीआतेहैं तू कौनहै तूकाहेको बकतीहै
तब सारिकाने मालिनका बहुत तिरस्कार किया मदन-
सेनके वचनको प्रतिपाला परन्तु जानवर है इससे कौन
माने तब शुक बिचारके बोला कि शारदा इसकेपास मा-
लिन और नायन बहुत आवती हैं इसमें चिन्तानहीं सा-
रिका तू समझती नहीं तब सारिकाने कहा तू खुशामदी
मनराखनेकी बातें करता है मैं तुझसे सच कहतीहूं फिर
सारिका बोली अब तुम चुपरहो तब मालिन बोली प्र-
भावती मनमें खुशीरक्खो जो आज्ञाकरोगी सो करूंगी
शोकन करो फूलपहिरो शृंगारकरो मनोरथपूराकरो और
मदनसेनकी चिन्ता छोड़दो हम राजाकी दासी हैं कभी
घर कभीबाहर हमारा यही काम है तेरी आज्ञामें हूं जो
कहैगी सो करूंगी यह जब कहा तो दिलगीरी दूरभई
और स्नानकर गहना पहर फूलपहर और सोलहशृं-
गारकर गद्दीपर बैठी और मोहनी आगे बैठी और यहक
हनेलगी कि आजमुझेबड़ी खुशीहुई तबप्रभावती बोली
कि तुझे किसबातका दुःखहै तब मालिनने कहा तुम अ-
पना दुःखकहो तो मैं अपनाभी दुःखकहूं प्रभावतीकी स-
खीबोली कि।दोहा॥स्वामी तो परदेशहै हियउपजतरस
रंग॥जाकी चाहलगी हिये सोदुर्लभ सखिसंग ॥ श्लो०
दूलवजनागंरागलज्जा कररुहपखसांनप्याप्रयसहत्रि

मोहनीको देखतेही खुशहुई किजो चाहतीथी सो बात हुई इतनेमें देखकर प्रभावतीबोली हे मालिन आई मैं तेरीबाट देखरहीथी मालिनबोली मैंतो तेरीदासीहूँतेरा हुक्मबजाया लेचल अबदेरमतकर इतनासुन परपुरुष से बिलासकरनेचली और दूतीकाहाथपकड़लिया और चौकमेंआई और चाहै कि जावें तब सारिका बोली कि प्रभावती तू वहां जातीहै यहदूती है इसका कान नाक काटनाचाहिये औरपरपुरुषकेपासजानानचाहियेक्योंकि मदनसेन क्या तुझे कहगयाथा और हमसे क्या कहरक्खाहै सो तू भूलगई और मैं मदनसेनकेआनेपर समझूंगी तुझेउससे छुड़वादूंगी शादीअपनी औरकरलेगा उसवक्ततुझे बहुतरंजहोवेगा इससे मेरी नसीहत मान तू बड़ेघरकीबेटी है इतनासुन प्रभावती बोली अरीरांड़ कमसमझ तू मुझे क्या सिखलावैहै देख शुक तो नहीं बोला तू मराचाहतीहै तब मैनाबोली मैंतेरीबेहतरीको कहती हूँ और सच्चकहतीहूँ मैं तुझे जानेनदूंगी तब तो प्रभावतीको गुस्साआया पिंजरे में हाथडाल मैना को पकड़करमारडाला तबचली तो कुत्तानेकान फड़फड़ाया उसेभी लातमारी उससमयमें बिलाई आपड़ी फिर उसेभी लातमारी प्रभावतीने क्रोधकिया शकुन अच्छा नहींहुआ उसवक्त शुकको चिन्ताभई कि अगरमैं बोलूं तो जैसी सारिकाकीगतिहुई वैसीही मेरीहोगी और जो नहींबोलता तो प्रभावती निहायत कामके बशहुई मद करके अंधीहोरहीहै इसेआगापीछा दिखलाई नहींदेता श्लोकः ॥ नैवपश्यतिजन्मान्धःकामान्धोनैवपश्यति । न

बोलाकि उसवक्तबुद्धिउपजै तो जाय जैसेहरदत्तब्राह्मण की स्त्री लक्ष्मी उसकानाम उसवक्तउसको जो बुद्धि उपजी और अपनीलज्जा राखी जो ऐसीबुद्धिउपजै तो जाना परायेपुरुषपरहै नहीं तौ प्रीति परायेपुरुषसे न करै तब प्रभावती शुकसे पूंछने लगी कि लक्ष्मी कौन प्रकारसे बुद्धिकिया सोकहो तबशुकबोला जोआपजायँ और अपनाकामकरैं फिर पीछे चित्तको स्थिरकरो तब मैं तुमसे वहगतिकहौं प्रभावती ने कहा कि मुझे बड़ा आश्चर्यहुआहै तबशुककहनेलगा कि दूतीकोबड़ाआश्चर्यहुआहै दूतीको बिदाकरदेउ तब प्रभावतीने दूती को अपनेहाथकीअँगूठीदेकर बिदाकिया और यहकहा कि कलआवना चलूंगी ऐसाकह बिदाकिया और यह कहा कि आजमैं बातसुनूंगी तबदूतीनायकके पासगई अँगूठी दिखाई और कहा कि कलको आवना कहाहै तब प्रभावतीबोली शुककहो तब शुकबोला कि जारी तो यहहै जो परपुरुष सों रतिकरै और बेजारी उसका नामहै जो करके पछितावै अपनीलज्जाराखे कोईजानै नहीं तब कामसही इसबातके सुननेकी इच्छाहो तौ शृंगार उतारौ चौकीपर बैठौ एकांत मनकरौ तबमैंकहूं प्रभावती शृंगारउतार चौकीपरबैठी तब शुकने प्रथमकथाका आरंभ किया सो कहते हैं॥

अथप्रथमकथाप्रारम्भः॥

एकचन्द्रावतीनाम नगरीहै तहां भीमसेननामराजा राज्यकरताथा वहां मोहननामीसेठ रहताहै तिसकाबेटा सुधन्वाबहुतप्रवीण गुणवंतहै उसदेशमेंहरदत्तनामका-

मुकरी सो कहो तूकह अथवा तेरीदासीकहे या और कोई सखीहोय सो इसका जवाबदे तब प्रभावतीबोली हम नहीं जानतीं तुमकहो तब शुकनेकहा जोतू आजजाने काकाम न करै तौ मैं कहौं तब प्रभावतीबोली तौ न जाऊँगी तौ अब याको उत्तरसुनों जो दूती परपुरुषजान लाई तौ और तिस से उसका भर्त्ताररहा तब मन में एकबातउपजाई देखतेहीछातीमाथा पटकनेलगी बहुत अपघातकिया तब पतिने देखा अपनीस्त्री है अपघात करतीहै तबबोला अरीलक्ष्मी यहक्याकरतीहै तबलक्ष्मी बोली तू कितनामेरेआगे झूठबोलताकि मैं परस्त्रीकेबुलवानेपर बुराकाम नहीं करता यहजान तेरी परीक्षा के वास्ते दूती पठाई और तू परस्त्रीजान आयाहै सो मैंने जाना कि तू निर्बुद्धी है इस्से तेरामुख देखने योग्यनहीं यहसुन लक्ष्मीकेपायँनपरो और अपनेघरले आया शुक बोला साहूकीबहू ऐसाजवाबकर अपनेकोबचाया और तू ऐसा जोकामकरै और फिर जो लक्ष्मीकीसी बुद्धि उपजै तौ जाव नहीं तौ मतजावो यहसुन साहकी बहू उठी पलँगपर सोरही ॥ इतिप्रथम कथा ॥

अथ द्वितीय कथा प्रारम्भ ॥

अब प्रभावती फिर दूसरे दिन शामके वक्त सोरह शृङ्गारकर फलखाय दूतीकाहाथ पकड़ कहा जबचली तब शुकसेबोली हेशुक मैं परपुरुषकेसुखको जातीहूँ तब शुकबोला अच्छीबातहै परन्तु जयदेवीने जौनसी बुद्धि करी सो कीजो तब प्रभावतीने कहा सो कहो तब शुक बोला अपनामनोरथकर आवो तबकहूं सुचताईसेसुनो

एक बीरसेन पुरुष तेरी इच्छा करता है तिससे उसका मनोरथ पूराकर कहा तेरे घर आऊं तब दाईने एक उपाय बताया कि मैं अपनेघर जातीहूं तू जब सबारहोय तब मूर्च्छाखाय गिरपड़ियो काहूकी औषधसे नीकी मत होय पाछे मैं तेरेघर आऊं और जाकर बीरसेनसे खबर करूं कि तेरा मनोरथ सिद्धहोगा तेरे घर आकर तुझे लेचलूंगी और मनोरथ सिद्धकरूंगी यहकहकर कहा तू अब चिन्तामतिकरे सबेरे कामहोगा तिसकेपीछे शशिप्रभाप्रातही अकस्मात मूर्च्छितहोगिरी सबकोबड़ाशोच हुआ कि अचानक क्याहुआ सबने झाड़फूंककरवाया और दवाई भी दी मगर अच्छीनहुई तब तो गावँमेंढिढोराफेरा जो कोई शशिप्रभाको अच्छाकरै तिसकोबहुत कुछ मिलैगा जब ऐसाकहा तब दाईबोली कि मैं नीकी करूंजो मेरा कहनाकरौ तौ अच्छीहोय यह बात सुन राजासे कहा कि यशोदेवी ऐसा कहतीहै जो मेराकहना करौ तो मैं नीकीकरतीहूं यहबात सुनतेही राजानेउसे बुलाया औरफर्माया कि जो तूकहैसोकरें यशोदेवीबोली कि जो हुक्मपाऊं तौकहूं राजाबोला जोतूकहै सो मुझे कबूलहै तबदाई बोली कि जो तुम नीकीकरवाया चाहते हौ तौ मेरे घर आठदिनताईं रखने की मर्जीकरौ तौ नीकीहोय तबराजानेकहा अपने घर इसेलेजा राजाकी आज्ञापाय अपने घरलेआई बीरसेन वणिकनेमनप्रसन्न किया आठदिनतक भोगबिलास किया बाद आठदिन के शशिप्रभा अपने महलमें आई राजा देखकर बहुत खुशहुआ कुवँरभी बहुत आनन्दहुआ और देवीको बहुत

उचना कीनी अब क्या उपायकरूं तबघरके पासआया और अपने मनमें विचार करनेलगा क्याकरूं जोकाम सिद्धहो तब घरगया धूर्तने उसेदेखातौ गारीदेनेलगाकि मेरेघरतू क्यों आयाहै ऐसा कह उनदोनोंमें बड़ीलड़ाई हुई इसमें शहरकेलोग बहुतजमाहुये दोनोंकी बातेंसुन बड़ा आश्चर्यहुआ कि घर किसकाहै दोनोंके रूप एक समान हैं तब दोनों राजाकेपासगये राजाने न्यायकिया तब शुकने पूंछा कि हे प्रभावती उसधूर्त को किसतरह निकाला सो बताओ प्रभावतीने कहा मैं नहीं जानतीतू कह तब शुकबोलाआजनजावो तौकहूं प्रभावतीबोली आजनजाऊंगीतबशुकबोलाकिराजाने विमलकी दोनों स्त्रियां बुलाईं जुदा२बुलाके उनसे पूंछा कि कहोतुम्हारे बापका क्यानामहै और माताका क्यानामहै और ब्याह हुआ और घर आई तबरतिसमय विमलने तुम्हें क्या दिया तब उनदोनोंनेसबअहवाल कहा कागजमें लिख लिया विमलसे पूंछा तौ उसने भी वही कहा सब बात मिली पीछे धूर्तसे पूंछी उसकीबात एकभी नमिली तब उस धूर्तको गांवसे निकालदिया और विमलको उसकी दोनोंस्त्रियोंसमेतउसकेघरबिदाकिया वह अपनेघरआ- या हेप्रभावतीजो एक ऐसागुणहो तो जावो नहीं तौमत जावो ऐसीसुनी तब पलंगपर सोरही ॥ इतितृतीयकथा

अथचौथीकथा प्रारम्भ ॥

फिर चौथेदिन प्रभावती शृंगारकरके पर पुरुषकी रतिके वास्ते चली उसवक्त शुकसे पूंछाहे शुक मैंपराये पुरुषका सुखचाहतीहूं इससे जातीहूं शुकने कहा बहुत

रचना कीनी अब क्या उपायकरूं तबघरके पासआया और अपने मनमें विचार करनेलगा क्याकरूं जोकाम सिद्धहो तब घरगया धूर्तने उसेदेखातौ गारीदेनेलगाकि मेरेघरतू क्यों आयाहै ऐसा कह उनदोनोंमें बड़ीलड़ाई हुई इसमें शहरकेलोग बहुतजमाहुये दोनोंकी बातेंसुन बड़ा आश्चर्यहुआ कि घर किसकाहै दोनोंके रूप एक समान हैं तब दोनों राजाकेपासगये राजाने न्यायकिया तब शुकने पूंछा कि हे प्रभावती उसधूर्त को किसतरह निकाला सो बताओ प्रभावतीने कहा मैं नहीं जानतीतू कह तब शुकबोलाआजनजावो तौकहूं प्रभावतीबोली आजनजाऊंगीतबशुकबोलाकिराजाने विमलकी दोनों स्त्रियां बुलाईं जुदा२बुलाके उनसे पूंछा कि कहोतुम्हारे बापका क्यानामहै और माताका क्यानामहै और ब्याह हुआ और घर आई तबरतिसमय विमलने तुम्हें क्या दिया तब उनदोनोंनेसबअहवाल कहा कागजमें लिख लिया विमलसे पूंछा तौ उसने भी वही कहा सब बात मिली पीछे धूर्तसे पूंछी उसकीबात एकभी न मिली तब उस धूर्तको गांवसे निकालदिया और विमलको उसकी दोनोंस्त्रियोंसमेतउसकेघरबिदाकिया वह अपनेघरआ- या हेप्रभावतीजो ऐसागुणहो तो जावो नहीं तौमत जावो ऐसीसुनी तब पलंगपर सोरही ॥ इतितृतीयकथा

अथचौथीकथा प्रारम्भ ॥

फिर चौथेदिन प्रभावती शृंगारकरके पर पुरुषकी रतिके वास्ते चली उसवक्त शुकसे पूंछा हे शुक मैंपराये पुरुषका सुखचाहतीहूं इससे जातीहूं शुकने कहा बहुत

हुई मनमें बिचारकिया कि इससेभोग कीजिये क्योंकि बहुत चतुरहै उस वक्त मोहनीने बहुत मनसे कहा पान लोगे इलायचीदिया गोविन्दनेभी आदरकिया महल से उतर गोविन्दबोला कि यार तू जरा महलके पास बैठ मैं कामकरआऊं इतना कहकर गोविन्द तो गया उसवक्त विष्णु उसेमहलको लेभागा पीछेसे गोविन्दने पुकारा कि हेविष्णुदास खड़ाहो याने जवाबनदिया तब तो दौड़के आपुकारा आपुसमें बहुतलड़ाईहुई इसीतरह होते होते राजा के घरगये और पुकार किया मेरी स्त्री लियेजाताहै तब राजाके प्रधानने न्यायकिया था तब प्रभावती से शुकबोला हे प्रभावती कहो उसने क्या न्यायकिया तब प्रभावती बोली जो वहीं कही कह तब शुकबोला जो तू आजनजाय तो कहूं तब उसने कहा कि न जाऊंगी तबशुकबोला हेप्रभावती बुद्धिसेनने उस कन्या विषको बुलायके पूंछा कि जिसदिन तेरेपति गोविन्दसे संगमभयाथा उसदिन क्याभयाथा और क्या दियाथा सो सब हकीकतकह तब उसकन्याने सबबात कही सो सुनकर सब कागज़ में लिखा पीछे गोविन्दसे पूंछा उसने भी वही बातकही इनदोनों की बात ठीक मिली तब उसको धक्केदेकरनिकालदिया तब प्रधानजी ने कहा स्त्री गोविन्दकीहै और प्रधान गोविन्दसेकहने लगा कि इसस्त्रीको रक्खेगा तो मरणहोगा इससे तूइस स्त्रीकोछोड़दे किशास्त्रभी ऐसाकहताहै श्लोक॥वैद्यंपान रतंनटंकुपाठितंमूर्खंपरिव्राजकंयुद्धेकापुरुषंहयंगतरयंस्वाध्यायहीनंद्विजम् ॥ राज्यंबालनरेंद्रमंत्रिरहितंमंत्रंछला

बहुतखुशहुआ उसवक्त परमेश्वरकी मर्जीसे मच्छ हँसा तब राजाको बहुत आश्चर्यहुआ और कहा कि मृतक मच्छहै क्या कारण कि हँसा इतनीबात बिचार आधा जेंय उठखड़ाहुआ और दरबारमें आकर यहआश्चर्य सबसे पूछा कि मृतकमच्छ क्योंहँसा यानीहँसा सोकहो तब सारीसभा बोली कि महाराज यहमायाईश्वरकी है हमलोग तो यहबात जानतेनहीं जिसे आगमकीमर्महो सोजाने जबऐसा सबोंने कहा तब राजा सबबिद्या बि-शारद को बुलाया जब ब्राह्मणआया तब यह पूछा कि मच्छ हँसा सो कहो तुम्हारानाम सब बिद्याविशारदहै सो आपनानाम शार्थककरो यहसुन ब्राह्मण बोला कि महाराज यहअजानबातहै देवताओंको दुर्लभहै तिससे शास्त्रदेखकेकहेंगे आजके पाँचवेंदिन इसकाउत्तरदेवेंगे तबराजाने कहा जो पाँचवेंदिन न कहोगे तो बेइज्जत करूंगा गाँवसे निकालदूंगा तब ब्राह्मण बोला कि जो आज्ञा करोगे सो करेंगे ऐसा कहकर घर आया और निहायत शोचमान होकर शास्त्रमें देखा लेकिन इसका उत्तर न पाया तबतो मनमें दूनाशोचकिया कि अब प्र-तिष्ठागई और देशभी छूटा और देशसे न जाऊंगा तो प्राणजायगा ऐसा बिचार अन्नजलको त्यागकिया तब बेटी बालपंडिता पिताको दुःखित देख कर बोली हे पितः इतनाशोच तुम काहेको करतेहो मेरे आगे सब वृत्तान्त कहो तब ब्राह्मणने सब बात कह सुनाई और कहा कि मुझको वह उत्तर नहीं आवता तूकहै सोकरूं तब बेटीबोली कि पिता शास्त्रकी बात जोहै सो मैंने छा-

मतकर मैं सबबातमार्ककी तब उससमय बालपण्डिता नेसभामेंसबबात बिचारकरयहश्लोककहा ॥ और कहा कि मच्छयोंहंसासोसुनौश्लोक॥ रात्रीस्पृशतिनोमत्स्या नूमृगानीपमहासती। पुरुषव्यसतीराजनूहसतांसफरी ध्रुवम्॥ परिभाव्यसयाराजनूश्लोकोर्थोयंसदादही। मूढ़ आरण्ययोदेशयादिगच्छतिमापुनः २ इसतरहसे बाल-पण्डिताने दो श्लोकपढ़ि और अपनेघरगई बाद इसके सभाकेलोगोंने उनश्लोकोंकाअर्थ बिचारकिया तोराजा कामासक्तहै सो तो बात झूठीहै इसे बालपण्डितासेफिर पूछो यह विचारकर चुपहोरहे किकाल्हिपूछेंगे इसतरह प्रभावती से कहा बालपण्डिता दूसरेसे कहीथी सो फिर कहो यह सुन सोरही ॥ इतिपांचवींकथा॥

अथ छठीकथाप्रारम्भ॥

फिरछठेदिनशृंगारकर परपुरुषकेपास चलीउसवक्त शुकबोला हे प्रभावतीबालपण्डितानेराजाको कैसासम-झाया सोकहो तबप्रभावती बोली मैंतो नहींजानतीतुम कहोतबशुकबोला हेप्रभावती तूचित्तदेकरसुनजबदूसरा दिनहुआ तब राजाने बालपण्डिताको बुलाकरपूछा हे बालपण्डिता उसका अर्थकहो क्याहै तबबालपण्डिता बोलीकिराजाउसकाअर्थमतपूछो जोपूछोतोसुमंतनामा बनिक की स्त्री पद्मिनीकासा पछितायाहोगा तिससेपूछो मत तबराजानेकहापद्मिनीके पश्चात्तापकिसतरहहुआ तो कह तब बालपंडिता बोली हे महाराज चन्द्रावती नाम नगरीथी तिस नगरीका राजा चंद्रप्रभ तिसके गांव में सुमति नाम बनियां बसताथा तिसके एकस्त्री पद्मिनी

बोला प्यारी यहबात मतपूछ और जोपूछेगी तोबहुत
पछतावेगी यह सुनकर बहुत गुस्साहुई और कहा कि
कहों तो मुश्किल न कहों तो मुश्किलचाहिये॥ भवि
तव्यंभवत्येव॥ होनहारश्रमिटहै आखिरकोपति बोला
कि एकदिन लकड़ीको गया लकड़ी हाथ न आई तब
फिरते २ एकगणेशजीके मंदिरमें गया देखा तो मूरतहै
और सिंदूरलगाहै तबविचारकिया कि मूरतकाढ़केबेचूं
यह बातशोच कुल्हाड़ा उठाया था कि गणेशजीप्रसन्न
हुये और बोले कि जो बरमाँगे सोदेऊंगा तबमैंने कहा
कि जीविकादान दीजिये तब बोले कि पाँच रोटीहमेशा
लियाकर परन्तु किसी से मत कहना और जिसदिन
कहेगा उसदिनसे न दूंगा तबमैंने कराराकिया किकाहेको
कहूंगा मुझेतो मतलबसेकामहै उसीदिनसे मुझेरोटीदे-
तेहैं यहसुन दूसरेदिन सबवृत्तांत मन्दोदरीसे कहा तब
मन्दोदरीने अपनेभर्त्तारसे सबहालकहा और यहकहा
कितुमजाउ भर्त्तार कुल्हाड़ालेकर गणेशजीके पासगया
और कुल्हाड़ा उठाकरमारनेलगा तबगणेशजीबोले जो
तू कहैगा सो करूंगा इतने में वह बनियां आया और
उसके देखतेही गणेशजी ने हाथ उसका बांधकरखूब
लकड़ीसे मारा इससे उसकी स्त्रीने देखा कि देरहुईपति
नहीं आया चलकेदखूँ जाकर देखातौ बँधा है तब पूँछा
कि किसने बांधाहै तब पतिबोला मेरे बचनने बँधवाया
है जो मैंने तेरे आगेकहा तब पद्मिनीने गणेशजीकीबहुत
स्तुति करके प्रसन्नाकियातबगणेशजीबोले कि तेरेभर्त्तार
को रोटी मिलतीथीं तूने मन्दोदरीको दिया अबतेराभ-

परिचिन् मैंद्रव्यचाहूँ नहीं मैंतोअतिथिहौं आपकेदर्शन
ो अभिलाषा थी तिससे आयाहूं तब तो ब्राह्मण को
ख बहुतखुशहुये और योगबड़ा दिया और यह कहा
क पांचसौ मोहरदूँ किसीसे कहना मत और जोकिसी
ो बतावेगा तो बात जातीरहैगी और मेरा मेरे पास
ायरहैगा ऐसाकह योगबड़ादिया ब्राह्मण प्रणामकर
ागेचला राजपुरीमें गया जहां स्वर्गका नाम बेश्या
हती है उसबेश्यासे आसनाईकी और उसकेघर रहने
ागा उससे भोगक्रियाकरै और जो द्रव्यपावे उसेदेदिया
ौरे सिद्ध की आज्ञा सों द्रव्य का टोटा नथा एकदिन
श्याने बिचार किया कि यह द्रव्य कहां से लाता है
ब बिप्रसे पूछा कि तुमद्रव्य कहांसेलातेहो तब उसने
ब गति कही सुनके बिचारा कि योगबड़ा किसतरह
लीजे इसतौर बिचार अपने मनमें बातरक्खी जब
ह ब्राह्मण सूतगया तब कमरखोल लेलिया और प्र-
ात होतेही वहदेखे तो योग बड़ा नहीं तब तो बहुत
ोचकिया पीछे शहर में पुकारा कि बेश्याने मुझे लूट
िया इसतरह कहता २ राजाके द्वारपर गया और
कारा तब राजाने बेश्याकोबुलाया तबबेश्याकी माता
ोली कि श्रीमहाराज ब्राह्मण झूठाहै इसके द्रव्यकहां
आई मेरी बेटीके ऊपर आसक्त हुआ है झूठातूफान
गाताहै योग बड़ा इसकेपास न था यहबात निहायत
ुरी है ऐसाकह ब्राह्मण को झूठा किया और योगबड़ा
सी मुनीश्वर के पासगया बेश्या के पास भी न रहा
सससे महाराज आपसमझो जोमैं सांचकहूंगी तोयोगे

बिचारा कि उस पुरुषसे संकेत है तिससे मुझे छोड़दे उसके पास जाऊंगी वह देवहरामें बैठाहोगा तब दूती ने उसे छोड़दिया फिर उसस्त्रीने दूतीसे कहा कि मैंउस केपास जातीहूं तूपीछे से आगलगाकरआइयो यहकह आपतोगईऔरदूतीने घरमेंआगलगादिया औरचली गई पीछे भर्तार आया जो देखे तो जरता है तब पूंछा कि किसने आग लगाई है तब परोसिन ने कहा तेरी स्त्री आगलगागई है इतनी बात सुनकर स्त्रीको त्याग दिया और वह सुभगा देवीके मन्दिरमेंगईथीसो वाहूने तिरस्कार किया इतोभ्रष्ट ततोभ्रष्टहुई और बहुतपछ-ताई इसी तरह हेराजा अर्थ पूंछकर पछताओगे इतनी बात कह अपने घरगई प्रभावती कथा सुन सोरही ॥ इतिआठवींकथा ॥

अथ नवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर प्रभावती नवेंदिन शृंगार करके परपुरुष के पास रतिको चली उस वक्त शुकसों बोली हे शुक मैं जातीहूं तब शुकबोला अच्छीबातहै परन्तुबालपंडिता ने राजाको जवाबदिया सो सुनकर जाइयो प्रभावती बोली अच्छी बातहै कहो तब शुकने कहा कि राजाने बालपण्डितासे कहा किवह बार्ता कह तब बालपण्डि-ताने बहुतसमझाया परन्तुराजाने हठकिया औरमनमें समुझावने न आया तब पंडिता बोली जो पुष्पहास मुँह तिसकापरिवार बुलाओ वह जब हँसेगा तबउसके मुँहसे फूल गिरैगा यहबात प्रसिद्धहै तुमको मतस्यहँसे

अथ दशवीं कथा प्रारम्भ ॥

दशवें दिन प्रभावती शृंगार करके परपुरुषके पास रतिकोचली तबशुकसों बोली हेशुकमैंजातीहूं तबशुक बोला अच्छीबातहै परन्तु शृंगारदेवीकीसी बुद्धिहो तो जावतब प्रभावतीबोली शृंगारदेवीके कैसी बुद्धि उपजी सो कहो शुकेनोक्तं ॥ राजापुर नाम एकनगरहै तिसका रत्नेश्वर दैत्यनामीहै शुकउसकेगांवमें बसताथातिसकी स्त्रीशृंगारदेवी महाव्यभिचारिणीथी एकदिन दैत्यनाग बुद्धकाबेटा लेवेको गयाथा उसवक्त शृंगारदेवीने एक यारको बुलाया तिससे कामक्रीड़ा करने लगी यहनग्न होकर उससमय पतिको आते देखा और बिचारकिया कि ऐसाकरें जिससे लज्जारहै उसवक्त नग्नहोकर पतिके सामने नाचनेलगी तबभर्तारने कहा कि यहक्या भया जो नाचतीहै तब शृंगारदेवीबोली एमूर्ख मेरे पैर में कांटालगाहै मैं भागादेवीहूं तूनहीं जानता तूने मुझे दुःखदियाहै मैंतेरीस्त्रीको मारडालूंगी इतनीबातसुनतेही शूल उठालिया और भागा तिसवक्त अपने यारसेभोग करायके सिखावन किया आप कपड़े पहरके बैठ रही इतनेमें भर्तारआया और स्त्रीसेपूछा कि शृंगारदेवी तू नग्नहोकर क्यों नाचती थी तबवह बोली कि हे भर्तार मुझे तो खबरनहीं कि क्याबातहुई यहतो दैवमायाहुई इसमें कुछ नहीं जानती इसबातके सुनतेही भर्तारकी चिंतामिटगई इससे शृंगारदेवीकीसी करै तो जानहींतो मतजाव इतनी सुनके फिरसोरही ॥ इतिदशवींकथा ॥

भोग करूं यह बात कभी न होगी भोग न किया पर वह न मानी फिर रंभानेकहा श्लोक ॥ यतोहिदुर्लभारा मापितृभ्रातृपरायणा॥पितृभ्रातृमगैर्भूत्वाभोक्तव्याकामिनीनरैः १ हेमूर्ख कामिनी दुर्लभहै मातापिताभर्ताराजिन की रक्षाकरै सो अपनेसे आवे सो भोग न करे तो नरकगामी होताहै श्लोक ॥ कामार्तास्वयमायातांयोनभुंक्ते नितंबिनीं ॥सोवश्यंनरकंयातितत्राविश्वासतोनरः १कामपीड़िता स्त्रीआवे और पुरुषभोग न करै तो नरकमेंजाइ अरे ब्राह्मण तू बड़ामूर्खहै आगे प्रद्युम्नने मामाकीबेटी से भोगाकिया यहतो आगेसे चलाआताहै इरसे दोष नहींहै इतनाकहा परभी उसके मनमें न आई तबरंभा को गुस्साआया और यहकहाकि देखतो मैं क्याकरतीहूं इतनाकहकर चौकमेंआई ऊंचीआवाज करकेरोई और यहकहा कि देखरी परोसन मेरे भाइ को त्रिदोष हुआ जोमरा जाताहै तोमेरे माथे अपयश होगा इससेसब देखो इसके घरके कहैंगे कि इसने माराहोगा इतनासुन के ब्राह्मण दबकगया तब रंभा आगलगाकर दियाजलाया आगेसे छेका इतनेमेंपति आया और परोसीसब आये बोलेकि अरीरंभा तू काहेको रोतीहै तबबोलीमेरे भाईको त्रिदोष आगयाहै इससेमैं रोतीहूं आगसे सेंका तब अच्छाहुआइसबातको सबोंने सचजाना फिरसबसे कहाकि तुमलोगघरजाहुअब अच्छाहोगयासोताहै सब को बिदाकिया अपनेनामसे इसतरहएकमहररचा और अच्छीतरह भोगाकिया पीछेसबसे बिदाहोकर अपने घर आयापीछेजब२आवे कोईपूछैनहीं इसतरहतुम्हें बुद्धिहो

अथ त्रयोदशकथा प्रारम्भ ॥

अब तेरहवें दिन प्रभावती कामक्रीड़ाको चली तास-
मय शुकसोंकही हेशुकमें जातीहूँ तबशुकबोला पधारो
परन्तु निर्त्तक ब्राह्मणकीसीबुद्धिउपजै तो जाव नहींमत
जाव तब प्रभावती बोली सो कहो तब शुकबोला कि
एक बिद्यावन्त नाम राजा है तहांके शवनाम ब्राह्मण
कर्माहतो एकदिन तालाबपैगयातहांएक महारूपवन्त
बणियानी देखी उससे कहा तूमोसों रतिकर तबउसने
नहीं किया तथापियोगयो बणियानीका घड़ाउठाइबेको
चाहीतासमय घड़ा उठाइबेके लिये पासगया ता समय
कुच मर्दनकियो अरु चुम्बन कियो बड़ीबार ताही समय
बणियाआगया देखा और कही यहकाम अच्छानहींहै
खबरिपरैगी में दरबारमें पुकारोंगी तबवह ब्राह्मणडरा
और अपने आसन पासगया बितर्कनाम ब्राह्मण सों
कह्योजोमैं कुकर्म करता बणियानीसे उसकाधनीआया
वालेकही कि राजाकेआगे पुकारोंगो तासों तुमसे पूछता
हूं कि मैं कहाकरों तब बितर्कने कहा कि हांहां कहियो
और बचबच कहियो कि जो यह बात सिखाई ताही
समय राजा के आदमी आये और पकड़करलेगये जब
वहांगयो तब शवनेपूछा कि हांहांकरि फिर बचबचकरने
लगा तब सबने कहा यह बावली है इसका स्वभाव
यही है तिससे कछूमत कहो संकट परे जो ऐसी मति
आवे तो जाव इतनीबात सुन प्रभावती सोरही ॥ इति
तेरहवीं कथा ॥

अथ पन्द्रहवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर पन्द्रहवें दिन प्रभावती शृंगार कर परपुरुष के पास रति करनेको चली तब शुकसे बोली हे शुक मैं जातीहूँ शुकबोला अच्छा पर शृंगारदेवपाणी सी मति उपजै तो जाव तब सुनकर प्रभावतीबोली सो कहो तब शुकबोला एक रामपुरनाम नगरहै ताकोराजा नरसिंह नामहता ताकेगांवमें धनपालनामबनियांबसताहै ताकी बधू शिंगारीनाम बड़ीचतुर थी पर धनी मूर्खथा और पुरुषोंसे भोगकिया करतीथी परन्तु पति न जानता था एक दिन अपनेपतिको जिमातीथी तासमय यारआया तब बारीमेंसे झांकी और आँखोंसे इशाराकिया तू चल मैं आई यहकह ताहीसमय बुद्धिउपजाई पावँसेघीफैला दिया देख पतिबोला जोरूवह कैसी खांड़ जरा लेतोआ ताहीसमय चली सो यारपास पहुँची उससे अच्छीतरह भोगकिया एकपहर बीता तब मनमें बिचारा पतिगुस्सा होगा एक चौहटे में बैठ गोदी में धूर बहुतभरि तामें घी डारदिया और रोतीचलीआवे देखा तो भर्तारबहुतकोपा कि कोहै फिरदेखा तो स्त्रीरोती चलीआतीहै तबतो रिस भूलगया और पूछा तू क्यों रोती है और तेरीगोदमें धूर क्योंभरीहै तब स्त्री कहनेलगी जो तुमने कहा सो बेगलै आवतीदौरीगई और सौदालिया लेकरचली ताहीसमय ठोकरलगा सब धूरसें गिर मिलगया तब उठानेलगी तासों अबेरलगी जब न उठा तब सबसमेट लेआई यह बातसुनि रिस दूरभई हे प्रभावती ऐसी बुद्धि उपजै तो जाव इतनासुन प्रभावती सोरही ॥ इति पंद्रहवीं कथा ॥

प्रभावती ऐसीबुद्धिउपजै तौजाव नहींतो मतजाय प्रभा· बती इतनीकथासुन सोरही॥ इतिसोलहवीं कथा॥

अथ सत्रहवींकथा प्रारम्भ॥

फिर सत्रहवेंदिन प्रभावती शृंगारकरके भोगकरने को चली तासमय शुकसों पूछा हे शुक मैं रतिकोजाती हूं शुकबोला अच्छीबात है परन्तु साहिबदे को ज़ेवर उतारलिया तब बुद्धिकरी और फेरलिया जो ऐसीबुद्धि होइ तो जाव तब प्रभावती ने पूछा कैसी बुद्धिकरी सो कहो तब शुकबोला एक बिशालानाम नगरी थी तहां बिजयसेन राजा राज्य करता था तहां समर्थ नाम बनियांबसताहै ताकी स्त्री जयंती ताकोपुत्र गुणकरनाम है ताकी स्त्री साहिबदे नाम है बहुत चतुर प्रवीण है काहूकी शंका नहीं सब घरके भी जानें और परपुरुष सों भोगकरै एक दिन रति करतीहती तासमय ससुरो जाय पावँका ज़ेवर उतार लिया साहिबदे जानी जो ससुरो उतार लेगया तब आप सांचीहोनेके लियेभर्तार पास आके सोरही फिर झकझोरके जगाया जब उठा तब यों बोली मैं तुमसे क्या कहूं मगर कहा चाहिये वह तुम्हारा बाप मेरा ज़ेवर उतार लेगया मैं तुम्हारे पास सोती थी यह बात सुनकर क्रोधभयो जो वह सो ऐसी हँसीक्याहै यह तो बात लाजकी है तबजाइ अपने बापसों कहा कि तुमको ऐसी न चाहिये जो बहूके पांव का ज़ेवर उतार लेव लाज नहीं आई तब पिता सुन लज्जावान् भया और यह कहा कि यह बात काहूसों कहियो मत मैं चूका इतना कह ज़ेवर देदिया बेटा न

धमका सुन जाना कि गिरपड़ी यहजान किवाड़ खोल बाहर निकला और कुआंदेखनेलगा ताहीसमय वहघरमें जाबैठी किवाड़ देदीने और सोरही तब भर्तारने पुकारा कि किवाड़ खोल तब बोली कि नहीं खोलूंगी बहुतदेर-ताईं पुकाराकिया तब यहकही जो आजपीछे मेरानाम नलेवे तो खोलूं तब भर्तारबोला कि नामनहींलूंगा हाथ जोड़ पैरोंपड़ा बचन दिया तब घरमें आवनेदिया तासों प्रभावती ऐसीबुद्धि उपजै तो जा इतनासुन सोरही ॥ इति अठारहवीं कथा ॥

अथ उन्नीसवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर उन्नीसवेंदिन प्रभावती शृंगारकर पर पुरुषसे भोगकरनेचली तासमय शुकसोंपूछा हे शुक मैं जातीहूं तब शुकने कहा तेरेमनआवे सोकर शास्त्र तो यहकहता है॥श्लोक॥ दृष्टिपूतंन्यसेत्पादंवस्त्रपूतंपिवेज्जलम्। सत्यपूतंवदेद्वाक्यंमनःपूतंसमाचरेत् १ जो मनमें आवे सो करो परंतु गुणाढ्यनाम ब्राह्मण मनकोजान्योकियो तैसे तुमहूंकरियो यहसुन प्रभावती कही वही कहो तबशुक बोला एक बिशालानाम नगरीहै बिजयसेन राजा राज्य करताथा वहां जाहुकनाम ब्राह्मणकी स्त्री सुरूपाथी ताको गुणाकर मातापिता को छोड़ परदेशकोगया जयंती नगरीमें जायपहुँचा रोजगार को गया बनजारीकाधर-णियाजोमैलेवस्त्र एकथैलामें खांड़लगाई शहरमें फिरने लगा तब लोगोंनेजाना बनजाराहै वहां मदनवेश्याकी दासीने पूँछा तू कौनहै तब वहबोला मैं बनजाराहूं राजा सेमिलूंगा खांड़बेंचनेको भावपूछूंगा तूजगादेगी तबतो

भई तासों बड़ीरक्षाहै तबराजाबोला यहचोरनहीं कालिह याको छोड़दो राजाकी आज्ञासे छोड़दिया हे प्रभावती जो ऐसीबुद्धि उपजै तोजाव नहीं तोमतजाव इतनासुन सोरही ॥ इति बीसवींकथा ॥

अथ इक्कीसवींकथा प्रारम्भ ॥

फिर इक्कीसवेंदिन प्रभावती शृंगारकर रतिकोचली तब शुकबोला जावै तो शोचा बनियेकीसी कीजो नहीं मतजाव तब प्रभावतीबोली सोकहो तब शुकबोला एक हरनाम नगरहै गुणप्रायराजाहै ता गांवमें शोचा नाम एकबनियां ताकीस्त्री कन्तिकाहै बड़ी पतिव्रता है परन्तु वाकी परोसिन महागरीबहै परन्तु सोढ़ाकेमनकी नाहीं तासों कहैबनैनहीं एकदिन सोढ़ायना की सेवाकोगया ताहीसमय परोसिन गई किसी से भोग कीनों ताही समय स्त्रीने बुद्धि बिचारी कि कुछ इनकोदीजै वहबोली कि भाइयो निठाईवाहू अरु मोह बूंदीलेहु पर एककाम हमाराकरो शहरमें ऐसे पुकारके कहो एक बैल चरत है सो इसका कोई धनीहो सो लेजाय इतनी बातें कह आवो तुम्हारागुण मानेंगे इतनासुन जा पुकारा ताही समय सोढ़ाकी स्त्रीने सुनी मनमें चिंताकरनेलगी कि बड़ा अनर्थभया मन में बिचारा कि जो पक्षके मन्दिर से सेबरुकी परोसिन कर्मसोपरो यह जानि बुद्धि उपजाई अपनीनन्दकोतुरतईजगाय साथलीनों औरलड़के कोगोदमें लिया सबकहैं कि कहां जातीहै तबबोलीपक्षके पूजाके लिये जातीहूं सबनेकहा अच्छीबातहै जावताही समय दोऊजनी पक्षकेमन्दिरमें गईं वहांदेखे राजा की

कैलिका तू अच्छी बातकीनी शिवके दर्शनाकिये तेरेपति की उमर बढ़गई मुझे बहुत चिंताथी तेरेपतिकी उमर नहींरही जो पांचादिनताईं जाय तो पति वृद्धि को पावै भलाहोय तबकैलिकाबोली जो पतिजीवे तोइकइस दिन जाऊंगी तब ये बातपति सुनके प्रसन्नभया कि मेरीस्त्री पतिव्रताहै ये जाने तो जाव हेप्रभावती नहीं तो मतजाव इतनी बात सुन सोरही॥ इति बाईसवीं कथा॥

अथ तेईसवीं कथा प्रारम्भ॥

फिर तेईसवें दिन प्रभावती रतिको चली शुक से पूछा हे शुकमें जातीहूं अच्छा पर मन्दोदरी कीसी बुद्धि उपजै तो जाव तब प्रभावती बोली सोकथाकहो तब शुक बोला एक प्रतिष्ठा नाम नगर है तहांका हेमप्रभा राजा है तहां यशोधर्म सेठहै ताकेमोहनी स्त्रीहै ताकी बेटी मंदोदरी है सो कांति नगरी में ब्याही है श्रीवत्स सेठके यहां एकदिन सेठ ससुरारि आया कई दिन ससुरार में रहा स्त्रीको गर्भ रहा जब पांचमास भये एकदिन मनमें आई कि मोर भक्षणकरों एकदिन राजाकोमोरआइबैठा चुगाडार बुलाया और पकड़ा मार कबाब करि खाया जब ध्यानकासमय भया तब राजाका बेटाबोला मेरामोर कहां आदमी देखता फिरै परन्तु नहीं पाया आयकुंवर से कही कि नहीं पाया तब डौंड़ी फेरी कि जिसने मोर लियाहोगा राजाका गुनहगार होगा ये कह चुप होरहे और यहकहा जो मोरकापतादेगा लाखटकादूंगा इतना कहदूतीबुलाई तब कुंभिकादूती हुजूरमें आई तब हुक्म भया जो मोरकापतादेवे तो लाखटकादूंगा तब दूती ने

तब मन्दोदरी ने हकीकत कही कुटनी बोली मसूसे सुन तब मन्दोदरी बोली यामें कुछ है यह जान बोली बात तूने सांची जानी मैंने स्वप्नेकीबात कही ऐसादेखा तब जागपड़ी तो फिर न देखा चोरने देखा फिरमैं उठबैठी कुटनीका सुनतेही मुंह बिगड़ गया मसूसेको लेके राजा के घरआई राजा गुस्साहो कुटनी के नाक कान काट लिये जो ऐसी बुद्धि होतोजाव नहीं तो मतजाव इतनी बात सुनकर सोरही ॥ इतितेईसवींकथा ॥

अथ चौबीसवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर प्रभावती चौबीसवें दिन रतिको चली शुकसे पूछा हेशुक मैंजातीहूं शुकबोला अच्छीबातहै परमीड़िका कासा उत्तर आवे तो जाव तब बोलीकह तब शुक बोला एक उमिलगांवहै दानशील राजाहै तामें सोमदास कर सुनी है ताकी स्त्री मीड़िका है सो महागरीब राह चले बिचार करे एकदिन सोमदास खेतको गया उसके खानेको भात रोटी लेचली सो राहमें सुरपाल यार मिलगया वासों भोग करने लगी रोटी भात दूर धरने लगी मनमें बिचारी कौवा ले जायगा तासोंऊँचे टांग रक्खी इतनेमें मूल देव मगवादी आया मंत्र सों भात उड़ाया और ऊँटका लेंड़ भरदिया रति होचुकी जब देखा नहीं वैसेहीगई और पतिके आगे रक्खा पतिने देखा तो ऊँटका लेंडहै तब पतिबोला यहक्या मीड़िकाबोली कि रातको मैंने स्वप्नदेखाथा कि ऊँट तुमको खाता है यह स्वप्न अच्छा नहीं तासों ऊँटका लेंडलाई हूं जिससे तुम्हारी रक्षाहो ऊँटका लेंड़खा कष्टमिटै यह

सुन रोनेलगी कि मुझेभी लेचल नहीं तो प्राण त्याग करूंगी यह बिचारकीनों वाकी महतारीआई योंकाहेतू काहेको करत है ताहीसमय रामसिंह बिचारकिया याने बिचारीहै सो करेगी तासों द्रव्यकी लालच छोड़ दीजै द्रव्यदे अपने घरगयो पिताको पुत्र देखबोला खेदमत करो अब अच्छा है ऐसा कह उनको धीरजदिया तब पुत्र सिंहलद्वीपकी बातकही तबपिता पुत्रको समझाय पीछे कुटनीको बुलाया कि मेरापुत्र सिंहलद्वीपको गया था साराद्रव्य देआया भलो पढ़ाया सोहमारी द्रव्य तूने दे डाली तब कुटनी बोली मेरेसंग पुत्रकोपठाओ देखो कैसा काम करआऊं और कलावतीलई सो द्रव्यलाऊं और वाको लाऊं इतनाकह सिंहलद्वीपको सिधारे तहां कुटनीचांडालीकाभेषकियो पहले रामसिंहको समझाये एकदिनरामसिंह कलावतीकेपासबैठा है कुटनीचांडाली केभेषसे वेश्याके घरगई देखतो वहवेश्या पलँगपरबैठी है देखतेही आगे आइ ठाढ़ीभई और बोली साहकेबेटे मैंने अब तोको पायो तू बड़ाचोर है मेरा द्रव्य चुराया खबरदार मैं राजासों पुकारोंगी दोउन बँधाऊंगी यह कही वेश्यापूछा येकौनहै रामसिंहबोलामेरीमाताहै याको मूसलाया तोकोदिया येकही तब कुटनीकोभीतरबैठाया वाके पायँनपरी वाही समय कुटनीने लातदीनी तबतो हाथजोड़े और कही जो कहै सो करूं तब कुटनी कही जोद्रव्यदेतोछोडूंवानेद्रव्यदीनो लेकरघरआई बेटाद्रव्य साहकोसौंपा जो ऐसाजवाब आवेतो जाव नहीं तो मत जाव इतनी सुन प्रभावतीसोरही॥ इतिपच्चीसवींकथा॥

सो कहो तब शुकबोला एक कुसम नाम पाटन कुवँर-
पाल राजा है असकरन कुनबीमूर्ख है ताकी स्त्री बहुत
ग़रीब लेकिन प्रजाकरण ब्राह्मण से आसक्त एक दिन
सबने कुनबीसे कहा तेरी स्त्री ब्राह्मणसे देखिये सुन सं-
केत स्थलरूखपै चढ़वायो देखनेलगी देवकी प्रभाकर
दोनों रमण करते हैं तो कुनबीबोला दुष्टजौन ऐसाकर्म
करताहै हे ब्राह्मण का देवकी को छोड़ो नहीं तो बहुत
क्रोधभया रूखसे उतरा तो पतिको देखतेही भागा तब
देवकी बोली कि पति काहेको जो तेरे देखते रति करि
गया प्रकार छुड़ावो नहीं तोपतिबोला मैं तो न देखा स्त्री
कही यामें भूतहै याने मोसों कुकर्मकीनो पतिबोला मो-
सों लड़े तोभूतनहींतो झूठस्त्री बोली मैंरूखपर चढ़ती
हूं यहकहि रूखपै चढ़िपुकारीलो इसमें देवहै सोसमझ
लीजो पुकार के कही तो ब्राह्मण भूतका रूपधरि कुनबी
को पछाड़ा ऊपरते बोली यहीहै मोसोंभी भोगकिया है
सुनतेही ब्राह्मण भागगया स्त्री उतरआई पतिबोला तू
सांची है फिर घरआई सो हे प्रभावती ऐसीबुद्धिहो तो
जाव इतना सुन सोरही ॥ इतिसत्ताईसवींकथा ॥

अथ अट्ठाईसवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर अट्ठाईसवेंदिन प्रभावती रतिको चली शुकसे
कहा मैं जातीहूं शुकबोला अच्छा परन्तु मूलदेव मंत्र
वारो उत्तरआवै तोजा तब बोली उसेकहो तब शुकबोला
एक श्मशानहै तापै भूत दो रहते हैं एक करा दूसरा
उताल दोउनमें झगड़ा पड़ा दोऊ आपस में यह कहैं
कि अपनी अपनी स्त्रीको अच्छी कहतेहैं कोईतामेंनहीं

करिये और नीति तो योंहै कि अपने घरमें बास न दीजै यह बातसुन स्यार क्रोधहो बोला मित्र जादिन हिरनसे मिताईकरी तादिन तुम्हारा कुल स्वभाव कहांजानते हो जो मिलबैठो ताते अपना परावा कहना मूर्खों का कामहै पण्डितों कोतो सब अपनेही हैं जैसे मृगहमारा यारहै तैसेही तुम और भलो बुरो ब्योहारही से जाना जाताहै मृगनेकहा मित्रबादनहीं करो जो जहांरहैवही भाई अपनी अपनी सब भलीचिन्ता मतउदरकी करेहैं गई सांझ कोईकहै भये ऐसी भांति वहां रहनेलगे एक दिन स्यारने कहा मृग हम तेरे लिये जौंका खेत देख आये हैं सो मेरे साथ चलियो सो गया और चरने लगा रोज ऐसे जा चरे एकदिन रखवारे ने देख फंदा रोपा जब जो चरनेलगा फंदेमें पड़ा कहै मित्रबिन कौन निकाले स्यार फांसीदेख खुश भया मेरे कपट का फल आमिला रखवारो मांसलेगो हाड़डालेगा उन्हेंहम खावेंगे ये खुशीमृगने जानी मेरे दुःखसे ब्याकुलहै पर यहन जाना कपटीहै तबस्यारकी दशादेखमृगनेकहा तूनाहक फटफटाता खैरहुआ सोहुआ जाल तो तांतका है और मेरा आठदिनका उपासहै सो दांतसे कैसे काटों और ब्रतहोतो चिन्ता नहीं बहुत बिचार किये इतने में रात ब्यतीत भई और वहांबुद्धिकाग जगा मृगको देखानहीं बिचार किया रातमृगनहीं आया तबचलके देखा कि जालमेंफँसाहै कामआवै वहीमित्र सुनहु मैं तेरा कहा न माना ताको फलहै सुन काग कही तेरा औ मित्रकहां है वह तेरे मांस का लोभी कहीं होगा अपना सा साद

बिनती करत हैं कि एक जीव नित्य लीजै और वनकी रक्षाकीजै सिंहनेमानी सब खुशीभये नित्य अपनीबारी से जायँ सिंह खुशीभया एकदिन शशाका अवसर आया शशेने मनमें बिचारकिया वाको बंधनाकीजै ऐसेबिचार सगरोदिन बिताया जब संध्याभई तबतो गया जो देखै तोसिंह बहुत भूंखाहै यासों बहुत क्रोधभयो ता समय शशाआगे ठाढ़ोभयो तबसिंह बोला देरकहांलगाई तब बोला महाराज मैं आया हौं मोपर क्रोध काहे पर कीनो मैंने अपराध कियाहै परन्तु एक बिपत्तिसुनो मैं आपके पास आताथा तासमय राहमें देखातो कुआंपर एकसिंह राजतहै तब मैं डरपा इतनेमें मोको घेरलिया मैंने हाथ जोड़े कि राजा पिंगलके पास जाताहूं उसने कहा पिंगल कौनहै कि मेरेआगे ठाढ़ोरहै तासे मैं तुझे जानेन दूंगा तब मैं बिनती कीनी और सौगंदखाई वातें कहिके आयाहूं किअबआयो आपजानो सोकरौ और यहकहा तुम्हारा राजा गरीबोंका मारने वाला है मेरे पास आवे तो मैं समझूं यहसुनि सिंहउठिगर्ज्जो और उस कुयें पर जा शशासे पूंछा वह कहां है तब शशाबोला वो कुवांमें गयाहै तू जादेख ये सुनि सिंहकुवांझांको जो अपना प्रतिबिंब देखो देखतेही बहुत गर्ज्जनाकी और कुवां में कूदपड़ा शशादेख बहुत प्रसन्नभया सबजानवर निर्भय भये तासे ऐसी बुद्धि उपजै तो जाव ये सुन प्रभावती जा सोरही ॥ इति तीसवीं कथा ॥

अथ इकतीसवींकथा प्रारम्भ ॥

फिर इकतीसवें दिन प्रभावती रतिको चली शुकसे

है आज यहीं रहो यह उसीके घररहा रातको वह सेठ तो दूकानपर सोया यहां गुणदत्त रात में उठ वाके घरगया और हँसने लगातब स्त्रीनेकहाअपनी अँगूठी मुझेदो तो तुमसे भोगकरूं तब इसने मुँदरी दी और उससे भोगकिया सबेरा भया तबइसने अपनी अँगूठी लेनाचाहा और सेठसे जाकर कहा मेरी मुँदरी तुम्हारे घरदेखने को मँगाई थी सो अब मँगवादीजाय तब गुणदत्त आदमीकोले घरमेंगया और साहनीसेकहकर मुँदरी दिलवादी फिर मुँदरी ले अपने घर आया सो ऐसी बुद्धिहो तो जाव इतना सुन प्रभावती फिर सोरही ॥ इतिबत्तीसवींकथा ॥

अथ तेंतीसवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर तेंतीसवेंदिन प्रभावती रतिको चली तब शुक बोला जाती तो हो पर माधवदास कीसी बुद्धिहो तो जाव तब बोली कैसीशुक बोला एक ब्रजखंडनामनगर है ताको ब्रजसेन राजा तागांवमें माधवदास है सोवह बड़ा बेचालरहै जुआखेले एकदिन ब्राह्मण देशांतरको गया एक गाँव में जाबसा तहां सुदर्शन बनियां है तासे मिले ब्राह्मण को उसने घर में राखा पर बनैनी उसकी चंचल थी सदा आनन्दसेरहती परलोभिन ज्यादहथी तासों जाना कि ब्राह्मणकेपास द्रव्य बहुत है यासे प्रीति कीजै तो हाथआवे यह शोच प्रीतिकीनी एकदिनरातको ब्राह्मणको बुलाया भोगकीनो विचारो तासमयकही कि मुँदरी अपनी मुझे दो यहसुन मुँदरीदीनी जब सबेरा भया तब मुँदरीमांगी यह विचारा यह न आनेगी साह

बेटा दूकानपर जाताथा सो दूकान पै बैठारक्खा कोई जानेनहींतबगांवमें डौंडीफिरी जोकोईनेसेठकाबेटा देखा होतो बताइयो तबसबनेकहा भूधरसे पूछो तबभूधरसे पूछा तब बोले लड़के को चीललेगई वह बात कोईमाने नहीं तबदरबारमेंगया जाके सबबातकहा कि पांचवर्षके बालक को चीलकैसे लेगई होगी याकोमारो तबभूधर बोला महाराज आजतक कहींलोहे को मूसाखातेसुनाहै जो लोहेको मूसाखाता हो तो लड़केको चीललेजायतब राजाने कहा लोहेको मूसा न खायगा तो पिछले वृत्तांत भूधर सबकहो ये सबझूंठोहै येजबकही तबपरोसिन ने लोहेका सब असबाब दिया भूधर ने बालकदियाऐसी मति हो तो जाव इतनी बातसुन प्रभावती सो रही इतिचौंतीसवींकथा ॥

अथ पैंतीसवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर पैंतीसवें दिन प्रभावती रतिकोचलीतबशुकसे पूछामैंजातीहूंशुकबोला अच्छा परन्तु सुबुद्धिकीसीबुद्धि होतो जाव तबबोली कहो तबबोला रावनपुराबलपाटन है तहां नरबाहनराजाहै ता गांवमें दोनीचबसते हैं एक सुबुद्धि दूसरो कुबुद्धिहै दोऊकमाईकोचले कुछदिनबाद बहुतसी द्रव्यलेके दोऊघरकोआये तबगांवकेनजदीक आये एकजगहजाके सबद्रव्यगाड़आयेअपने२ घरगये पीछेकुबुद्धिनेजाके रात्रिकेसमय द्रव्यअपनेघरलेआया जबपांच या सातदिनबीते सुबुद्धि बोला हे कुबुद्धिअब द्रव्यलेआवें तबकुबुद्धिनेकहा अच्छीबातहै तबदोऊ व-हांगयेजो देखैं तो द्रव्यनहींहै तब आपसमें लड़नेलगे

गरमें डौंड़ीफेरी कि जो मेरी बेटीको अच्छीकरै ताको लाखटका दूं तब सुनकर ब्राह्मणी कहउठी मेराभर्तार अच्छा करैगा यह सुन राजाके आदमी उसे पकड़ ले गये ब्राह्मण भागने लगा तब बाहँ गही राजा देख के बोला ऐ ब्राह्मण मेरी बेटी देखके नीकीकरो तो लाख टकादूं ये कहा तब बेटीको देख ब्राह्मण बिचारा बिनकुछ किये छूटेभीनहीं तब झूठमूठके लेपको ऊपर किया वह उसीसे नीकी होगई तब राजा प्रसन्नहुये लाखटका दिये ब्राह्मण लेके घरआया सो ऐसी बुद्धिउपजै तो जाव यह सुन प्रभावती सोरही ॥ इति छत्तीसवीं कथा ॥

अथ सैंतीसवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर सैंतीसवें दिन प्रभावती रतिको चली तब शुक बोला बाघाघारी कीसी बुद्धिहो तो जाव तब बोली कहो शुक बोला स्वास्तिपुर नगरहै तहां देवदत्त राजाहै ताकी स्त्री अति रौद्राहै ताके दो पुत्रहैं एक ५ बर्षका दूसरा ७ बर्ष का एक दिन राजा रानीसे लड़ाई भई रानी अपने बेटोंको लेकर बाहर चली तो एक उपाय मनमें आयो कि दोनों लड़कों को रुला दिया आपु माथो उचारके बोली अरे लड़को क्यों रोतेहो मैं तुम्हें एक २ बाघमार देउं वाको खाव ठाकुरनने जाकह आन पहुंचाये सुन चीता बाघ भागे ये रानी अपने घरको आई तासों ऐसी बुद्धि उपजै तो जाव ॥ इति सैंतीसवीं कथा ॥

अथ अड़तीसवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर अड़तीसवें दिन प्रभावती रति करनेचली तब शुक बोला कि बिश्वरंजनीकीसी बुद्धिउपजै तो जाव

कुँवर मन में बिचारा कि संसार कहैगा बुरा किया ये जान वहीं सोरहा तो नायन अपने घर गई पिछवारे पतिको पुकारो एक स्तुराको कहो उसने फेंका यों रोई और तू ने ये क्या किया वो दौड़ देखतो नाकनहीं है घर आई रानीसे हालकहा रानी घरकोगई भोरहोते राजाने देखा वह लज्जितहुआ सो ऐसीबुद्धिहोतो जावनहीं तो मतजाव इतनीबातसुन सोरही ॥ इतिअड़तीसवींकथा॥

अथ उन्तालीसवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर उन्तालीसवें दिन प्रभावती रतिको चली तब शुक बोला कि कनकसुन्दरी कीसी बुद्धि हो तो जाव तब बोली कैसी तब शुक बोला एक शुभपुरनगर है सुन्दरसिंह राजा रत्नसेन कुवँर ताकी स्त्री कनकसुन्दरी प्रधानके बेटसे रति करे एक दिन कुवँर आया देखे स्त्री प्रधान के बेटसे रति कररही है तो जान्यों याके लक्षण खराब हैं स्त्री की नाक काटलीनी तब स्त्री किवाड़ देके सोरही श्वशुरआओ कि किवाड़ेखोलो बोलीनहींखोलों मेरी नाक बेकसूर काटी ये कहि सूर्य से बिनती करी मेरी नाक अच्छीकरो तब अच्छीभई सो ऐसीबुद्धिहो तो जाव यह सुन सोरही ॥ इतिउन्तालीसवींकथा ॥

अथ चालीसवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर चालीसवें दिन प्रभावती रति को चली तब शुक बोला जाव पर चपला ब्राह्मण कीसी मति होय तो जाव तब बोलीकहो शुकबोला सर्वपुरनगरहै शिव-राज राजा है ताकी भार्य्या शुभसुन्दरी तहां चारों वर्ण सुखी हैं पर एकपांचनाम ब्राह्मण ताकीस्त्री कनकावती

अथ इकतालीसवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर इकतालीसवें दिन प्रभावती रति को चली शुक बोला बाघमारी कीसी बुद्धि हो तो जाव तब बोली कैसी सो कहो तब शुक बोला बाघ यह है जो बाघ भागते आवे एक भागा जाता है तहां एक स्यार बोला बाघ तुम क्योंभागे जाते हो तुमको डरकौन को है बाघ बोला एकबाघमारी पीछे आता है ताके डरसों भागेजाते हैं तब स्यार बोला मामा जी वाको मारके खा जाइये बाघ बोला तू जाय मैं तो न जाऊं स्यार बोला जोमैं आगेचलूं तू पीछेसेआयो जोतू भागजाय यासेमैं तोको गलेसे बांधलेचलूंगा स्यारनेकबूलकिया बाघगलेसे बांधचला इतने में वह रानी देखे तो स्यार और बाघ आतेहैं सो यह शोचा अबकी खायँगे तासों कछूउपाय कीजे तब बेटसे बोली अबएक तमाशादेखो तो कि यह स्यार हमसे तीन बाघकी कह गया था सो एकही लाताहै बड़ा हरामज़ादा है बाघने सुना तबतो भागा रे स्यार आजतू मोकों मरवाया सो तू दुष्टहै यह कह भागा स्यार तुरन्तडरगया रानी दोनों बेटों को घर लेआई सो ऐसी बुद्धिहो तो जाव यह सुन सोरही ॥

इति इकतालीसवीं कथा ॥

अथ बयालीसवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर बयालीसवें दिन प्रभावती रतिको चली तब शुकबोला कि गलेबँधे स्यारकीसी बुद्धि होतो जाव तो शुकबोला जब बाघ भागा तब स्यारपै भागा न गया चोटलगी स्यारहँसा बाघबोला तू कैसेहँसा स्यारबोला

पर चढ़गई मुर्गी कीसी आवाज कही सबेरा भया तब बाहर आया देखैतो एक पहररातहै तबकहा अभीएक पहरबाकीहै अपनी बहिनको सुलादिया पहरभरवासों भोगकिया बेश्याने कही अपनोद्रव्यले और मेरोद्रव्य लेकेपधारो तबउसको और अपनीद्रव्यको ले आयो सो ऐसीहोयतोजावयहसुनसोरही॥ इतितेंतालीसवींकथा॥

अथ चवालीसवींकथा प्रारम्भ॥

फिर चवालीसवेंदिन प्रभावती रति को चली शुक से पूछा मैं जातीहूँतब शुकबोला कि बिश्वनगरहै राजा विजयसेनहै तहां हरदास ब्राह्मणवाकीभार्या कँगरा सो वह महा कर्कसाके पतिकीसी बुद्धिहो तोजावतब बोली कहो तब शुकबोला कलह करनी पतिकोदुःखदेय वाके घरमें पीपलका बृक्षहै तामें एकभूतहै सो भूत एकदिन बृक्षपर से उतर बनकोगया वहां एक बड़है वहां रहने लगा एकदिन हरदास की बहू धनीसे लड़ाई कीनी हरदास निकला बनमेंगया जा बड़के नीचेबैठा वहभूत देखे तो हरदास आयाहै तब नीचे आकेबोला कि हरदास आजबड़ा कामकिया जो मेरेपास आया तासों यहां भोजन करिये यहकह मिठाईदी अरु यहकहीतुम हमारे बड़ेमित्रहो तुम निर्द्धनहो पर एककाम करो मृगावतीनगरीहै मदनसेनराजाहै ताकीबेटी मृगलोचनी है ताके मैं लगाहूँ सो वाके बापने बहुत इलाज कीनों परन्तु मैं नहींछोड़ा सो वा सों तोकोद्रव्य दिवायो चाहिये तातेतूवहांजा तबतेरेइलाजसेमैंउसे छोड़जाऊंगा तब हरदास वहांगया देखेतो गांवमें डौंड़ी पिटी है जो

अथ छियालीसवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर छियालीसवें दिन प्रभावती रतिको चली शुक से पूछा मैं जातीहूँ शुकबोला कि सकडाल कीसी बुद्धि हो तो जाव बोली कहो शुकबोला एक नन्दपुर है राजा मदनकुंवर है सकडाल प्रधान है सो बड़ाधर्मात्मा बुद्धि-वंत सत्यवार्ता नीतिमें बहुत प्रवीण है सबको वशकिया अपने हुक्मसे और किसीका डर न राखे तो राजा कहै मोको काहू दिन मारडारैगो तासे या को कैदकीजै यह विचार के कैदकिया और मंत्री बैठाया सो कामकरै एक दिन बङ्गाले के राजाने इनकी परीक्षा के वास्ते घोड़ी एक पठाई उनका वकील आया आइ राजा से मिला मुजराकरी अर्जकरी सो हमारेमहाराजने २घोड़ीपठाईहैं यामेंबेटीकौन है सो परीक्षाकरदेव महीनाएककी आज्ञा है तब तो राजाने सबसोंपूछो मगर कोई न बतावै एक महीना बीतगया तब तो राजाने बड़ासंदेह किया कि जोयहबात न बतावेंगे तो वहकहैगा कि राजसभा में अक्क नहीं ऐसे बहुत शोचकी बात में यहकहा कि सक-डालको लाओ वह बतावैगा और की सामर्थ्य नहीं तब सकडाल बुलाय आया राजा ने बहुत आदर किया वाको शिरोपावँ दिया दण्ड माफ़किया और आज्ञाकी कि सभा को तो उत्तर न आया तू याकी परीक्षा बता इतनीसुन दोऊ घोड़ी बुलाया खूबदौड़ाई जब पसीना चलनिकला तब ठाढ़ी कीनी ताही समय घोड़ी अपनी बेटीको श्रमितजान माथा सूंघने लगी तब कही यह बेटी यह माताहै राजा बहुत खुशभया दोनों घोड़ी

ज़ारहों तो दो बाणमारों सो जल्द कहो मैं यह बिद्या
्रोणाचार्य से पढ़ी कि एक बाणमारों ये सुन चोर भागे
ो घर आया ऐसी मति बनै तो जाव यह सुन सोरही
इतिअड़तालीसवीं कथा ॥

अथउनचासवीं कथाप्रारम्भ ॥

फिर उनचासवेंदिन प्रभावती रतिको चली शुक से पूंछा मैं जाती हूं शुक बोला जो श्रीकी सी बुद्धि हो तो जाव बोली कैसी शुक बोला सत्यपुर नगर है सत्यसेन राजाहै दूर्दमन राजाका पुत्रहै ताके ४ यार हैं एकदिन सबने बिचारा कि देशांतर चल के देखें हमारे भाग्यमें कुछ है या नहीं ये बिचार निकसे दूरपहुंचे बिचारा कि कहा उपाय कीजे तब समुद्रके पासगये समुद्रकी सेवा करी तबप्रसन्नभया कहा बरमांगो उन्होंने कहा निर्द्धन हैं ऐसी कृपा कीजै हम धनवान् हों समुद्र सुनके हजार माणिकदिये सो अमोल कृपाकर दिये चारोंने बांटलिये तब वहांते आज्ञा मांगी घरको चले राहमें बिचारकरने लगे कि जो कोई मिलैगा तो कहा करैंगे यहशोचा कि बनिये को सौंपदीजे इतना कह बोला ऐसी बुद्धि हो तो जाव इतना सुन सोरही॥ इति उनचासवीं कथा ॥

अथपचासवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिरपचासवेंदिन प्रभावती रतिको चली शुक बोला राजा के बेटेको प्रधानने उत्तर दिया ऐसी अक्ल होतो जाव बोली कैसे शुक बोला इलावती नगरीमें जालंधर राजाहै सुशील प्रधान है वाकोबेटा बुद्धिवन्त है सुशर्मा वाको नामहै वो राजाके मनमानेनहीं प्रधान ने अर्जकी

बोला मैं तोको खुशी किया सो ऐसी बुद्धिहो तो जाव इतना सुन सो रही ॥ इतिइक्यावनवीं कथा ॥

अथ बावनवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर बावनवें दिन प्रभावती रतिको चली शुकबोला धर्मदासकीसी मति उपजै तो जाव बोली कैसी तबशुक बोला एक चक्रधीर नगरहै तहां मनोहर राजा है ताको मानसिंहप्रधानहै ताके गांवमें एक शील नाम ब्राह्मण है सो महा धनवंतहै ताको धर्मदासएक गुमाश्ताहै सो वो नित्य उगाहीकर रुपया लेचला ताहीवक्त चारचोर राहमें मिले देखमनमें बिचारा ये चोरहैं मैं अकेलाहूं धन छुडायलेंगे बिचारो कहाकरूं ताही समय यक्षस्थान देखा तहां जाय द्रव्य धरदिया और कही महाराज ये द्रव्यलायाहूं फिरवाआगे फिरतो चाहैकहो तो चोरजा-नों ये यक्षकी द्रव्यहै वासों भयमान वाकी द्रव्य नहीं लि-या उठिगये बनियांद्रव्यलेअपनेघरआयो इतनासुनसो रही ॥ इतिबावनवीं कथा ॥

अथ तिरपनवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर तिरपनवेंदिन प्रभावती रतिकोचली शुकबोला शुभकरकीसी मतिहोय तोजाव बोलीकैसी शुक बोला धारानगरीमें भोजराजाहै सुमतीनामप्रधान बड़ाप्रवीण एकदिन भोज राजाकी रानी चन्द्ररेखा जोबड़ी चंचल है ताकोमन पंडितसों अटको शुभकरभी अतिसुंदरथा सो ये भी आशिकभया तब एकदिन रानी रतिके समय आपही उठि पंडितकेपासगई कहाभोगकरो ऐसे बहुत दिनबीते एकदिन रतिको रानीचली तासमय नष्टचर्या

चारोंजाय दण्डवत् किया एकबोली जोमेरेसूतमेंमोको द्रव्य मिलैगी तो तेराभाग धरूंगी दूसरी बोली में आपको धूपदीप करूंगी तीसरी बोली मैं भेंटकरूंगी चौथी बोली मैं नग्नहोकर आपसों आलिंगन करूंगी ऐसे कहि पद्मावती नगरीगई सूतबेंचा सबको नफ़ा भई ऐसेही संगसबचलीं फिर गणेश जीके पास आईं अपनी २ कहीकीनी और दुश्शीलानग्नहोकर सामने आगणेशजीसे लिपटगई और चूमालियोतो गणेशजी के कामजागा आलिंगन किया मुखचूम ओठ मुख में लिया फिरछोड़ेनहींवे स्त्रीघरगईदुश्शीलाकेपतिसोंकही तेरी स्त्रीकोओष्ठ गणेशजीकेमुखमेंहै छोड़तेनहीं तोयह दौड़ा देखे तो सांचहै वो स्त्री की योनि और वोनग्नहो के स्त्री से रतिकरनेलगे इतनेमें गणेशजीहँसे ओष्ठछूट गया स्त्री पुरुष अपने घरआये ऐसी बुद्धि होतो जाव प्रभावती सुनकर सोरही॥ इति चौवनवीं कथा॥

अथ पचपनवीं कथा प्रारम्भ॥

फिर पचपनवेंदिन प्रभावतीरतिकोचली शुकसेपूछा में जावँ शुकबोलारुक्मिणीकीसी मतिहोतोजाव बोली कहो शुकबोला धनपुर नगरहै वहां धनेश्वर राजा है धनपाल प्रधानहै अरु एकराजाका कुवँर कुवँराई सेन बड़ा धनुधारीहै और शब्दबेधीहै वहअपनी स्त्री रुक्मिणी समेत तीर्थयात्रा कोगया एकदिन राहमें महासुंदर देखो स्त्रीकी नज़र बैठी पतिजाना अब स्त्रीकामनचलायमानभया येजानी और बिचारा याको लैजायँगे तो धर्मसाधन न होगा तासों अपनेघरआया यात्राकोनहीं

कि उचापति को दाम याहीबेरदेहु ऐसे कहा बहुतगारी दे इतनेमें धनीको देख शोरकिया और कही राँड़मोको भई सो दे तब बोली रेगारी काहेको देता है मेराधनी आवेगा तब लीजो ऐसी कहि वाकोकाढ़ि इतनेमें धनी आया देख बहुत खुश भया सो ऐसी बुद्धिहो तो जाव इतना सुन सोरही ॥ इति उनसठवीं कथा ॥

अथ साठिवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर साठिवें दिन प्रभावती रतिको चलतेवक्त शुक से पूछा मैं जातीहूँ शुकबोला श्यामवती कीसी बुद्धिहो तो जाव बोली कहो शुकबोला संभलपुर नगर है हर-यश राजा नरपति प्रधान है तहां एक कुंभकर्ण रजपूत है ताकी स्त्री श्यामा है एक दिन कुम्भकर्ण कहीं गया घरमें स्त्री के पास रामरंगीलौंडी को करगया जबसंध्या भई तब रामरंगी से बोली कि तू एक कटोरा द्रव्यभर कर लेजा कोई उत्तम पुरुषको लेआ तब दासी गई और लेआई सो ऐसी बुद्धि उपजे तो जाव यह सुन सोरही ॥ इति साठिवीं कथा ॥

अथ इकसठिवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिरइकसठिवेंदिनप्रभावतीरतिकोचली शुकबोलाकु-सुमावती कीसी बुद्धिहो तो जावबोली कैसी शुकबोला चंपावतीनगरी ईश्वरदास राजा है अचलदास कुंवर धुंधनाम प्रधान के गांवमें बिरम बनियां ताकी बेटी कुसुमावती है पुरुषोत्तम को व्याहीथी एकसमय वह परदेश गया आठबर्ष रहा द्रव्यकमाया यहां कुसुमा-वती १० दिन शील प्रतिपाला पीछेनिईशकहो जोम न

सो बनमें जाय साथी बिछुर गये भूख प्याससे दुःखी भया तब एक बनियांमिला वाने चबेनादिया तबखाया पानीपिया तब बनियेने राजासे कहा कि कोई बातकहो राजाने कहा चारबात कहैंगे अगर चारसौरुपयादेवै तबबनिये ने चारसौ रूपयेदिये तबकही राहमें अकेले न चलिये और बहुत कहै सो करिये और स्त्रीसेदिलकी गुप्तबातोंकाभेद न देय और तोपै दुःखपरै तो मेरेपास आइयो ये चारबातकहीतब अपने २ घरगये बनियां बिचाराकि अबअकेलेन चलिये तिसे एकसहेलोमिलो सो साथलियो वहांसे आगेगये एकबड़के नीचे जाय बैठो तहां एकसर्प निकसा काटने आया तबहीं सर्पको मारो इतनेमें बनियां जगा देख कहनेलगा येरूपयोंकी बुद्धिकामआई ॥ इतिबासठिवींकथा ॥

अथ त्रेसठिवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर त्रेसठिवेंदिन प्रभावतीरतिको चली शुकबोला बीरराजा गावमें गया वहांके लोग ५ मिले और यह कही कि परदेशी एककहना हमारा मान ये मरगया है इसे बहाय आवो तब बनियांने शोच पंचकहैं सोकीजै तबवाको बाँधि पानीमें बहायआयो वाके गांवमेंवामृतक करक की कमर में मोहरकी बसनी थी सो खोल अपने बांधिलीनी शामको गांवमें आया पंचोंने कहाकिपरदेशी हमारा कहना मानाहै सो कछूदीजै फिर १ घर और १००) रूपयेदिये तहां बीरराजा आया आइसोये आधी रातभई तबशब्दभयो कि पड़ो २ यहसुनो तो बीरराजा बोला कि पड़भाई पड़ली बैठो होयगो सोसही इतनेमें

हासिल होगया और श्रीमन्त आगेजाबैठा ताहीसमय सेठजाय सलामकी राजा बहुत महत दिया बातपूछी भेंटलीनी और बोले कि सेठ अपूर्ववस्तु कुछआईहोइ तो दिखाओ तब बीरराजा बीजले उसके आगे रक्खा और कहा कि तुरन्तबोओ तुरन्तउपजै ऐसीबस्तुहै तब राजा बोला कि अबताईं जो जानों नहीं कहा जान ये झूंठहै या सांच तब श्रीमन्तबोला पहले करतो देखो इतना बीरराजा सुनी की कहो जो तू कहै सो कबूल है तब श्रीमन्तबोला कि यहबीज उपजै तो मैं याके घरका धनी न उपजै तो यह मेरेघरका धनी ऐसी होड़ बांधी जबबोये उपजे नहीं तब श्रीमन्त जीता बीर राजा हारो बहुत खिसियानो भया घरआया बिचारा कि अबबहुत दुःखपड़ा ऐसाबिचार घर आयो बिचारा कि पहररात गये राजासे मिलूं गोष्ठीभई अरु राजा पकरो जो तोकों बहुत भीड़पड़ी तासों आयो तब सेठ बोला महाराज आपकी दो बातें देखी तामें लाभभई और एक बातमें चूका ताको यह फलहै यह राजा सुनी घोड़ेके ऊपर सवारहो याके आया आके देखा कि भार्याके प्यारसे यह कहत है कि मैंतो लेचला जाऊंगा ये कहि घरलेगया सवारोभयो तो लोगतमाशे आगे सेठको मिलब बहूको श्रीमंत जीतोहै सो ले आवेगा इतनेमें बीरराजा आया देखा तब बोला कि मेरीकही नहीं मानी सो यह फल पाया यह कह श्रीमंत की नाककाटी शहर से निकाल दिया सेठका और ब्याहकीनो ये सुन सोरही ॥ इति चौंसाठिवीं कथा ॥

करसोरहे जब उसके पतिकी आंखलगी तब उसे जगा-
कर कहने लगी अजी सोतेक्याहो उठो तबतो वह उठ
बैठा और कहने लगी जैसा तुम्हारा पिता वैसा मेरा
पिता यह क्या कि मेरे पांवका कड़ा उतारलेगया मुझे
नग्न खुला देखगया उसने कहा कि भोरको मैं उसे
समझा दूंगा जब भोर भया अपने पितासे झुंझलाय
कहनेलगा कि हे पिता तुमको उचितनहीं जहां बहू बेटा
साथसोतेहों वहां जावो और उनको देखो तब उसने
कहा बेटा बुद्धिमान् बन तेरी दुष्टास्त्री परपुरुषके संग
सोतीथी मैंने अपने आंखोंसे देखा है और यह कड़ा
मैंने उताराहै इतना सुनतेही वह अधिक क्रोधित हो
कहनेलगा कि तुम मेरी स्त्री के आपही आपबैरीहोगये
मुझे अच्छे प्रकार बिदितहै कि गर्मी के कारण मैं उस
वृक्षके नीचे उसकेसाथ सोताथा यह सुन उसकापिता
लज्जितहुआ यहसुन सोरही ॥ इति पैंसठिवीं कथा ॥

अथ छासठिवीं कथा प्रारम्भ ॥

फिर छासठिवेंदिन प्रभावतीरतिकोचली शुकसेपूछा
मैं जातीहूं तब शुक बोला कि सिद्धरीह की ऐसी अक्क
होवे तो जाव बोली कहो तब शुक बोला चन्द्रावती
नगरी सत्यब्रतराजा ताके दो प्रधान एक सिद्धरीह
दूसरा सिद्धवर्णन एक दिन दोनों से बिगरी तब वे
सिद्ध राजा के पासगये वाने बहुत आदरकिया बहुत
दिनरहेएकदिन धर्मदत्तबड़ोराजासो फौजले सिंधुराजा
पै चढ़िआयो मुल्कमें बड़ा उपद्रवमचाया सिंधुराजाने
बहुत बिनयकिया परन्तु मानेनहीं तबदोऊ प्रधानभेजे

यह फिर देशसे निकला और संग नाई को लिया तब
माताने चारलड्डू रत्नोंसे भरेहुये धरिदिये मार्गमें भूख
लगी तब दोलड्डू आपलिये और दोलड्डू यारको दिये
जब तोड़ेतो रत्न निकले तब राजकुँवर ने यारसे पूँछा
तेरे रत्न कैसे तो कही कि कोई नहीं कुँवर जाना यार
झूठ कहता है कही जो मिलाहै सो कहो नाई शोच के
बोला भलो सो बुरो भली तो एक डोकरी मिली सो
छाना बोनत मिली सो नाई कैसे बोलत है कुँवरबोलो
सांचोसांचो अरु झूठोझूठो बेटाकोपालिकेकियासोबेटा
वाकीआज्ञामें चलनेलगा घोड़ापर चढ़तहै और हजा-
रनकीद्रव्यहै सो मैंकहाकहो तुमदेखतेहो सो असझूठा
सोसांचोइतनेमें नाईबोला जोतोहारोमैं जीतोतासेहोउ
देव इतना कहि छूरीसेआंखें काढ़िलीनी सबलेके चला
गया पीछे कुंवर बहुत दुःखीहोके वृक्षके नीचे आबैठा
फिरनाई एकराजाके देशकोगया वहां रत्नभुनाये और
खानेलगा कुंवर बड़केनीचे पड़ो वाकेनीचे सारसपक्षी
और सुवा था तहां कुंवरको रात भई तब तो रोनेलगा
तबजानवर आपसमें बोले जो यहहमारी बीटआंखिन
में लगावे तो नीकी होजायँ फिर आपस में पूछी कुछ
औरभी गुणहै तबकहा अठारहकोढ़होवें तो वेभी नी-
के होजायँगे ये सुन सबेरे बीट बटोर कर कपड़ेमें बांध
ली और आंखमें लगाया आंखेंअच्छी होगईं तबवहां
सेचलकर वहां आया जहां नाई था और वहांका राजा
कोढ़ीथा तब इसनेकहा अगर मेरा कोढ़कोई नीकाकरै
तो आधाराज्य और बेटी उसको दूं यह बात सुन ये

परन्तु मेडुक और भौंरेने आपसमें मिलके एक हाथी
को मारडालाथा यदि वह हाथी बहुत बड़ा और बल-
वान्था जो ऐसी बुद्धि आवे तोजाव प्रभावतीने कहा
वह कैसी कथाहै शुक कहनेलगा कि एक नगर में एक
वृक्ष अति सघन था उसपर एक पक्षीकेजोड़ेने घोंसला
बनाय अंडेदिये थे संयोगबश एकमत्तमतंगउसस्थान
पर आपहुँचा और उसीवृक्षसे अपनीपीठ रगड़नेलगा
कि जिससे बृक्षहिलनेलगा और अंडे गिरपड़े सो वह
पक्षी भयभीत होकर अपनी स्त्रीको छोड़ अन्यरूखपर
जा बैठा और हाहाकर रुदन करनेलगा जैसे कि यह
दृष्टान्तख्यातहै(कि बिल्लीके सम्मुखचूहेकाक्या बशच-
ले) परन्तु अपनेजीमें कहताथा कि इसबड़ेबैरीसे किस
प्रकारबदला लीजिये यहशोच अपने मित्र लम्बीचोंच
वालेपक्षी के निकट जाय सब समाचार कहा कि इस
हाथीने मेरे ऊपरव्यर्थ अन्यायकियाहै कोई ऐसाउपाय
बिचारो कि यह माराजावे मैं तुझसे इसवास्तेकहता हूँ
कि तू मेरा परममित्र है और समय पर मित्रही काम
आताहै उसने कहा कि हे भाई हाथीका मारना बहुत
कठिनहै मुझअकेले से न होसकेगा परन्तु एक भौंरा
मेरा परममित्र है और अति बुद्धिमन्त है उससे इस
बिषयमें बार्त्ता करूंगा वहजो कहेगा वही करनाचाहिये
सो वे दोनों उस भौंरे के पास पहुँचे और सब हाल
वर्णनकिया यह सुन उसे अतिदया उपजी और कहा
कि मैं बहुत दिनोंसे अपने मित्रोंके काममें उद्यत रह-
ताहूँ मेराएक परममित्र मेडुक है और अपनी जातिमें

से शीघ्रहीमिल प्रभावतीने चाहा कि जावें इतनेमें पौ फटी और भोर होगया उसदिन भी जाना उसका बन्द होगया ॥ इतिअड़सठवीं कथा ॥

अथ उनहत्तरिवींकथा प्रारम्भ ॥

जब उनहत्तरवें दिन प्रभावतीरात्तिकोचली तबशुक से पूछा मैं जातीहूँ शुक बोला अच्छीबातहै परन्तु जो इसरातको एककथा अपने मित्रके सम्मुख बर्णन करें और उससे पूछे जो उत्तर उत्तमदे तो जानियो कि मनुष्य अति बुद्धिमान् है और जो अच्छा उत्तर न दे तो निर्बुद्धि समझियो प्रभावतीने कहा वह कौनसीकथा है शुककहने लगा किसी समय में एक सेठका पुत्र किसी देवालय में पूजा करनेगया और वहां एक लड़की को देखा कि अत्यन्त सुन्दरीहै जिसे पूर्णमासी का चन्द्रमा देख लज्जा उठाता और उसके बालों का कालापन रैन को रुलाता और क़द उसका ऐसा था कि सरोंवृक्ष देख पृथ्वी में गड़गया और उसकी चटकीली मटकीली चालको देख चकोर अपनी चालको धिक्कार देता था॥ सोरठा। अतिहि छबीली चाल चटकीली मनको हरै। चितवनि अतिहि रसाल प्रलय करै दृगबाण सों ॥ कोमल कमल शरीर शुक नासिका सुहावनी। थिर न रहै मतिधीर निरखि अभूषण बस्त्रको ॥

ज्योंहीं उसपर दृष्टि पड़ी मोहितहो अधीर होगया और उसदेवता के चरणोंपर गिरपड़ा और यहप्रार्थना की कि यदि मेरे साथ इस लड़की का बिवाह हो तोअपना शिर काट तुमपर चढ़ाऊंगा इतना कह अपने

उस देवालयमें गई तो उन दोनों को मरादेखा विस्मित होय कहने लगी हाय हाय ये दोनों शिर कटे लहू लुहान पड़े हैं यह क्या अनर्थ है इतना कह उसने भी इच्छाकी कि अपना शिर काट चढ़ावें अपनेपतिकेसाथ सतीहोवें इतने में उस देवालय से शब्द सुनपड़ा कि हे लड़की तू इनका शिर इनके धड़ से लगादे ईश्वरकी कृपा से ये जी उठेंगे यह सुन वह प्रसन्न होय अपनेपतिका शिर ब्राह्मणके शरीरपर और ब्राह्मण का अपने भर्तार के धड़पर रख दिया दोनों जी उठे और स्त्री के आगे खड़े होगये सेठ के शिर और ब्राह्मण के धड़से झगड़ा होनेलगा कि यह मेरीस्त्रीहै और धड़नेकहा कि यह मेरी औरतहै शुकने यहकथा कह प्रभावतीसेकहा कि जो तू उसकी बुद्धिकी परीक्षा लियाचाहती है यही बात तू उससे पूछ कि वह स्त्री शिर को पहुंचती है या धड़को प्रभावती ने कहा कि हे शुक तूही कह कि वह शिरको पहुंचती या धड़को तब शुक ने कहा कि शिर शरीर का अधिपति है इसवास्ते अपनेपति के शिरको पहुँचती है प्रभावती यह कथा सुनचाहती थी किजावें इतने में भोरहुआ और उसका जाना बन्दरहा ॥ इति उनहत्तरवींकथा ॥

अथ सत्तरवीं कथा प्रारम्भ ॥

जब सत्तरवेंदिन प्रभावती भूषणादिसेसज परपुरुष से रतिकरनेको चली शुकसे पूछामैंजातीहूं शुकनेकहा अच्छा जा परन्तु एक मेरी कथासुन मैं तुझसे कहताहूं तू ध्यान धर कि कन्नौजके राजाकीलड़की अतिसुन्दरी

पने मन्त्री से कहा कि तेराउपाय कुछकाम नआयावह
तो इतना धनलेही आया अब क्या कीजिये तब उसने
विनय की कि यह योगी धर्म्मदत्तसेठ के पासजाय यह
धन हाथी समेत मांगलायाहै क्योंकि इससमयमें कोई
ऐसा दानी उसके समाननहीं है फिर यह बिचारकर
उस योगीसे कहनेलगा कि हे योगी राजाकीपुत्री ऐसी
नहीं कि ऐसे हाथीके बदले हाथआवे अगर उसेलेना
अंगीकारहै तो अभीजा और धर्म्मदत्तका शिरकाटला
वह योगी फिर धर्म्मदत्तसेठ के पासजाय कहने लगा
कि हेदानी बाबातेरेशिरकेबदले मेरेहृदयकी अभिलाषा
सिद्धहोतीहै जो तू अपना शिरदेगा तो मैं अपनीइच्छा
को पाऊंगा सेठने कहा हे योगी तू धीर्य रख कि यह
मेरा शिर परमेश्वर ने इसी वास्ते उत्पन्न किया है कि
किसीके कामआवे मैं बहुत कालसे इसशिरको हथेली
परधरेहूं कि जो कोई मांगे उसकोदूं अब तूने मांगाहै
सो बर्त्तमानहै अब तू मेरे गलेमें रस्सीबांध उसराजाके
निकट लेचल और उससे कहो कि वह शिरजो तुमने
मांगाथा धड़ समेतलायाहूंउसने स्वीकारकिया तो मेरे
धड़से शिरकाट लेना और जो उसने कुछ और मांगा
वहभी लादूंगा तदनन्तर वह योगीसेठके गलेमें रस्सी
बांध राजाके पासलेगया जब उस राजाने पुरुषार्थउस
सेठका देखा अपनेस्थानसेउठसेठकेचरणोंपर गिरपड़ा
और कहनेलगा कि सत्य है कि तेरेसमान अब इस
संसार में कोई पुरुषार्थी और दानी न होगा यह कह
अपनी पुत्रीको बुलवाया सेठकोदे कहाकि यह तुम्हारी

गई कि यह कोई बड़ा ब्योपारीहै कि एक स्त्री के वास्ते तीस अशरफी देताहै यह शोच वह स्त्रियां ढूंढ़ने लगी और ढूंढ़ते २ ब्याकुलहुई परन्तु कोईस्त्री हाथ न लगी वहदूती उसी ब्योपारीके घरगई और उसकीस्त्रीसे कहनेलगी कि आज किसीदेशसे कोई बड़ा ब्योपारी अति धनाढ्य आयाहै और अति रूपवान् है उसने एकस्त्री मँगवाई है अगर तेरा जी चाहे तो तूहीचल मोरको २० अशरफी लेकर अपने घर आइयो इतना सुनवह दूती के साथहुई और उस ब्योपारी के पासगई ज्योंहीं अपने पतिको देखा त्योंहीं पहिंचानगई और जीमें कहने लगी यह तो मेराही पतिहै अब मैं क्याकरूं इतने में बड़े शब्द से चिल्लाय कहा कि हमसायो दौड़ौन्याय चुका दो कि छःवर्षसे मेरापति सौदागरी को गयाथा मैं रातदिन इसकीराह निहारतीथी अब जो आया तोइस हवेली में उतरा और मेरे पास न गया आज मैं इस के आनेका समाचार पा अबहीं मैं आई हूं यदि तुम मेरा न्याय चुकावो तो उत्तमहै नहीं तो मैं न्यायाधीशकेपास जापुकारूंगी और इसपतिको त्यागदूंगी यहसुन परोस के लोगइकट्ठेहुये उसने उनलोगोंसे कहा कि मैंइसकी स्त्रीहूं और यह मेरा भर्त्तारहै मुझेयहअकेली छोड़परदेशकोगयामैं इसीदुःखमें आठोंपहर रहाकरतीथी सो परमेश्वरकी कृपासे जोजीते जागतेआये तोघरमें नहीं आये और मुझसी रूपवतीको भुलाय और दूसरीस्त्री से रतिकिया चाहतेहैं आजमैं यहसमाचारसुन आपही आईहूं तुमसबमनुष्य दयावान्हो मेरान्यायचुकादो

जो तुम चाहो तो मेरे साथ यहां रहो परन्तु किसी का कहना न माना और आगेचले इतनेमें दूसरे मनुष्य के शिरसे मोहरागिरा उसने जोपृथ्वीखोदी रूपा निकला तब उसने उनदोनों से कहा तुम हमारे पासरहो यह रूपा हमारी सम्पूर्ण आयुको बहुतहै इसको अपनाही समझो परन्तु किसीने उसका कहना न माना और आगेचले इतनेमें तीसरेके शिरका मोहरागिरा उसने भी वहपृथ्वीखोदी उसमेंसे स्वर्णनिकला तबहर्षितहोय कहनेलगा कि हे मित्र इससे कोई वस्तुउत्तम नहीं कि हम तुमयहींरहें उसनेकहा कि जो मैं जाऊंगा मणिमाणिककी खानि पाऊंगा यहकह आगेचला जब उसके शिरका मोहरागिरा तोपृथ्वीखोदनेसे लोहापाया यहदेख अति विस्मित हुआ और बिचारने लगा कि मैंने क्यों स्वर्णको छोड़ा और अपने मित्रका कहना न माना यह सत्यहै॥दोहा॥ जो सदैव निज मित्रकोकह्यो न मानत आहिं। वहअवश्य पछितातहै यामें संशय नाहिं॥ उसलोहेको छोड़ उसीमनुष्यकेसमीप जिसने स्वर्णकी खानिपाईथी गया वहां उसको न पाया और सोनाभी हाथ न आया तब तीसरे रूपेवालेके निकट गया उसेभी न पाया तब फिर तांबेवालेके निकटगया उसे भी न पाया तब अपनी दुर्भाग्यतापर रुदन करने लगा और कहने लगा कि अपने प्रारब्धसे कोई भी अधिक नहीं पाता फिर उसी बुद्धिमान्के गृहपर गया उसेभी वहां न पाया विचारा अत्यन्तविस्मितहुआ शुक इतनीकथाकह प्रभावतीसे कहनेलगा कि जो अपनेमि-

कही कि शुकतुमसों चतुर ...
ताप सों मोको स्त्री प्राप्तभई इसतरह ...
बोला मदनसेन तुम अपने पिताके पास ...
आज्ञामांगो सोमैंघरजाऊं क्योंकि मैं गन्धर्वहूं ...
केशापसों शुकभयाहूं तबमदनसेन पिंजराले सेठकेपास
गया और पिंजरा देके सबहाल कहा तबसेठने शुकसे
कहाकि उदास क्यों हो शुकने कहा तुम्हारे पास रहके
कोई उदास न होगा अबमुझे आज्ञादो तब बिदाभया
पर्वतको गया देहछोड़ गन्धर्बभया और स्त्रीपुरुषदोनों
स्वर्गमें भोगकरनेलगे यहां मदनसेनअरुप्रभावतीभोग
करनेलगे ॥ इति शुकबहत्तरी भाषा समाप्ता शुभम् ॥

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपी
अगस्त सन् १८९४ ई० ॥

६ जुज़ ५ वर्क़

बकावलीसुमन ॥

जिसको

श्रीयुतविद्यागुणवर्द्धक परमोदार मुंशीनवलकिशोर
जीने हिन्दीभाषानुरागियों के सुगमताके हेतु

उर्दूगुलबकावली

से

माडल स्कूल अमीनाबाद के पंचमाध्यापक बैजूसिंह
बर्मासे बाजपेयि शिवगोविन्द की सहायता
भाषानुवाद रचना कराया ॥

पांचवीं वार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
दिसम्बर सन् १८९५ ई० ॥

सुन नृपति कुछहर्ष और किंचित् शोचितहो उन्हें धन धान्य दे बिदा किया और निज राजमंत्रीको आज्ञादी कि इस पुत्रको मातासहित किसी अन्यगृह में जहां मेरी पहुंच न हो लेजाकर रक्खो उसने वहीकिया कईवर्षबीते राजकुंवर प्रतिपालनहो विद्या में निपुण हुआ एक दिन उसे आखेट का ब्यसन उपजा तो बाहनारूढ़ हो वन में गया और एक मृगके पीछे घोड़ा दौड़ाया सत्य है भावी बिनाहुये नहीं रहती ॥

दो० होनहार नहिंटरतहै चलत न एकउपाय।
कौरव पाण्डव युद्धमें सबकुल गयोनशाय॥

दैवयोगसे उसका पिता अर्थात् राजा शिकार खेलता हुआ उसी वनमें आ निकला ज्योंहीं निज कुमार पर दृष्टिपड़ी त्योंहीं नयनों का प्रकाश नष्ट होगया यह आश्चर्य्य देख राजसभासदों ने इसकाहेतु पूछा राजाने कहा उचितथा कि पुत्रको देख पिताके नेत्रों में अधिक प्रकाश होता देखो यह क्याचरित्रहै कि इसके विपरीत हुआ अब उत्तम यहहै कि मेरेराज्य से इसको निकाल दो और इसकी माता दासी कर्म्म कियाकरे इतना कह राजा उलटेपांवों अपने मन्दिरकी ओर लौटा और उसे देशसे निकलवा दिया॥

दूसरी कहानी॥

बकावलीसुमन के लिये चारों पुत्रों का जाना॥

कहतेहैं कि जबबड़े २हकीमऔरवैद्योंको नेत्रोंकीदवा के लिये भूपालने बुलाया तो सबोंने मिलके विनय की कि हे पृथ्वीनाथ यदि बकावलीसुमन मिले तो नेत्रों में

और इनका जाना बकावलीसुमन के ढूंढ़नेका बताया तब राजपुत्र अपने मनमें विचारकर कहा॥

चौ० विधिवह दिवस आजहैपरो। समयभाग्य अपनेसेलरो॥

और मैं भी अपने बन्धुओंके साथ बकावली सुमन को ढूंढ़ों और अपनी भाग्यकी परीक्षा करूं नहीं तो इसी बहाने से पिताका देश त्यागन करूं यह बात हृदय में विचारकर एक मंत्री कि जिसका नाम सईद था उसके सन्मुख आकर दण्डप्रणाम किया उसने इनका स्वरूपदेखा कि कपोलोंपर मानों सूर्य्यकी किरणके समान चमकेहै और लिलाट शशिको लज्जित करता है कचमानों श्रावणके घटा तुल्यहैं ऐसी छबिदेखकर आश्चर्य्य में हुआ और कहा तुम कौनहो और कहां से आयेहो ताजुलमलूकने विनयकी कि मैं दीन पाथिकहूं मेरा न कोई मित्रहै न सहायता करनेवाला सईदने उसकी दीनता देखकर रखलिया और बड़ी कृपाकरने लगा कहते हैं कि बहुत दिनके पश्चात् एकदिन राजपुत्र नगर फिरदोश में जहां का नरेश राजवांशाहथा गये औ सन्ध्याके समय सरिताके किनारेपर इस विचारसे बैठे कि कुछ दिन वहां रहैं जिससमय सूर्य्यअस्तहोगये और चन्द्रमाका उदयहुआ तो चारोंराजपुत्र अपने २ घोड़ोंपर सवारहो नगरमें घूमनेलगे उसी समय एक बड़ासा विचित्र मन्दिर बनाहुआ दृष्टि पड़ा जिसमें सुवर्ण के जड़ाऊ परदे पड़े थे देखकर वहां के एक निवासीसे पूछा कि यह बड़ाविचित्र मन्दिर किस काहै उस मनुष्य ने उत्तरदिया कि इसकी मालिक दि-

लाखरुपये उसरात्रिमें हारे इतने में प्रातःकाल हुआ और चंद्रमा अस्तहुआ खेल को बंदकरके राजकुमार अपने स्थानकोगये दूसरेदिन जब सूर्य्य पश्चिमादिशा में अस्तहुये और निशाहुई राजपुत्र उसीठाट से वेश्या के मंदिरपर आये और सुवर्णकी चौकियोंपर बैठ गये वेश्याकी सब दासियां छप्पनप्रकारकेभोजन चांदी और सोनेके पात्रों में लाईं राजकुमार भोजन करके फिर वैसेही खेलनेमें आरूढ़हुये और दशलाखरुपयेकीबाजी लगाकर खेलनेलगे यहां तक कि उस रात्रिको सबधन रथ, गज, तुरंग आदि हारगये तब उस वेश्याने खेल बंद करके कहा कि मालको दिखाओ तो खेलें नहीं तो अपने घरको जाइये राजपुत्रोंने कहा कि अबकी बार जो हम भाग्य बशसे जीतें तो अपनी सब हारीहुई वस्तु तुमसे फेरलें नहीं तो हमचारों तुम्हारेदास होकर तुम्हारी आज्ञानुकूल रहैं जब यह बातचीत निर्णयहो-गई तब उसचंचलाने बातकी बात में वहभीबाजी जीत ली तब सब धन दौलत जो राजपुत्रों का था अपने प्रबन्ध में करलिया और उनको कारागृह में जहां कि सैकड़ों इसीप्रकार से बँधुयेपड़ेथे भेजदिया यह सुनकर उनकी सबसेना जहांकी इच्छाकी चलीगई तबताजुलम-लूकने बिचारा कि अब कुछ ऐसायत्न करना चाहिये कि इन सबकी बंदीछूटै और मैं प्रकट होजाऊं यह बि-चारकर नगरमें एकधनीके द्वारपर जाकर दरवानियोंसे कहा कि परदेशीहूं तुम्हारे स्वामी की उदारता सुनकर आयाहूं यदि वे अपनी सेवकाई में रक्खेंगे तो चरणों

तो राजपुत्र वहां से लौटआया और फिर एकदिनगया तो वही वृद्धास्त्री उसको देखपड़ी तो दण्डप्रणामकरके उसके पांवोंपर शीशधरके रोनेलगा तब उससे वृद्धाने पूंछा कि तूकौनहै और बिक्षिप्तों की नाईं फूट २ करक्यों रोताहै राजपुत्रने कहा॥

दो० पूंछतहमसे काह तुम मैं हौं दीन मलीन।
यहि जगमें कोई नहीं है मो सम अतिहीन॥

मैं बिदेशीहूं सिवाय परमेश्वर के मेरासहायक कोई नहींहै पूर्व दिशामें मेराघरहै और एक मेरीदादीथी वह भी मरगई उसका सब चिह्न तुममें पायाजाताहै जो तू मेरे दुःखको देखकर मेरी सहायताकर तो मैं तेराहोके रहूं और दादीकी तरह तुझेमानूं ऐसी चिकनी चुपरी बातेंकरके उसके हृदयमें समागया और उसका कलेजा पघिलालिया वह वृद्धा बोली श्रय जवान मेराभी कोई संसार में नहींरहा आज से तू मेरा पोता और मैं तेरी दादी तब ताजुल्मलूकने कहा कि दादीसाहब मैं एक जगह नौकरहूं उसकीभी सेवकाई करना उचित है इस कारण से मैं नित्यप्रति नहीं आसक्ताहूं उसस्त्रीने कहा कि बहुत अच्छा राजपुत्र ने उससे कहलियाही था कि मैं प्रतिदिन न आसकूंगा परन्तु रोज़जाया करता और अधीनताई कियाकरताथा निदान इसीप्रकार एकदिन राजपुत्र कुछरुपये लेकर उसकेपासगया और कहा कि दादीसाहब यह रुपया रखछोड़ो और जब कोई कार्य्य हो तो उसमें ख़र्च करना वह बोली हे पुत्र तेरे रुपये लेकर मैं क्याकरूं भगवान्का दिया सब कुछ मेरेघरमेंहै

बहुतअच्छाहै कोठरीमें लेजाकर कहा कि ये सब रुपये तेरेहैं जितने चाहो उतने लेलो तब राजपुत्र ने अपने हाथसे एकसहस्र रुपये निकाललिये और अपनेस्वामी के पासगया और विनयकी कि हे नाथ मेरे मित्रोंमें से एकका ब्याहहै जो एकजोड़ा कपड़ामिलै तो अपनेमित्रों में प्रतिष्ठासे बैठूं उसके स्वामी ने अपना एकजोड़ा कपड़ादिया और कहा कि तबेले में जाकर एकघोड़ा जो तेरे मनभावे लेले तब ताजुलमलूक एकघोड़ाले उसपर सवारहोकर उस वेश्याके घरगया वेश्या उसका स्वरूप देख घबड़ाकर उसकेपास दौड़ीआई तबराजपुत्रनेकहा कि तू सब परदेशियों को दुःख दिया करती है और मैं इसनगरके नाथका दासहूं और कभी हमसे न मिली भला अबतो कुछ उत्तमपदार्थ मेरे भी भेंटकर उसने सुवर्णसे जटितहुई चौकी उनकोदी और पीछेसे आपभी बैठगई जबकि सूर्य्यअस्तहुये और चंद्रमाकाउदयहुआ तब राजपुत्रनेकहा कि मैंनेसुनाहै कि तुमको पांसासारी खेलनेमें बड़ाअभ्यासहै एकबाजी आवोखेलो उसने प्रथम तो इन्कार किया फिर पांसासारी मँगवाकर जिस रीतिसेखेलतीथी उसीरीति से लक्षरुपयेकी बाजीलगाकर खेलनेलगी पहिली बाजी राजपुत्र ने जानबूझकर हारदी उसने बिल्ली और मूसकी सहायता से जीत ली दूसरा पांसा फेंका तो नहीं पड़ा बिल्ली ने अपना शीश हिलाया और मूसनेचाहा कि मैं पांसालौटदूं तब ताजुलमलूकने चुटकी बजाई चुटकी बजातेही नेवलेकाबच्चा अंगेसे निकला मूस उसका स्वरूप देखतेही भागगया

तीहूं यदि मैं जीतूं तो सबपदार्थ हारेहुये लेलूं नहीं तो मैं तेरी चेरी होकर रहूंगी राजपुत्रके भाग्यका दीपक प्रकाशित हो रहाथा वहभी बाजी जीतली तब वह कर जोर खड़ीहुई और कहा कि आपने परमेश्वर की सहायतासे अपनी चेरियों में मुझेमिलाया इसीलिये सबराजाओंने अपनी अपनी अवस्थाखोदी परन्तु मैं किसी के हाथ न आई और तुमने अपने भाग्यसे लेलिया यह तेराघर है आनन्द से रह ताजुल्मलूकने कहा कि यह मुझ से नहीं होगा अभी मुझे एकबड़ीमुहीम है उससे निपटकर परमेश्वर चाहेगा तो फिर मिलापहोगा तुम को उचित है कि द्वादशबर्षतक मेरीबाट देखना और अपने वेश्या कर्म्मसे रहित होकर सुकर्मकी राहपर चलना और परमेश्वरका ध्यानकरना उसने कहा कि तुम्हारी युवाअवस्था है और मार्ग में बड़ा दुःख मिलताहै अभी तुमपन्थजाने के लायक़ नहींहो यदि तुम मुझे इस वृत्तान्तको बतावो तो मैं भी तेरे साथचलूं और अबतेरे बिना घरमें रहना बन्दीखानह है यहकह के यह चौपाई पढ़ी कि॥

चौ० बिनामित्रके गृहहै सूना। जैसेशशिबिनरैनिमलीना॥

इसबातके विदित करने में जब उसने बहुतहठकिया तब राजपुत्रने कहा कि मेरानाम ताजुल्मलूकहै और मैं जैनुल्मलूक शरकिस्तान के स्वामीका पुत्रहूं परमेश्वर की इच्छा से मेरे पिताके नेत्र जातेरहे हैं हकीमों और वैद्योंने बकावलीसुमन के सिवाय और कोई दवा नहीं विचारकी यही औषध बताई उसी दिनसे मेरे चारभ्राता

मित्र सहायक जो पै करई। तौ बैरी कर कछु नहिं सरई॥
तू मेरे छोटेडीलपरमतजा-मसलहै कि बुद्धिबड़ीकिभैंस॥

ब्राह्मण और व्याघ्र की कहानी॥

ब्याघ्र ब्राह्मण की कहानी तूने सुनी है या नहीं किसी एकदिन ब्राह्मणका जाना बनको हुआ तो क्या देखा कि एकब्याघ्रमोटी रस्सीसे बँधाहुआ पिंजड़े में बंदहै ब्याघ्र ने उसे देखकर कहा कि हेदेवता जो तूमुझेइस बंदीखाने से छुड़ा दे तो मैं भी तेरे काम में कभी आजाऊंगा उस विचारे बिप्रदेवताको दयाआई परंतु यह न समझा कि यह मेराबैरीहै इसकीबातका बिश्वास करना न चाहिये झटपट उसके कहतेही दरवाज़ा खोलदिया और बेख-टके उसके हाथ पांव छोड़दिये वह उसमें से निकलतेही उसकीघींच पकड़ अपनी पीठपर लादले चला॥

दोहा—नेकी करना बदोंसे अपना काल बेसाहि।
ज्यों नेकों के साथ में तूने दीन देखाहि॥

ब्राह्मणनेकहा अयव्याघ्र मैं तेरे साथनेकी की उसका यह फल पाया कि तूने ऐसी बदीपर कमर बाँधी॥

चौ०—अबयह बुद्धिबतायउभाई। बैरिकि कबहुंन करैसहाई॥

मैं नेकी करके छोड़ा तू बदी न करै ब्याघ्रबोला हमारे दीन में नेकीके स्थानपर बदी लिखा है यदि तुम्हें मेरा प्रमाण न हो तो चल दूसरे से पुछवादूं देवता ने कहा अच्छा चलो चलते २ मध्य बनमें गये तो एकबरगद का बृक्षथा उसके नीचे दोनों गये उस बृक्षसे ब्याघ्र ने अपना आशय प्रकट किया उसनेकहा कि यह सत्य है इस समय नेकी के बदले बदी है सुन अयदेवता मैं इस

तौ मैं देखकर कहूं नाहर पिंजरे के मध्य में गया विप्र ने उस के हाथ पांव बांधे जम्बुक ने कहा यदि प्रथम से कुछभी अन्तर बांधने में होगा तो मेरा परमेश्वर जाने मैं उत्तर न दे सकूंगा उसने जम्बुक के कहने से बड़ा मजबूत बांधा और पिंजरे का दरवाजह बन्द करके कहा कि अय भाई जम्बुक देखो इसीप्रकार से यह बन्द था जम्बुक ने कहा पत्थर पड़े तेरी बुद्धि पर ऐसे बैरी के साथ नेकी करना अपने हाथ कुल्हाड़ी मारना है तुझे क्या अवश्य है कि बैरी को बन्दी से छुड़ावे जा अपनी राह ले ब्राह्मण देवता ने अपनी राह ली व्याघ्र फिर बन्दी में पड़ा रहा अय वेश्या यह कहानी मैंने इसवास्ते कही कि अब तुझे उचित है कि जो पूर्व और पश्चिम के राजपुत्रों को तूने बन्दी में डाला है छोड़ दे भगवान् तुम्हें भी नरक के दुःख से बचावेगा परन्तु अपने बन्धुओं को कहा कि इन्हें अच्छे प्रकार आराम से रखना यह कहकर बिदा मांगी तब उसने रोरोकर यह चौपाई पढ़ी॥

चौ० देश बिदेश अकेले जाना। होइ दुःख अतिशय बलवाना॥
यहां रहो तुम अति सुख पाई। चेरी ह्वै करिहौं सेवकाई॥
है यह सब धन धाम तुम्हारो। करो अनन्द होहु जनि न्यारो॥
दो० अतिसुकुमार शरीर तुव मारग चलो नहिं जाय।
साथ और दूजो नहीं करिहौ कवन उपाय॥
चौ० इतनी बात मानु मम जानी। जाहु जिसने देश न जानी॥

यह बात मैंने कही सो ध्यान में करके यहां रहो और कहीं न जाओ क्योंकि तुम राजपुत्र हो और तुम्हारे पिता के नेत्र जाते रहे हैं सो दुनिया बड़ी छल की जगह है इससे

प्रसन्नहोय बादरसा गर्ज्जकर बोला कि धन्यवाद उसपर-
मेश्वरका है कि जिसने घरबैठे आहार पहुंचादिया यह
कहकर राजपुत्रसे कहा क्यातुझको नगर में कोई दुःख
पड़ा जो तू अपनी युवाअवस्था खोनेको कालके मुखमें
आया राजपुत्र उसकेभयसे कांपनेलगा और मुखकारंग
बदलगया कहा अय देव तू मेराहाल क्या पूछताहै इस
पृथ्वीपर जीना कितनेदिनहै यदि मुझे प्राणप्याराहोता
तो काहेको मृत्युके पिंजरेमें फँसता अब जीना मुझको
बहुत दुःखदेताहै क्योंकि एक २ पल मुझे एक२वर्षके
मानिन्द बीतताहै आपमुझको मारडालें तो इसदुःखसे
छूटजाऊं देवको उसके दुःखपर दयाआई श्रीशंकरजीकी
सौंह खाकर कहा कि अयमनुष्य मैं तुझे कुछ दुःख न
दूंगा बल्कि जहांतक होसकेगा तेरी सहायता करूंगा
और जिसआशयसे तू आयाहै उसमेंमैं सहाय होऊंगा
अबवह देव राजपुत्रपर बड़ीकृपा करनेलगा औरबार२
दिलासा दियाकरता ताजुलमलूक मीठी२बातेंकरके उस
के हृदयमें ऐसासमागया कि जैसे सुवर्णमें सुहागा मिल
जाताहै एकरोज़ ताजुलमलूकसे पूछा कि तेरा आहारक्या
है उसनेकहा कि मनुष्यका आहार घृत शर्करा मैदा यही
पदार्थ हैं यहसुनतेही देव दौड़ा और ऐसे स्थान पर प-
हुंचा जहां घृत और शर्करा मैदे से लदेहुये ऊंट जातेथे
एक ऊंट लदालदाया उठालाया और राजपुत्र से कहा
कि अपना भोजनले और कर राजपुत्र प्रतिदिन कच्ची
व पक्की रसोई बनायकर खाया करता एक दिन राजपुत्र
ने कई मन मेवा लेकर उसमें घृत और शर्करा मिला

मूर्च्छित होकर गिरपड़ा कुछ देरके बाद जब मूर्च्छा जा-
गी हाय २ करनेलगा और दुःखियोंकासा स्वरूपबना-
कर बोला और कहा कि अयमनुष्य परमेश्वरने तेरी
मौत मेरे हाथ नहींदी बल्कि मेरी मौत तेरे हाथदी सुन
बकावलीसुमन परियों के बादशाहकी कन्या है अठारह
सहस्र किन्तु इससे भी अधिक देव उसके दास हैं वह
सब उसकी रक्षा करते हैं मैं क्या बल्कि उसनगरके नि-
कटरहते हैं उन्होंने भी उसचार दीवारोंको न देखाहोगा
और वहां कोई नहीं जासक्ता परियां अनन्त उसकी
रक्षा करती हैं कि कोई पक्षी तक न जासके और पृथ्वी
के तले मूसोंका स्वामी अपनी अनन्त सेना लिये पड़ा
है और सर्प बिच्छू सब पृथ्वीपर पड़े हैं कि जिसमें
कोई सुरंग न लगावे भला फिर मैं तुझे क्योंकर लेचलूं
मेरा कुछ बश नहीं चलता परन्तु कुछ यत्न करूंगा
कदाचित् कार्य्य होजाय यह कहकर राजपुत्र से कहा
कि आज फिर वैसाही खाना बना राजपुत्र ने शीघ्रही
सब खाना बनाया जब मांस आदि सब पदार्थ तैयार
किये तब कहा कि सब तैयारहै तब वह देव बड़े जोरसे
चिल्लाया तो एकदेव आनपहुंचा दण्डप्रणाम करके
दोनों बैठे फिर ताजुल्मलूक पर दूसरे देवकी दृष्टि पड़ी
राजपुत्रने भी प्रणामकिया सलाम करतेही देवबिस्मित
हुआ और दूसरेसे पूछा कि अयभाई यह बड़े आश्चर्य
की बातहै कि मनुष्य और देवका क्योंकर संगहोसक्ता
है आजतक न सुनाहै न देखा कि दोनों एक ठौररहें इस
के रहनेका क्या कारणहै देवने कहा कि अयभ्राता इस

अपने बालककी भांति पाला है जब मैं उसकार्य्य को जाऊंगा तो घर खालीरहैगा और यहां बड़ाडरभीरहता है इसकारण मनुष्यको तुम्हारे यहां भेजताहूं इसपर कृपा करतेरहियो किसीतरहका इसपर दुःखन होनेपावे इसपत्रको लिखवाकर लेजानेवालेके हाथमें दिया और ताजुल्मलूक की ओर देखकर इशारा किया और कहा कि इसके साथजा मैंने तो अपनी शक्तिभर तुझे देहरी तक पहुँचा दिया अब जो तेरीभाग्य लड़जाय तो तेरा आशय पूराहो यह कहकर चिट्ठी लेजानेवाले के बायें कर पर बिठादिया उसने दाहिने हाथकी साया करके अपना मार्गलिया और बड़ी आरामसे जा पहुंचे और दूरसे पर्व्वताको दण्डप्रणाम किया देवराजपुत्री उस चिट्ठी लेजानेवालेको देखकर बहुत प्रसन्नहुई मारे प्रसन्नता के हृदयमें न समाई॥

चौ० मुदितभईमनहर्षितगाता। यहसुखदीन्होआजुविधाता॥

और कहा कि यदि मेराभाई लालगंधककी खानभेजता था या श्रीशिवजीकी मुद्रिका भेजताथा तो इतना मैं प्रसन्न न होतीथी जैसा कि इसके आने से हुई तदनन्तर उसपत्रको खोलकर उसका वृत्तान्त जाना और उसने उत्तर में यह लिखा कि मैं एक दिन नगरमें गई थी वहां मुझे एक राजपुत्री मिलीथी उसका नाम मैंने महमूदारक्खा और अपनी पुत्रीकी तरह उसको पाला और वह अब चौदहवर्षकी है परमेश्वरने उसका जोड़ा इस बहानेसे भेजा अबबनगया और शुभकरके चिट्ठी लेजाने वाले के हाथ में दी और बिदा किया फिर

तौहूं यदिमानिये तो कहूं हमालहने कहा कि निस्संदेह कहो महमूदाबोली कि ये बकावली के देखनेकी इच्छा रखते हैं जिसप्रकार तुमसे होसके उस तरह पहुँचावो हमालहने बहुत बहानाकिया ज़ब देखा कि पुत्रीहठपड़गई और इसका साथनहीं छोड़ती तबबेबशहोकर कहा कि अच्छा पहुँचाऊंगा फिर मूसों के स्वामीको बुलाकर कहा इसीसमय बकावलीकी बाटिकातक सुरंगलगाओ और राजपुत्र को अपने कन्धे पर लेजाके उस बाटिका में पहुँचाओ परन्तु ख़बरदारी से रखना और अपनी गर्दनसे न उतारना उसने आज्ञानुसार किया राजपुत्रने बाटिका में पहुँचकर चाहा कि धीरे २ उतरकर उसमें जाऊं मूसने न छोड़ा और इरादा फिरनेकाकिया ताजुलमलूकने कहा कि यदि तू मुझे इस बाटिकामें न जाने देगा तो कुशल न होगी मैं आपही किसीतरहपर मरजाऊंगा तबमूस अपने मनमें डरा कि यदि यह मरजायगा तो मुझकोभी हमालह मारडालेगी बेबशहोकेजाने दिया ताजुलमलूक जातेही क्या देखता है कि सुवर्णकी पृथ्वीपर चारदीवारी नीचेसे ऊपरतकहै जिसमें मोती हीरा लाल ज़मुर्रद आदि जड़ेहुये हैं और आसपास फ़ीरोज़ों से नहरें बनी हैं और पुष्पबाटिका लगी है स्वर्ग सा देखकर कहा कि धन्य परमेश्वर क्या अच्छी सुहावन बाटिका है कि देखने वालों के ऊपर उसके चमक का अंश आजाता है और फूलों की लालरी से सूर्य्यनारायण भी लज्जित होते हैं और अंगूर का गोशा ज़मुर्रदकी हरेरी पर विचित्र शोभाको प्राप्तहोता

चमकदारथा मनुष्यको क्या शक्ति है कि उसके स्वरूप का वर्णनकरै सहस्र जिह्वासे नहीं करसक्ते हैं उसके कच जैसे काले नाग और भौंह कमानकासा गोशा था॥

चौ॰ वाकी छबिकाकहौं बखानी। नयनदेखिकै मृगीलजानी॥
कानन कुण्डल अधिक सुहाये। जनु बिरञ्चिने आपु बनाये॥
मोतिन माला छाती सोहै। सुरनरनाग असुरमनमोहै॥

और अद्भुत स्वरूपको देखकरके कि जिसके समीप चन्द्रमा लज्जित होताहै ताजुलमलूक मूर्च्छितहोके गिर पड़ा कुछ देरके पश्चात् जब चैतन्यहुआ तो गिरता पड़ता उसके शिरहाने तक पहुँचा और हाय हाय करके यह चौपाई पढ़ी॥

चौ॰ है प्रसन्न मनमें यह कह्यऊ। अहोभाग्य जो दर्शनभयऊ॥
दो॰ जितने दुखभये मार्ग में सो सब गये भुलाय।
परमेश्वर ने आपते मनहुँ दीन्ह पहुँचाय॥

राजपुत्रने अपने हृदयमें बिचारा कि यहां आने का इसे कुछ चिह्नदेजाऊं तो उसकी अँगूठीधीरे से उतारली और अपनी पहिनादी और फिररोताहुआ वहांसेचला॥

चौ॰ चलतभयोअतिब्याकुलभारी। मानहुँजलबिनमीनदुखारी॥
कर्मदोषदे फिरेउ बियोगी। मानहुंब्रह्महि सुमिरतयोगी॥

विक्षिप्तकीनाईं वहांसेचला और सुरंगकी राहसेनिकल मूसेपर सवारहोकर अपने मकानमें आया हमालह कि जो इसके बियोगमें रोतीथी और बिचारतीथी कि या परमेश्वर कहां को चलागया इसको देखतेही आनन्द को प्राप्तहोगई और जब रात्रिहुई महमूदा और ताजुल्मलूक एकही स्थानमें रहकर बड़े आनन्दसे रात्रिकाटी

इस कारणसे कि मेरे साथी जुदे हैं और इस दुःख से मेरे शरीरमें रुधिर तक नहींरहा यदि आज्ञाहो तो मैं कुछ दिनोंमें उनको देखकर अपने हृदयकी जलन बुझा कर फिर आनन्दसे आकर यहां रहूं ॥

चौ० कहींरहूं तू भूल न मोकों। मोपर कृपारहै ज्योंकीत्यों ॥

मालहः ने यहबात सुनतेही कहा कि मैंने इसीलिये तुझको पालाहै कि अपने नेत्रोंको सुखदिया करूं यह कहकर हाय २ करनेलगी और कहा मैं खूब जानतीहूं कि यह जुदाई राजपुत्र करता है यदि आगेसे जानती तो तेरा बिवाह इसके साथ न करती ॥

दो० होनहार हिरदय बसै बिसरि जाय सब सुद्धि।
जैसी हो भवितव्यता वैसी उपजै बुद्धि ॥

यदि यह होनेको न होता तो काहेको तेरा बिवाह राजपुत्र के साथ करती अन्तको बेबश होके एकदेवको बुलाया और कहा कि जहां कहीं राजपुत्रकी इच्छा हो वहां पहुंचादे परन्तु मार्ग में दुःख न होनेपावै और इन-की रसीद मुझकोलादे तोतू छूटैगा तदनन्तर अपनेदो बाल अपने शीशसे उखाड़कर एकताजुल्मलूकको और दूसरा महमूदाको दिया और कहा कि जिससमय तुमको कोई दुःख पड़ै तो इस बालको अग्निपर रखना फिर मुझको १८००० सहस्र देवोंके साथ वहीं देखना फिर ताजुल्मलूकके हाथ में महमूदाका हाथ देकर कहा कि यहपुत्री मैं तुझको सौंपतीहूं कहनेवालोंने कहाहै कि उ-सीसमय दो देवतड़पतेहुये बिजुलीसे चमकके दौड़आये और उनमें से एकनेपूछा कि जहां आज्ञाहो वहां पहुंचादूं

जगत्में तेरी नेकनामी होगी वह बोली आपइसमें न बोलिये मैं इनको किसीतरह न छोडूंगी यदिएक बातकरें कि अपने२चूतरोंपर मेरीमोहर करवालें तो छोडूंगीनहीं तोकभीनहीं छोडूंगी राजपुत्रोंने जब कोई यत्नछूटने का न देखा तो बेबशहोकेकहा कि अच्छा जो चाहो सो करो तबउस बेश्याने उनके चूतरोंपर चिह्नकरदिया फिर ताजुल्मलूक ने एक २ को लक्ष २ रुपये १०००० मार्गके खर्चेकोदेकर उनको बिदाकिया जब वे चारों वहां से चलकर एकनगरमें आके कुछसेना नौकररक्खी तब घर को चले ताजुल्मलूक भी महमूदा और दिलवरबेश्या और सब असबाबको लेकर इन सबके समेत दूसरे मार्गहोके चला और कहा कि तुम सब फलाने नगर में ठहरना मैं भी दूसरे राहसे आताहूं ॥

सातवीं कहानी ॥

मार्ग में चारोंभाइयोंका ताजुल्मलूकसे मिलना और छीन लेना बकावलीसुमनका ॥

कहते हैं कि ताजुल्मलूक फ़क़ीरकावेषकियेहुये अपने भाइयोंकेपीछे २ चला जाता था कि देखें इनका इरादा क्याहै जहां ये आकेठहरे वहां एक किनारे छिपके बैठ रहा और झूठी लपाटी बातें सुननेलगा परन्तु इससे न रहागया बोला कि क्या मिथ्या बकरहेहो अपने २ मुख तो देखो बकावली सुमन हमारे पास है और उसीसमय अपनी कमर से खोलकर उनके सन्मुख रखदिया राजपुत्रोंने दिक्कहोके कहा कि भला इसको हम अजमादेखें यदि सचहो तो तुमहमको जो चाहो सो दण्डदो नहीं

खोली वो अपने सबवस्त्र सँभाले और केश जो छिटके हुयेथे उनको सँभालकर डुपट्टाओढ़ा और फिर मराल कीसी चाल चलके कुण्डकेपास पहुँची तोअपने कपोलों पर जो गुलाब भराहुआथा छिड़कनेलगी और कुण्डको चारों ओर से देखने लगी तदनन्तर उसकी दृष्टि उस पुष्पकी जगहपर पड़ी तो उसको न देख अत्यन्त शोच करनेलगी और हृदयमें विचारनेलगी कि हे परमेश्वर यह क्याहुआ कि पुष्पका चिह्नभी नहीं इसीशोच विचार में शरीर पीलाहोगया और कहनेलगी कि मैं सोती हूं या जागतीहूं यदि सोती होती तो यह सब चिह्न स्वप्न में न देखपड़ते यह कहकर हाथ पीटनेलगी और कहने लगी कि यह काम किसी मनुष्य का है नहीं तो किसी को इतनी शक्ति नहींथी कि अठारह सहस्र देवोंके बीच से उबरिके जाता सिवाय आदमीके और कौन बेखटके लेजाता ऐसा कहके यह दोहा पढ़ा॥

दो० कहां गयोरे चोर तू अपना नाम बताउ।
विधिना उपजायो नहीं जगमेंतूसमकाउ॥
चोरी करना चोर को मालमता के साथ।
ऐसी चोरी करै जो त्यहिके चूमों हाथ॥

चौ० उर में सेंधि देइके चोरा। प्राण निकारिलियो वहिमोरा॥
परो शरीर धरणि पर कैसे। बिनाप्राणकी मृतिकाजैसे॥

जब मूर्च्छा जागी तो अपने मणिजटित मन्दिर में गई और सब परियों को बुलाके दण्ड देनेलगी परन्तु यह न समझी कि जब भाग्यका बाणछूटताहै तब उपायकी ढाल क्याकरसक्ती है फिर परियों से रिसमेंहोके

बोली अयपुत्र यह कितनीसी बात है परंतु उसकी बा-
टिका और भवनको मैंने नहीं देखा है भला बिन देखे
मकान का डौल क्योंकर डालूं ताजुल्मलूक ने कहा कि
जैसे मैं बताऊं तैसे बनाओ हिमालह ने कई सौदेव
मोती हीरा आदि रत्नों के लिये चारों ओर पठाये देवों
ने तीन दिनके भीतर में मोती हीरा आदि के ढेरलगा
दिये फिर राजपुत्र जिसतरह बताने लगे वैसेही बना-
ने लगे प्रथम तो कुछ पृथ्वी खोदकर खोली द्रव्य भर
दिया और फिर सुवर्ण और मोती रत्नादिक से भवन
बनाने का प्रारम्भ किया थोड़ेही दिनके पीछे सब वैसा-
ही भवन और बाटिका तय्यारहुई और आमने सा-
मने दोतिदवारी माणिक की बनवाई और बीचमें कुंड
बनवाया और गुलाबसे भरवादिया फिर वैसाही बिछौ-
ना जैसा कि बकावली के यहां बिछाथा बिछवादिया
और जितनी चांदी माणिकादि देव लायेथे उसका अर्द्ध
तो ख़र्चहुआ शेषख़ज़ाने में रखवादिया जब सब भवन
बनाचुका और ताजुल्मलूककी पसंद पड़ा तब हिमा-
लह ने कहा कि देख तेरे लिये मैंने बड़ाश्रम किया मेरी
पुत्रीको कुछ दुःख न होनेपावे यह कहके बिदा हुई त-
दनन्तर राजपुत्रने जहां उसने महमूदा और दिलबर
को ठहरने को कहाथा वहां बड़ेठाट से गया और ज-
ड़ाऊ अम्मारियों पर बिठाकर ले चला आगे २ दास
सोनेरूपेकी भण्डी पकड़े तुरंगोंपर सवार जयशब्द
उच्चारण करतेहुये चलेजातेथे इसप्रकार से उस मन्दिर
में तीनों आये और आनन्द पूर्वक रहनेलगे॥

दिन इसका दूना दियाजायगा लकड़िहारोंने पारितो-षिक पाकर बड़ाआनन्द किया और वहींजाकर बसे इसीप्रकार जो कोई वहां जाता फिर लौटके नहीं आता यहां कोतवाल प्रतिदिन मंत्रीसे कहता कि सब असा-मी निकली जातीहैं एकदिन कोतवाल से राजमंत्रीने यह सुना कि आज एक सहस्र घर खाली होगये तब राज मंत्रीने कहा कि कुछ यह भी जानते हो कि कहां जाते हैं उसने कहा कि मैंने सुनाहै कि किसीने बनमें दश कोश तक सुवर्णकी पृथ्वी बनाई है और उस पृथ्वीपर एक नगर बसायाहै और एक महल और बाटिका कि वह खाली रत्नोंकीहै बनाई है वैसा नगर पृथ्वीपर दूस-रा नहीं है राजमंत्रीने वार्त्ताको झूठ समझा और कहा कि जो काम मनुष्यकी शक्तिसे बढ़केहै उसको कैसे म-नुष्य करसकैगा कोतवालने फिर विनयकी कि अभी फिर ख़बरआई है झूठ क्योंकर होगी क्या आश्चर्य्य कि जो परमेश्वर पुरुषको स्त्री और स्त्रीको पुरुष बनाताहै आपने उस कन्या और देवकी कहानी नहींसुनी है कि जिसमें पुरुष और स्त्रीका चिह्न परस्पर बदलागयाहै राजमंत्रीने कहा क्योंकर ॥ कहानी ॥ कोतवालने बिन-यकी कि प्राचीन युगमें एक राजाके यहां सौ वेश्याथीं परंतु किसी के पुत्र न था कुछ दिनकेपीछे एक गर्भवती हुई और नौमास पीछे उसके पुत्री उत्पन्नहुई इसीप्रकार दूसरी और तीसरीबार भीगर्भवतीहुई तो पुत्रीही उत्प-न्नहुई चौथीबार जब गर्भसेहुई तो भूपतिने कहा कि यदि अबकी फिर लड़की होगी तो माता और पुत्री दो-

प्रकारसे तेरे लगादूं और तेरा चिह्न मैं लेलूं उस पुत्री ने कहा अच्छा तब परस्पर बदला करालिया फिर वह कन्या पुरुष होकर अपने डेरे पर आई कई दिनके पीछे जब बरात स्थानपर पहुंची भूपति बिवाहसे छुट्टी पाके अपने देशको आया और राजपुत्र नकली कुछ दिन वहां रहा जब उसके वहां पुत्र उत्पन्न हुआ तब अपने देशकी इच्छाकी और वहांसेचला जब उसबनमें पहुँचा और उस वृक्षकेतले गया तो देखता क्याहै कि वह देव वृक्षपर स्त्रीकावेष बनाये बैठाहै राजपुत्रीने कहा कि अय देव मैंने अपने हृदयकी अभिलाषा भरपाई अबतू अपनी बस्तुले और मेरीमुझेदे देवने कहा कि अबमैं उस कामका नहीं रहा हमारी भाग्यमें यही लिखाथा उसने पूंछा कि इसका क्या कारणहै सो कहो देव बोला कि मैं तेरी राह देखतारहा कि अचानक एक देव मेरे पास आया उसके देखनेसे मुझे बड़ाविरहहुआ मुझसे न रहा गया और उसनेभी दौड़के मुझे छातीसे लगाया और मुझसे प्रसंग किया कि अबमेरे गर्भ रहगया है यदि अबमैं फिर पुरुषका चिह्नलूं तो पुत्र उत्पन्न होनेके समय प्राणसे हाथ धोबैठूं इसके सिवाय यहभी ज्ञात हुआ कि पुरुष से स्त्री को अधिक कामकी अग्नि होती है अब अपने घरकी राहले मैंने अपनी वस्तु तुझीको देडाली राजमन्त्रीने कहा कि परमेश्वरकी इच्छासे यह सबहुआ परन्तु जो काम मनुष्य किसीप्रकारसे नहींकरसक्ता उस को मैं क्योंकर हृदयमें लाऊं क्यातूने पक्षी और फ़क़ीर की कहानी नहीं सुनी है॥

अय मनुष्य मेरे बेचने से तुझे क्यालाभ होगा और खानेसे कुछ न होगा मुझको कईबातें अच्छी २ आती हैं यदि तू छोड़दे तो कहूं उसने वैसाही किया तब पक्षी ने कहा सुन परमेश्वर चाहे तो राई को पर्व्वत करै और पर्व्वत को राई पर मनुष्य की बातपर कुछ ध्यान न करै दूसरे यह कि जो वस्तु अपने हाथ से जातीरहै उसको शोच न करै अब मुझे छोड़ दे फ़क़ीर छोड़कर अलग खड़ाहुआ तब पक्षी उड़कर एक वृक्षपरजा बैठा और बोला कि अय फ़क़ीर तू बड़ानादान है जो ऐसा शिकार हाथसे छोड़दिया मेरे उदरमें एक लाल है यदि तू मुझे खाता तो वह भी मिलजाता फ़क़ीर पछिताया और कहा कि हुआ सो हुआ अब तू और बातें कर पक्षी बोला कि तेरा हृदय चिकने घट के तुल्य है मेरी बातें तुझपर कामनहीं करैंगी वृथा क्यों बकूं मसल है कि (अन्धकेआगेरोना । अपनी आंखेंखोना) अय नादान तू अभी भूलगया कि मैं लाल क्योंकर खाता यह कहकर पक्षी उड़गया और फ़क़ीरने अपने घरकी राह ली इसबात से मेरा यहअर्थहै कि परमेश्वरको सबसामर्थ्य है परंतु मनुष्यको चाहिये कि सब वृत्तान्त अच्छे प्रकार जान ले तब भूपालसे कहै इसलिये उचितहै कि प्रथम अपनी आंखों से देखलो तब कुछ कहो ॥

ग्यारहवीं कहानी ॥

जैनुल्मलूक को सम्पूर्ण सेनाके साथ ताजुल्मलूकके मन्दिर में जाना और दावतको अंगीकार करना ॥

जब यह सब बार्त्ता होचुकी तो कोतवाल वह नगर

मनोरथ पूर्णहोनेका भरोसा पड़ा और यह दोहा पढ़ा॥

दो० बहु दिनके पश्चात् म्वहिं भेद मिलो है आय।
चोर मोर है है वहीं चितमें यही समाय॥

जब भूपति ने यह वृत्तान्त मंत्रीसे सुना तो कुछदेर सुस्तसा बैठारहा फिर मंत्रीसे कहा कि यदि यही हालहै तो एक दिन राजधानी में बिगाड़ अवश्यहोगा मंत्री ने विनय की कि प्राचीन आचार्य कहगये हैं कि जिसबैरी से बस न चलै उससे किसी प्रकार मिलजाना उचित है॥

दो० जो बैरी से नहिं चलै अपनो कछू उपाय।
वेदशास्त्र याहीकहत कौनिउ बिधि मिलिजाय॥

अब उचितहै कि उससे मित्रताकरैं और प्रीतिबढ़ावैं भूपतिने कहा कि तेरे सिवाय और कोई यह कामनहीं करसक्ता राजमन्त्री यह आज्ञा पाके बड़ी धूमधाम से चला एक दिनके पश्चात् ताजुल्मलूकको उसके आने की ख़बर पहुँची तो आज्ञादी कि रत्नजटित मन्दिररहने केलिये झाड़ बहारके सफ़ा कियाजाय और बिछौना बिछायाजाय और कुण्डका गुलाब बदलाजाय सबने आज्ञानुसार कामकिया जब मन्त्रीआया और बैठा तो थोड़ी देर के पश्चात् ताजुल्मलूक भी वहां आया और एक जड़ाऊ चौकीपर बैठा राजमन्त्री ने दण्ड प्रणाम किया और विनयकी कि एक दास भूपति का आपके निकट आयाथा उसने नरेश से जाके आपका वृत्तान्त सब बताया तो भूपतिके हृदयमें आपके मिलनेकी बड़ीइच्छा हुई तब ताजुल्मलूकने कहा कि जो मुझे चाहिये था वह नरेश के तरफ़ से हुआ मैं भी यही चाहताथा कि

गजतय्यार कराकर सवारहुये जब सवारी ताजुल्मलूक के नगरको चली और जैनुल्मलूक घरसे कोशभर भी न गया होगा कि उस पृथ्वी के बिछौने और तम्बू और मेखोंकी चमक सूर्य्यकी किरणके समान दृष्टिपड़ी राजा ने पूंछा यह मार्ग वही है मंत्रीने कहा यह मार्ग वह तो नहीं है यह तो रात्रिही भरमें कुछ चरित्र होगया प्रथम यहां न था यहां तो बिकट बनथा उसका नगर तो अभी बहुत दूरहै भूपाल और मंत्री यहीबातें करतेथे कि ताजुल्मलूक के दासोंमेंसे एकने बिनयकी कि हमारे स्वामीकी यह आज्ञाहै कि भूपतिकी सवारी जितनी आगे को बढ़े उस स्थानकी सम्पूर्ण वस्तु फ़क़ीरों और भूखों को लुटादो और नरेश जिस तम्बू में चाहैं उस तम्बूमें उतरैं निदान भूपालको मंज़िल २ पर सब सामग्री मिलतीथी कि दूसरे राजाको वैसी प्राप्त न हो ताजुल्मलूक भूपतिसे एक मंजिलपर आगे आकर मिला और साष्टांग प्रणाम करके घरमें लेगया और रत्न जटित मन्दिर में बिठाया और आज्ञादी कि नये नये फर्श बिछायेजायँ और कुण्ड गुलाब से भराजाय और फुहारे छूटैं भूपति यह दशादेखकर चकित होगया और अचम्भा सा मानकर देखनेलगा और बकावली ताजुल्मलूकका स्वरूप देखकर मोहित होकर दीवानी सी होगई और मूर्च्छित होकर गिरपड़ी घड़ी भरके पश्चात् चेती तब इधर उधर देखनेलगी तो देखकर कहनेलगी कि यह मकान तो मेराहै कोई जादूगर उठालाया है और वनमें रक्खा है फिर एक परी जो गुप्तरूप से उसकी सेवकाई में थी

और किसी ने उसको नहीं देखा है तब राजपुत्र ने उस अमीर से कहा कि देखो इससभामें कोई मनुष्य उसकी सूरतिकाहै या नहीं उसने सबकी ओर देखकर कहा कि इसमें कोई उस राजपुत्रकी शकलका नहींहै परन्तु आप का बोलचाल और कुछ चेहरा भी मिलता है इसबात के सुनतेही ताजुलमलूक अपने बाप के चरणों पर गिर पड़ा और कहने लगा कि मैं वही अभागी बालक हूं मेरी बड़ी भाग्यथी कि पिताके चरणारविन्दों के दर्शन पाये जैनुलमलूक प्रसन्न होके अपने हृदय में लगालिया और पुत्र से कहने लगा कि यह हमको तुम्हारे जन्म पत्र से विदित हुआथा कि धन द्रव्य पृथ्वी तुमको बहुत प्राप्त होगी अब यह बताओ कि तुमने अपना विवाह कियाहै या नहीं राजपुत्र ने कहा कि सेवक के दो स्त्रियां हैं यदि आज्ञाहो तो अभी बुलाऊं भूपतिने कहा बहुत अच्छा राजपुत्र घरमें जाकर दिलबर और महमूदादोनों को लाया वे दोनों उस मन्दिर के निकट आय ठिठुक रहीं तब जैनुलमलूक ने कहा कि यहां क्यों नहीं आती हैं ताजुलमलूकने विनयकी कि ये आपकी दासी मारे लज्जाके यहां नहीं आतीहैं कि इनकी मोहरका दाग़ मेरे चारों भाइयोंके चूतड़पर बनाहुआ है यदि आपके चित्तमें यहबात अभी न आईहो तो देखलो यह सुनतेही चारों राजपुत्रोंके मुखका रंग पीला होगया और मारे लज्जाके वहांसे उठगये तब दोनों स्त्रियां आनकर राजा को दण्डवत्की फिर भूपति ने सबहाल ताजुलमलूक से बाहर जानेका औरमहमूदा और दिलबरका पूंछाराजपुत्रने सब

जब ताजुलमलूकने उस चिट्ठीको सुना तो हर एक पंक्ति उसकी विरहसे भरीहुई सुनकर हृदयमें विरहकी आग प्रज्वलितहुई और काग़ज़लेखनी लेके चिट्ठी का उत्तर लिखा उसमें यह लिखा॥

चौ० गोल कपोलवने अति प्यारे। जनु विरंचिने आपुसँवारे॥
लोचन देखि मृगी शरमायो। अपनेजियकोगर्व्वगँवायो॥
तेरी कटिको केहरिदेख्यो। तौ अपने को तृणसमलेख्यो॥

और तुझमें सूर्य्यसे भी अधिक चमकहै इसीप्रकार से बहुत सी बड़ाई लिखी और लिखा कि तुम यह न जानना कि मेराध्यान और कहीं है मैं रातदिन तेरीयाद में रहताहूं ऐसा कोईदिन नहीं कि तू मेरेहृदयसे भूलती हो तेरी प्रीतिके कारण मैंने अपने प्राणको कुछ भय न किया कि रहैगा या जायगा मेरे बिरहकी आग तेरे हृदयमें जापड़ी मेरी भाग्य और परमेश्वरकी दयासे मेरे परिश्रमका यह फल मिला यह लिखके शुभकिया और पत्र लिफ़ाफ़ेमें बन्द करके समनरूपरीके हाथ में दिया और ज़बानी भी कहलाभेजा तब वह परी बिदाहोके बकावलीके पास आ पहुँची चिट्ठीदी और ज़बानी जो हालथा सो कह सुनाया॥

तेरहवीं कहानी॥

बकावली के पास ताजुलमलूक का जाना और बकावली का अपनी माताके हाथसे क़ैदमें पड़ना॥

कहते हैं कि जब बकावलीने ताजुलमलूककी प्रीति अपने से अधिक देखी तब समनरूपरीसे कहा कि हि-मालहको शीघ्रला वह सुनतेही दौड़ीगई और क्षणभर

की राहली इतने में जमीलाखातूनके श्रवणमें खबर प-
हुँची कि तुम्हारी बेटी वियोगिनसी होरहीहै विदित हो-
ताहै कि किसी मनुष्यपर वह मोहित हुई है इस बातके
निश्चय करने के लिये वह बकावलीके पास आई और
उसका हाल देखकर बहुत भुलभुलाई और यह कहा
कि किसके पीछे यह विरहबढ़ायाहै और किसलिये यह
योग साधा है तूने परियों का नामडुबोया और कुलकी
लाजछोड़ी उसने यहबातें सुनके कानों में हाथरखलिया
और कहनेलगी कि मैंने विरहका नाम अभी तक नहीं
सुना और मनुष्य को स्वप्नमेंभी नहीं देखा किसने यह
झूंठा तोफ़ान बांधा और तुमसे कहाहै सचबताओ नहीं
मैं मरजाऊंगी यह सुनके उसकी माताका हृदय पघिल
गया और उस को देखकर ऊपरीमन से क्रोधित होके
बोली कि चल चुपरह इतने घघोटे मतकर आंशू मत
बहा इतने में हिमालह ताजुल्मलूकको लेकर आनपहुँची
समनरूपरी ने इशारे से कहा कि वह बटोही आनपहुँचा
बकावलीनेभी इशारे से जनाया कि उसको एक मन्दिर
में छिपारक्खो निदान एकयाम रात्रिगये तक तो बका-
वली अपनीमातासे बातें करतीरही जब जमीलाखातून
अपनी सेजपर जाके सोरही और बकावलीने देखा कि
वह सोगई तब वहांसे घबरातीहुई मन्द २ चली और
कुछ देरमें राजपुत्र के पास आ पहुँची वह इसको देख-
तेही मूर्च्छित होकर गिरपड़ा तब इस ने दौड़ के उसका
शीश उठाके अपने जंघोंपर रखलिया और मुखसे मुख
मीजनेलगी और कपोलसेकपोल उसके मुखमें गुलाबसे

ज़शाहके पासगई और विनयकरके कहा कि हमने ब-
हुत समझाया बुझाया परन्तु वह कुछ नहीं मानती अब
हमारा कुछवश नहीं फ़ीरोज़ शाहने जाना कि पुत्री हाथ
से जाती है तब उसको बन्दीखाने में डालदिया और
नर्म्मपावोंमें लोहेकी जंजीर डालदी ॥

चौदहवीं कहानी ॥

ताजुल्मलूकका नदी में गिरना और वहांसे निकलकर वनमें
जाना और प्रथम स्वरूप को बदलना ॥

कहते हैं कि जमीलाखातून ने राजपुत्रको पवनपर
फेंका तो वह एकबड़ी नदी में जा पड़ा और उसकी लह-
रोंसे नीचे ऊपर होनेलगा कुछ दिनके पीछे किनारे पर ब-
हतेबहते आनपहुंचा तो मुर्दासा होगया जब सूखेमें आया
तो सूर्यनारायणकी गरमी से उसके हाथ पांव सीधे हुये
फिर आगेबढ़ा तो सामने एकटापू दिखाईदिया उस में
जा पहुंचा तो उसमें क्यादेखा कि भांति २ के वृक्ष लगेहैं
राजपुत्र इधर उधर घूमताथा कि इतनेमें एक पुष्प बा-
टिका दृष्टिपड़ी कि उस में वृक्षोंके फल मानों आदमियों
के शिरथे जो इसनेउनकोदेखा तो वे खिलखिलाकर हँस-
नेलगे फिर सबके सब गिरपड़े कुछ देरमें फिर और नये
शिर उनडालियोंमें उत्पन्नहोगये राजपुत्र यहचरित्र दे-
खकर बड़े आश्चर्य में हुआ और डरकर वहांसे आगे
बढ़ा तो एक अनारका बाग़मिला उसमें से एक अनार
तोड़ा तो छोटे २ पक्षी उसके भीतरसे शोभायमान नि-
कल पड़े फिर सब चिड़ियों की तरह उड़गये राजपुत्र
यह देखकर और भी आश्चर्य्यमें हुआ निदान ऐसे २

और अजदहेनेभी अपनेसमयपर आकेवैसाहीफिरकिया और राजपुत्र घात लगाये बैठारहा जब घात पाई तो उस लोंदेको ऐसा फेंका कि मणि लोंदेकेतले होगई तोसबवन में अन्धकार होगया तब अजदहा और सर्प अपना२ शीशपटक२कर मरगये जब सबेराहुआराजपुत्र उसवृक्ष से उतरकर उस मिट्टीकेतले से मणि निकालकर आगे चला एकदिन रात्रिकेसमय उसवृक्षकेतले गया जिसपर मैनाका घोसलाथा वह अपने बच्चेको प्रतिदिन नवीन२ कथासुनाया करतीथी उसरात्रिको बच्चेने कहा कि हेमाता आज कुछ इसवनका तो वृत्तान्तकहो उसकी माताबोली कि हेपुत्र इसवनमें ठौर ठौरपर द्रव्यगड़ी हुई है और इस के सिवाय यहां से दक्षिणकीओर एककुण्डहै उसका नाम सिराजुल्कुतुब है और उसपर एकवृक्षहै यदि कोई उस वृक्षके छालकीटोपीपहिनेतो वह किसीको देखनपड़े और वह सबकोदेखे परन्तु उसको कोई पा नहींसक्ता क्योंकि एक बड़ासांप उसपर रखवारहै जिसपर तलवार और तीर कुछ असर नहीं करता बच्चे ने पूंछा कि फिर किस कारणसे पहुंच सक्ता है शारिका ने कहा कि ऐसा कोई कठोरजीका आदमी हो कि घबड़ा न जाय और कुण्डमें कूदपड़े तो कौवा होजायगा उसकी चिन्ता न करे और उड़कर उसवृक्षकीपश्चिमीडालीपर जा बैठे उसमेंबहुत फल हरे और लाललगेहैं यदिलाल फलखावे तो फिर अपनी सूरतपर होजावे और हरेफल में यहगुण है कि यदि कोई अपने शीशपर धरे तोकोई हथियार उसके न लगे और कटिमें बांधे तो पवन में उड़ता फिरे और

अपने अंगको देखा कि पुरुषका चिह्न जातारहा और स्त्री की सूरतहोगई और अनारके समानकुच निकल आये ताजुल्मलूक यहदशा देख अतिआश्चर्य्यमें होके घबड़ानेलगा परन्तु धीर्य्यके सिवाय और कुछ न सूझा मारेलज्जाके एकान्तमें बैठकर रोनेलगा इतने में एक पुरुष आनिकला उसनेदेखा कि एकस्त्री बड़ीस्वरूपवती नवयौवना बैठीरोरही है उस पुरुषसे न रहागया उसके पासजाके पूंछा कि अयप्यारी तुमपर क्या इतना दुःख पड़ा है कि जो अकेली बैठी रोरहीहो उसने उत्तरदिया कि मेरापिता बनिजकरताथा और मुझको अपने साथ रखताथा सो इसबनमें लूटलियागया और वहभी पकड़ा गया और जो आदमी बचेथे अपने २ प्राणलेके भाग गये मैं अकेलीयहां पड़ीरही पुरुषनेकहाकि अयप्यारी यदिमुझको अंगीकारकरे तो मैं अपनेसाथ लेचलूं और स्त्री पुरुषका नाताकरके रक्खूं इसकेभी बिरहकी आग उसकोदेखके भड़कउठी तो इसबातपर राज़ीहोके उसके साथचली और उसको अपना पुरुषबनाया परन्तु ताजुल्मलूक इसबातसे कभीरोता और कभीहँसताथा जो उसपर बीतीथी थोड़ेदिनके पश्चात् ताजुल्मलूकके गर्भ रहा और जब नव महीने व्यतीतहुये तबलड़का उत्पन्न हुआ फिर चालीस ४० दिनके पीछे एक कुण्डमें जो उसपुरुषके घरके निकटथा जाके बुड्डीमारी ज्योंहीं उसमें से निकला तो देखा कि न वहपृथ्वी है और न वहस्थान है और स्वरूप एकहब्शी पुरुषकासा होगया तब तो परमेश्वरका धन्यबाद किया कि अपना स्वरूप तो न

हाल देखा तो पृथ्वी पर चलना छोड़ दिया और हरेरे फलोंकी शक्तिसे पवनपर चलनेलगा एकदिन पवनपर उड़ते २ एक पर्व्वतपर पहुंचा वह पर्व्वत ऐसाऊंचाथा कि काफ़ पहाड़ उसे देख लज्जित होताथा उस पहाड़ पर एक पत्थरका मन्दिर दृष्टि पड़ा राजपुत्र वहां गया परन्तु किसी जीवमात्रको वहां न देखा थोड़ीदेरके पश्चात् क्या देखता है कि एक स्त्री अति स्वरूपवान् शय्यापर पड़ीहै और हुचकी मार२रोरही है राजपुत्रने उसके निकट जाकरकहा अयप्यारी तू अपनी जवानीमें काहेकोदुःख दे रही है तूने अपने यारसे किनारा क्यों किया जो यह दुःख सहती है वह सुनकर अति लज्जितहुई और डुपट्टेको मुख पर डालके बोली कि तू कौनहै भाग नहीं माराजायगा ताजुल्मलूकने कहाकि यदिमेरा शीश जिसको मैं तृणके समान जानताहूं तुझे चाहहो तो मौजूद है और जो किसी बैरीसे डरती है तो मैं कभी नहीं डरता यहकहकर कहा कि अपना तूसम्पूर्णहाल मुझकोबता उसने कहा कि मैंपरीहूं और रूहअफ़ज़ा मेरानाम है मैं मुज़फ़्फ़र शाह बादशाहकी बेटीहूं एक दिन मैं अपने चचाकी बेटी बकावली जो बीमारथी उस को देखने को उसके सुमन बाटिका में गईथी फिरते समय अचानक एक कालादेव आया और मुझ को उठाकर यहां बैठादिया अब वह मुझसे प्रसंग किया चाहताहै और मैं दूर २ भागतीहूं इसलिये मुझको प्रतिदिन नवीन २ कष्ट देताहै ताजुल्म-लूकने पूछा कि तेरेचचाकी बेटीको क्या रोग है रूहअ-फ़ज़ाने कहा कि वह किसी मनुष्य के ऊपर मोहित है

पग में छुवाई बेड़ी तुरंत कटगई फिर वहां से टापू फिर-दोशकी राहली कुछ थोड़ीदूर गयेथे कि बड़ाभारी शब्द पीछे से सुनपड़ा रूहअफ़ज़ाने कहा कि अय राजपुत्र चौकस होरहो वह देव आपहुंचा ताजुलमलूक ने वह टोपी बगल से निकाल रूहअफ़ज़ा के शीशपर रखदी इतने में देवभी सामने आया राजपुत्रने ललकारा कि ख़बरदार आगे पग न बढ़ाना नहींतो एकही हाथमारूं-गा कि निर्जीव होजावेगा देव बिजुलीके मानिन्द तड़प दांत निकालकर बोला कि अजब तमाशेकी बातहै कि चींवटी हाथीसे लड़ना चाहती है मैं लज्जित होताहूं कि मक्खी के रक्तसे क्या अपना मुखभरों अब स्त्री मुझको दे और अपनी राहले जैसे दीपक में पतंग जलताहै वैसे मैं उसपर मरताहूं राजपुत्रनेकहा कि अयमर्द तू इसके योग्य नहीं है भला तू इसको अपनी स्त्री बनाताहै मैं परमेश्वर का डरकरताहूं नहीं तो अभी तेरीजिह्वा निकाल डालता यह सुनकर देवने एक पर्व्वत सौमनका उठा के इसकी तरफ़फेंका राजपुत्र हरफलकी शक्ति के कारण पवनपर उड़गया और वहलाठी जो उसवृक्ष से लायाथा देवके ऐसीमारी कि देवकांपनेलगा और कहा कि दूरहो अबकी बार छोड़दिया नहीं तो मारही डालता जब देवने शत्रुको बलवान् समझा तो बड़े ज़ोरसे चिघड़ा इतने में सैकरों देव आनपहुंचे और ताजुलमलूकको घेरलिया ताजुलम-लूकने जैसा चाहिये वैसा परिश्रमकिया और देवों को क्षणमात्रमें मारडाला॥

चौ० युद्धभयो अतिघोर कठोरा। हालिउठी पृथ्वी चहुंओरा॥

खकर पठाया वह सुनकर अति प्रसन्नहुआ और कहा कि जमीलाखातून उसके देखने को शीघ्रही जावै और अपने नेत्रोंसे देखआवै बकावली ने जो अपनीमाताके जाने का हाल सुना तो कहला भेजा कि मैं भी अपनी बहिनके देखने के लिये चलूंगी यहसुन जमीलाखातून अति प्रसन्नहुई इसलिये कि वहां जानेसे इस के हृदय का सब हाल खुलैगा पगोंकी जंजीर काटदी और टापू फिर दोशको अपनेसाथ लेचली मुज़फ़्फ़रशाह ने जब सुना कि जमीलाखातून और बकावली आती हैं रूह अफ़ज़ा को अगवानी के लिये पठाया वहजाकर अपनी चचीको प्रणामकिया और पांवोंपर गिरपड़ी उसनेहृदय में लगालिया और बलायें लीं फिर दोनों बहिने मिलीं और रूहअफ़ज़ा मुस्कराकर बकावली के कानमें कहने लगी कि तुम अपनी नाड़ी उस वैद्यको दिखावो कि जिसके कारणसे बीमार हो और जिसकी दवा करना चाहतीहो यहसुनकर बकावली माता के आगे चुपरही कुछ न कहसकी और हृदयकी हृदयमें रक्खी इतने में रूहअफ़ज़ा दोनों को घरमें लाई मुज़फ़्फ़रशाह और हुस्नआराभी जमीलाखातूनसे मिले और सबहाल कुशलक्षेमका पूंछा जमीलाखातून तो रातही भररही दूसरे दिन बिदाहोके चलीगई रूहअफ़ज़ाने बकावलीको रख छोड़ा और उसकी माता से कहदिया कि कदाचित् यहां के रहनेसे कुछ उसको आराम होजावे जमीलाखातूनने कहा क्या हर्ज़ा रहनेदो और एकपक्षभर रखनेकी आज्ञादी और आपचलीगई तब रूहअफ़ज़ा बकावलीको

और कहनेलगी कि अय बहिन तूतो दुनियां के स्वाद को जानती न थी और पुरुषका मुखभी न देखाथा फिर इस मनुष्य के गले में लगकर क्योंरोती है और उसके ग़मसे अपनाप्राण क्यों खोती है तूने मेरे चचाका नाम बोरा और सब कुलमें कलंक लगाया यहसुनकर बकावली बोली कि अय रूहअफ़ज़ा तूनेमेरे घावपर मलहम लगायाहै इसलिये तू उसमें अब छुरी न मार और जो नेत्रोंका शर्बत पिलाया है तो बिष न खिला अब जो तू चाहै सोकर निदान कईदिनतक दोनों आनन्दकरतेरहे और प्रेमरस पीतेरहे और अपनी २ तृष्णा बुझाई जब बकावली के जानेके दिन आन पहुंचे तब ताजुल्मलूक फिर तलफनेलगा जैसे जलके बाहर मछलीको डालदे तो वह तलफ २ कर प्राणखोना चाहती है तैसेही ताजुल्मलूकभी तलफने लगा बकावलीनेभीचाहा कि हया व लज्जा छोड़दूं परन्तु रूहअफ़ज़ानेकहा कि अय बहिन बड़ी हँसी संसारमें होगी थोड़ेदिन और धैर्य्यधर माता पिताकी सेवकाईकर परमेश्वर चाहैगा तोथोड़ेही दिनमें जिसको तू चाहती है उसको मिलाऊंगी बकावली यह सुनकर बेबशहोकर घरकोगई औरमाता पिताकी सेवकाई करने लगी ॥

अट्ठारहवीं कहानी ॥

रूहअफ़ज़ाको बकावली और ताजुल्मलूककी प्रीतिका वृत्तान्त अपनीमातासे कहना और उसकी माताको जमीलाखातूनकेपास दोनों के विवाहार्थ जाना ॥

कहतेहैं कि जब बकावली रूहअफ़ज़ासे बिदाहोकर

हाल मतकहना अपनी पुत्री किसी तरह उसको न दूंगी और चोरको अपना दामाद न बनाऊंगी फिर हुस्नआरा ने राजपुत्र के स्वरूप का चित्र जमीलाखातून को दिया और कहा कि यह चित्र नगर शरकिस्तानके राजपुत्रका है देख ऐसा सुन्दरवर संसार में न होगा उत्तमहै कि इनदोनोंका बिवाह करदे तब उसने कहा कि अच्छा फिर कहने लगी कि अय बहिन उसको मैं कहां ढुंढ़वाऊं और किस यत्नसे लाऊं तब हुस्न आराने कहा कि धैर्य्यधरो और बिवाहका सामानकरो मैं उसको अमुक दिनबरात समेत लाऊंगी यह कहकर बिदाहुई और क्षणमात्र में अपनेघर आपहुंची और सबबातें राजपुत्र से कहीं और उसका बोध किया॥

उन्नीसवीं कहानी॥

ताजुल्मलूक और बकावलीके ब्याहका बृत्तान्त॥

लिखने वालेने लिखा है कि जो बातें जमीलाखातून और हुस्न आरासे हुईं सो जमीलाखातून ने फ़ीरोजशाह से सब कह सुनाईं और राजपुत्रका चित्र भी दिखादिया उसने बकावलीके पास भेजवा दिया कि यह चित्र शर-किस्तान के राजपुत्रका है कि संसार भर में ऐसा रूप अनूप कहीं न होगा तू मनुष्यकी ज़ातपर मरतीहै यदि तेरी इच्छाहो और तेरेमनमें हो तो तेरा बिवाह इसके साथ करदें और जोकुछ ज़बानी भूपने कहा था सो भीउस परीने जोचित्रलाईथी सबकह सुनाया बकावलीने विचार के देखा कि यह चतुरता रूहअफ़ज़ाकी है निदान बहुत प्रसन्न हुई और हँसकर उसपरी से कहने लगीकि तुझे मेरी आंखोंकी सौंह है यह चित्र उस राजपुत्र काहै या

दो० करि शृँगार भूषणसजे बैठी परियन मांझ।
चन्द्रमुखीमृगनयनिवर जबलौं ह्वैगइ सांझ॥

जब संध्याहुई और बरातभी नगरके निकट आ पहुंची तब फ़ीरोज़शाहने अपने मंत्री और सभासदों को उनकी अगवानीके लिये पठाया वे बड़े अदब से उनको लाये और जहां सब सभाकेलोग बैठेथे वहीं बड़े आदर से बैठाया और जमीलाखातून हुस्नआराको बड़ेआदर सत्कार से लिया और प्रहर भर रात्रिरहे तक नाचरंग में रहे तदनन्तर उसको कोमलांगीके साथ उसे ब्याह दिया चारों ओर से धन्य २ का शब्दमचा फिर शर्बत पिलानेलगे सुंदर गजमुक्ता और सुगन्धित विचित्र पुष्प माला पहिनानेलगे इलायचियां और चिकनी डलियां और चोवेकी शीशियां देनेलगे जब इस भांतिसे संपूर्ण रीतें होचुकीं और सबबराती बिदाहुये तो शयनालयके परदेछोड़े और दूलहदुलहिन शय्यास्थभये॥

चौ० ज्यों दीपकमें गिरैपतंगा। जानजायनहिंछांड़हिसंगा॥
निशिकाशयनकीन्हइकठामा।अतिसुखसेकीन्होंबिश्रामा॥

और फिर मुखसे मुख मिलाकर और अंग में अंग मिलासोये जब भोरहुआ फिर राजपुत्र स्नानकेलिये उठके बाहर गया और रूहअफ़ज़ा उसमकानमें आई बकावलीको देखा कि रात्रिकी जागीहुई अचेत सोरहीहै हार टूटे पड़ेहैं काजल नेत्रोंका इधर उधरलगा है कपोलोंपर दांतोंके चिह्नपड़ेहैं और कुचहाथोंसे मलेहुये बने हैं यह दशा देखकर रह न सकी बहुतहीशीघ्र जगादिया और हँसके कहनेलगी कि अय बहिन उसदिन कहतीथी कि

राजपुत्र भी उनके साथ निशिदिन चैनसे रहता था॥

इक्कसवीं कहानी॥

राजा इन्द्रकी सभामें बकावलीका जाना और उसके सन्मुख नृत्यादि करना और परस्पर प्रिया प्रीतममें वियोगहोना॥

हिन्दू लोगों की पुस्तकों में लिखा है कि अमरनगर नाम एक नगरीहै वहांके निवासी अमर होतेहैं अर्थात् उनकी कभी मृत्यु नहीं होती है और राजाइन्द्र वहांका राज्य करता है वह निशिदिन परियों के साथ आनन्द से रहताहै उसका काम यही है स्वांग नाचरंग प्रतिदिन रहाकरता और जिन्नातभी उसीके तावेमें हैं सब परियां उसके दरबारमें जाती हैं और निशिदिन नाचती गाती हैं एक रात्रिका यहहालहै कि राजानेकहा कि बकावली फ़ीरोजशाहकी बेटी बहुत दिनसे हमारे यहां नहीं आई इसका क्या कारण है तब एक परीने कहा कि वह एक मनुष्य के विरह में मरती है यह वृत्तान्त सुनकर भूपतिको क्रोधहुआ और परियों से कहा कि उसको अभी मेरेपास लाओ वह तख्तलेकर चली और ताजुल्मलूक के बाग़में आई और बकावलीको जगाकर राजाकी अप्रसन्नताका हाल सुनाया तबतो वह बेबश होकर अमर नगरमें गई और डरती २ राजाके सन्मुख आकर हाथ जोड़ खड़ीहुई महाराजने देखतेही कहा कि इसको आग में डालदो कि मनुष्यकी बास इसके न रहै यह सुन परियोंने उसको लाकर आगमें डालदिया वह जलके राख होगई तदनन्तर उसपर जल पढ़के मारा वह सजीव होगई और उठके खड़ीहोगई और सभामें नाचनेलगी

सवारहुई और परियों ने उठाया ताजुलमलूक उसीपाये में लटका चलागया फिर राजाके दरवाज़ेपर जाके उतरा बकावली उतरके एकतरफ़गई यहभी अलग होकर देखनेलगा जिसओर देखता परियोंके गानेका शब्द सुनाई पड़ता इतने में कईपरियां आईं और बकावली को उठाकर अग्नि में डालदिया वहराख होगई यह हाल देखकर राजपुत्र रोनेलगा और कहा कि इस समय पतंग कीसी शक्ति नहीं है कि उड़कर जलजाऊं इतने में एक परीने जलमें कुछ पढ़के उसराखपर छिड़कदिया वह उठखड़ीहुई और राजा की सभामें नाचने लगी राजपुत्र भी उसके पीछे चुपका खड़ारहा बकावलीका तबल्ची वृद्धथा अच्छीतरह बजा न सका इस लिये वह रुक २ के नाचती थी राजपुत्र यह हाल देखकर बेचैनहुआ और उससे न रहागया तबल्चीसे कहा कि यदि तेरी आज्ञाहो तो एक आधी गति में बजाऊं मैं बजाना जानताहूं यह सुन उसने तबला इसके हवाले किया राजपुत्र तो खूब बजाना जानताहीथा बजानेलगा फिर ऐसा नाच अच्छा हुआ कि सब वाह २ करनेलगे भूपतिने अति प्रसन्नहोकर अपने कंठका नौलखाहार उतारदिया बकावलीने लेकर पीछे हटके तबल्ची को देदिया जब नाच बन्द होगया तो राजपुत्र उसीतरह अपने नगरमें आया जब बकावली गुलाबके कुण्डकी ओर चली तब यह अपने शयनके स्थानपर सोरहा और सबेरे हँसताउठा परीने कहा बिन प्रयोजन हँसनेका क्या कारण है उसने कहा कि रात्रिको मैंने एक स्वप्न अजब देखा इससे मुझको

आज्ञादी वह आके बजानेलगा और आप नाचनेलगी अन्तको यह हुआ कि सबसभा मोहित होकर मूर्च्छित होगई और राजाभी अचेतहोगया और प्रसन्न होकर बकावली से कहा कि जो तेरे इच्छाहो सो मांग अभी पावेगी खाली न जायगी यह सुन उसने विनयकी कि महाराजकी बदौलत दासीको किसी बस्तुकी कमी नहीं है परंतु यह चाहतीहूं कि इसबजानेवाले को दीजिये यही बन्दनाहै यह बात सुनतेही राजा बहुत अप्रसन्न हुआ और ताजुल्मलूककी ओर देखके कहा कि अयमनुष्य तूही इसको चाहताहै बिना परिश्रम बकावलीसी परी को लिया चाहता है और बकावली से कहा कि अब तू कह क्या करूं मैं वचन हार चुकाहूं परन्तु जा बारह बर्षतक तेरे नीचेका धड़ पत्थर रहैगा यह राजाके मुख से निकलतेही वह अन्तर्द्धान होगई॥

बाईसवीं कहानी॥

ताजुल्मलूकको सिंहलद्वीप में पहुँचना और बकावलीसे मिलना और ताजुल्मलूक पर चित्रसेन राजाकी पुत्रीका मोहित होना॥

कहते हैं कि बकावली तो राजाइन्द्रके शापसे पत्थर की होकर अलोप होगई और राजपुत्र मीनकी तरह लोटनेलगा तब उसको परियोंने उठाकर नीचे डालदिया वह एकबनमें जापड़ा तीनदिनतक मृतकसा पड़ारहा चौथेदिन जो आंख खुली तो अपनेको कंटकबनमें देखा फिर जिधर जाता हाय २ करता और हर एक वृक्ष व-ल्लियों से बकावली का वृत्तान्त पूंछता एक दिन उसी विपत्ति में एक संगमरमरके तालाबपर जापहुँचा चारों

राजा चित्रसेन जो इस देशका स्वामी है उसके ठाकुर-द्वारेका पुजारी हूं ताजुलमलूक ने पूछा कि इस नगर में कितने ठाकुरद्वारे हैं ब्राह्मण ने जितने प्रसिद्धथे सब बतादिये फिर कहा कि थोड़े दिनों से नया एकमन्दिर दक्षिण दिशामें बनाहै दिन भर उसका द्वार बन्द रहता है और यह कोई नहींजानता है कि उसमें क्याहै राजपुत्र यह सुनकर हृदय में प्रसन्न हुआ और उस द्वारपर जो नदीके समीपथा जा बैठा जब प्रहरभर रात्रिब्यतीतहुई तो उसमन्दिर के किवाड़ खुल गये ताजुलमलूक भीतर गया तो देखा कि बकावली की आधी सूरत तो प्रथम कीसी है और आधी पत्थरकीसी दीवालकी तकिया लगाये बैठी है बकावली ने राजपुत्रको देखकर कहा कि तू यहां क्योंकर आया राजपुत्र ने सब वृत्तान्त कहसुनाया जब भोरहुआ बकावलीने राजपुत्र से कहा कि अब तू यहां से जा यदि सूर्य्यनारायण उदय होआवेंगे तो तूभी मेरी तरह होजावेगा और एक मोती अपने कान से निकाल कर दिया कि इसको बेंच के खर्च करना ताजुलमलूक उसमन्दिर से चलाआया और मोती को बेंचके सहस्र रुपयेका एकगृह मोललिया और जो जो पदार्थ आवश्यकथे लेलिये और कईदास नौकर रक्खे निदान प्रतिदिन हररात्रिको बकावली के निकट जाता और दिनको घरमें रहता इसीप्रकारसे बहुत दिनव्यतीत हुये बहुत से लोग उसनगरके राजपुत्रके मित्रहोगये थे वे उसको नगर की सैरदिखाया करतेथे एकदिन ताजुलमलूक उनकेसाथ घूमने गयाथा कि कुछमनुष्य शीश और पगोंसे नंगे देखे

अश्वकी लगाम पकड़ली और कहा कि तू किसकी आज्ञासे इस नगरमें घूमताहै और राजाओंके महलों पर दृष्टिकरता और आंखेंलड़ाता है अब बता कि कहां से आया और कहां का रहनेवाला है ताजुलमलूक उसकी बातोंसे जानगया कि यह किसीकी पठाईहुई आईहै कहा कि बातेंमतबना जा नाममेरा ताजुलमलूक और घरमेरा शरकिस्तानमेंहै और जिसने तुझेपठायाहै उससे जाकर कह कि मुझ बटोहीपर ध्यान न धरै और वह उसपर ध्यान धरे जोउसपर ध्यानरखताहो फिर ताजुलमलूक प्रतिदिन नये २ वस्त्रपहिनकर उसीराहसे जानेलगा यहभेद उसके माता पिता परखुला तब राजाने एकचतुर मनुष्य बुलाके राजपुत्रकेपास अपनी पुत्रीके बिवाहका पैगामलेके भेजा कि उसके हृदय को लुभावे वहमनुष्य राजपुत्र के पास आया और बहुतप्रशंसा उसपुत्रीकी की और कहा कि वह अति स्वरूपवती है उससे तू ब्याहकरले ताजुलमलूकने कहा कि मेरी ओरसे प्रथम प्रार्थना करना फिर राजासे कहना कि जोकोई अपना राज्य छोड़कर किसी कीचाह में भ्रमता फिरै और माता पिता सबछोड़ दे तो उसका ब्याहकरना मानो बायुमें गांठि बांधनाहै उसमनुष्यने जाकर चित्रसेनसे सबबातें राजपुत्रकी कहीं चित्रसेन सुनकर आश्चर्य्य मेंहुआ और मंत्रीसे सलाहपूंछी तब मंत्रीने कहा आप देखिये मैं उसको किसघाटउतारताहूं फिर राजमंत्री इसबिचारमें रहा कि उसको चोरी मेंधरै तब कार्य्य सिद्धहोगा जबताजुलमलूकको कुछखर्चकी आवश्यकताहुई तो चाहा कि बकावलीसे कुछमांगै

निर्म्मला और चपला भी बन ठनके उसके साथहोलीं और कारागृह में राजपुत्र के पास पहुंचीं ॥

चौ० करिशृंगार अतिरूपबनाई । जो देखै सोजाय लुभाई ॥
नेत्रकटाक्ष सरस अनियारे । भौंह बनाये केशसँवारे ॥

परन्तु राजपुत्रकी दृष्टिमें कोई न समाई और किसी से बात भी न की जब चित्रावतने देखा कि मेरे शृंगार करने से कुछ न हुआ तब राजपुत्र के आगे मृतकसी होकर गिरपड़ी और तलफनेलगी राजपुत्रको यहदशा देखकर दया आई और कहा कि तेरेसाथ ब्याहकरूंगा और सिवाय इसके अपना बचनाभी न देखा फिर निर्म्मलाने यहखुशी राजाको पहुंचाई राजा चित्रसेन यह सुनकर राजपुत्रको बन्दीसे निकलवाकर नहला धुलवा कर शाहीजामा पहिनाया और एक भवन अलग रहने को दिया और शुभघड़ी में बिवाह करदिया फिर राजपुत्र चित्रावतके भवनमें आया तो देखाकि निर्मला और चपला अपने२ अधिकारपर खड़ीहुई हैं उन्होंने अपना को बहुतबनाया परन्तु राजपुत्रने किसीकी ओर न देखा जब प्रहरभर रात्रिगई तब उठखड़ाहुआ और बकावली के मन्दिरकी ओर चला उसने जो कईदिनसे न देखाथा ब्याकुल थी और शिर पीटती थी इतने में राजपुत्र भी पहुँचा देखके बड़ी आनन्दित हुई जब हाथ पावोंमें मेहँदी देखी तो मारे रिसके मुख लाल होगया और कहने लगी वाह २ राजपुत्र इतने दिनके पीछे आये और खूब रंग लाये प्रीतिका नाम मिटाया अरे निठुर यह तूने क्या किया यह कहकर यह चौपाई पढ़ी ॥

आश्चर्य की बातहै कि अग्नि और तृण एकतीरहैं और जलता नहीं एक दिन चित्रावत ने राजपुत्र का गिल्ला अपने पितासे बहुतकिया तब भूपति ने कितनेही मनुष्य पता लगाने के वास्ते राजपुत्र के पीछे लगाये कि यह रात्रि भर कहां रहता है वह इसटोह में थे कि राजपुत्र अपने समयपर भवनसे निकला और उसीभवनमें गया रात्रिभर रहा प्रातःकाल होतेही फिर घरमें आगया उन सबने राजा से जाके बिनय की कि राजपुत्र अमुक म-न्दिर में रात्रि भर रहता है यहसुन भूपति ने आज्ञादी कि इसीसमय वहमन्दिर खोद डालाजावे लोगोंने आ-ज्ञानुसार किया और सम्पूर्ण मन्दिर नदी में बहादिया ताजुल्मलूक जब अपने समयपर गया और वहां मन्दिर न देखा तो बिक्षिप्त की नाईं मिट्टी में लोटनेलगा और यह दोहा पढ़ा॥

दो० निशिदिन मेरे जीवको दुःख होइ नहिं चैन।
या बिधिना संयोग यह रच्यो मोहिं दुख देन॥

चौ० प्राणप्रिया बिछुरत तवसंगा। काहे न भयोप्राणमो भंगा॥
पाऊं कहां खोज मैं तोरा। गिरतपरतजाऊंत्यहिओरा॥
इतनोकहतनिराशसोभयऊ। उरताड़तदुखअतिशयभयऊ॥

निदान निराश हो ढारें मार २ राज मन्दिर की ओर लौटा कई दिन तौ अपनी प्राणप्यारी के बिरह सागर में रोता पीटता रहा जब उस कोमलांगी की भेंटसे नि-राश भया तो चित्रावत की प्रेमभरी माया मिश्रित बातों में फँसा और उस से बिहार करने लगा॥

और बिचारा कि राजपुत्रने पालने को कहा था परमेश्वर जाने वह क्याकरै किसान लोगोंसे यह बहाना करताथा कि जब वह सयानीहोगी और जिसको चाहैगी उससे बिवाह होगा जब दश १० बर्षकी हुई तब ताजुलमलूक ने किसान के पास कह पठाया कि अपनी पुत्री का बिवाह मुझसे करदे यह सुनकर वह बेचारा कांपने लगा और बिचारा कि मेरामुंह कहां है जो भूपति के दामाद को अपना दामाद बनाऊं और यह होगा कि मेरी लड़की लौंड़ी होके रहैगी मैं ऐसी प्यारी पुत्री को दासित्वके लिये नहीं दूंगा यह सुनके पुत्रीने कहा कि पिताजी मेरा नाम बकावली है मैं परी हूं तेरेघरमें आकर जन्म लिया है तुम ऐसी चिन्तना मतिकरो और राजपुत्रको कह पठावो कि कुछदिन और धीर्य्यधरे यहसुन किसान चुप होरहा और एक आदमीको भेजा उसने जाकर राजपुत्रसे सब वृत्तान्तकहा राजपुत्र प्रसन्नहुआ और उसको बहुतधन देकर बिदाकिया जब बकावलीका शाप पूराहोचुका तो सैकरोंपरी उसके लेनेको आनेलगीं समनरूपरी जवाहिरातके बस्त्र और भूषण लेके आई बकावलीने सर्व भूषण और बस्त्र धारण करके माता पितासे कहा कि अब मैं बिदा होतीहूं अभी तक तुम्हारे यहां अतिथिके सदृशथी फिर पिताका हाथ पकड़कर घरके पिछवारे लेगई और एकहंडा मोहरों का बता दिया और कहा कि इसे लेलो फिर बिदा होके तख्तपर बैठी परियां शीघ्रही ले उड़ीं और जहां ताजुलमलूक चित्रावत और चपला और निर्म्मलालिये बैठाथा जा उतरीं और बकावली सबको

को देखकर प्रसन्नहुई और बकावली और चित्रावत से यथायोग्य मिलीं॥

पच्चीसवीं कहानी॥

ताजुल्मलूकका फ़ीरोजशाह और मुजफ़्फ़रशाहको पत्र लिखना। और उनका ताजुल्मलूककी भेंटको आना और बहराम का रूहअफ़ज़ा पर मोहित होना॥

लिखनेवालोंने लिखा है कि ताजुल्मलूक ने मुजफ़्फ़रशाह और फ़ीरोजशाह और जैनुल्मलूक को अपने आगमनका शुभ समाचार लिखभेजा उसपत्री को देख कर सब आनन्दित होगये और फ़ीरोजशाह जमीलह खातून सहित बड़ीधूमधामसे ताजुल्मलूकके पास गया और मुज़फ़्फ़रशाह रूहअफ़जा और हुस्नआरा और जैनुल्मलूक अपने सब लोगों समेत बड़ी धूम धाम से आया निदान थोड़े दिनोंमें सब वहां आपहुंचे और ताजुल्मलूक और बकावलीको देखके बड़े प्रसन्नहुये तीन दिन बड़ी धूमधाम रही नाच रंग हुआ चौथे दिन सब बिदाहुये पर बकावली ने रूहअफ़जा को नहीं जानेदिया और उसके सोने के वास्ते एक महा सुन्दर रत्न जटित दालान दिया यह प्रतिदिन प्रहरभर रात्रिगये तक बातें कियाकरती फिर जाके सोरहती एक रात्रिको यह हुआ कि रूहअफ़जाकी सोतेमें चोटी खुलगई तो मोतीचमकने लगे और बहराम उस समय चांदनी की सैर करता हुआ उसी ओर से जा निकला जो देखा तो जाना कि काला सर्प अपनी मणि मुखमें लिये चढ़ाजाता है फिर जो निगाह से देखा तो जाना कि किसीकी चोटीमेंलाल

बकावलीका चित्त कुछउसपर मोहिगयाथा नहींतो कहां मनुष्य कहां परी बड़ा अन्तरहै तो बहरामने कुछ उत्तर न दिया जबसमनरूने देखा कि मोहका कंटक इसके हृदयमें ऐसाचुभाहै कि उसका निकलना कठिनहै तब कहा कि ऐ बहराम इसमें मैं कुछनहीं करसक्तीहूं यदि तू कहे तो फिरदौस टापूमें तुझे पहुँचा दूं परन्तु और कुछ सहायता नहीं करसक्तीहूं फिरजो तेरी भाग्यमें होगा सो होगा उसने कहा अच्छा लेचल तब सनमरू बहराम को लेकर उड़ी और स्त्रियों के वस्त्र पहिनाकर अपनी मुंह बोली बहिनके भवन में लेगई उसकानाम बनफ़शा था वह समनरूके आनेसे बहुत प्रसन्नहुई और पूछा कि वह नौयौबना स्त्री तुम्हारे साथ किसकी है उसने कहा कि मेरी बहिन है इसकाजी यहां आनेको बहुत चाहता था इसलिये मैं तुम्हारे पास लाई हूं इसे सब नगर देखावो उसने कहा कि बहुत अच्छा समनरू तो बिदाहो के गुलबकावली के पासआई और बहराम बनफ़शाके भवनमें रहा वह नितनई बस्तु खिलाती और बागमें ले जाती और सन्ध्याको अपने भवनमें लाया करती और आप नितरूहअफ़ज़ा के मन्दिर में जाय उसका शृंगार करती इसीप्रकारसे बहुत दिनहोगये एकदिन बनफ़शा कहीं गई थी घर खाली जो पाया तो बहरामने रूहअफ़ज़ाके शृंगारके दर्प्पण के ऊपर यह लिखकर जहां का तहां रखदिया कि तेरे आगे शीशा लज्जितहोताहै और तेरे ऊपर मैं मरताहूं जब बनफ़शा शृंगार करने रूहअफ़ज़ा का गई और उसकी चोटी गूंथी फिर वह शीशा

इसने अभीमुभको पहिचाना नहीं है फिर राजकन्या ने आइना मांगा बहराम ने भट उलटा दिखा दिया वह बहुत हँसी और बनफ़्शासे कहनेलगी कि तुम्हारी बहिन महामूर्ख है इसे कुछ ज्ञान नहीं इसको उलटा सीधा नहीं जान पड़ता आज की रात्रि इसे यहीं छोंड़जा उसने कहा कि अच्छा यह कहकर वहतो घरचलीगई और बहराम इसके पासरहा रूहअफ़ज़ा परियोंसे अलगहो शयनालय में आई और बहरामको अकेले लेबैठी और कहा कि कहो बीबी तुम्हारा क्यानामहै उसनेउत्तर दिया कि सिवाय तेरे नाम के मुभे कुछयादनहीं परी ने फिर पूछा कि यहांके आनेका कारण बतावो बहरामने कहा कि पतंगका आना दीपक जानता है यहसुन रूहअफ़ज़ा हृदय में प्रसन्न हुई परंतु प्रकट में रिसकरके बोली कि तेरी बातों से जानपड़ता है कि तू पुरुष है यहां बेषबनाकर आयाहै देखतो तुभे इस ढिठाई का क्यादण्डदेतीहूं वह इस हाव भावको न जानता था विश्वास हुआ कि फिर मार खाऊंगा और निकाला जाऊंगा मारे भयके थर २ कांपने लगा और मूर्च्छित होगया यहदेख रूहअफ़ज़ा सहमगई कि ऐसा न हो कि इसके प्राण जाते रहैं बेबश दौड़ कर उसका शीश अपने कोमल जंघापर रख अपने कली सदृश मुखकी सुगंध सुँघाई तब बहराम सचेत भया और आंखें खोलीं तो अपने शिरको अपनी प्रिया के जंघापर रक्खे देख बड़े आनन्द को प्राप्त हुआ और पिछला सब दुःख भूलगया फिर दोनों भलीभांति विहार करने लगे रूहअफ़ज़ा का चित्त ऐसा होगया कि पल

लिया और इरादा लेजानेका किया तब रूहअफ़ज़ा क-
लेजा पकड़कर रहगई मारे लज्जाके बोल न सकी हुस्न-
आरा उसपिंजरेको लेकर उड़चली और मुज़फ्फ़रशाह
के आगे रखदिया शाहने निकालके उसशुकके सम्पूर्ण
पर खोले जब उसका कंठदेखा तो एक यंत्र देखपड़ा उस
के खोलतेही वहशुक आदमी होगया यह चरित्र देख सं-
पूर्ण विद्यमान सभा आश्चर्यमें हुई और भूपति देखकर
अग्निहोगया और कहा कि हे दुष्ट पापी तू मेरे क्रोध से
न डरा अपने जीमें कुछ न शोचा कि क्याहोगा सचकह
कि तुझे यहां कौनलाया नहीं तो अभी तेरे प्राणजाते हैं
बहरामने कहा मोहसागर में डूबेहुओं की प्रीतिही आक-
र्षण करती है देखो महाराज तुलसी दासजीने कहा है॥

चौ० जाकर ज्यहिपरसत्यसनेहू। सो त्यहि मिलै न कछुसन्देहू॥

और कहा कि जिसमनुष्यने अपने प्राणसे हाथधोये
उसे कालसे क्याभय॥

दो० मोहिं त्रासनहिं कालको नहिंतव भय भूभोग।
एकशोचयह मनबस्यो निजसुप्रियाको वियोग॥

यह सुन राजा कोपित हुआ और निज सेवकों को
आज्ञादी कि इसेनगरके बाहर लेजाकर अग्नि में भस्म
करदो दैवयोग्यसे इतने में ताजुल्मलूक और बकावली
दोनों घूमनेको आयेथे और उसस्थान से टापूफिरदोस
भी पासहीथा उनदोनों ने कहा कि चलो रूहअफ़ज़ाको
देखतेचलें उस टापूमें पहुँचे तो देखा कि बहराम बैठाहै
और उसके चारोंओर अग्निलगी है जब बकावली ने
बहुत भीड़ देखी तो अपना तख्तलेजाकर पूंछा कि यह

पास लेगई और अपराध क्षमाकराया फिर ताजुलमलूक और बहराम सहित अपने अरम द्वीपमें पहुँची औरसर्व वृत्तान्त अपने माता पितासेकहा फिर विनय की कि वह जिस धूमसे ताजुलमलूकको लेकर मुझको ब्याहनेआये थे उसी प्रकार तुम भी बहराम की बरातलेकर ब्याहने चलो फीरोज शाहने वैसेही मेहमानदारी और तय्यारी भीतर बाहरकी की और बहराम को महासुन्दर रत्नजटित स्वच्छबसन और नानाप्रकार के रत्न पहिराय महा सुगन्धित पुष्पों का सेहराबांध बरात सजाय फिरदोस द्वीपको सिधारे वहांकी तय्यारी कहां तक बर्णनकरूं अधिक लेखनी नहीं चलती निदान मुज़फ्फरशाहकी ओर के लोगोंने बरातियों और दूल्हेको लेजाकर सत्कारपूर्वक महाबिशाल सभामें बैठाया और उसी विधि स्त्रियोंको भी आदरपूर्वक हुस्नआराकी सभा में लेआये रात्रि पर्यंत नृत्यगीतादिक का मंगलाचार होता रहा अनेक भांति की आतशबाजी छूटा कीं निदान अपनी कुलकी रीत्यनुसार चन्द्रमुखी के साथ उसे ब्याह दिया और सब प्रकारकी रीतें हुईं और मुज़फ्फ़रशाहने दहेज में बहरामको बहुतसाधन और दासदासी असंख्यदिये और बड़ी धूम धामसे बिदाकिया बरातको उसी धूमसे फ़ीरोजशाह और ताजुलमलूक बरात को लिये टापू में पहुँचे कईदिन वहांरहे बड़ा आनंदमचा फिर बकावली और ताजुलमलूक रूहअफ़ज़ा और बहराम को लेकर त्रिगारीन देशको सिधारे और क्षणमात्र में जाय पहुँचे फिर बहराम के माता पिता को बुलाय सम्पूर्ण वृत्तान्त कहसुनाया वह बहू बेटेको देख